SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI
VOL.--1

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
भाग—१

जैन–सिद्धान्त–भवन–ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विस्तृत सूची)

भाग–१

प्रस्तवन

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादन

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा (बिहार)

संकलन

विनय कुमार सिन्हा, M A (प्राकृत)

शत्रुघन प्रसाद, B A

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन

भगवान महावीर मार्ग, आरा–८०२३०१

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(भाग–१)

प्रथम संस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)–८०२३०१

मुद्रक

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प

क्रिएटिव आर्ट्स

दिल्ली

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss Published by Sri D K. Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.
First Edition 1987 Price Rs 135/-

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-1

Introduction

Dr. Gokulchandra Jain

Head of the department of Prakrit & Jainagama.

Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor,

Rishabhachandra Jain Fouzdar,

Research Officer

Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation

Vinay Kumar Sinha M A

Strughan Prasad B A

Gupteshwar Tiwari

Sri Jaina Siddhant Bhawan

PUBLICATION

Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of Jainism burning It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution Some of the manuscripts contain rare Jain paintings These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc Part second which is named as Pariśiṣṭa (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988.
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का प्रथम भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण काय प्रारम्भ हो गया है। एक पञ्चवर्षीय योजना के रूप मे इसके छ भाग प्रकाशित करने मे सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' का यह पहला भाग जैन सिद्धान्त भवन, आरा के ग्रन्थागार मे सग्रहीत सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, कन्नड एव हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। इसमे लगभग एक हजार ग्रन्थो का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डो मे किया गया है। पहले खण्ड मे अग्रेजी (रोमन) मे ग्यारह शीर्षको द्वारा पाडुलिपियो के आकार, पृष्ठ सख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रथो का सग्रह है। इनमे अनेक ऐसे भी ग्रन्थ है जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थो को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धात भवन, आरा मे उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ मे होगा। इसमे २१३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी सयोग जुडते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने मे सफल हुआ हूँ। भविष्य मे भी अपने सभी सहयोगियो से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हम उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बडे प्रेरणाश्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्त्ताओ की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय मे निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे हैं।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एव सस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एव आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एव निदेशक सग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी सबधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रथों के प्रकाशन मे उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य मे भी हमे प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एव जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंगल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एव कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, सस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमे इस प्रकाशन के सम्बन्ध मे बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोही जाने माने विद्वानो का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का सपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे सस्थान मे मानद शोधा-कारी के रूप मे भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनो खण्डो के सकलन के सपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा मे एक हजार ग्रथो की ग्यारह कालमो मे विस्तृत सूची तथा प्राकृत एव सस्कृत आदि भाषाओ मे परिषिष्ट के रूप मे सभी ग्रथो के आरम्भ की तथा अत के पदो का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद बर्मा ने पुस्तक के अत मे 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारो एव टीकाकारो की नामावली और उनके ग्रन्थो की क्रम सख्या का सकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थो का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार बर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक सभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगो से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ।

अजय कुमार जैन

मत्री

श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,

आरा

ABBREVIATION

V S	—	Vikrama Samvata
D	—	Devanāgarī
Stk	—	Sanskrit
Pkt	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhraṁśa
C	—	Complete
Inc	—	Incomplete

Catg of Skt Ms - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg by Lewis Rice M R A S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884

Catg of Skt & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by Rai Bahadur Hiralal B A Nagpur 1926

(१)	आ० सू०	आमेर सूची —डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल ।
(२)	जि० र० को०	जिनरत्नकोश –डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना ।
(३)	जै० ग्र० प्र० सं०	जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—पं० जुगलकिशोर मुख्तार ।
(४)	दि० जि० ग्र० र०	दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
(५)	प्र० जै० सा०	प्रकाशित जैन साहित्य—डा० पन्नालाल अग्रवाल ।
(६)	प्र० सं०	प्रशस्ति संग्रह - डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल ।
(७)	भ० सं०	भट्टारक सम्प्रदाय विद्याधर जोहरापुरकर ।
(८)	रा० सू०	राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान) ।

समर्पण

देवाश्रम परिवार मे

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० प० चन्दा माँश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए है।

उन सभी की पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली

सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा —सुबोधकुमार जैन

१४-३-८७

INTRODUCTION

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b* Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz 1 Serial number, 2 Library accession or collection number, 3, Titleof the work, 4 Name of the author, 5 Name of the commentator 6 Material, 7 Script and language, 8 Size and number of folio, lines per page and letters per line 9 Extent, 10 Condition and age, 11 Additional particulars These details provide adequate informations about the MSS For instance thirteen MSS of *Dravyasaṃgraha* have been recorded (S Nos 213 to 224) It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number Its justification could be observed in the details provided

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry Each Ms has different size and number of folios Lines per page and letters per line are also different All are complete and in good condition Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas Ms No 223 dated 1721 v s , is with Sanskrit commentary in Prose Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda These details could be seen at a glance as they are presented scientifically

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads .

1	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3	Nyāyaśāstra	454 to 480
4	Vyākarana	481 to 492
5	Kośa	493 to 501
6	Rasa chanda, Alaṅkāra & Kāvya	502 to 531
7	Jyotiṣa	532 to 550
8	Mantra Karmakānda	551 to 588
9	Āyurveda	589 to 600
10	Stotra	601 to 800
11	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512)

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt The cross references of more than ten other works deserve special mention Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations A few of them are noted below —

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent). *Trepanakriyākośa*(498, 499) is not a work on Lexicon It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra* These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṁkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457) These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti* Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance For instance the information regarding parential Ms is very important If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms The difference of alphabets in different languages is obvious Thus the reference of parential Ms is of great importance (373)

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts (7, 318, 373) whereas some in Noithen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana Arrah itself MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars

(6) The study of colophon reveals many more important references of *Saṁghas, Ganas, Gacchas, Bhaṭṭārakas* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics copying the Ms for personal study–*svādhyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāna* at the end of the MSS This reference is very important from the point of the extent of the Text Many times the author himself indica'es the *granthaparimāna* Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each) The Āptamīmāṁsā *Bhāṣya* of Akalaṅka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahasrī* Both works are the commentaries on the *Āptamīmāṁṣā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaih sahasrasamkhyānaih* "

Counting in the form of ślokas seems a later development When the teachings of Vardhamāna Mahāvīra were reduced to writing counting was done in the form of *Padas* For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*

" *āyāraṁgamatthāraha—pada-sahassehi* "

(Dhavalā p 100)

Such references are more useful for critical study of the text

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS The remuneration of writing was decided per hundred words For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable The earliest Śaurasenī Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannada* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syād-vāda Mahāvidyālava* A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr Satish Chandra Vidvabhusan, Prof Heraman Jacobi of Germany, Prot Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915 Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal

The other activity of the publication of *Bibliothica Jainica — The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Samgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Puruṣārtha Siddhyupāya* were published Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgarī* on paper are valuable assets of the collection It is undoubtedly accepted that a manu-scipt is more valuable than an icon or Architectural set-up An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, beeause the *Jina*, *Jinavāni* and *Jinaguru* were considered the objects of worship Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A D) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places wēre choosen for the purpose A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsis emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śastra Bhandaras* As a result, many MSS collections came up all over India The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras* One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāna* and distributed them among religious people At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance

The above efforts saved hundreds thousands MSS But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Satkhandāgama* is now well known It is only one example

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries This continued during the first quarter of 20th century. In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world Almost all the eminent Jainologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention It is quite a different type of reference work relating to MSS Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannadaprāntīya Tāḍapatrīya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji Jaipnr also deserve mention L D Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dillī Jina-Grantha-Ratnāvālī* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight His associates also deserve applause for their due assistance I also thank my esteem friend Dr Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jainägam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश मे विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान मे इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एव विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बडा सगमरमर का हॉल है, जिसमे सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थो का सग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान मे श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा मे शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एव अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा मे श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्‌घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होने स्थानीय जैन पचायत की एक सभा मे बाबू देवकुमार जी द्वारा सगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ सग्रह के दर्शन किये तथा उन्हे स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एव सस्कृति के प्रेमी थे, उन्होने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के सवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ मे दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमे विभिन्न नगरो एव गावो मे सभाओ का आयोजन करके जैन सस्कृति की सरक्षा एव समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गावो और नगरो से हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानो पर शास्त्रभडारो को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एव निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाडियो पर हुआ करती थी। किन्तु काल की गति को कौन जानता है ? १९०८ ई० मे ३१ वर्ष की अल्पायु मे ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिसमे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धान्त भवन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोडीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तो की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

)

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस मे बडे पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियो और सभाओ का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न सग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होने बाबू देवकुमार की स्मृति मे प्रशस्तियाँ लिखी एव भवन की सुरक्षा एव समृद्धि की प्रेरणाएँ दी।

सन् १९१९ मे स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मत्री निर्वाचित हुए। मत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापो मे गति भर दी। १९२४ मई मे जैन सिद्धात भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष मे भव्य एव विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १९२६ मे श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थागार को नये भवन मे प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार मे प्रचुर मात्रा मे हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रथो का सग्रह किया।

जैन सिद्धात भवन आरा मे प्राचीन ग्रथो की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थो को बाहर के ग्रन्थागारो से मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने सग्रह मे रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने सग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एव इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १९४६ मे बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १९५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मत्री पद का भार दिया गया जिसे वे अभी तक पूरी लगन एव जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापो मे कई नये अध्याय जुड गये हैं, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो उभर-कर सामने आये हैं।

जैन सिद्धात भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धान्त भास्कर एव जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १९१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका मे जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एव पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओ के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्च कोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अक जून और दिसम्बर मे प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धांत भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान है। इसमे प्राकृत एव जैनविद्या की विभिन्न विधाओ पर शोधार्थी शोधकार्य करते हैं। संस्थान मे शोध सामग्री प्रचुर मात्रा मे भरी पडी है। सस्थान सन १९७२ से मगध विश्व विद्यालय, बोधगया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान मे इसके मानद निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत–सस्कृत विभाग, हरप्रसाद दास जैन कालेज, (मगध विश्व विधालय) आरा हैं। इस समय सस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकाय कर रहे हैं तथा अनेक पी० एच० डी० की उपाधियां प्राप्त कर चुके हैं।

इस सस्था द्वारा अब तक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इस समय छह भागो मे भवन के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली तथा सचित्र जैन रामायण (रामयशोरसायनरास–मुनि केशराजकृत) का प्रकाशन कार्य चल रहा है।

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का पहला भाग पाठको के हाथ मे है। इसमे जैन सिद्धात भवन, आरा मे सरक्षित ६९७ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एव हिन्दी के हस्त-लिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। वास्तव मे यह सख्या एक हजार से अधिक है। यह सूची दो खण्डो मे विभक्त है तथा दोनो खण्डो की पृष्ठ सख्या भी पृथक्–पृथक् है। प्रथम खण्ड मे पाण्डुलिपियो का विवरण तथा दूसरे खण्ड मे प्रत्येक ग्रन्थ का प्रारभिक अश, अन्तिम अश एव प्रशस्तियाँ दी गई हैं। सूची मे ग्रन्थो का वैज्ञानिक ढग से विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह विवरण निम्न ग्यारह शीर्षको मे है --(१) क्रम-सख्या (२) ग्रन्थ सख्या (३) ग्रन्थ का नाम (४) लेखक का नाम (५) टीकाकार का नाम (६) कागज या ताडपत्र (७) लिपि और भाषा (८) आकार सेमी० मे, पत्रसख्या, प्रत्येक पत्र की पक्ति सख्या एव प्रत्येक पक्ति की अक्षर सख्या (९) पूर्ण-अपूर्ण (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है। यह सभी विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है।

१	पुराण, चरित, कथा	१ से १५५
२	धर्म, दर्शन, आचार	१५६ से ४५३
३	न्यायशास्त्र	४५४ से ४८०
४	व्याकरण	४८१ से ४९२
५	कोष	४९३ से ५०१
६	रस, छन्द, अलकार और काव्य	५०२ से ५३१
७	ज्योतिष	५३२ स ५४९

८	मन्त्र, कर्मकाण्ड	५५० से ५८८
९	आयुर्वेद	५८९ से ६००
१०	स्तोत्र	६०१ से ८००
११	पूजा–पाठ–विधान	८ १ से ९९७

अन्तिम शीर्षक के अन्त मे आठ ग्रन्थ ऐसे है, जिन्हे विविध-विषय के रूप मे रखा गया है। यह विषय विभाजन सामान्य कोटि का है, क्योकि सभी ग्रन्थो का विषय निर्धारित करने हेतु उसका आद्योपान्त सूक्ष्म परीक्षण आवश्यक है।

ग्रन्थावली का दूसरा खण्ड 'परिशिष्ट' नाम से अभिहित है। इसका यह खण्ड बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रशस्तियो मे अनेक महत्वपूर्ण तथ्य लिपिबद्ध हैं। अनेक काफी प्राचीन पाण्डुलिपिलां भी हैं,जिनका समय प्रथम खण्ड मे दिया गया है। प्रशस्तियो के अध्ययन से विभिन्न सघो, गावो, गच्छो तथा भट्टारको के सन्दर्भ सामने आये हैं। यह ग्रन्थ कुछ लोग अपने स्वाध्याय के लिए लिखवाते थे तथा कुछ लोग शास्त्रदान के लिए। ग्रन्थ श्रावको, साधुओ तथा भट्टारको द्वारा लिखवाये गये हैं। पाण्डुलिपियो का लेखन भारत के विभिन्न देशो (वर्तमान राज्यो मे) हुआ है। जैन सिद्धान्त भवन, आरा ने भी पर्याप्त लेखन कार्य हुआ है। जो पाण्डुलिपियाँ अन्य सग्रहो से स्थानान्तरित नही की जा सकती थी, उनकी प्रतिलिपियाँ वही से कराकर मगाई गई है। अधिकाश पाण्डुलिपियो मे पूरे ग्रन्थ की श्लोक सख्या या गाथा सख्या भी दी हुई है, जिससे पूरे ग्रन्थ का परिमाण भी निश्चित हो जाता है। इस ग्रन्थावली का यह खण्ड एक ऐसा दस्तावेज है, जिसमे अनेक नवीन सूचनाएँ दृष्टिगोचर हुई हैं।

क्र० १०३/१ मे उल्लिखित 'राम-यशोरसायनरास' सचित्र ग्रन्थ है। इसके कर्त्ता श्वेताम्वर स्थानकवासी सम्प्रदाय के केशराज मुनि हैं। कर्ता ने रचना मे स्वय के लिए ऋषि, ऋषिराज, ऋषिराय, मुनि, मुनीन्द्र, पडितराज आदि विशेषण प्रयुक्त किये है। ग्रन्थकी कुल पत्रसख्या २२४ है, जिसमे से वर्तमान मे १३१ पत्र उपलब्ध है। इन पत्रो मे २१३ रगीन चित्र है। चित्र राजपूत शैली के है। यह रचना राजस्थानी हिन्दी मे है तथा आचार्य हेमचन्द्र रचित 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित' की रामकथा पर आधारित है। इसका प्रकाशन देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान से किया जा रहा है। क्र० २२३ द्रव्यसग्रह टीका (अवचूरि) है, जो अद्यावधि अप्रकाशित है। टीका सक्षिप्त एव सरल सस्कृत भाषा मे है। किन्तु पाण्डुलिपि मे टीकाकार के नाम, समयादि का उल्लेख नही है।

परिशिष्ट तैयार करने मे 'यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित मया' का अक्षरश पालन किया गया है। अनुसन्धित्सुओ की सुविधा के लिए विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियो के क्रास सन्दर्भ दिये गये हैं, जिनमें राजस्थान के शास्त्र भडारो की सूची भाग–१ से ५, जिनरत्नकोष, आमेर सूची, दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली, कैटलॉग आफ सस्कृत मैन्युस्क्रिप्टम्, कैटलॉग आफ सस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्टम् प्रमुख है।

'इन्ट्रोडक्शन' मे डॉ० गोकुलचन्द्र जी जैन, अध्यक्ष प्राकृत एव जैनागम विभाग, सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली के पूरे परिचय के साथ उसका महत्व भी स्पष्ट किया है। तथा अनेक मौको पर उनका मार्गदर्शन भी मिलता रहा है, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। सस्थान के निदेशक के रूप मे डॉ० राजाराम जैन के मार्गदर्शन के लिए उनका भी आभारी हूँ। श्री बाबू सुबोधकुमार जी जैन तथा श्री अजयकुमार जी जैन का तो निरन्तर ही मार्गदर्शन तथा निर्देशन रहा है। यही दोनो व्यक्ति प्रेरणा स्रोत भी रहे, अत उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। अपने ग्रन्थागार सहयोगी श्री जिनेशकुमार जैन तथा प्रेस सहयोगी श्री मुकेशकुमार वर्मा का भी आभारी हूँ, जिन्होने समय-असमय कार्य पूरा करने मे निरन्तर मदद की। इनके अतिरिक्त जिन अन्य व्यक्तियो से परोक्ष-अपरोक्ष रूप मे सहयोग मिला है, उन सबका हृदय से आभार मानते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य मे भी हमे उनका सहयोग मिलता रहेगा।

—ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान
आरा (बिहार)

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY.

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

. No.	Library accession or Collection No. If any.	Title of work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
1	Kha/38/1	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
2	Jha/4	Ādipurāna	Jinasenācārya	—
3	Kha/14	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
4	Kha/5	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
5	Ga/105	Ādipurāna	[illegible]	—
6	Jha/138/1	Ādipurāna Tippana	—	—
7	Jha/138/2	Ādinātha purāna	Hastimalla ?	—
8	Ga/44	Ādipurāṇa Vacanikā	—	—
9	Kha/69	Ādinātha Purāṇa	Sakalakriti	—
10	Kha/282	Ārādhnā-Kathā Kośa	Brahma-Nemidatta	—
11	Kha/155	Ārādhanā-Kathā Kośa	Brahmanemidatta	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per Page & No. of letters per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P	D,Skt. Poetry	31.4×16 2 258 15 52	C	Old 1904 V S.	Published.
P	D,Skt Poetry	30 7×15 6 367 10 52	C	Old 1851 V S	Copied Uderāma. Published
P	D,Skt Poetry	35 5×15 4 305 15 53	C	Good 1773 V S	Published,
P	D,Skt. Poetry	37×16 305 13 56	C	Old 1735 V S	12000 Slokas Published
P	D,H Poetry	43 8×16 9 688 11 52	C	Good 1889 V S	Copied by Jugarāja.
P	D,Skt, Prose	34 4×21 3 123 15 45	C	Good	
P	D,Skt Poetry	22 1×17 5 95 10 18	C	Good 1943 A. D	Copied by Lokanātha Sastri, Unpublished
P	D, H Prose	35 8×17 9 544 14 48	C	Good 1961 V S	
P	D;Skt Poetry	29 8×19.2 177 12 53	C	Good 1797 V. S.	Published. 5500 Slokas Copied by Gulajārilāla.
P	D,Skt. Poetry	32 5×16 5 196.14.48	C	Old 1848 V. S.	Published.
P	D;Skt. Poetry	28.8×11.6 244.10 47	C	Good 1807 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
12	Ga/21/2	ĀrādhanāSāra		—
13	Kha/147/2	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
14	Kha/115	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
15	Jha/98	Bhagavatpurāna	Kesavasena	—
16	Ga/68	Bhaktāmara Kathā	Vinodilāla	—
17	Ga/7	Bhak mara Kathā	Vinodilāla	—
18	Ga/132	Bhaktāmara Kathā	Vinodilāla	—
19	Kha/195	Candraprabha Caritra	Viranandin	—
20	Ga/170	CandraPrabha Purāṇa	Pt. Th thirāma ?	—
21	Nga/2/49	Caturvinsati Jina Bhavāvali		—
22	Ga/129	Cārudatta-Caritra	Bhārāmala	—
23	Ga/85/3	Cetana-Caritra	Bhagavati Dāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;H Poetry	37.1×23.1 46 18 66	C	Good	Published by Manikachandra Series
P	D,Skt Poetry	29 2×12 5 28 9 50	C	Old	Published.
P	D,Skt. Poetry	22 2×14 4 57 8 24	C	Good	Published copied by Nilakanthā Dāsa
P.	D;Skt poetry	35 3×16 5 98 11 54	C	Good 1698 V S	Coped by Uddhava Josī, Unpublished
P	D,H Poetry	33 4×21 2 138 17 37	C	Good 1939 V S	
P	D,H Poetry	30 6×19 2 214 12 35	C	Good 1954 V S	Baladevadatta Pandita seems to be copier
P	D H Poetry	33.4×15 4 183 12 40	C	Good 1954 V S	Slokas No 5400, Copied by Cunimālī
P.	D,Skt Poetry	34 1×21 5 306 20 26	C	Good. 1761 Saka Samavata	Written on register size paper Copied by Pandita cārukīrti. Published.
P	D,H Poetry	32 4×17 4 180 13 38	C	Good 1978 V. S.	
P	D,Skt Poetry	19 4×15 5 3 13.14	C	Good	Unpublished
P.	D;H. Poetry	35 2×16.1 69.10.37	C	Good 1960 V. S.	Copied by Guljārī Lāla.
P.	D;H. Poetry	25.8×17 9 15.15.35	C	Good 1958 V. S	

1	2	3	4	5
24	Ga/167	Cetana-Carıtra Nāṭaka		—
25	Ga/33	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
26	Ga/85/1	Daśrana-Kathā	Bhārāmalla	—
27	Kha/176/4	Daśalākṣ aṇí-Kathā	Śrutasāgara	—
28	Nga/6/11	Daśa-lākṣaní Kathā	Bhaırondāsa	—
29	Ga/41/2	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
30	Kha/12	Dhrma-Śarmābhyubaya	Mahākavı Harıcandra	—
31	Jha/103	Dharma-Śarmábhyudaya Satíka	Mahākavı Harıcandra	Yaśa-Kírtı
32	Kha/188/5	Dhanya-Kumāra Carıtra	Brahamanemıdatta	—
33	Ga/9	Dhanyakumāra-Carıtra	Brahmanemıdatta	—
34	Ga/38	Dhanya-Kumāra-Carıtra		—
35	Nga/2/6	Dudhārasa Dvādasí Kathā	Prabhūdasā	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	18.9×15 9 13 11 20	C	Good	
P,	D, H Poetry	26.9×17 5 34 13 30	C	Good 1961 V. S	
P	D, H Poetry	26 3×17 9 40 12 29	C	Good 1940 V S	
	D,Skt Poety	24 4×11 3 3 11 44	C	Good	
P	D, H Poetry	22 8×18 1 6 17 18	C	Good 1751 V S,	
P	D, H Poetry	27 8 ×18 5 23 14 35	C	Good 1962 V S	Copied by Pandit RāmaNāth
P	D,Skt Poetry	29 4×13 7 158.9 45	C	Good 1889 V S	Published Good hand
P	D,Skt Poetry Prose	35 5×16 1 170 12 54	C	Good 1990 V S	Copied by Rośanalāla
P	D,Skt Poetry	23 1×9.8 27 8 36	Inc	Old	Published Last pages are missing.
P	D, H. Poetry	36 6×21 4 19 17 65	C	Old 1932 V S	
P.	D, H Poet ry	26 6×17 3 44.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17 8×13 5 12 10.21	C	Old 1918 V. S.	

1	2	3	4	5
36	Ga/158	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
37	Ga/176	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
38	Kha/160/1	Hanumāna-Caritra	Brahmajita	—
39	Kha/11	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
40	Kha/198	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
41	Jha/64	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
42	Ga/83	Hanumāna Caritra	Ananta-Kirti	—
43	Ga/102	Hanumāna Caritra	Ananta-Kirti	—
44	Jha/83	Harivaṁśa Purāṇa	Raidhū	—
45	Jha/63	Harivaṁśa Purāṇa	Jasakirti	—
46	Jha/87	Harivaṁśa Purāṇa	Brahma Jinadāsa	—
47	Kha/2	Harivaṁśa Purāṇa	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Poetry	25 3 ×11 2 108 13 44	C	Old 1788 V S.	
P	D H Poetry	33 4×20 8 87 13.43	C	Good 1984 V S	
P	D Sk. Poetry	27 8×12 4 85 14 86	C	Old	Published.
P	D, Skt Poetry	31 2×15 4 81 11 45	Inc	Old	Published 9th'10th & 11th Sargas are missing.
P	D,Skt Poetry	29 2×17 9 67 13 48	C	recent 1978 V S	It is also called Añjani Caritra
P	D,Skt Poetry	33 5×20 7 67 12 40	C	Good	Copied by Bhujawala Prasāda Jaini.
P	D H, Poetry	28 9×15 4 54 11 35	C	Good 1901 V. S	
P.	D H Poetry	32 2×20 1 43 13.35	C	Good 1955 V S.	
P	D, Apb Poetry	34 3×21 1 10 213.50	Inc	Good 1987 V. S.	Copied by Pt, Śivadayāla Caubay.
P	D, Apb Poetry	33 9×21.5 121 12 45	C	Good	Unpublished,
P,	D,Skt, Poetry	33 4×20 7 201.14.42	C	Good 1988	Unpublished. Copied by Pt. Śivadayāla Caubay.
P	D,Skt Poetry	35.5×16 435 10 32	C	Good	Published,

1	2	3	4	5
48	Ga/2	Harivaṁśa Purāna Vacanikā	Daulata Rāma	
49	Ga/117	Harivaṁśa-Purāna		—
50	Kha/126	Jaṁbūswāmī-Caritra	Brahma Jinadāsa	—
51	Jha/94	Jambūswāmī Caritra	Sakala-Kīrti	—
52	Jha/114	Jambūswāmī Caritra	Rājamalla	—
53	Ga/62	Jambūswāmī-Kathā	Jinadāsa	—
54	Kha/27	Jayakumāra Caritra	Brahma Kāmarāja	—
55	Ga/60	Jinadatta-Carita Vacanikā	PannāLāla	—
56	Jha/121	Jinerdra Māhātmya Purāna	Bhaṭṭārak Jinendra Bhūṣana	—
57	Kha/166/2	Jinamukhāvalokana Kathā	Sakalakīrti	—
58	Ga/39	Jīvandhara Caritra	Nathamala Vilālā	—
59	Kha/116/1	Kathāvalī		—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Prose Poetry	33 2×17 3 512 12 54	C	Good 1884 V S.	21,000 Anustup Chhandas are in the ms
P	D, H Poetiy	26 2×11 5 128 12 44	Inc	Old	
P	D,Skt, Poetry	29 ? ×18 7 83 12 42	C	Good 1608 V S	published, Copied by Gulajārí Lāla Śarmā
P	D,Skt, Poetiy	27 8×12 5 117 10 32	C	Good 1664 V S	Capied by saha Rāmānkena, It is same to Last one
P	D,Skt Potiy	35 1×16,4 69 12 51	C	Good 1992 V S	Copied by Raśana Lāla
P	D, H, Poetiy	31 5×14 3 28 9 37	C	Good 1883 A D	Copied by Duragāprasāda Jaini
P	D,Skt Poetry	26 9×11 5 86 11 40	C	Old 1842 V S	It is also called Jayapurāna
P	D, H, Prose	32 1×12 1 113 7 38	C	Old 1931 V S	
P	D,Skt, Poetry	45 8×22 1 776 16 60		Good 1992 V S	Copied by Raśanalāla Jain Unpub Slockas No, 76000 Vesten two and one book
P	D,Skt, Poetiy	25 2×11 7 14 12 52	C	Old 1932 V S	Copied by Pt Paramānanda.
P	D, H, Poetiy	27 9×18 2 106,14,45	C	Good 1961	
P.	D,Skt, Poetry	24 8×11.2 103 10 42	Inc	Old 1679 V. S	Copied by Brahmbeni Dāsa.

1	2	3	4	5
60	Ga/110/4	Kudeva Caritra		—
61/1	Jha/85	Madanaparājaya	Jinadeva	—
61/2	Jha/132	Mahipāla Caritra	Cāritra-Bhūṣana Muni	—
62	Ga/171	Mahipāla Caritra	Nathamala	—
63	Kha/183	Maithalī Kalyāna Nāṭaka	Hastimalla Kavi	—
64	Kha/264	Megheśvara Caritra	Mahā Kavi Raidhū	—
65	Kha/62/3	Nandīśvara Vrata-Kathā	Śubhacandrācārya	—
66	Ga/85/2 (Kha)	Nemi Candrikā		—
67	Ga/85/2 (Ka)	Nemiārtha Candrikā	Munnālāla	—
68	Ga/165	Neminatha Caritra	Vikrama Kavi	—
69	Jha 111	Nemipurāna	Brahma Nemidatta	—
70	Jha/66	Nemi-Purāṇa	Brahma Nemidatta	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H; Prose	21.3×15 6 36 11 26	C	Good	Durgāprasada seems to be copier.
P	D,Skt. Prose	35 3×16 3 35 10 52	C	Good 1987 V. S	
P	D,Skt Poetry	35 5×16 6 24 13 46	C	Good 1993 V S	Unpub. Slokas No. 995 copieda by Rośanalāla Jain
P	D, H Prose	26 7×16 8 56 15 30	C	Good 1918 V S	
P	D,Skt Prose Poetry	28 3×17 7 46 27 26	C	Good 1972 V S.	Published.
P	D,Abb Poetry	35 5×17 4 93 12 52	C	Cood 1976 V S	It is also called—Ádipurāṇa 4000 Gāthās Copied by Rajadhara Lal Jain.
P	D,Skt Prose	29 8×14 6 6 10 47	Inc	Old	It is also called Nandiśvarāṣṭāhnikā kathā or Siddhacakrakathā. Unpublished O l page No -14 to 19th availa ,
P	D, H Poetry	26 5×17 6 10 13 38	C	Good 1962 V. S	
P	D; H Poetry	15 5×16 1 39 12.20	C	Old 1895 V S	
P	D,Skt/H Poetry Prose	27 6×18 2 37 13 33	C	Old	
P	D,Skt. Poetry	35 1×16 1 104.13.50	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rośanalāla in Arrah
P.	D;Skt. Poetry	22.8×1.38 133.15.33	C	Old	First page is m s n-. Last Page is Damaged

1	2	3	4	5
71	Kha/ 111	Nemi-Purāṇa	Brahma Nemidatta	—
72	Ga/ 4	Nemi-Purāṇa		—
73	Nga/ 1/7/1	Neminātha Ristā	Hemarāja	—
74	Kha/ 146/2	Neminirvāṇa-Kāvya	Vāgbhaṭṭa	—
75	Jha/ 130	Neminirvāṇa Kāvya Panjikā	Bhaṭṭāraka Jnāna-bhūṣaṇa	—
76	Ga/ 41/1	Niśi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
77	Ga/ 99/3	Niśi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
78	Kha/ 179/3	Nirdoṣa Saptamī Kathā		—
79	Kha/ 266	Padma Carita ṭippaṇa	Candramuni	—
80	Kha/ 1	Padma-Purāṇa	Raviṣeṇācārya	—
81	Kha/ 107	Padma-Purāṇa	Raviṣeṇācārya	—
82	Ga/ 147	Padma-Purāṇa		—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt Poetry	22 6×14 8 84 13.37	Inc.	Old 1665 V. S.	Published From page No 2 to 43 are missing in begining and last pages are also missing.
P	D, H Prose Poetry	35 5×18 1 145 14 46	C	Good 1962 V S.	
P	D, H Poetry	20 4×13 8 11 12 11	C	Good	First page is missing.
P,	D, Skt Poetry	31 3×15 4 45 11 38	C	Old 1727 V. S	Published.
P	D, Skt Prose	35 5×17 3 48 15 45	C	Good	
P	D, H Poetry	27 6×17 4 20 13 44	C	Good 1962 V S	Published
P	D, H Poetry	32 6×16 9 13 11 37	C	Good 1955 V S	Published Copied by DurgāLala.
P	D,Hindi Poetry	25 5×11 7 6 6 33	C	Good	Published.
P	D,Skt Prose	35 4×17 5 34 12 55	C	Good 1894 V S	
P	D,Skt Poetry	40×19 487 13 46	C	Good 1885 V S	Published Copied by Brahanana Gour Tiwary
P	D,Skt Poetry	25×11 65 9 44	Inc	Old	Published First 17 pages and last pages are missing
P	D, H Prose	32 2×15 8 311 12.47	Inc	Good 1890 V. S	First 301 Pages are missing Raghunath Sharma seems to be copier

1	2	3	4	5
83	Ga/69	Padma Purāna Vacanikā	—	—
84.	Ga/8	Padma-Purāna Vacanikā	Daulata-rāma	—
85	Ga/116	Padma-Purāna Bhāsā	Daula -Rāma	—
86	Kha/3	Pāṅdava-Purāṇa	Subhacandra Bhaṭṭāraka	—
87	Ga/40	Pāndava-Purāna	Bu ā i dāsa	—
88	Jha/129	Pārsva Purāna	Raidhū	—
89	Jha/79	Pārśva Purāna	Sakalakirti	—
90	Kha/108	Pārśva-Purāna	Sakalakirti	—
91.	Ga/30/2	Pārśva-Purāna	Bhūdharadāsa	—
92	Ga/131	Pārśva-Purāna	Bhūdharadāsa	—
93	Kha/8	Pradyumna-Carita	Somakirti-Sūri	—
94.	Kha/9	Pradyumna-Carita	Somakirti Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose	34.8×15 8 749 11 43	C	Good 1953 V S	Colour panting by commentator on the wooden cover.
P	D, H Poetry	32 8×17 2 327 17 51	C	Good 1845 V S	
P	D, H Poetry	34 3×19 6 1246 12 45	C	Old	
P	D,Skt Poetry	32 5×17 6 143 14 :8	C	Good 1820 V S	Publisheed copied by Pandit Māyā Rāma
P	D, H Poetry	26 7×17 7 19: 13 37	Inc	Good	Last pages are missing
P,	D, Apb Poetry	35 5×16 7 38 13 52	C	Good 1993 V S	
P	D,Skt Poetry	32 8×17 8 96 11,83	C	Good	
P	D,Skt poetry	24 3×15 2 179 10 32	C	Old 1891 V S	Published
P	D, H Poe.ry	33 5×16 1 55 14 53	C	Good 1856 V S	Copied by Rāmasukhadāsa
P	D, H Poetry	33.1×20 3 80 12 45	C	Good 1953 V S.	Copied by cunnimâti
P	D,Skt. Poetry	28 5×13.6 241.9 45	C	Good 1943 V. S.	Published Naṭwarlāla Sharmā copied it
P,	D,Skt Poetry	27.7×14 4 271 10 33	C	Old 1777 V. S.	Published Copied by Sri Rai Singh.

1	2	3	4	5
95	Kha/167	Pradyumncaaritra	Somakirti Sūri	—
96	Kha/147/1	Pradyumncaaritra	Somakirti Sūri	—
97	Ga/133	Puṇyāśrava Kathā	Daulatarāma	—
98	Jha/11	Puṇyāsrava Kathā	—	—
99	Jha/82	Puṇyāśrava kathā Koṣa	Bhāvasingh	—
100	Ga/90	Puṇyāśrava kathā Kośa	Bhāvasimha	—
101	Jha/107	Purāṇasāra Saṁgraha	Dāmanandi	—
102	Jha/12	Pūjyapāda Caritra	Padmarāja Kavi	—
103/1	Ga/155	Rāmayaśorasāyana Rāsa	Keṣarāja Ṛṣi	—
103/2	Nga/6/10	Ratnatraya Kathā	—	—
104	Nga/5/6	Ratnatrayavrata Pūjā Kathā	Jinendrasena	—
105	Nga/6/8	Ravivrata Kathā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D,Skt. Poetry	24 7×11.3 151.15 40	C	Old 1752 V S	Published.
P	D;Skt Poetry	30 2×14 1 126 13 46	C	Old 1769 V S	Published.
P	D H Prose Poetry	32 5×19 6 178 14 34	C	Good 1874 V S.	
P	D H. Prose/ Poetry	27 2×14.6 50 13 36	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D, H Poetry	31 1×12 5 347 10 43	C	Good	
P	D, H, Poetry	35 6×21 3 167 16 47	C	Good 1962 V S	Copied by Pandita Sita Ram Sastri.
P	D,Skt Poetry	34.9×16 3 55 13 50	C	Good 1990 V S	Copied by Rośanalal, Jain Jt, also called caturviṁśatipurāna.
P	D, K Poetry	33 5×17 2 105 10 44	C	Good 1932	
P	D, H, Poetry	25.5×11,00 224.15,44	Inc	Good	Ninty three pages are missing
P.	D, H Poetry	22.8×18.1 4.17.20	C	Good	
P.	D,Skt.H Poetry	21 2×16 9 15.17.20	C	Good	
	D; H. Poetry	22.8+18 1 2.17.19	C	Good	

1	2	3	4	5
106	Nga/1/6/2	Ravivrata Kathā	Bhānukriti	—
107	Jha/109	Rājāvali Kathā	Devacandra	—
108	Ga/168	Rāmapamāropama Purāna		—
109	Kha/257	Rāma Purāṇa	Somasena	—
110	Jha/35/7	Rohiṇí Kathā	Hemarāja	—
111	Kha/185/2	Rotatijavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
112	Ga/72	Roṭatijavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
113	Jha/104	Ṛṣabha Purāṇa	Sakalakirti	—
114	Ga/98/1	Samyaktva Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
115	Ga/98/2	Samyaktva Kaumudí	,,	—
116	Ga/130	Samyaktva Kaumudí	,,	—
117	Ga8/39/	Samyaktava Kaumudí	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	18 2×13 8 3 16.18	C	Good	
P	D,K Prose	34 6×16 5 298 10 50	C	Good	
P	D,H Poetry	26 2×14 2 40 11 34	C	Good	
P	D,Skt Poetry	32 7×17 9 246 11 48	C	Good 1986 V S	It is also called padma-purāna
P	D,H poetry	16 1×16 1 9 13 19	C	Good	
P	D,H Poetry	23 0×14 0 17 6 38	C	Good 1950 V S	
P	D,H Poetry	23 2×14 1 10 6 21	C	Good	
P	D Skt Poetry	30 5×14 3 167 13 43	C	Old	It is also called Ṛṣabha-deva caritra unPublished
P	D,H Poetry	28 3×13 9 69 11 32	C	Good	
P	D,H Poetry	28 1×16 3 93 10 33	C	Good 1913 V S	Slokas 1700
P	D,Skt Poetry	30 1×14,8 32.13 24	Inc	Good	
P	D,H Poetry	38.2×20,8 35.14 53	C	Good 1970 V. S.	Copied by Bholi ārrā

1	2	3	4	5
118	Ga/136/1	Samyaktva-Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
119	Nga/5/3	Saṅkaṭa caturthí Kathā	Devendrabhūṣana	—
120	Nga/1/2/4	Saṅkaṭa catuthí Kathā	Devendrabhūṣana	—
121	Ga/161	Saptavyasana caritra	Bhārāmalla	—
122	Jha/95/1	Saptavyasana Kathā	Somakírti	—
123	Jha/95/2	Saptavyasana Kathā	Somakírti	—
124	Jha/96	Śayyādāna Vaṅka Cūlí Kathā		—
125	Kha/66	Śāntināthā Purāna	Sakalakí ti	—
126	Ga/45	Śāntināthā Purāna	Sevārāma	—
127	Ga/43	Śāntināthā Purāna	Sevārāma	—
128	Ga/41/3	Śílakathā	Bhārāmalla	—
129	Ga/101/2	Śílakathā	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Poetry	29.8×18 8 46 16.34	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 1×17 3 4 11.26	C	Good	
P	D, H Poetry	17 8×13.5 5 10.18	C	Good	
P	D, H Poetry	32 2×18 5 95 13 45	C	Good 1977 V S	
P	D,Skt Poety	29 8×13 5 163 10 20	C	Good 1829 V S	
P	D, H Po try	38 3×25 5 163 26 20	C	Good 1626 V S	
P	D, Skt Poetry	20 2 ×11 3 5 18 61	C	Good	5672 Ślokas; Published Copied by Guljārı Lāla Sharmā
P	D,Skt Poetry	30.0×19 0 172 12 47	C	Old 1621 V S	
P	D, H Poetry	32 5×18 6 189 17 36	C	Old	Damaged
P	D, H. Poetry	31 6×16.5 247.12.42	C	Good. 1943 V. S.	
P.	D, H Poetry	27.6×16 7 24.14 36	Inc	Good	24, 25 and Last pages are missing.
P.	D; H Poetry	33.1×18.5 27.12.41	C	Old	

1	2	3	4	5
130	Ga/99/2	Śīlakathā	Bhārāmalla	—
131	Ga/101/1	Śīlakathā	,,	—
132	Ga/138/2	Śīlakathā	,,	—
133	Ga/91	Śrenikacaritra	Śubhacandra	—
134	Jha/125	Śrenikacaritra	Śubhacandra	—
135	Jha/128	Śrenikacaritra	Jayamitra	—
136	Kha/96	Śrenikacaritra	Jayamitra	—
137	Ga/82	Śrenikapurāna	Vijayakīrti	—
138	Ga/150	Śrīpālacaritra	—	—
139	Kha/88	Śrīpālacaritra	Brahmanemidatta D/o Bhaṭṭāraka Mallibhūṣana.	—
140	Ga/16/1	Śrīpālacaritra	—	—
141	Ga/16/	Śrīpālacaritra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	33 1×16 8 31 11 33	C	Good 1905 V S,	
P	D, H Poetry	33 1×14.1 3? 10 36	C	Good	
P	D, H Poetry	25 2×16 1 49 10 24	C	Old	
P	D, H Poetry	35 3×20 3 93 16 57	C	Good 1962 V S	Copied by Pt Sitārāma
P	D, Skt Poetry	35 1×16 3 64 13 48	C	Good 1993 V S	
P	D,Apb, Poetry	35 6×16 5 35 13 51	C	Good 1993 V S	This another title of Vaidhamānakavya unpublished Copied by Rośanalāla Jain
P	D,Apb Poetry	25 8×11 5 75 13 37	C	Old	Unpublished
P	D, H Poetry	28 8×16 7 116 11 32	C	Good 1929 V S	
P	D, H Poetry	30 5×14 3 175 9 28	C	Good 1895 V S	Hariprasad seems to be copier Author's name is not mantioned
P	D,Skt Poetry	35 2×15 3 51.11.57	C	Old 1837 V S.	Unpublished
P	D, H Poetry	30 1×14 8 154.10 35	Inc	Good	Last pages are missing
P	D; H. Poetry	34.5×16 7 112.12 42	C	Old 1891 V. S	First and Third pages are missing

1	2	3	4	5
142	Kha/252	Śrīpurāna	Hastimalla	—
143	Kha/150/1	Śruta-Pañcamī-Vrata Kathā [Bhaviṣyadatta Caritra]	Padmasundara	—
144/1	Kha/127/1	Sudarsana Caritra	Sakalakīrti	—
144/2	Kha/73/2	Sudarśana Setha Katha		—
145	Nga/1/2/5	Sugandhadaśamī Kathā	Jnānasāgara	—
146	Jha/87	Sukośala Caritra	Raidhū	—
147	Kha/6	Uttara Purāna	Gunabhadrācārya	—
148	Ga/11	Uttara Purāna		—
149	Kha/157/1	Vardhamāna Caritra	Sakalakīrti	—
150	Ga/46	Vardhamāna Purāṇa	Khusācanda	—
151	Ga/57	Viṣnu kumāra Kathā	Vinodī Lāla	—
152	Kha/77	Vratakathā Kośa	Śrutásāgara	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt Poetry	33 5×20 7 38 13 39	C	Good	Unpublished
P	D,Skt, Poetry	31 3×12 4 42 11 56	C	Old 1800 V S	Last page is damaged
P	D,Skt Poetry	27 3×18 1 42 12 40	C	Old 1737 Saka-Samvita	900 Ślokas published,
P	D,Skt Poetry	22 5×16 5 4 3 26	C	Good	
P	D, H Poetry	17 8×13 5 6 10 18	C	Good	
P	D,Apb Poetry	33 7×19 5 17 16 49	C	Good 1987 V S	Unpublished
P	D,Skt Poetry	32 5×14 6 309 12 46	C	Good 1800 V S	Published contains 20,000 slokas
P	D, H Poetry	32 6×16 5 262 12 46	C	Good	First page is missing
P	D,Skt Poetry	26 5×12,8 122 10 42	C	Old 1886 V S	Published It is also called varddhamānapurāna
P	D, H. Poetry	33 3×17 1 92 12 45	C	Good 1884 V S Śaka 1749	
P	D, H Poetry	28 3×14 7 27 7 25	C	Good 1947 V. S	
P.	D,Skt. Poetry	29 5×13 5 71 14 47	C	Good 1937 V S	

1	2	3	4	5
153	Kha/92	Yaśodhara caritra	Vāsavasena	—
154	Jha/93	Yaśodhara caritra		—
155	Kha/82	Yaśodhara caritra	Vādirājasūri	—
156	Kha/133	Adhyātma kalpa druma	Muni Sundarasūri	—
157	Ga/86	Adhyātma Bārakhari	—	—
158	Ga/163	Anyamatasāra	Venicandra	-
159	Jha/6	Arthaprakāśikā Tikā	—	—
160	Ga/49/1	Aṣṭapāhuda Vacanikā	Kundakanda	Jayacandra
161	Ga/49/1	,, ,,	,,	,,
162	Kha/101	Ācārasāra	Viranandi	—
163	Nga/2/23	Ālāpapaddhati	Devasena	—
164	Kha/173/4	Ālāpapaddhati	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	27 4×12 5 44 9 14	C	Old 1732 V S	
P	D,Skt Poetry	26 6×11 3 28 12,48	Inc	Old 1501 V, S	Page No 4 and 5 are missing
P	D,Skt Poetry	29 7×15 4 23 10 38	C	Good 2440 Vira S	Uppublished
P	D Skt, Poetry	26 3×11 2 24 11 53	C	Old 1800 V S	Published
P	D, H Poetry	24 1×17 2 42 21 19	C	Old	First two pages are missing
P	D, H, Poetry/ Prose	28 3×11 1 67 6 43	C	Old 1936 V S	
P	D H Poetry	29 1×20 4 51 14 35	Inc	Good	It is commentary on Tattvārthasūtra Last pages are missing
P	D, H, Prose	34 8×21 3 194 13 38	C	Good	
P	D, H Poetry	35 7×21 3 156 14 44	C	Good 1946 V S	Copied by Gangārāma
P	D;Skt, Poetry	20 8×11 2 72 10 38	C	Old 1952 Śaka Sm	
P	D,Skt Prose	19 4×15 5 18 13 15	C	Good	Published
P.	D;Skt, Prose	27,2×17 5 8 13 35	C	Old 1949 V S.	It is also called Nayacakra

1	2	3	4	5
165	Nga/2/31	Ārādhanāsāra mūla	Devasena	—
166	Ga/151/1	Ārādhanāsāra	Pannālāla	—
167	Kha/275	Ārādhanāsāra	Ravicandra	—
168	Kha/177/12	Āṣāḍha Bhūti caupāí	Āṣādha Bhūti Muni	—
169	Ga/86/2	Ātmabodha-Nāmamālā	—	—
170	Jha/113	Ātmatattva-Parīkṣaṇa	Devarājarāja	—
171	Jha/112	Ātmānusa	—	—
172	Kha/145/2	Ātmānuśāsana	Gunabhadra D/o Jinasena	—
173	Kha/105/3	Ātmānuśāsana	Gunabhadra	—
174	Ga/145/2	Ātmânuśāsan tikâ	Gunabhadra	—
175	Kha/165/7	Āvśyakavidhi Sūtra	—	—
176	Ga/108	Banârasí-Vilâsa	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 13 13 16	C	Good	Published
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	32 3×12 5 45 7 35	C	Good 1931 V S	
P	D,Skt Po tiy	20 4×17 4 46 12 23	C	Good 1944 A D	Contains 247 Slokas Copied by N Chandra Rajendra
P	D, H Poctry	24 6×11 1 12 13 36	C	Old 1767 V S	
P	D, H Poetry	24 1×17 2 32 21 16	C	Cood	
P	D, Skt Prose	35 2×16 5 14 8 32	C	Good	
P	D,Skt Poetry	35 2×16 2 2 8 34	C	Good	
P	D,Skt poetiy	31 8×14 1 33 9.44	C	Old 1940 V S	Published
P	D,Skt Poetry	29 5×15 5 20 9 52	C	Good	
P	D,Skt/H Prose/ Poetry	28 5×14 7 156 10 36	C	Old 1858 V S	
P	D,Pkt Poetry	25 8×10 8 7 7.59	C	Old 1642 V S	
P,	D, H Poetry	23 9×15 8 109.19 20	Inc	Old	Opening and closing pages are missing.

1	2	3	4	5
177	Ga/1	Bhagavai Ārādhanā	Śivācārya (Śivakoti)	Sadāsukha
178	Ga/111/1	Bāīsa Parīṣaha	—	—
179	Kha/215	Bhavyakaṇṭhābharana pañjikā	Arhaddāsa	—
180	Kha/216	Bhavyānanda Śāstra	Pāndeya Bhūpati	—
181	Kha/199	Bhavasaṁgraha	Śrutamuni	—
182	Kha/124	Bhāvasaṁgraha	Vāmadeva	—
183	Kha/189	Bhāvanāsara Saṁgraha	Cāmunda Rāya	—
184	Kha/136/1	Brahmacaryāṣṭaka	Padmanandi	—
185	Ga/6	Brahma-Vilāsa	Bhagawati-Dasa	—
186	Ga/95	,,	,	—
187	Ga/110/3	Bramhā Brama-Nirūpana	—	—
188	Ga/169	Buddhi-Prakāśa	Dipacanda	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	35 5×18 1 410 13 54	C	Good	
P	D, H Poetry	20 7×16 6 08 11 28	C	Old 1749 V S	
P	D,Skt Poetry	16 9×15 3 23 11 27	C	Good 2451 Vira S	Copied by Nemirāja
P	D, Skt Poetry	16 3×15 2 12 11 30	C	Good 2451 Vira S	Copied by Nemirāja and Sketched of Bahubali on first page
P	D Pkt Poetry	29 8×19 6 19 9 35	C	Good	It is also called Bhāvatribhaṅgi
P	D,Skt Poetry	28 4×11 5 48 8 40	C	Old 1900 V S	Published
P	D, Skt Poetry	26 3 ×10 6 60 10 57	C	Old 1598 V S	It is also called cāritrasāra
P,	D,Skt Prose/ Poetry	34 5×20 6 111 15 52	C	Good 1939 V S	Copied by Suganachanda
P	D, H Poetry	31 8×14 3 129 9 48	C	Good 1755 V S	
P	D, H Prose	37 6×19 9 108 12 37	C	Good 1954 V S	
P	D, H Poetry	20 7×16 1 16 14 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	31 8×19 1 99 14 50	C	Good 1978 V. S	Copied by Pt Dubay Rūpanārayana

1	2	3	4	5
189	Ga/172	Buddhi-Vilāsa	Bakhatarāma	—
190	Ga/106/7	Candraśataka	—	—
191	Kha/175/1	Carcā Nāmāvali	—	—
192	Ga/135/3	Carcāśataka Vacanikā	Dyānatarāya	—
193	Ga/48/1	,, ,,	,,	—
194	Ga/48/2	,, ,,	,,	—
195	Ga/146	Carcā Saṃgraha	—	—
196	Ga/152/1	Carcā Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
197	Ga/13	,, ,,	Durgālāla	—
198	Ga/135	Carcāsāgara Vacanikā	Swarūpa	—
199	Ga/67	Caritrasāra Vacanikā	—	—
200	Ga/121	,, ,,	Cāmuṇḍarāya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	32 3×17 5 68 13 46	C	Old 1982 V S	
P	D, H Poetry	23 9×16.8 10 25 26	C	Old	
P	D, H Poetry	26 1×16 8 49.12 28	C	Old 1942 V. S	Copied by Pt Chobey Mathurā Prasāda
P	D, H Prose	31 8×16 1 83 10 40	C	Good 1914 V S	Copied by Nandarāma
P	D, H Prose Poetry	25 1×14 3 41 10 26	Inc	Old	Last pages are missing
P	D, H, Prose Poetry	33 3×21 7 91 16 23	C	Good 1929 V S	
P	D, H Prose/ Poetry	32 8×15 8 353 12 35	C	Good 1854 V S	Fatecanda sanghai seems to be copier
P	D, H Prose/ Poetry	27 9×12 9 80 13 37	C	Old	
P	D, H, Poetry	27 7×16 2 133 10 32	C	Good 1959 V S	
P	D, H Prose/ Poetry	29 2×19 2 242 19 32	C	ood	
P	D, H Poetry	27 5×19 6 103 14 26	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D, H. Prose	30 3×15 8 212 9 36	,,	Good	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
201	Kha/177/1	Caubisa ṭhāṇā	—	-
202	Kha/210 (K	Caubisagaṇagāthā	—	—
203	Kha/177/9	Caudasaguṇa Niyam	—	—
204	Ga/80/4	Caudaha Guṇasthāna	—	—
205	Kha/188/1	Causaraṇa Painna	-	—
206	Ga/86/3	Cālagaṇa	—	—
207	Kha/171/3	Chahadhālā	Doulat rāma	—
208	Kha/170/4	Chiyalisa doṣa rahita ahāra Śuddhi	—	—
209	Kha/161/1	Darśanasāra	Devasena	—
210	Ga/32	Darśanasāra Vacanikā	—	—
211	Ga/164	Dasalakṣaṇa Dharma	Sumati Bhadra ?	Sadāsuka-dāsa
212	Kha/214	Dānaśāsana	Vāsupujya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt Poetry	30 4×15 3 18 11 39	C	Old 1725 V S	
P	D, Pkt/H Prose/ Poetry	26 8×15 8 24 14 30	C	Good 1967 V S	Copied by Karam canda Rāmajı
P	D, H Prose	26 6×11 9 1 10 35	C	Good 1810 V S	Only on page is available.
P	D, H Prose	23 2×15 3 57 22 22	C	Old 1890 V S	
P	D, Pkt Poetry	25 2×10 8 11 14 28	C	Old 1682 V S	
P	D, H Poetry	24 1×17 2 13 18 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×17 8 11 12 29	C	Good 1950 V S	
P	D, H Poetry	27 3×17 6 2 12 27	C	Old	
P	D,Pkt Poetry	26 6×13 1 4 10 44	C	Old 1886 V, S	Published
P	D, H Prose	33 1×15 1 105 11 58	C	Good 1923 V S	
P	D, H Prose	22 8×15 1 42 12 30	C	Good 1978 V S	
P	D, Skt Poetry	34 8×14 5 59 10 55	C	Good	

1	2	3	4	5
213	Nga/2/21	Dravyasaṁgraha	Nemicandra	—
214	Kha/173/1	,,		—
215/1	Nga/6/19	,,	,,	—
215/2	Kha/73/1	,,	,	—
216	Ga/111/5	,,	,,	—
217	Ga/111/3	,,	,,	—
18	Ga,79/2	,,	,,	Dyanāta Rāya
219	Ga/134/7	,,	,	Bhagavati Dāsa
220	Jha/50	,,	,,	,,
221	Jha/30	,,	,,	Bhagavati āsa
222	Jha/25/1	,,	,,	Dyānata rāya
223	Kha/165/2	Dravyasaṁgraha saṭika	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Pkt Poetry	19.4×5 5 6 13 15	C	Good	
P	D,Pkt, Poetry	27 2×17 6 6 8 42	C	Old 1948 V S	Published copied by Munindra Kirti
P	D,Pkt Poetry	22 8×18 1 6 13 16	C	Old 1273 Sana	
P	D,Pkt Poetry	16 7×12 8 12 10 13	C	Good	published
P	D, H Poetry	21 2×15 8 10 15 18	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D,Pkt/H Poetry	21 3×16 7 18 16 15	C	Old	
P	D,Pkt /H , Prose/ Poetry	25 3×16 2 30 11 27	C	Good 1962 V S	
P	D, H Poetry	30 3×16 3 10 14 40	C	Good 1731 V S	
P	P,Pkt /H Poetry	21 2×16,7 15 15 20	C	Old	
P	D, H Poetry	18 2×10 8 33 7 23	C	Good 1731 V S	
P	D, H Poetry	22 9×15 4 9 23 19	C	Good	
P.	D,Pkt/ Skt Prose	24 8×11 3 24 10 50		Old 1721 V. S	Unpublished.

1	2	3	4	5
224	Ga/65	Dravyasamgraha Vacanikā	Nemicandra	Jayacanda
225	Kha/125	Dharma Parīkṣā	Amitagati D/o Mādhavasena	—
226	Kha/102	,,	Amitagati	—
227	Ga/24	,,	Manoharadāsa	—
228	Ga/25		,,	—
229	Ga/71	,,	,,	—
230	Jha/65	Dharma Ratnākara	Jayasena	—
231	Kha/157	,,	,,	—
232	Ga/113	Dharm Ratnodhyota	Jagamohandāsa	—
233	Ga/100	,,	,,	—
234	Ga/159	Dharmrasāyana	Padmanandi Muni	Devidāsa
235	Kha/45	,,	,, ,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry Prose	28 1×20 5 39 14 33	C	Good	First page is missing
P	D,Skt Poetry	27 2×13 4 110 9 34	C	Old 1681 V S	Published
P	D,Skt Poetry	25 8×11 4 72 11 41	C	Old 1776 V S	Published
P	D, H Poetry	33 6×14 6 174 8 16	C	Good	Contains 3300 chandās
P	D, H Poetry	30 5×15 1 130 12 28	C	Old	Copied by Dharmadāsı
P	D H, Poetry	23 4×12 6 242 9 20	C	Good 1860 V S	
P	D,Skt Poetry	33 7×20 8 80 12 43	C	Good 1985 V S	Published
P	D,Skt, Poetry	26 4×12 5 144 9 46	C	Old 1910 V S	Published From page 69th to 84th are missing
P	D, H Poetry	28 3×14 3 232 9 21		Good 1945 V S	Published
P	D, H Poetry	27 5×16 3 164 12 21	C	Good 1948 V S	Published, Copied by Nīlakaṅṭhadāsa
P	D,Pkt/H Poetry	33 1×16 5 19 14 42	C	Good	Published
P	D;Pkt/H. Poetry	30 6×16 5 18 5 45		Old	

1	2	3	4	5
236	Ga/153	Dharma Vilāsa	Dyānatarāya	—
237	Ga/14	,,	,,	—
238	Ga/112/1	,,	,,	—
239	Kha/188/3	Dharmopadeśa Kāvya Tīkā	Lakṣmīvallabha	—
240	Jha/40/1	Dhālagana	—	—
241	Jha/35/6	,,	—	—
242	Kha/19/2	Gommatasāra (Jīvakānda)	Nemicandra D/o Abhayanandi	—
243	Kha/274	Gommaṭasāra-Vrtti (Jīvakānda)	Nemicandra	—
244	Ga/128/1	Gommatasāra (Jīvakānda)	Todaramala	—
245	Ga/128/2	Gommaṭasāra (Karmakānd)	Nemicanda	—
246	Nga/2/22	,,	,,	—
247	Kha/173/2	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Prose	27 8×13 1 249 11 36	C	Good	
P	D, H Poetry	33 1×19 3 166 14 48	C	Good 1941 V S	
P	D, H Poetry	21 9×15 5 165 18 17	C	Good	
P	D,Skt Prose	24 3×10 6 28 17 71	C	Old	With svopajña vṛtti
P	D, H Poetry	15 4×11 9 14 10 20	C	Good	It is collected in a Guṭakā
P	D, H Poetry	16 1×16 1 10 14 20	C	Good	
P.	D,Pkt Poetry	34×16 8 48 14 65	C	Old	Published
P	D,Skt / Pkt Prose/ poetry	34 5×12 9 218 12 60	C	Good	Published
P	D, H Prose	46 5×22 5 635 16 72	C	Good 1848 V S	
P	D,Pkt Poetry	32 2×18 9 14 7 35	C	Good	
P	D,Pkt Poetry	19 4×15 5 22 13 16	Inc	Good	
P.	D. Pkt Poetry	27 2×17 5 9 11 38	Inc	Old	Last pages are missing

1	2	3	4	5
248	Jha/3	Gommaṭasāra (Karmakāṇḍa)	Nemicandra	Hemarāja
249	Kha/134/4	,,	,,	,,
250	Kha/192	Gotrapravara nirnaya	—	—
251	Ga/106/5	Guṇasthāna carcā	—	—
252	Ga/174	Guropadeśa Śrāvakācara	Dalūrāma	—
253	Ga/34	Guru Śiṣya Bodha	—	—
254	Kha/227/1	Hitopadeśa	—	—
255	Jha/90	Indranandisaṅhitā	Indranandi	—
256	Ga/93/4	Iṣ opadeśa	Pūjyapāda	Dharma-dāsa
257	Ga/151/3	Jala Gālanı	Megha kirti	—
258	Jha/97	Jambūdvipa-prajnapti Vyākhyāna	Padmanandi	—
259	Kha/259	Jainācāra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	31 2×15 7 41 15 48	Inc	Good 1888 V S	
P	D, H Prose	31 9×16 6 60 12 40	C	Cood 1845 V S	
P	D,Skt Prose	34 1×21 5 4 21 29	C	Good	Written on register size paper
	D, H Prose	23 9×16 8 36 25 26	C	Old 1736 V S	
P	D, H Poetry	32 4×17 5 183 12 40	C	Good 1982 V S	Copied by Pt Bacculāl Coubay
P	D, H Prose	27 1×16 6 130 8 23	Inc	Old	129 Page is missing
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 4 11 56	C	Good 1987 V S	Copied by Batuka Prasāda
P,	D,Pkt Poetry	35 2×21 6 23 11 52	C	Good 1987	
P	D, H Prose/ Poetry	27 7×17 1 4 11 32	Inc	Good	
P	D, H. Poetry	26 2×12 2 3 13 29	C	Old	Meghakirti seems to be Auther and copier
P.	D,Skt Prose	35 3×16 4 21 11 52	C	Good 1979 V S	Copied by Baṭuka Prasad.
P.	D, H Poetry	21 2×16.8 109.12 32	C	Good	

1	2	3	4	5
260	Kha/225	Jinasaṁhitā	Eakasandhi Bhaṭṭāraka	—
261	Kha/127/2	Jivasamāsa	—	—
262	Ga/127	Jnânasūryodaya Nāṭaka	Vādicandra Sūri	Bhāga-canda
263	Ga/52	Jñānasūryodaya Nāṭaka Vacanikā	,,	,,
264	Ga/78	Jñāna Sūryodaya Nāṭaka Vacanikā	,,	,,
265	Ga/87	,, ,,	,,	,
266	Kha/164	Jñānārnava	Śubhacandra	—
267	Kha/71	,	,,	—
268	Ga/58/2	,,	,	—
269	Ga/58/1	,,	Vimalagani	—
270	Kha/163/3-4	Jñānārnava Tikā (Tatvatraya Prākāśini)	—	—
271	Kha/276	Karma Prakrti	Abhayacandra Siddhānta Cakravarti	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	35.8×21 3 44 13 54	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	24 4×15 2 2 10 32	Inc	Old	Only last two pages are available
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	27 4×12 8 62 10 38	C	Good 1961 V S	Copied by Sitārama Śāstri
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	32 7×21 8 49 15 38	C	Good 1945 V S	
P	P, H Poetry	21 2×11 3 109 8 29	C	Good 1869 V S	
P	D, H, Poetry	43 5×26 8 56 24 34	C	Good 1946 V S	
P	D, Skt Poetry	27 1×11 4 105 11 38	C	Old 1521 V S	Published
P	D, Skt Poetry	30 0×16 5 85 14 43	C	Old 1780 V S	Published
P	D, Skt Poetry	32 2×16 3 245 14 42	C	Old 1870 V S	Published
P	D, H Poetry	29 5×13 4 111 10 40	C	Good 1869 V S Sakes 1734	Copied by Shivalala.
P	D; Skt Prose	25 4×11 6 10 10 36	C	Old	
P	D, Skt Prose	20 4×17 4 42 12 29	C	Good 1944 A D	Copied by N Chandra Rajendra

1	2	3	4	5
272	Kha/109	Karmprakṛti grantha	Nemicandrācarya	—
273	Jha/43	Karmavipâka	—	—
274	Jha/58	Kaṣâyajaya Bhāvanâ	Kanakakirti	—
275	Kha/139	Kârtikeyânuprekṣâ Satika	Swāmi Kārtikeya	Subhacan-dra
276	Kha/142	,, ,,	,, ,,	,,
276	Kha/85	,, ,,	,, ,,	—
277	Ga/17	Kārtikeyânuprekṣâ Vacanikā	Jayacandra	—
278	Kha/163/1	Kriyâkalāpa-tikā	Prabhācandra	—
279	Ga/56	Kriyâkalāpa Bhāṣā	—	—
280	Jha/7 Kha	Laghu Tattvārtha	—	—
281	Nga/7 Ga/11	,, ,,	—	—
282	Ga/157/9	Loka Varnana	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt Poetry	27 7×15 2 10 12 34	C	Old 1669 V S	
P	D, Pkt Poetry	26 2×13 1 50 6 27	C	Good 1966 V S	
P	D, Skt Poetry	21 1×17 3 9 7 21	C	Good 1926 A D	Published in Jaina Siddhanta Bhaskara, Arrah
P	D, Pkt / Skt Poetry	31 8×15 0 200 13 46	C	Old	Published
P	D, Skt Poetry	32 7×16 2 228 13 43	C	Good 1858 V S	Published Copied by Khemchandra
P	D, Pkt Skt Poetry	25 5×16 4 56 12 42	C	Good 1890 V S	Published
P	D, H Poetry	35 1×17 8 189 10 33	C	Good 1914 V S	
P	D, Skt Prose	26 9×11 8 102 13 52	C	Old 1570 V S	
P	D, H Poetry	29 6×13 8 109 12 34	C	Good 1940 V S	
P	D, Skt Prose	28 3×14 2 2 9 27	C	Good	It is also named Arhatpravacana
P	D; Skt Prose	21 1×13 3 2 18 12	C	Good	It is also named Arhatpravacana
P	D,Pkt /H Prose/ Poetry	16 6×11 1 22 7 13	Inc	Good	Last pages are missing

1	2	3	4	5
283	Kha/251	Lokavibhāga	—	—
284	Kha/70/1	Marana Kandikā	—	Samanlal
285	Ga/23	Mithyātvakhandan	—	—
286	Ga/75	,,	—	—
287	Ga/42	,, Nāṭaka	—	—
288	Ga/5	Mokṣmārga Prakāśaka	Todaramala	—
289	Ga/142	,,	,,	—
290	Ga/134/6	Mṛtyu Mahotsava Vacanikā	—	—
291	Ga/157/4	,,	—	—
292	Kha/254	Mūlācāra	Kundakundācārya ?	—
293	Kha/135/2	Mūlācāra Pradīpa	Sakalakīrti Baṭṭāraka	—
294	Kha/143/1	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D,Pkt / Skt Poetry	32.2×20 6 70 13 43	C	Good	Copied by Muni Sarvanandi
P	D,Pkt,/H Poetry	23 8×16 3 26 16 17	C	Old 1887 V S	
P	D, H Poetry	33 4×13 8 88 8 39	C	Good 1935 V S	It is writen on thin paper
P	D, H Poetry	22 3×13 8 260 20 24	C	Old 1871 V S	
P	D, H Poetry	25 5×16 4 335 14 14	C	Old	Totel No of chhanda's 1353
P	D, H Prose	35 2×20 6 172 15 48	C	Good	
P	D, H Prose	34 5×17 8 239 12 36	C	Good	
P	D, H Prose	30 9×16 8 9 13 43	C	Good 1944 V S	Siyārām seems to be copier
P	D,Skt /H Poetry/ Prose	19 9×15,4 27 12 16	C	Old 1918 V S	First two pages are missing
P	D, Pkt. Poetry	20 7×16 7 108 11 30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35 7×21 2 61 19 66	C	Old	published
P.	D, Skt. Poetry	31 6×14.3 156 12 39	C	Old 1874 V S	Published copied by Dayachandra.

1	2	3	4	5
295	Kha/211	Navaratna Parikṣā	Buddha-Bhatta	—
296	Ga/119	Nayacakra Satika	Hemarāja	—
297	Kha/201	Nitisāra (Samaya Bhūṣana)	Indranandi	—
298	Kha/105/1	Nitisāra	,,	—
299	Kha/34	Nyāyakumuda candrodaya	Prabhācandra	—
300	Kha/21	Padmanandi Pañcaviṁśatikā	Padmanandi	—
301	Kha/30	,,	,,	—
302	Kha/160/3	Pañcamithyātva Varnana	—	—
303	Ga/70	Pañcāsitakāya Bhāśā	—	—
304	Jha/18	,	Kundakunda	Hemarāja
305	Kha/265	Pañca Saṁgraha	—	—
306	Jha/119	Paramārthopadeśa	Jñānabhūṣana	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry Prose	21 1×11 5 25 8 31	C	Recent 1925 V S	
P	D, H Prose	25 6×13 4 18 9 43	C	Good 1956 V S	
P	D,Skt Poetry	29 8×19 4 9 7 36	C	Good	Published Samaya Bhūṣana is written as title of this work in last line
P	D, Skt Poetry	29 5×15 5 6 9 40	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	32 2×20 1 333 16 54	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	32 ×16 5 59 10 60	C	Old	
P	D,Skt Poetry	24 ×12 5 198 5 30	C	Old 1839 V S	First page rottan
P	D,Skt, Poetry	28 0×11 9 14 11 40	C	Good 1803 V S	Unpublished
P	D, H Prose	27 1×11 8 225 9 36	Inc	Old	First two and closing pages missing
P	D,Pkt/H Poetry/ Prose	24 1×15 1 88 18 17	Inc	Old	Total p ages are damaged
P	D, Pkt Poetry	35 5×17 4 73 12 47	C	Good 1527 V S	
P.	D, Skt Poetry	35 3×16 4 8 13 53	C	Good 1992 V S	Unpublished

1	2	3	4	5
307	Kha/170/3	Paramātma Prakāśa	Yogīndradeva	—
308	Ga/29	Paramātma Prakāśa Vacanikā	Doulata Rāma	—
309	Ga/81	,, ,,	—	—
310	Jha/57	Parasamaya-grantha	—	—
311	Ga/175	Praśnamālā bhāṣā	—	—
312	Kha/227/2	Prabodhasāra	Yaśah kīrtí	Brahma-deva
313	Kha/67	Prasnottaropāsakācāra	Bhaṭṭāraka Sakalakīrti	—
314	Kha/158	,,	,,	—
315	Ga/31	Praśnottara Śrāvakācāra	Bulākidāsa	—
316	Kha/165/6	Pratikramana Sūtra	—	—
317	Kha/246	Pravacana Parīkṣā	Nemicandra	—
318	Kha/279	Pravacana-Praveśa	Bhaṭṭākalaṅka	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Apb Poetry	29 4×16 5 30 14 49	C	Old 1829 V S	Published
P	D, H Prose	31 5×16 3 224 11 37	C	Good 1861 V S	
P	D, H Prose	27 9×16 3 47 9 25	C	Good	
P	D,Skt Poetry	21 1×16 9 20 12 17	C	Good	
P	D, H Prose	32 5×17 6 34 12 38	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 60	C	Good	Published
P	D, Skt Poetry	30,2×19 5 108 12 47	C	Good 1875 V S	Published 3300 Ślokas, copied by Guljārilāla
P	D, Skt poetry	28 3×11 8 155 10 38	Inc	Old	Published Last pages are missing
P	D, H Poetry	32 1×16 3 77 13 56	C	Good 1821 V S	
P	D,Pkt Prose/ Poetry	26 7×11 4 4 11 43	C	Old	
P	D,Skt Prose/ Poetry	—	—	—	—
P.	D: Skt Poetry	20 9×11 4 8 8 27	C	Good 1925 A D	Copied by Nemi Raja

1	2	3	4	5
319	Kha/152	Pravacanasāra Vrtti	Kundakunda	Amṛtacandra Sūri
320	Ga/35	Pravacana Sāra	,,	Vṛndāvana
321	Kha/285	Prāyaścitta	Akalanka	—
322	Ga/134 Ka/7	Punya Paccisi	Bhagavatidāsa	—
323	Ga/73	Puruṣārtha-Siddhupāya	Amṛtacandra	Todaramala
324	Ga/54	,, ,,	,,	,
325	Kha/141/3	Ratnakaranda-Śrāvakācāra Mūla	Samantabhadra	—
326	Ga/89	Ratna-karanda Śrāvakācāra Vcanikā	,,	—
327	Ga/50	,, ,,	,,	Camparāma Sahāya
328	Kha/59	Ratnakaranda Viṣamapada	Samantabhadrācārya	—
329	Nga/2/36	Ratnamālā	Śivakoti	—
330	Kha/200/1	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Prose	28 2×14 1 116 11 45	C	Old 1705 V S	Published,
P	D, H Poetry	28 8×18 3 171 12 29	C	Good 1966 V S	Pu hed
P.	D, Skt Poetry	22 2×17 1 19 7 25	C	Good 1976 V S	Copied by Pt Mūlacandra It is also called Śravakācāra, published,
P	D, H Poetry	30 3×16 3 4 14 45	C	Good 1733 V S	
P	D, H Prose	23 6×12 9 181 9 24	C	Good 1927 V S	
P	D, H, Poetry	28 1×16 2 200 9 26	C	Good 1947 V S	Copied by Haracanda Rāya
P	D, Skt Poetry	33 4×15 6 8 10 46	C	Old	Publish
P	D, H Prose/ Poetry	34 5×25 3 325 17 42	C	Old 1929 V S	
P	D; H Prose/ Poetry	33 1×20 2 128 16 45	C	Good 1951 V S	
P	D; Skt Prose	35 5×15 1 15 11 41	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 7 13 16	C	Good	Published by MD. G. Series, Bombay
P.	D; Skt Poetry	29 8×19 4 6,8 37	C	Good	Published by MDG. Series No 21, Bombay

1	2	3	4	5
331	Kha/43	Rājavārtika	Akalaṅka	—
332	Ga/106/6	Rūpacandra-Śataka	Rūpacandra	—
333	Nga/2/37	Sadbodha-Candrodaya	Padmanandi	—
334	Jha/59	,, ,,	,,	—
335	Nga/2/38	Sajjanacitta-Vallabha	Malliṣena	—
336	Jha/17	,, ,,	,,	Haragulāla
337	Nga/2/33	Saṁbodha-Pañcāsikā	Gautamaswāmi	—
338	Jha/120	Saṁbodha pañcāsikā Satika	,,	—
339	Kha/151	Samayasāra (Ātmakhyāti Tika)	Kundakunda	Amrtaca-ndra Sūri
340	Kha/130	,, ,,	,,	Aṁrtacan-drācārya
341	Kha/28	Samayasāra Satika	,,	Amrtaca-ndra Sūri
342	Ga/106/2	Samayasāra Nāṭaka	—	Banārasi-dāsa

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	29 3×19 8 576 13 45	C	Good	Published by B J. Delhi
P	D, H Poetry	23 9×16 8 3 25 30	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 7 13 14	C	Good	Unpublished,
P	D, Skt Poetry	21 2×17 1 10 7 20	C	Good	Unpublished
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 6 13 15	C	Good	Published
P	D,Skt /H Poetry/ Prose	24 5×17 4 25 14 30	C	Good 1953 V S	
P	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 6 13 15	C	Good	
P	D, Pkt Skt Poetry/ Prose	35 4×16 3 7 13 52	C	Good 1992 V S.	Copied by Rośanalāla
P	D,Pkt / Skt Poetry/ Prose	29 4×13 5 165 10 52	C	Old	Published by Digambar Jain Grantha Bhandar Series, Kāśī
P.	D, Pkt Skt Poetry	27 8×11 8 124 11 56	C	Old 1900 V S	Published
P	D,Pkt / Skt Poetry/ Prose	25.9×11 5 194 9 46	Inc	Old	Published last pages are missing
P.	D; H. Poetry	23 9×16 8 45 26 29	C	Old 1735 V S	

1	2	3	4	5
343	Ga/107	Samayasāra Nāṭaka	Banārasīdāsa	—
344	ι/ 80/1	,, ,,	,,	—
345	Ga/115	,, ,,	,,	—
346	Ga/126	,, ,, Sārtha	,,	—
347	Ga/152/5	,, ,,	,,	—
348	Ga/111/4	,, ,,	,,	—
349	Ga/30/1	,, ,,	,,	—
350	Ga/149	,, ,,	,,	—
351	Ga/152/4	,, ,,	,,	—
352	Kha/35	Samyakatva Kaumudī	—	—
353	Ga/59/1	Samādhi-Maraṇa	Bakasa Rāma	—
354	Jha/2	Samādhi-Tantra	Kundakundācārya	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	23.6×15 8 87 23 24	C	Old	
P	D, H. Poetry	23 2×15 3 75 21 22	C	Old 1890 V S	
P	D, H Poetry	22 8×13 5 122 14 20	C	Old 1745 V S	
P	D, H Poetry	27 9×13 6 200 14 36	C	Good	
P	D, H Poetry	26 3×11 1 88 10 35	C	Old	Last pages are missing
P	D, H Poetry	20 4×16 5 110 11 27	C	Good 1886 A D	Copied by Durga Prasad
P	D, H Poetry	32 5×16 2 54 12 48	C	Old 1862 V S	
P,	D, H Poetry	29 1×13 8 75 11 38	C	Old 1725 V S	
P	D, H Poetry	22 5×12 3 108 10 31	C	Old 1876 V S	Copied by Nityānand Brahman 1st page is missing
P	D, Skt Poetry	29 4×20 2 105 12 33	C	Good	
P.	D, H Prose	28 5×12 8 15 10 48	C	Good 1862 V S.	
P.	D,Skt/H. Prose/ Poetry	31 3×15 7 107.13 51	C	Good 1874 V S	Copied by Raghunātha Sharma

1	2	3	4	5
355	Ga/53	Samâdhi-tañtra Satika	—	—
356	Kha/26	Samâdhi- tañtra	—	—
57	Ga/64/1	Samādhi-tañtra Vacanikā	Mānikacañd	—
358	Kha/46/1	Samâdhi-Śataka	Pūjyapâda	—
359	Ga/134/2	Sammeda-Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
360	Kha/194	Saptapañcâsadaśtravikā	—	—
361	Kha/106	Satvatribhangi	—	—
362	Jha/135	Satyaśāsana Parikshâ	Vidyânandi	—
363	Kha/57	,, ,	,	—
364	Kha/161/3	Sāgâradharmâmṛita (Svopajna tika)	Âśâdhara	—
365	Nga/2/3	Sâmâyika	—	—
366	Nga/7/11 Kha/	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt H Poetry	32 1×14 4 152 13 3		Old 1788 V S	
P	D, Skt Poetry	26 3×12 7 26 8 27	C	Old 1848 V S	
P	D, H Poetry Prose	32 2×12 3 31 7 40	C	Good 1938 V S	
P	D, Skt Poetry	25 4×10 8 14 4 42	C	Old 1814 V S	Published It is also called samādhi tantra
P	D, H Poetry	32 2×17 5 34 13 43	C	Good 1933 V S	Copied by Gulalcand Slokas No 1260
P	D, Skt, Prose/ Poetry	34 1×21 5 65 21 30	C	Good	Written on register size paper
P	D, Pkt Poetry	34 ×14 4 11 12 48	C	Good	Copied by Rangnātha Bhaṭṭāraka.
P	D, Skt, Prose	20 8×16 8 78 20 25	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	34 6×14 2 29 12 53	C	Good	Published
P	D, Skt Poetry	25 6×12 7 154 12 40	C	Old 1900 V S	Published by M D G Bombay
P	D, Pkt Prose/ Poetry	19 4×15 5 22 13 14	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	21 1×13 3 1 18.14	C	Good	

1	2	3	4	5
367	Nga/7/9	Sāmāyika	—	—
368	Nga/2/17	,,	—	—
369	Ga/22	,, Vacanikā	Jayacanda	—
370	Ga/76	,, ,,	,,	—
371	Kha/150/3	Śāsna Prabhâvanā	Vasunandi	—
372	Kha/53	Śāśtrasāra Samuccaya	—	,
373	Kha/110	Sidhāntāgama Praśastí	—	—
374	Kha/81	Siddhântasāra	Jinendra ?	—
375	Kha/46/3	,,	Sakalakirti Bhaṭṭarka	—
376	Kha/40/3	Siddhāntasāra Dipaka	,,	—
377	Kha/280	Siddhiviniṣcaya Tikâ	Ananta-Virya	—
378	Kha/170/1	Ślokavārttika	Vidyanandi	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt/ H Poetry Prose	21 1×16 2 5 16 13	C	Old	
P	D, H Prose	19 4×15 5 3 12 15	C	Good	
P	D, H Poetry	27 4×14 6 38 12 35	C	Good 1870 V S	
P	D, H Poetry	21 4×11 3 94 6 23	C	Good	
P.	D,Skt Prose	30 8×12 2 31 11 79	C	Old	Unpublished
P	D, Skt Poetry	38 2×20 6 144 14 36	Inc	Old 1968 V S	Last pages are missing
P	D, Pkt Poetry	23.2×17 5 11 12 27	C	Good 1912 A D	Copied by Tātyā Nemināth Pāngal.
P	D, Pkt poetry	29 6×15 3 6 10 35	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 8×17 1 148 13 44	C	Old 1830 V S	Unpublished
P	D,Skt Poetry	31 ×20 2 103 13 48	Inc	Old	Opening and closing are missing
P.	D,Skt Prose/ Poetry	34 6×21 7 76 14 46	C	Good	It is first prastāwa (chap ter) only
P,	D, Skt. Prose/ Poetry	28 3×18 7 62 14 70	Inc	Good	Published, Last pages are missing.

1	2	3	4	5
379	Nga/2/2	Śrâvaka Pratikramana	—	—
380	Jha/118	Śrāvakācāra	Guna-Bhūṣana	—
381	Kha/203	,,	Pūjyapāda	—
382	Ga/28	,,	—	—
383	Ga/63	,,	—	—
384	Kha/160/5	Śrutaskandha	Brahma Hemacandra	—
385	Kha/41	Śrutasâgari Tikā	Śrutasāgara Sūri	—
386	Ga/92/2	Sudṛiṣti Taraṅgini	—	—
387	Ga/92/1	,, ,,	—	—
388	Jha/115	Sukhbodha-Tikā	Yogadeva	—
389	Ga/47	Svaswarūpa Swānubhava Sūcaka (Sacitra)	Dharmadāsa	—
390	Ga/93/1	Svarūpa-Swānubhava Samyaka Jhāna (Sacitra)	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Pkt Prose Poetry	19 4×15 5 17 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	33 8×16 4 8 13 55	C	Good 1992 V S	Unpublished
P.	D, Skt Poetry	22 7×17 3 18 8 35	C	Good 1976 V S	
P	D, H Prose	29 8×13 8 219 10 37	C	Good 1888 V S	Copied by Pt Shivalal
P	D, H Prose Poetry	28 6×11 7 136 11 60	C	Old 1858 V S	
P	D, Pkt, Poetry	27 8×12 3 8 12 44	C	Good	Published, by M D G Bombay
P	D, Skt Prose	35 2×20 173 15 58	C	Old	Tatvārtha Sūtra's commentary
P	D, H Prose	34 2×17 8 522 13 41	C	Good 1961 V S	First page is missing Page No 301 to 329 are extra
P	D, H Prose/ Poetry	35 6×21 2 94 13 36	Inc	Old	
P	D, Skt Prose	35 2×16 3 69 12 44	C	Good 1992 V S	It is commentary of the Tatvārtha sūtra, (of Umāswāmi) First two pages are missing
P	D, H. Prose	34 3×21 4 16 13 47		Old 1946 V S	Unpublished
P	D, H. Prose	33 1×18 5 14 12 39	Inc	Old 1946 V. S.	Last pages are missing

1	2	3	4	5
391	Jha/60	Svarūpa Sambodhana	Akalanka	—
392	Kha/52	Tatvaratna Pradipa	Dharmakirti	—
393	Nga/2/32	Tattvasāra	Devasena	—
394	Ga/111/2	,, Bhāṣā	—	—
395	Ga/61	,, Vacanikā	Pannā Lāla	—
396	Kha/181	Tattvānuśāsana	—	—
397	Jha/7 (Ka)	Tatvārthasāra	Amritacandra Sūri	—
398	Jha/29	,,	,,	—
399	Kha/141/1	,,	,,	—
400	Kha/149	Tatvārtha Sūtra (with Śrutasāgarī Tīkā)	Umāsvāmi	Śrutasāgara Sūri
401	Kha/186/2	Tatvārtha Sūtra Mūla	,,	—
402	Kha/112/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	21 2×17 1 5 6 20	C	Good	
P	D,Skt Prose	38 1×20 3 272 13 41	C	Old 1970 V S	
P	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 8 13 14	C	Good	Published
P	D, H Poetry	20 2×16 3 9 9 23	C	Good	
P	D, H Prose	32 3×12 3 35 7 38	C	Good 1938 V S	
P	D, Skt Poetry	29 7×15 3 15 10 38	C	Good	Copied by Keśava Śharmā
.	D, Skt Poetry	28 3×14 2 47 10 33	C	Good	Published by Sanātana Jaina Granthamālā, Bombay
P	D, Skt Poetry	20 1×13 9 72 8 20	C	Good	Published copied by Balāmokundalāla
P	D, Skt Poetry	33 6×15.3 31 10 43	C	Old 1553 V S	Published 724 Ślokas
P	D, Skt Prose	28 3×13 6 205 16 60	C	Old 1770 V S	
P	D; Skt Poetry	23 1×13 9 19 8 28	C	Old 1946 V S	published First page is missing
P	D, Skt. Prose	19 8×15 5 17 12 23	C	Old	Published copied by Pandit Kisancanda Savāī

1	2	3		4	5
403	Nga/7/2	Tatvārtha Sūtra		Umāsvāmi	—
404	Nga/7/3	,,	,,	,,	—
405	Nga/7/6	,,	,, Vacanika	—	—
406	Nga/7/4	,,		Umāsvāmi	—
407	Nga/6/3	,,	,,	,,	—
408	Nga/1/2	,,	,, (Mūla)	,,	—
409	Jha/31/6	,,	,,	,,	—
410	Ga/138/1	,,	,,	,,	—
411	Ga/120	,,	,, Tippana	—	—
412	Jha/62	,,	Vrtti	Bhāskara Nandi	—
413	Ga/173	,,	Bodha	Budhajana	—
414	Ga/10	,,	Sūtra Tikā	Umāswāmi	Pānde Jaivanta

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt P, ose	?0 4 × 16 5 15 14 18	Inc	Old	Pag No 1 and 2 are missing
P	D, Skt Prose	21 1 × 16 9 14 15 15	C	Good 1955 V S	
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	23 1 × 18 5 40 17 15	Inc	Good	
P	D, Skt Prose	21 1 × 16 7 14 14 15	C	Old 1955 V S	
P	D Skt Prose	2? 8 × 18 1 11 17 19	C	Good	
P	D, Skt Prose	17 8 × 13 5 17 10 21	C	Good 1908 V S	
P	D, Skt Prose	18 2 × 11 8 18 9 24	C	Good	
P,	D, H Prose	26 7 × 15 9 92 14 38	C	Good	Last page is missing
P	D, H Prose	28 8 × 13 4 122 8 30	C	Good 1910 V S	
P	D, Skt Prose	33 8 × 21 8 154 19 30	C	Good	
P.	D, H Poetry	32 4 × 17 4 93 12 45	C	Good 1982 V S	Copied by Pt Coubey Laxmi Narayana
P.	D,Skt/H Prose	27 1 × 14 1 154 13 37	C	Good 1904 V. S	

1	2	3	4	5
415	Ga/27	Tatvārthasūtra Vacanikā	Daulat Rāma	—
416	Ga/139	Tatvārthsūtra Tīkā	Cetana	—
417	Kha/135/1	Tatvārthādhigama-Sūtra	Umāswāmi	—
418	Kha/51	Tatvārtharājavārtika	Akalankadeva	—
419	Ga/157/10	Traikālika dravya	—	—
420	Kha/260	Trailokya Prajnapti	Pt Medhāvi D/o Jinacandra	,
421	Kha/261	,, ,	,,	—
422	Kha/84	Tribhangi	Kanakanandi	—
423	Jha/126	Tribhangisāra Tīkā	Nemicandra	Somadeva
424	Kha/19/3	Trilokasāra	Nemicandrācārya D/o Abhayanandi	—
425	Kha/39	,, Sacitra	,,	—
426	Jha/22	,, **Bhāṣā**	**Todaramala**	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose	31 5×13.2 136.7.32	C	Old 1925 V S	
P	D, H Prose/ Poetry	32 6×17 5 953 15 58	C	Good 1970 V S	Copied by Sita Rām Śastri Commentry on Tatvārth Sūtra of Umā-Swāmi.
P	D, Skt Prose	35 7×21 2 60 15 45	C	Good 1919 V S	Published Copied by Pandit Śivacandra.
P	D, Skt Prose	38 5×20 4 290 14 57	Inc	Old 1968 Śaka Saṁvata	Published Copied by Raṅganath Bhaṭṭ First 67 Pages are missing
P	D,Skt /H Poetry/ Prose	21 1×16 5 1 20 18	Inc	Good	
P	D, Pkt Poetry	35 4×16 4 248 11.58	C	Recent 1988 V S	Copied by Sri Batuka Prasād
P	D, Pkt Poetry	29 6×15 6 33 8 24	Inc	Good	Name of Auther not mentioned in ms
P	D, Pkt Poetry	29 6×15 2 73 9 44	C	Good	It is also called Vistarasatva tribhaṅgi
P	D,Pkt Skt Poetry Prose	35 1×16 3 66 13 50	C	Good 1994 V S	
P	D, Pkt Poetry	35.5×17 2 57 ? 41	C	Old	Published 1010 Gāthās.
P	D, Pkt Poetry	33 6×21 63 23 44	C	Good	
P	D; H. Prose	23.4×12.6 126 12 41	Inc	Good	First 300 Pages are missing.

1	2	3	4	5
427	Ga/148/2	Trilokasāra	Malla Ji	—
428	Ga/79/1	,,	—	—
429	Ga/99/1	,, Bhāṣā	—	—
430	Kha/235	Trivarnacāra	Brahma-Sūri	—
431	Kha/83	,,	,,	—
432	Kha/24	,,	Somaṣena Bhaṭṭār-aka D/o Guṇbhadra	—
433	Kha/122	,,	Jinasenacārya	—
434	Kha/144	,,	,,	—
435	Kha/25	,,	,	—
436	Ga/125	, Vacanika	Somasenā	—
437	Kha/89	Trivarna-Śaucācāra	Padmarāja	—
438	Jha/106	Upadeśa-Ratna-mālā	Sāha Thākura Singh	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Prose	26 2×13 8 67 9 32	C	Good	
P	D, H Prose	25 2×15 9 41 11 29	Inc	Good	Last pages are missing
P	D, H Prose	32 4×15 2 34 11 47	C	Good 1866 V S	Copied by Bhūpatiram Tiwari
P	D, Skt Prose	30 5×17 4 56 12 51	C	Good 2451 Vir S	Copied by Nemiraja
P	D, Skt Poetry	29 o×15 4 84 10 37	C	Good 2440 Vir S	
P	D, Skt, Poetry	28 4×13 7 175 9 38	C	Old 1759 V S	
P	D, Skt Poetry	38 1×20 4 159 13 58	C	Old 1970 V S	Published Copied by Gulazarilala Sharma
P	D, Skt, Poetry	35 4×13 8 442 7 43	C	Good 1919 V S	Published
P	D, Skt Poetry	28 2×13 2 145 16 54	C	Good 1959 V S	
P	D,H /Skt Prose/ Poetry	38 3×20 6 160 16 51	C	Good 1959 V S.	Total No ofSlokas 3100
P.	D, Skt Poetry	34 3×14 4 55 11 48	C	Old	
P	D, Pkt Prose	31 1×17 2 210 14 42	C	Good 1990 V S.	It is also called Mahapurana Kalikā. Unpublished.

1	2	3	4	5
439	Kha/129	Upadeśaratnamāla	Sakalabhūṣana D/o Śubhacandra	—
440	Kha/200/2	,,	,,	—
441	Jha/100	Vairāgyasāra Satika	Suprabhācārya	—
442	Ga/26	Vasunandiśravakācāra Vacanikā	Vasunandi	—
443	Ga/118	,, ,,	,	—
444	Ga/141	,, ,,	,,	—
445	Kha/141/2	Vidagdhamukhamandana	Dharmadāsa	—
446	Jha/88	Viśvatattva-Prakāśa	Bhāvasena Traividyadeva	—
447	Kha/187/1	Vivāda Matakhandana	—	—
448	Kha/187/2	, ,,	—	—
449	Kha/128	Viveka Bilāsa	Jinadatta	—
450	Kha/88/2	Vṛhada dikṣa Vidhi	Fatelāl Pandita	—

6	7	8	9	10	11
P	, Skt/ Poetry	29 8×12 7 119 12 46	C	Old	Unpublished
P	D, Skt [illegible]oetry	29 6×19 1 121 12 48	C	Good 1970 V S	Copied by Gulajārilāla 3600 Ślokas
P	D,Aph Poetry	24 1×19 5 11 15 33	C	Good 1989 V S	
P	D, H Poetry	30 3×13 5 400 11 48	C	Good	
P	D, H Poetry	30 8×20 2 470 13 37	C	Old 1907 V S	
P	D, H Poetry	37 1×18 5 192 13 40	Inc	Old	Last fourteen pages are damaged
P.	D, Skt Poetry	31 6×15 6 12 15 50	C	Old	Contains 480 Ślokas Published, A work on Buddhism
P.	D, Skt Prose	35 [illegible]×16 4 9[illegible] 11 54	Inc	Good 1988 V S	
P	D, Skt Poetry	20 6×10 9 12 8 24	C	Old	
P.	D,Skt Poetry	20 6×10 8 11 8 37	C	Old	
P.	D,Skt Poetry	2[illegible] 7×12 8 49 11 50	C	Old 1900 V S	Published by Saraswati Granthamālā Agra.
P.	D, Skt Prose	33 2×19 1 60 12 60	C	Good	

1	2	3	4	5
451	Jha/99	Yogasāra	Gurudāsa	—
452	Kha/49	,,	,,	—
453	Jha/123	,, Satika (Nyâyaśāstra)	Yogindradeva	—
454	Kha/112/3	Āptamimāmasā	Samantabhadra	—
455	Kha/94	,,	,,	—
456	Kha/137	,, Vrtti	,,	—
457	Kha/150/4	,, Bhāṣya	,,	Akalaṅka deva
458	Kha/36	Āptaparikṣā	Vidyānandi	—
459	Kha/93	,,	,,	—
460	Jha/34/6	Devāgama Stotra	Samanta Bhadra	—
461	Nga/7/5	,, ,,	,,	—
462	Ga/64/2	,, Vacanikā	Jayacanda	—

(Nyāyaśāstra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	23 8×19 4 6 15 31	C	Good 1989 V S	
P	D, Skt Poetry	22 5×11 5 20 9 28	C	Old 1950 V S	
P	D,Apb H Prose Poetry	35 1×21 6 10 20 45	C	Good 1992 V S	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 10 13 18	C	Good	Published Written on copy size paper
P	D, Skt Prose	29 4×12 8 93 10 57	Inc	Old 1842 V S	Copied by Mahātmā Sitaram First 2oo pages are missing published
P	D, Skt, Prose/ Poetry	38 6×19 2 149 10 48	Inc	Old	Published, Last pages are missing
P	D, Skt Poetry	30 2×11 8 34 12 52	C	Old 1605 V S	Published
P	D, Skt Prose	32 4×18 5 67 14 48	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	26 2×14 2 136 9 41	C	Old 1962 V S	Published
P.	D, Skt Poetry	25 1×16 1 11 11 32	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	22 1×16 9 9 15 16	C	Old	
P.	D, H Prose/ Poetry	33 1×13 3 68 9 56	C	Good 1898 V S.	

1	2	3	4	5
463	Ga/114	Devāgamastotra Vacanikā	—	—
464	Kha/86	Nyāyadipikā	Abhinava Dharma-bhūṣana	—
465	Kha/156/3	,,	,,	—
466	Kha/196	Nyāyamani Dipikā	Battāraka Ajitasena	—
467	Kha/48	Nyāyaviniścaya Vivarana	—	—
468	Ga/134/1	Parikṣāmukha Vacanikā	Jayacanda Chavarā	—
469	Ga/12	,,	,, ,,	—
470	Kha/193	Pramāna Lakṣana	—	—
471	Kha/262	,, Mimāṁsā	Śrutamuni ?	—
472	Kha/55	, Prameya	—	—
473	Jha/116	,, ,, Kalikā	Narendrasena	—
474	Kha/7	,, Kamalamārtanda	Prabhācandrā	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	30 1×14 8 111 9 30	C	Old	
P	D,Skt Prose	31 4×13 3 50 8 45	C	Old 1910 V S	Published
P	D, Skt Prose	29 4×13 6 28 11 60	C	Old	Published
P	D, Skt Prose	32 0×16 0 196 13 38	C	Good 1980 V S	Copied by Rājakumar Jain
P	D, Skt Poetry	33 5×20 7 450 16 60	C	Old 1832 Śaka Saṁvata	Copied by Raṅganātha Sāstri
P	D, H Prose	32 5×17 6 119 12 44	C	Good 1927 V S	
P	D, H Poetry/ Prose	32 1×18 5 99 14 40	C	Good 1962 V S	
P	D, Skt Prose	34 1×21 5 34 21 27	C	Good	Written of register size paper.
P	D, Skt. Prose	35 4×16,3 35 12 72	C	Good 1987 V S	
P.	D, Skt Prose	29 8×15 6 20 10 41	C	Good	
P	D, Skt Prose	35 1×19 3 10 12 49	C	Good 1991 V S.	Published
P	D, Skt Prose	27 8×15 6 440 11 53	C	Old 1896 V. S	Published

1	2	3	4	5
475	Kha/33	Prameyakamalamārtaṇḍa	Prabhācandra	—
476	Kha/230	Prameyakaṇṭhikā	Śāntivarṇī	—
477	Kha/63	Prameyaratnamālā	Anantavīrya	—
478	Kha/60	,,	,	—
479	Kha/221	Prameyaratnamālā-Arthaprakāśikā	Paṇḍitācārya Cārukīrti	—
480	Kha/208	ṣaddarsana-Pramāna-Prameyānupraveśa	Śubhacandra	,
481	Kha/90	Cintāmaṇi Vṛtti	Śākaṭāyana	Yakṣavarmācārya
482	Kha/58	Dhātupāṭha	—	—
483	Kha/104	Hemacandra Koṣa	Hemacandra	—
484	Kha/121	Jainendra Vyākarana Mahāvṛtti	Devanandi	Abhayanandi
485	Kha/18	,, ,,	Abhayanandi	—
486/1	Jha/22	,, ,,	,,	—

(Vyākarana)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Prose	37 0×20 5 249 15 51	C	Good 1896 V S	Published.
P	D; Skt Prose	20 8×17 1 38 11 27	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	25 2×16 1 68 11 38	C	Old 1963 V S	Published
P	D, Skt Prose	30 4×17 2 330 9 40	C	Good	Published Copied by Lakṣamana Bhaṭṭa
P	D, Skt Poetry/ Prose	21 4×17 1 249 11 22	C	Good	It is commentry on Prameyaratnamālā of Laghu Anantavirya
P.	D, Skt Prose	21 1×11 5 24 8 33	C	Good	Page No 17 & 18 are left blank
P	D, Skt Prose	29 8×15 5 339 11 49	C	Good 1832 Śaka Samavata	
P,	D, Skt Prose	34 5×14 2 19 8 49	C	Old	
P	D, Skt Prose	26 5×10 8 53 17 67	Inc	Old 1910 V S	First three pages are missing.
P	D; Skt Prose	35 4×18 3 380 13 58	C	Old 1907 V S	Published
P.	D, Skt Prose	31 2×13 4 43 8 30	C	Good	Published
P.	D; Skt. Prose	29 2×15 4 94.12.48	Inc	Old 1879 V S.	Published. First 383 pages are missing.

1	2	3	4	5
486/2	Jha/78	Kātantra Vistāra	Vardhamāna	—
487	Jha/19	pañcasandhi Vyākarana	—	—
488	Jha/61	Prākrita Vyākarana	Śrutasāgara	—
489	Kha/228	Rūpasiddhi ,,	Dayāpāla	—
490	Jha/8	Saraswati Prakriyā	—	—
491	Jha/20/2	Siddhānta Candrikā	Rāmacandrāsrama	—
492	Jha/20/1	Taddhita Prakriyā	—	—
493	Jha/24	Dhananjaya Koṣa	Dhanañjaya	—
494	Ga/106/1	Nāmamālā	Devidāsa	—
495	Kha/132	Śāradiyākhya Nāmamālā	Harṣakirti	—
496	Kha/185/1	,, ,,	,,	—
497	Jha/67	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	31.1×17 4 250 12 46	C	Good 1928 A D	
P	D, Skt H Prose	24 1×15 2 21 17 37	C	Old	
P	D, Skt Prose	21 1×11 4 152 6 20	Inc	Good	It has only two Chapaters
P	D, Skt Prose	34.1×21 1 143 21 30	C	Good	Written on Register size paper
P	D, Skt Poetry	27.5×12 4 83 9 38	C	Old 1809 V S	Copied by Hemarāja First 3 pages are missing
P	D, Pkt Prose	24 1×10 6 69 13 48	C	Old	Dhanaji seems to be copier
P	D, Skt Prose	24 1×10 6 60 9 31	Inc	Old	First Two pages are missing
P	D, Skt Poetry	23 4×15 3 14 20 18	C	Good	It is also called Nāmamālā of Dhanañjaya.
P	D, H Poetry	24 7×16 3 16 11 29	C	Good 1873 V S	
P	D, Skt Poetry	30.2×13 8 25 12 37	C	Old 1828 V S.	
P	D, Skt Poetry	24.3×14 2 26 12 40	C	Good 1918 V S	
P.	D; Skt Poetry	32.8×17 6 23 11.37	C	Good 1985 V S	

1	2	3	4	5
498	Ga/15	Trepanakriyākośa	Kisana Singh	—
499	Ga/160	,,	,,	—
500	Ga/86/4	Urvaśī Nāmamālā	Śiromaṇi	—
501	Kha/31	Viśwalocanakośa	Paṇḍit Sridharsena	—
502	Kha/20	Alaṅkāra Saṁgraha	Amṛtānanda Yogī	—
503	Kha/212	,, ,,	,, ,,	—
504	Nga/1/3/1	Bārahamāsā	Budhasāgara	—
505	Kha/209	Candronmīlana	—	—
506	Jha/108/1	,, Satika	—	—
507	Jha/108/2	,, ,,	—	—
508	Jha/25/6	Dohavalī	—	—
509	Ga/106/8	Futakara Kavitta	Trilokacanda	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	32 8×17 3 77 13.40	C	Old 1960 V S	
P.	D, H Poetry	23 9×17 3 122 18 22	C	Good	
P.	D; H Poetry	24 5×13 3 27 16 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	28 5×13 0 103 11 40	C	Good 1961 V S	
P.	D, Skt Poetry	34 0×14 4 32 15 48	C	Old	
P	D, Skt Poetry	21 1×11 6 104 8 21	C	Good 1925 V. S	
P	D, H Poetry	16 9×12 7 4 11 10	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	20 9×11 4 32 8 26	C	Good	
P.	D, Skt/H Prose/ Poetry	32 5×17 5 73 20 21	C	Good 1990 V S	Total No. of Slockas 337
P.	D,H /Skt Prose/ Poetry	31 1×20 2 56 31 16	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 9×15 4 4 17.15	C	Good	
P.	D, H Poetry	23 9×16 8 1 23.27	C	Old	

1	2	3	4	5
510	Ga/80/7	Puṭakara Kavitta	Trilokacand	—
511	Kha/162	Nītivākyāmṛta	Somadavā Sūri	—
512	Kha/56	,,	,,	—
513	Kha/200	Ratnamañjūṣā	—	—
514	Kha/22	Rāghava Pāndavīyam Satika	Dhañjaya Kavi	Nemican-dra
515	Jha/101	Śṛṅgāra Mañjari	Ajitasenadeva	—
516	Kha/231	Śṛṅgārārnavacandrikā	Vijayavarni	—
517	Kha/219	Śrutabotha	Ajitasena	—
518	Jha/12	,,	Kālidāsa	—
519	Nga/1/2/1	Śrutapañcamirāṣā	-	—
520	Jha/92/1	Subhadrā Nāṭikā	Hastimalla	—
521	Kha/171/5	Subhāṣita Muktāvali	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	23 2×15 3 2 22 22	C	Old 1890 V S.	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	28 6×13 6 75 8 35	Inc	Old 1910 V. S	Published. 66 to 74 pages are missing
P	D, Skt. Poetry/ Prose	34 5×14 5 137 8 42	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 1×16 8 95 15 26	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	35 0×16 6 253 12 63	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 6×19 3 6 15 34	C	Good 1989 V S	
P	D; Skt Poetry	21 2×16 9 109 11 24	C	Good	Copied by Vijayacandra Jaina
P	D, Skt Poetry	21 1×16 8 6 13 21	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	27 1×10 1 4 8 42	C	Good	
P	D, H Poetry	17 8×13 5 6 10 25	C	Old	
P.	D, Skt / Pkt Prose	32 7×17 7 38 12.36	C	Good 2458 VIR S	Copied by Śaśi.
P.	D; Skt. Poetry	20 5×16 5 25.12 24	C	Good	

1	2	3	4	5
522	Kha/29	Subhāṣita Ratnasaṁdoha	Amitagati	—
523	Kha/99	,, ,,	,,	—
524	Kha/160/2	Subhāṣitāvali	—	—
525	Kha/187/3	,,	—	—
526	Kha/156/1	Subhāṣitaratnāvali	Sakalakīrti	—
527	Kha/176/6	Sūkti Muktāvali	Somaprabha	—
528	Kha/176/7	,, ,,	,,	—
529	Kha/19/1	,, ,,	,,	—
530	Kha/163/6	,, ,,	,,	—
531	Kha/136/2	Sindūra Prakarna (Mūla)	,	—
532	Ga/157/7	Akṣarakevali Śakuna	—	—
533	Jha/136	,, Praśnaśāstra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	29 4×12 8 76 9 47	C	Good	
P	D, Skt Poetry	26 4×11 8 83 9 46	Inc	Old 1784 V S	First eleven pages are badly rotten published
P	D, Skt Poetry	27 6×11 7 34 8 41	C	Old	
P	D, Skt Poetry	21 3×13 2 30 19 19	Inc	Old	Last pages are missing Written on coloured paper.
P	D, Skt Poetry	28 8×13 2 22 11 47	C	Old 1836 V S	Unpublished
P	D, Skt, Poetry	26 2×11 3 27 11 44	Inc	Old	First & last pages are missing
P	D, Skt Poetry	25 4×10 5 20 10 40	Inc	Old	Last pages are missing
P	D, Skt Poetry	33 5×14 8 25 5 35	C	Good	Published.
P	D, Skt Poetry	24 6×12 1 10 9 55	C	Old 1813 V S	
P	D, Skt Poetry	34 2×20 5 26 6 30	C	Old 1947 V S	Copied by Paramananda Published
P.	D, Skt Poetry	17 6×10 1 4 8 22	C	O'd	Page No. 2 si missing.
P	D, Skt. Poetry	20.5×17 4 7 10 17	C	Good 1943 A D.	

1	2	3	4	5
534	Kha/188/4	Ariṣṭādhyāya	—	—
535	Jha/16/5	Dwādasa-Bhāvafala	—	—
536	Jha/137/2	Gaṇitaprakaraṇa	Śrīdharācārya ?	—
537	Jha/105	Jnānatilaka Satika	—	Bhaṭṭavosari
538	Jha/137/1	Jyotirjnāna Vidhi	Srīdharācārya	—
539	Kha/239	Jānapradīpikā	—	—
540	Kha/272	Kewala Jnāna Praśna Cūḍāmaṇi	Samantabhadrā	—
541	Kha/213	Kevalajnānahorā	Candrasena Sūri	—
542	Kha/174/3	Nimittaśāstra ṭikā	Bhadrabāhu	—
543	Kha/174/2	Mahānimittaśāstra	,,	—
544	Kha/179	,, ,,	,,	—
545	Kha/174/4	Nimittaśāstra ṭikā	,,	—

(Jyotiṣa)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	23 8×10 6 27 6 28	C	Good	Copied by Pt Rāmacanda
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 5 15 15	C	Good	
P	D, Skt Prose/ Poetry	20 5×17 5 13 10 18	Inc	Good 1944 V S	It seems to be part of Jyotirmānavidhi
P	D, Skt / Pkt Prose/ Poetry	21 6×17 2 74 18 21	C	Good 1990 V S	Commentry with test
P	D, Skt Prose	20 4×17 5 18 10 20	C	Good 1944 A D	
P	D, Skt Poetry	17 3×15 5 19 15 38	C	Good	Copied by Nemirājā
P	D, Skt Prose	21 8×17 6 23 11 33	C	Good	Copied by Devakumāra Jain
P,	D, Skt Poetry	34 2×21 4 376 22 21	C	Good	Written on register size paper
P	D, Skt Poetry	28 4×13 2 17 12 36	C	Good	Author's name not mentioned in the Ms
P	D, Skt / Pkt Poetry	26 8×15 7 76 11 40	C	Good	Unpublished
P	D, Skt Poetry	21 5×14 4 79 19 22	C	Old 1877 V S.	
P.	D; Pkt Poetry	25 2×13 9 18 14 36	Inc	Good	Author s name not mentioned in the Ms

1	2	3	4	5
546	Kha/165/4	Saṭpañcāśikā Sūtra	—	—
547	Kha/218	Sāmudrika Sāstra	—	—
548	Jha/110	Vratatithinirnaya	Simhanandi	—
549	Jha/16/4	Yātrā Muhūrta	—	—
550/1	Jha/34/20	Ākāśagāmini Vidyā Vidhi	—	—
550/2	Jha/131	Ambikā Kalpa	Śubhacandra	—
551	Jha/71	Bālagraha Cikitsā	Mallişena	—
552	Jha/72	,, ,	Rāvana	—
553	Jha/70	,, Śānti	Pūjyapāda	—
554	Ga/157/1	Bālaka Mundana Vidhi	—	—
555	Nga/7/18	Bhaktāmarastotra Ṛddhi Mantra	Gautamasvāmi ?	—
556	Nga/7/17	,, ,,	,,	—

(Mantra, Karmakāṇda)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	24 8×11 3 3 13 52	C	Old	
P	D,Skt Poetry	16 8×15 3 10 11 27	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 1×16 3 11 12 52	C	Good 1991 V S	Contains slokas 401
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 3 15 14	C	Old	It has eleven cārts.
P	D, H Prose	25 1×16 1 2 11 36	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 6×17 2 18 15 50	C	Good 1994 V S	
P	D, Skt Prose	34 8×19 5 6 19 53	C	Good	
P	D, Skt Prose	34 8×19 5 2 19 51	Inc	Good	
P	D, Skt Poetry	34 8×19 5 8 18 46	C	Good	
P.	D; Skt / H Prose/ Poetry	20 1×15 5 3 18 13	C	Good	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 1×16 4 22 14 16	C	Good	
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	21 1×16 9 21 15 16	C	Good 1950 V S	

1	2	3	4	5
557	Jha/26/1	Bhūmi Śuddikarana Mantra	—	—
558	Jha/34/3 4	Bija Mantra	—	—
559	Kha/217	Bijakoṣa	—	—
560	Jha/79	Brahmavidyā vidhi	—	—
561	Jha/34/12	Candraprabhamantra	—	—
562	Jha/34/27	Caubisa Tirthankara Mantra	—	—
563	Jha/34/18	Caubisa Śāsanadevi Mantra	—	—
564	Kha/245	Ganadharavalayakalpa	—	—
565	Jha/36/6	Ghantākarna	—	—
566	Jha/74	„ Kalpa	—	—
567	Ga/144	„ Vṛddhi kalpa	—	—
568	Kha/177/11	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	22 4×16 8 4 23 18	Inc	Good	
P	D, Skt H Poetry	25 1×16 1 2.11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 9×15 2 21 11 29	C	Good	
P	D, Skt Prose/ poetry	20 8×16 7 34 11 20	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 1 11 32	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 1 11 33	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 2 11 30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 1 10 14 42	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 7×14 9 2 11 20	C	Good	
P	D,H /Skt Prose	32 8×17 6 6 11 38	C	Good 1985 V S	
P	D,Skt./H Poetry/ Prose	33 3×16 3 5 13.40	C	Old 1903 V S	Rughan Prasād Agrawāla seems to be copier.
P.	D; Skt /H- Prose/ Poetry	27.2×12.3 5 12 55	C	Old	

1	2	3	4	5
569	Kha/177/8	Hāthājori Kalpa	—	—
570	Jha/34/17	Iaṣṭadevatārādhana Mantra	—	—
571	Nga/2/4	Jainasandhyā	—	—
572	Ga/166	Jainavivāha vidhi	—	—
573	Jha/133	Jinasamhitā	Māghanandi	—
574	Nga/7/7	Karmadahana Mantra	—	—
575	Jha/34/15	Kalikunda Mantra	—	—
576	Kha/177/6	Mantra Yantra	—	—
577	Kha/177/4	Namokāragana Vidhi	—	—
578	Kha/118	„ Mantra	—	—
579	Jha/46	Padmāvati Kavaca	—	—
580	Jha/16/1	Pañcaparameṣṭhi Mantra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	26 8×11 7 1 15 48	C	Old	
P	D, Skt Prose	25.1×16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	22 2×19 6 13 17 25	C	Good 1978 V S	
P	D, Skt Prose	32 3×17 7 75 10 31	C	Good 1995 V. S.	It is also called Māghanandi Samhitā.
P	D, Skt Prose	20 9×16 9 6 16 19	C	Good 1965 V S	
P	D, Skt. Prose	25 1×16 1 1 11 30	C	Good	
P	D, H Prose	25 5×10 8 4 10 38	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25 6×11 8 1 10 46	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt / Poetry	16 6×10 8 56 8 22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	17 4×11 5 35 7.18	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	24.3×16.1 4.21 20	Inc	Old	

1	2	3	4	5
581	Kha/223	Pañcanamaskāra Cakra	—	—
582	Jha/13/4	Pīthikā Mantra	—	—
583	Kha/237	Sarasvatīkalpa	Malayakīrti	—
584	Jha/34/19	Śāntinātha Mantra	—	—
585	Jha/16/3	Siddhabhagavāna ke guna	—	—
586	Kha/177/5	Solahacāli	—	—
587	Kha/177/7	Vivāha Vidhi	—	—
588	Kha/258	Yantra Mantra Saṁgraha	—	—
589	Kha/255	Akalankasaṁhitā (Sāra Saṁgraha)	Vijayanapādhyāya	—
590	Kha/54	Ārogya Cintāmani	Pandita Dāmodara	—
591	Kha/224	Kalyānakāraka	Ugrādityācārya	—
592	Kha/206	Madanakāmaratna	Pūjyapāda ?	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	35 7×20 2 56 14 56	C	Old	
P	D, Skt Prose	24 5×16 5 4 21 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 3 7 14 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 1 11 30	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 2 18 18	Inc	Old	
P	D, H Poetry	27 9×10 8 1 13 48	C	Old	Only one page available
P	D, Skt Prose	25 6×10 9 5 8 50	Inc	Old	Last pages are missing
P	D, Skt Prose	21 1×16 9 145 10 31	C	Good	
P	D, Skt Prose	30 3×16 6 238 12 51	C	Good	
P	D, Skt Prose	38 5×20 5 40 13 54	C	Good	
P	D, Skt Poetry	34 1×21 2 155 23 27	C	Good	Copied by Śaṅkaranārāyana Śarmā written on register size paper
P,	D, Skt Poetry	34 1×21 1 32 23 14	C	Good	It is written on register size paper.

1	2	3	4	5
593	Kha/205	Nidānamuktāvali	Pūjyapāda ?	—
594	Jha/77	Rasasāra Saṃgraha	—	—
595	Kha/226	Vaidyakasāra Saṃgraha	Harṣakīrti	—
596	Kha/103	,, ,,	,,	—
597	Kha/236	Vaidya Vidhāna	Pūjyapāda	—
598	Kha/114	Vidyā Vinodanam	Akalanka	—
599	Kha/134	Yoga Cintāmani	Harṣakīrti	—
600	Jha/69	,, ,,	,,	—
601	Nga/2/9	Ācārya Bhakti	—	—
602	Nga/2/28	Aṅkagarbhaṣaḍāracakra	Devanandi	—
603	Kha/113	Aṣṭa Gāyatri Tīkā	—	—
604	Kha/227/5	Ātmatattvāṣṭaka	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	34 1×21 1 3 22 22	C	Good	It is written on regester size paper
P.	D, Skt Poetry	33 8×20 5 40 16 40	Inc	Good	
P	D, Skt Poetry	33 8×21 2 84 23 24	C	Good	
P	D, Skt Prose	27 5×12 7 128 14 48	C	Old 1840 V S	
P	D, Skt Prose/ Poetry	17 1×15 3 54 12 31	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirāja
P	D, Skt, Poetry/ Prose	22 8×16 8 34 9 11	C	Old	Copied by T N. Pangal
P	D, Skt Poetry	25 6×10 2 139 8 48	C	Old 1896 V S	
P	D,Skt Prose	32 8×17 1 115 11 46	C	Good 1985 V S	
P	D, Pkt / Skt Poetry	19 4×15 5 4 13 16	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 4 13 14	C	Good	Unpublished
P.	D, Skt Poetry	21 2×16 6 19 11 27	C	Good 1962 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	35 2×16 3 1 9.62	C	Good	Copied by Batuka Prasada.

1	2	3	4	5
605	Kha/227/4	Ātmatattvāṣṭaka	—	—
606	Nga/13	Ātmajnāna Prakarana Stotra	Padmasūri	—
607	Kha/123	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅgācārya	—
608	Kha/170/5	,, ,,	,,	—
609	Kha/178(K)	,, ,,	,,	—
610	Kha/165/13	,, ,,	,,	—
611	Jha/31/1	,, ,,	,,	—
612	Jha/28/1	,, ,,	,,	—
613	Jha/34/24	,, ,,	,,	—
614	Jha/40/2	,, ,,	,,	Hemarāja
615	Jha/35/1	,, ,,	,,	—
616	Nga/6/1	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	35 2×16.3 1 11 57	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P	D,Skt Poetry	19 4×15 5 7 12 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	34 5×21 3 24 4 18	C	Old 2440 Vir S	Published. written in bold letters
P	D, Skt Poetry	27 5×12 9 6 14 44	C	Old 1882 V. S	Published
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 13 18 17	C	Good 1947 V S	Published
P	D, Skt Poetry	25 2×10 4 4 8 57	C	Old 1763 V S	Published
P	D, Skt Peotry	18 2×11 8 7 10 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 5×15 8 7 16 15	C	Good	
P	D,Skt /H. Prose/ Poetry	25 1×16 1 13 11 33	C	Good	
P.	D, Skt / H Poetry	15 4×11 9 25 8 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	16 1×16 1 7 13 20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.8×18.3 5.17 21	C	Old	

1	2	3	4	5
617	Jha/52	Bhaktāmarastotra Satīka	Mānatunga	—
618	Ga/157/1 (K)	,	,,	—
619	Nga/7/8	,,	,,	—
620	Ga/110/1	,, Tīkā	Hemarāja	—
621	Kha/117/1	,, Mantra	Mānatunga	—
622	Kha/117/2	,, Ṛddhi Mantra	,,	—
623	Kha/119/1	,, ,,	,	—
624	Kha/283	,, ,,	,,	—
625	Jha/34/16	,, Mantra	,,	—
626	Kha/284	,, Ṛddhimantra	,,	—
627	Kha/170/2	,, ,,	,,	—
628	Kha/177/14	,, ,,		—

6	7	8	9	10	11
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	17 5×10 9 40 8 24	C	Good 1971 V S	
P	D, Skt Poetry	10 5×7 2 25 6 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 9×10 9 9 7 23	C	Old	
P	D, H Poetry	21 1×15 8 29 16 19	C	Good 1919 V S.	
P	D, Skt Poetry	15 8×11 2 49 10 27	C	Old 1967 V S	Published, copied by Pandit Sitārāma Śastri
P.	D, Skt Poetry/ Prose	17 4×13 5 48 10 24	C	Old 1930 V S	Copied by Nilakantha Dāsa
P	D; Skt Poetry	16 8×14 5 47 9 20	C	Old 1930 V S	Published, copied by Nilakantha Dāsa
P,	D, Skt Poetry	20 5×16 3 48 13 17	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 2 11 30	C	Good	
P	D; Skt / Poetry	24 1×15 5 49 10.44	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	29 7×18.4 7 11 42	C	Good 1966 V. S	Published, copied by Munindrakirti
P.	D; Skt Prose	22.6×10 4 10 10 30	Inc	Old	First twenty pages & last pages are missing.

1	2	3	4	5
629	Ga/106/3	Bhaktāmara tika	Hemarāja	—
630	Kha/87/1	,, ,,	Mānatuṅga	Brahma-Rāyamalla
631	Kha/170/6	Bhaktāmarastotra tika	,	Hemarāja
632	Ga/134/5	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
633	Ga/80/2	,, , Sārtha	Mānatuṅga	Hemarāja
634	Jha/33	,, ,, Maṇatra	—	—
635	Jha/36/3	Bhairavāṣṭaka	—	—
636	Nga/7/14	,, Stotra	—	—
637	Kha/119/2	Bhairava Padmāvati Kalpa	Malliṣenācārya D/o Jinaṣena	Bandhu-sena
638	Jha/127	,, ,,	,,	Candra-śekhara Śāstri
639	Nga/3/2	Bhajana Saṁgraha	—	—
640	Kha/172/2	Bhakti Saṁgraha tika	—	Sivacan-dra

6	7	8	9	10	11
P	D,H /Skt Poetry/ Prose	23 9×16 8 14 25 26	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 6×13 4 26 14 53	C	Good	
P	D, Skt Poetry	26 8×13 8 17 14 44	C	Good 1908 V S	Published
P	D, Skt Prose	31 2×17 1 24 14 36	C	Good 1944 V S	
P	D,H /Skt Prose/ Poetry	23 2×15 3 22 22 21	C	Old 1890 V S	
P	D,Skt /H Poetry	16 5×11 8 17 12 14	Inc	Good	Oponing & Closing are missing
P	D, Skt Poetry	19 7×14 9 2 11 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 3 9 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	17 3×14 6 52 13 33	Inc	Old 1956 V. S	Published Firt nine pagest aremissing Copied by Nilakaṇṭha Dāsa.
P	D,Skt/H Prose, Poetry	35 1×16 3 73 13 47	C	Good 1993 V S	
P	D, H Poetry	20.6×16 5 5.12 14	C	Good	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	28 1×18 2 72.13 29	C	Good 1948 V. S.	

1	2	3	4	5
641	Ga/152/2	Bhāṣāpada Saṁgraha	Kundana	—
642	Kha/171/2(K)	Bhūpāla Caturviṁśatikā Mūla	Bhūpāla Kavi	—
643	Kha/178/5	Bhūpāla Stotra	,,	—
644	Kha/138/3	,, ,, ṭikā	,,	—
645	Kha/227/3	Bhāvanāṣṭaka	—	—
646	Jha/31/2	Candraprabha Stotra	—	—
647	Kha/190/2	Candraprabha Śāsana Devi Stotra	—	—
648	Nga/2/48	Caturviśmati Jina Stotra	—	—
649	Nga/2/40	,,	—	—
650	Kha/131	,, ,, Stuti	Māghanandi	—
651	Nga/2/8	Cāritra Bhakti	—	—
652	Jha/34/9	Caubisa Tirthankara Stotra	Devanandi	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	27 4×12 1 11 16.50	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 4×16 9 4 12 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 6 9 16 20	C	Good 1947 V S	Published
P	D, Skt Poetry	31 7×16 8 13 11 36	C	Old	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 1 9 64	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P	D, Skt, Prose	18 2×11 8 3 10 22	C	Old 1852 V S	
P	D, H Poetry	17 2×10 2 6 7 26	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 1 13 14	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 5×13 3 5 14 54	C	Old	
P.	D; Pkt / Skt Poetry	19 4×15 5 4 12 15	C	Good	
P.	D; Skt. Poe ry	25.1×16 1 3 11 30	C	Good	

1	2	3	4	5
653	Nga/8/5	Cintāmani Aṣṭaka	Bhaṭṭāraka Mahicandra	—
654	Kha/173/3(G)	,, Stotra	—	—
655	Jha/31/7	,, Pārśvanātha Stotra	—	—
656	Kha/253	Daśabhktyādi Mahāśāstra	Vardhamāna Muni	—
657	Kha/150/2	Devi Stavana	—	—
658	Jha/35/4	Ekibhāva Stotra	Vādirāja Sūri	—
659	Kha/171/2 (Kh)	,, ,, Mūla	,, ,,	—
660	Kha/178 (Gha)	,, ,,	,, ,,	—
661	Kha/172/2(K)	,, ,,	,, ,,	—
662	Nga/6/7	,, ,,	,,	—
663	Kha/138/2	,, ,, Saṭika	Vādirāja Sūri	—
664	Nga/2/41	Gautamasvāmi Stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	22.1×18.1 1 13 27	C	Good	
P.	D, H Poetry	27 2×17 6 1 14 34	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 2×11 8 36 10 23	C	Good 1853 V S.	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 7 132 10 28	C	Good	
P	D, Skt Poetry	38 9×12 2 4.9 39	G	Old	
P	D, Skt Poetry	16 1×16 1 5 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 4×16 9 4 12 25	C	Good	Published.
P	D,Skt /H Poetry	20 8×16 6 8 13 20	C	Good 1947 V. S	Published.
P	D, Skt Poetry	28 1×18 2 10 12 39	C	Good	Published
P.	D, Skt Poetry	22 8×18 1 3 17 22	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	31 5×16.5 14 10.32	C	Old	Published.
P.	D; Skt Poetry	19.4×15.5 2 13.15	C	Good	

1	2	3	4	5
665	Kha/227/10	Gītavītarāga	Cārūkīrti	—
666	Kha/227/6	Gommatāṣṭaka	—	—
667	Ga/152/3	Gurudeva Kī Vinti	—	—
668	Ga/77/1	Jinacaityastava	Campārāma	—
669	Nga/7/12(Kha)	Jinadarśanāṣṭaka	—	—
670	Jha/39	Jinendra Darśana Pātha	—	—
671	Nga/2/52	Jinendrastotra	—	—
672	Nga/5/4	Jinavāni Stuti	Haridāsa Pyārā	—
673	Nga/2/34	Jinaguna Stavana	—	—
674	Kha/227/7	Jinagunasampatti	—	—
675	Jha/34/21	Jina Stotra	Raviṣanācārya	—
676	Kha/190/1	Jinapañjara Stotra	Devapravācārya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	35.2×16 3 17 11 56	C	Good 1930 A D	Copied by Baṭuka Prasāda.
P.	D, Skt Poetry	35 2×16 3 1 9 58	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda
P.	D, H Poetry	26 1×12 4 7 7 26	C	Old	
P	D, H Poetry	22 6×9 6 11 7 20	C	Old 1883 V S	
P	D, Skt Poetry	21 1×13 3 1 18 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 3×12 4 5 10 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 7×17 1 3 11 20	C	Good 1963 V S	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 3 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 60	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda
P.	D; Skt Poetry	25 1×16 1 3 11 33	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	17.8×10 4 7.7.24	C	Old	

1	2	3	4	5
677	Ga/157/12 (Kha)	Jinapañjara Stotra		—
678	Jha/31/4	,,		—
679	Kha/175/10	Jvālāmālini Stotra		—
680	Jha/34/13	,, Devi Stuti		—
681	Jha/81	Jvālini Kalpa	Indranandi	—
682	Kha/161/5	Kalyānamandira Stotra	Kumudacandrācārya	—
683	Nga/6/2	,, ,,	,,	—
684	Kha/161/8	,, ,,	,,	—
685	Kha/165/12	,, ,,	,,	—
686	Kha/170/7	,, ,,	,,	—
687	Kha/165/8	,, ,,	,,	—
688	Kha/172/2	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	10 5×7 2 8 6 10	Inc	Old	Last pages are missing
P	D,Skt Poetry	18.2×11 8 2 10 20	C	Good	
P	D, Skt Prose	23 7×10 9 3 8 35	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 3 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	20 6×16 6 39 11 20	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	24 1×12 7 4 14 40	C	Old	Published
P	D, Skt Peotry	22 8×18 3 4 17 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 6×11 2 4 10 35	C	Old 1931 V S	Copied by Keshava Sāgara Published
P	D, Skt Poetry	26 2×10.8 2 13 45	C	Old	Published pages are sotten
P.	D, Skt. Poetry	25 8×12 8 5 20 57	C	Old 1887 V S	Published.
P	D, Skt. Poetry	24 6×11 2 2 16 50	C	Old	Published
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.1×18.2 14 12.36	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
689	Kha/178 (Kh)	Kalyānamandira Stotra	Kumudacandra	—
690	Jha/35/2	,, ,,	Kumudacandra	—
691	Jha/40/3	,, ,,	,,	Banārasidāsa
692	Jha/28/2	,, ,,	,,	—
693	Jha/31/3	,, ,,	,,	—
694	Jha/28/3	,, Bhāṣā	—	—
695	Kha/106/4	,, Vacanikā	—	—
696	Ga/80/3	,, Sārtha	Kumudacandra	—
697	Nga/2/2/3	Kṣamāvāni Ārati	—	—
698	Jha/34/2	Kṣetrapāla Stuti	—	—
699	Kha/161/7	Kāṣṭhā Saṁgha Gurvāvali	—	—
700	Jha/40/4	Laghu Sahasranāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	20.8×16 3 11 13 2	C	Good 1947 V S	Published,
P	D, Skt Poetry	16 1×16 1 6 13 20	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	15 4×11 9 21 9 20	C	Good	
P	D, Skt Poet y	20 5×15 8 6 17 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 2×11 8 6 10 23	C	Good	
P	D, H Poetry	20 5×15 8 1 17 15	Inc	Good	Last pages are missing
P	D; H Poetry/ Prose	23 9×16 8 12 25 25	C	Old	
P,	D,Skt /H Poetry/ Prose	23 2×15 3 19 22 22	C	Old 1890 V S	
P	D, H Poetry	17 8×13 5 4 10 22	C	Good	
P,	D, H Poetry	25 2×16 1 1 14 28	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	26 4×12 8 3 14 39	C	Old	Published
P.	D;Skt /H Poetry	15.4×11 9 5.9 18	C	Good	

1	2	3	4	5
701	Nga/7/10	Laghusahasranāma Stotra	—	—
702	Jha/34/26	Lakṣhmi Ārādhana Vidhi	—	—
703	Nga/2/15	Mahālakṣmi Stotra	—	—
704	Nga/7/16	,, ,,	—	—
705	Jha/36/1	Maṅgalāṣṭaka	—	—
706	Nga/4/2	Maṅgala Ārati	Dyānatarāya	—
707	Ga/157/6	Maṇibhadrāṣṭaka	—	—
708	Nga/2/12	Nandiśvara Bhakti	—	—
709	Kha/173/3(K)	Namokāra Stotra	—	—
710	Nga/2/53	Navakāra-Bhāvanā Stotra	—	—
711	Nga/2/14	Nemijina Stotra	Raghunātha	—
712	Kha/202	Nijātmāṣṭaka	Yogindradeva	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	22 1×14 7 2 12 26	C	Good	
P.	D,H /Skt Prose	25 1×16 1 1 11 33	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 12.15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20.3×14 7 2 14 11	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 7×14 9 2 11 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 5×17 9 1 10 28	C	Good 1951 V S	
P	D, Skt Poetry	15 6×13.3 3 10 16	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 4×15 5 10 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	27 2×17 5 1 13 35		Old	
P	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 3 13 16	C	Good 1954 V. S	
P	D, Skt Poetry	19 4×15.5 1.12.14	C	Good	
P.	D; Pkt, Poetry	29 7×19.3 3 8.39	C	Good	

1	2	3	4	5
713	Nga/2/29	Nirvānakāṇḍa	—	—
714	Nga/6/5	,,	—	—
715	Nga/6/6	,,	—	—
716	Kha/177/10 (K)	,,	Bhaiyā Bhagavati Dāsa	—
717	Nga/2/10	Niravāna Bhakti	—	—
718	Kha/112/6	Padmāvati Kavaca	—	—
719	Kha/40/2	,, Kalpa	Mallisena Sūri	—
720	Kha/153/2	,, Vrhat Kalpa	—	—
721	Jha/34/1	Padmāmatā Stuti	—	—
722	Kha/75/1	Padmāvati Stotra	—	—
723	Kha/267	,, ,,	—	—
724	Nga/7/13 (K)	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	19 4×15 5 4 13 14	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	22 8×18 1 2 17 20	C	Old	
P	D, H Poetry	22 8×18 1 2 17 22	C	Old 1943 V S	
P	D, H Poetry	24 1×12 8 1 14 30	C	Good 1871 V S	
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 9×15 5 8 13 16	G	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 11 14 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 5×19 7 24 13 35	C	Old 1884 V. S	
P	D,Skt Poetry	27 4×12 6 2 16 55	C	Old	
P	D, H Poetry	25 2×16 1 3 11 25	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	29 6×13.5 3 14 61	C	Old	
P	D; Skt Poetry	21.6×17.5 10 13.30	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.9×16.5 5.17 17	C	Good	

1	2	3	4	5
725	Jha/36/5	Padmāvatī Stotra		—
726	Jha/34/11	" "		—
727	Jha/34/10	" Sahasranāma		—
728	Jha/40/6	Paramānanda Stotra		—
729	Nga/7/11(K)	" "		—
730	Kha/227/9	" Caturviṁśatikā		—
731	Nga/2/47	Pārśvajina Stavana		—
732	Nga/2/50	Pārśvanātha "		—
733	Nga/2/39	Pārśvanātha Stotra		—
734	Kha/105/2	" "	Vidyananda Swāmī	—
735	Kha/62/1	" " Saṭīka	Padmaprabhadeva	—
736	Jha/34/7	" "		—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19.7×14.9 6 11.21	C	Good	
P	D;Skt. Poetry	25.1×16 1 8.11 30	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	25 1×16.1 9.11 30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14 5×11 7 3 9 20	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D; Skt. Poetry	21.1×13 3 2 18 14	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 58	C	Good	Copied by Batuka Prasāda.
P.	D; Skt Peotry	19 4×15 5 3 13 15	C	Good	
P.	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 3.13 16	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	19 4×15.5 4 13.16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	29.5×15 5 4.9.49	C	Good	
P.	D; Skt Poetry/ Prose	30 7×16 0 3 14.52	C	Good	Published.
P.	D; Skt. Poetry	25.1×16.1 4.11.30	C	Good	

1	2	3	4	5
737	Nga/6/16	Pārsvanātha Stotra	Padmaprabhadeva	—
738	Kha/119/3	Pañcastotra Satika	—	—
739	Ga/143	Pañcāśikā Śikṣā	Dyānatarāya	—
740	Kha/171/6	Pañcapadāmnāya	—	—
741	Kha/165/14	Prabhāvati Kalpa	—	—
742	Nga/2/35	Prārthanā Stotra	—	—
743	Kha/165/1	Rakta Padmāvati Kalpa	—	—
744	Nga/2/20	Ṛṣabha Stavana	—	—
745	Kha/112/5	Ṛṣimaṇḍala Stotra	—	—
746	Nga/7/1	,, ,,	—	—
747	Jha/34/19	,, ,,	—	—
748	Nga/2/26	Trikāla Jaina Sandhya Vandana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	22 8 × 18.1 1 17 21	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	19.2 × 12.2 184 11.45	C	Old 1967 V S.	Copied by Paṇḍit Sitārāma Śāstri.
P	D, H. Poetry	34 4 × 16 1 57 10 45	C	Good 1947 V S	It is a calection of Bhajan,
P	D, Skt Poet y	18.3 × 16 2 8 11 22	C	Old	
P	D; Skt Prose	24 5 × 10 4 1 17 70	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 4 × 15 5 1 13 15	C	Good	
P	D, Skt. Prose	24 9 × 10 8 10 11 38	Inc	Old 1738 V S	First page missing. Copied by Soubhāgya Samudra D/o Jina Samudra Sūri.
P,	D, Skt Poetry	19 4 × 15 5 2 12 14	C	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	19 4 × 15 5 19 14 14	C	Old	Written on copy size paper.
P	D; Skt Poetry	20.4 × 16 5 13 21 14	Inc	Old	
P	D; Skt Poetry	25 1 × 16.1 9 11 33	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19 4 × 15 5 4.13.14	C	Good	

1	2	3	4	5
749	Kha/243	Sahasranāmārādhanā	Devendrakīrti	—
750	Kha/183/1	,, Stotra Ṭīkā	Jinasenācārya	Śrutasā-gara
751	Jha/35/5	,, ,,	—	—
752	Jha/75	,, Ṭīkā	Śrutasāgara	—
753	Kha/161/2	,, ,,	Pt Āśādhara	Amara-kīrti
754	Ga/134/7(Kh)	Sata Aṣṭotarī Stotra	Bhagavatīdāsa	—
755	Kha/188/2	Śakra Stavana	Siddhasenācārya	—
756	Nga/2/27	Sattarisaya ,,	—	—
757	Nga/2/51	Sammedāṣṭaka	Jagadbhūṣaṇa	—
758	Kha/97	Samavasaraṇa Stotra	Samantabhadra	—
759	Ga/148/3	Saṅkaṭaharaṇa Vinatī	—	—
760	Kha/177/13	Śāntināthа Āratī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.2×15 4 60.14. 37	C	Good 1926 V. S.	Copied by Nemirājā.
P.	D; Skt. Poetry	29 5×12 5 114 12 54	C	Old 1775 V. S.	Copied by Gaṅgārāma. Published.
P	D; Skt Poetry	16 1×16 1 9 13 19	Inc	Good	
P	D, Skt Prose	32 8×17 5 127 11 38	C	Good 1985 V. S.	Page No 68 to 78 are missing
P	D; Skt. Prose/ Poetry	25 8×13 2 61 14 52	C	Old 1897 V S	
P	D, H Poetry	30 3×16 3 10 14 43	C	Good	
P	D; Skt Prose	25 3×11 0 3 9 41	Inc	Old 1774 V S	
P.	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 3 13 14	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	16 5×10 5 56 8 29	C	Old	
P.	D, H Poetry	24 4×12 9 2 15.40	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.3×11 4 1.12.29	C	Old	Only one page is available.

1	2	3	4	5
661	Jha/36/2	Śāntināthа Stora	Guṇabhadrācārya	—
762	Nga/2/44	„ Stavana	—	—
763	Nga/2/19	„ „	—	—
764	Jha/34/23	„ „	—	—
765	Jha/80	Sarasvatī Kalpa	Malliṣena Sūri	—
766	Jha/34/8	„ Stotra	—	—
767	Kha/176/2	„ „	—	—
768	Kha/173/3 (Kha)	„ „	—	—
769	Kha/161/6	„ „	—	—
770	Nga/2/6	Siddhbhakti	—	—
771	Nga/7/15	Siddhipriya Stotra Tikā	Bhavyānanda	—
772	Jha/34/22	Siddhaparameṣṭhi Stavana	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	19 7×14.9 1 11.20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 1 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 12 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×16 7 9 11 22	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	25 1×16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 9×13 5 2 9 28	C	Old	
P	D, Skt Poetry	27 2×17 5 1 14 36	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 1×12 1 1 11 32	Inc	Old	Only first page available.
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 4×15 5 5 13 15	C	Good	
P.	D; Skt Prose/ Poetry	20 9×16 3 17.16.12	C	Old	The Ms. is demaged.
P.	D; Skt Poetry	25.1×16.1 2.11 33	C	Good	

1	2	3	4	5
773	Nga/2/7	Śrutabhakti	—	—
774	Kha/50	Stotra Saṁgraha	—	—
775	Kha/165/11	Stotrāvali	—	—
776	Kha/165/5	,,	—	—
777	Kha/120	Stotra Saṁgraha Guṭakā	—	—
778	Kha/286	,, ,,	—	—
779	Jha/73	,, ,,	—	—
780	Nga/2/46	,,	Bhaṭṭāraka Jinacandradeva	—
781	Kha/227/8	Suprabhāta Stotra	—	—
782	Jha/34/5	Svayaṁbhū Stotra	Samantabhadra	—
783	Jha/40/5	,, ,,	,,	—
784	Kha/16	,, ,, Saṭīka	,,	Prabhācandrācārya

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt / Pkt Poetry	19 4×15 5 7 13 15	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×10 2 49 7 36	C	Old 1950 V S	
P	D, Skt Poetry	24 5×11 1 6 20 45	Inc	Old	First page is missing
P	D, Skt Poetry	26 3×10 8 11 13 52	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×7 3 2/2 5 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 6×12 3 535 16 19	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	32 8×17 5 72 11 39	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 55	C	Good	Copied by Batuka Prāsāda.
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 14 11 32	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 4×11 9 5 9 16	C	Good	
P.	D, Pkt, Poetry/ Prose	29 7×13 5 79 9 38	C	Good 1919 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
785	Kha/161/4	Viṣāpahāra Stotra	Dhanañajaya	—
786	Jha/35/3	,, ,,	,,	—
787	Nga/7/19	,, ,,	,,	—
788	Nga/7/12 (K)	,, ,,	,,	—
789	Nga/6/4	,, ,,	,,	—
790	Kha/185/3	,, ,, ṭikā	,,	Nāgacandra
791	Kha/178/51	,, ,,	,,	—
792	Ga/59/2	,, ,,	,,	Akhairāja
793	Kha/165/9	,, ,,	,,	—
794	Kha/171/2(G)	,, ,, Mūla	,,	—
795	Ga/157/8	Vinati Saṁgraha	—	—
796	Jha/31/9	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	24 1×12 7 3 13 40	C	Old	Published.
P	D, Skt Poetry	16 1×16 1 5 13 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	26 8×11 2 4 9 34	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 1×13 3 4 18 12	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 8×18 1 3 17 18	G	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	21 6×12 2 10 16 39	C	Old	
P	D,H ,Skt Poetry	20 8×16 6 8 18 20	C	Good 1947 V S	Published
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	29 5×13 5 12 14 48	C	Good	Published
P	D, Skt Poetry	26 1×10 5 5 7 32	C	Old 1672 V. S	Published
P	D, Skt Poetry	25 4×16 9 5 12 24	C	Good	Published.
P	D, H Poetry	15 4×14 6 23 12 18	C	Good	1st page is missing.
P.	D; H Poetry	18 2×11.8 1 10 22	C	Good 1852 V S.	

1	2	3	4	5
797	Nga/2/16	Vitarāga Stotra	—	—
798	Jha/28/6	Vrhat Sahasranāma	—	—
799	Nga/2/45	Yamakāṣṭaka Stotra	Bhaṭṭāraka Amarakīrti	—
800	Nga/2/11	Yogabhakti	—	—
801	Nga/5/5	Abhiṣekapātha	—	—
802	Nga/6/17	,, Samaya Kā Pada	—	—
803	Jha/15	Akrtrima Caityālaya Pūjā	—	—
804	Jha/34/25	Anantavrata Vidhi	—	—
805	Kha/76	Anantavratodyāpana Pūjā	Gunacandra	—
806	Kha/191/7 (Kha)	Aṅkuraropana Vidhi	—	—
807	Jha/49/3	Arhaddeva Vrhad Śānti Vidhāna	—	—
808	Kha/143/2	Arhaddeva Śāntikābhiṣeka Vidhi	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Prose	19 4×15 5 7 12 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 2×15 8 2 15 20	Inc	Ol	
P	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 1 13 15	C	Good	
P	D, Pkt / Skt Poetry	19 4×11 0 5 13 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 9×17 1 8 15 18	C	Good 1965 V S	
P	D, Skt Poetry	22 8×18 1 1 17 23	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 6×16 2 72 22 16	C	Old	
P	Prose	25 1×16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 6×13.4 18 14 54	C	Old	
P	D, Skt. Prose	27.5×19 7 15 16 30	C	Old	
P.	D;Skt H / Poetry	20 8×16 2 50 14 16	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	31 4×14 2 90.10 39	C	Old 1800 V. S.	

1	2	3	4	5
809	Kha/177/10 (Kha)	Aṣṭaprakārı Pūjā Vıdhāna	—	—
810	Kha/171/4	Atíta Caturvımśatı Pūjā	—	—
811	Nga/8/9	Bārası Caubisi Pūjā Vā Uddyāpana	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
812	Nga/2/30	Bhāvanā Battisi	—	—
813	Nga/6/15	Bısa Bhagavāna Pūjā	—	—
814	Kha/250	Vrhatsıddhacakra Pā·ha	—	—
815	Kha/75/2	,, ,, Vıdhāna	—	—
816	Kha/176/5	Vrhatśāntı Pātha	—	—
817	Ga/80/6	Candraśataka	—	—
818	Jha/13/7	Caıtyālaya Pratıṣṭhā Vıdhi	—	—
819	Nga/5/8	Caturvımśatı Pūjā	—	—
820	Kha/78/2	,, Tírthaṅkara Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	24 1×12 8 1 14 34	C	Good 1871 V S	
P	D,Skt /H Poetry	20 4×16 6 16 11 28	C	Good 1969 V. S	
P	D, Skt Prose/ Poetry	22 1×18 1 64 13 28	C	Good 1948 V S	
P.	D, Skt / Pkt Poet y	19 4×15 5 13 13 15	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	22 8×18 1 3 17 21	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 7×10 6 119 9 51	C	Old 1961 V S	Copied by Sitārāma
P	D, Skt Prose/ Poetry	31 6×16 2 41 9 42	C	Good	
P,	D, Skt Prose/ Poetry	24 6×10 6 4 10 43	C	Good	
P	D, H Poetry	23 2×15 3 15 22 22	C	Old 1890 V S.	Copied by Nandalāla Pānday.
P	D, Skt Poetry/ Prose	24 5×12 5 7 21 16	C	Good	
P	D, H Poetry	19 9×18 6 4 13 21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	33 0×14 4 32 12 46	C	Good 1892 V. S.	

1	2	3	4	5
821	Nga/6/1	Viṁsati Jinapūjā	Dyānatarāya	—
822	Ga/55/1	Caubisi Pūjā	Manaraṅga	—
823	Ga/145/1	,, ,,	Vrndāvana	—
824	Ga/93/2	Caubisa Tirthaṅkara Pūjā	,,	—
825	Ga/94/1	Caubisi Pūjā	,,	—
826	Jha/26/2	Cintâmani Pārśvanātha Pūjā	—	—
827	Jha/16/6	,, ,,	—	—
828	Jha/16/8	,, ,,	—	—
829	Nga/8/4	,, ,,	—	—
830	Ga/103/1	Daśalākṣanika Udyāpana	—	—
831/1	Nga/8/7	,, ,,	—	—
831/2	Kha/73/3	,, Vratodyāpana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	18.2×13 8 11 16 19	C	Good	
P	D, H Poetry	22 9×10 8 108 7 35	C	Good 1962 V. S	
P	D, H Poetry	32 1×16 2 64 10 41	C	Good	
P	D, H Poetry	32.5×17 6 [illegible] 11 38	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	36 3×13 3 65 9 46	C	Good 1962 V S	
P	D, Skt Poetry	22 4×16 8 24 20 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3×16 1 4 21.18	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	24 3×16 1 5 19.17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 1×18 1 10 13 28	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	34 7×20 4 09 15 42	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22 1×18 1 17.13 25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	26 5×16.5 22.11.28	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
832	Ga/103/7	Daśalakṣana Pūjā	Dyānatarāya	—
833	Ga/103/5	,, ,,	—	—
834	Nga/4/5	,, ,,	—	—
835	Nga/6/12	,, ,,	Dyānatarāya	—
836	Kha/72,3	Darśana Sāmāyika Pātha Samgraha	—	—
837	Jha/25/2	Devapūjā	Dyānatarāya	—
838	Jha/37	,, ,,	—	—
839	Jha/28/4	,, ,,	—	—
840	Nga/9/1	,, Pūjana	—	—
841	Nga/6/13	,, Śāstra-Gurupūjā	—	—
842	Kha/175/2	Devapūjā (Abhiṣeka Vidhi)	—	—
843	Nga/9/2	Dharmacakra Pāṭha	Yaśonandi Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	34 7×20 4 3 15 50	C	Good	Published
P	D, Skt / Pkt. Poetry	34 7×20 4 4 15.48	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	21 5×17 9 15 10 22	C	Good 1951 V S	
P.	D,Apb /H Poetry	22 8×18 1 11 17 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	26 8×17 2 42 15 42	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, H, Poetry	22 9×12 1 3 18 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 4×13 8 25 10 14	C	Old	First page is missing
P	D, Pkt Poetry	20 1×15 8 10 13 17	Inc	Good	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	25 6×20 6 40 10 18	C	Good	
P	D;Apb / Skt /H Poetry	22 8×18.1 10 17 19	C	Good	
P.	D; Skt Prose/ Poetry	27.2×14 1 13 16.38	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	25 5×20 3 48.14.16	C	Good 1962 V. S.	

1	2	3	4	5
844	Jha/16/2	Dharmacakra Pāṭha	—	—
845	Jha/131/8	,, Pūjā	—	—
846	Jha/13/1	Ganadharavalaya Pūjā	—	—
847	Nga/8/1	,, ,,	—	—
848	Ga/110/2	Grahaśānti ,,	—	—
849	Ga/157/2	Homa Vidhāna	Daulatarāma	—
850	Jha/26/5	,, ,,	Āśādhara	—
851	Kha/145/1	Indradhvaja Pūjā	Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣana	—
852	Kha/44	,, ,,	,,	—
853	Jha/27	,, ,,	,,	—
854	Nga/6/18	Janmakalyānaka Abhiṣeka Jayamālā	—	—
855	Jha/36/4	Jāpa-Vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 6 20 10	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	18 2×11 8 9 10 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 5×15 6 6 21 20	C	Good	
P	D, Skt Prose/ Poetry	22 2×18 1 8 14 28	C	Good	
P	D, H Poetry	21 5×16 6 22 16 14	Inc	Old	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	20 8×15 8 15 13 15	C	Good 1930 V S	Laxmicanda seems to be copier
P	D, Skt Poetry	22 4×16 8 7 18 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 6×14 4 111.11 46	C	Good 1910 V. S	
P.	D, Skt Poetry	29 2×19 5 147 12 32	C	Good 1951 V S	Unpublished.
P	D, Skt Poetry	21 8×14 8 103 21 18	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 8×18 1 2.17 22	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	19 7×14.9 1.11.21	C	Good	

1	2	3	4	5
856	Nga/2/42	Jinapañcakalyāṇaka Jayamālā	—	—
857	Kha/204	Jinendrakalyāṇābhyudaya (Vidyānuvādāṅga)	—	—
858	Kha/207	Jinayajna Fhalodaya	Kalyāṇakīrtimuni	—
859	Nga/44	Jinapratimā Sthāpana Prabandha	Śrībrahma	—
860	Kha/163/5	Jinapurandara Vratodyāpana	—	—
861	Jha/16/7	Kalikuṇḍa Pārsvanātha Pūjā	—	—
862	Jha/26/3	Kalikuṇḍala Pūjā	—	—
863	Kha/244	Kalikuṇḍārādhanā Vidhāna	—	—
864	Kha/278	Karmadahana Pāṭha Bhāṣā	—	—
865	Ga/37	Karmadahana Pūjā	—	—
866	Kha/74/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
867	Kha/72/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 14	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	34 8×14 4 131 9 53	C	Good	
P	D, Skt Poetry	31 5×18 7 86 15 47	C	Good 2451 Vir S	
P	D, Skt Prose/ Poetry	31 8×14 2 48 12 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 9×12 1 9 10 55	G	Old 1932 V S	Unpublished Copied by Rāmagopāla
P	D, Skt Poetry	24 3×16 1 5 20 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 4×16 8 3 20 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 4 13 12 33	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 9×17 9 7.19 26	Inc	Good	
P	D, H Poetry	27 1×17 5 22 24 16	C	Good 1951 V S.	
P	D, Skt Poetry	29 6×15 2 34 11 45	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	26.5×17 4 10 12.33	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
868	Kha/37/1	Karmadahana Pūjā	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
869	Kha/168	,, ,,	,,	—
870	Jha/48	,, ,,	—	—
871	Nga/8/2	,, ,,	Vādicandra Sūri	—
872	Kha/186/1	Kṣetrapāla ,,	—	—
873	Kha/185/4	Laghusāmāyika Pāṭha	—	—
874	Kha/232	Mahābhiṣeka Vidhāna	Śrutasāgara Sūri	—
875	Nga/2/43	Mahāvīra Jayamālā	—	—
876	Kha/140/3	Mandira Pratiṣṭhā Vidhāna	—	—
877	Kha/242	Mṛtyuñjayārādhanā Vidhāna	—	—
878	Ga/148/1	Mūlasaṁgha Kāṣṭhāsaṁghi	—	—
879	Ga/18/2	Nandiśwara Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	35 0×18 3 11 13 53	C	Old	Published.
P	D; Skt Poetry	24 8×10 6 16 11 46	Inc	Old	Pages disarranged & missing.
P	D, Skt Poetry	19 3×18 1 19 15 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 1×18 1 15 13 26	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 2×13 6 9 11 34	C	Old 1836 V S	Copied by Cainsukhaaji
P	D, Pkt / Skt Prose/ Poetry	16 4×11 2 8 12 24	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	30 5×17 4 40 12 50	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 4×16.6 38 13 52	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	17.1×15 4 7 12.37	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirājā
P.	D,Skt /H Poetry	30 3×16 5 16 11 33	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H Poetry	33 3×21.1 16 12 41	C	Good	

1	2	3	4	5
880	Ga/18/1	Nandiswara Vidhāna	Takacanda	—
881	Nga/2/54	Navagraha Ariṣṭa Nivāraka Pūjā	—	—
882	Nga/1/4/1	Navakāra Paccisi	Vinodilāla	—
883	Kha/191/1(K)	Nāndimangala Vidhāna	—	—
884	Kha/234	,, ,,	—	—
885	Jha/32	Nityaniyama Pūjā	—	—
886	Kha/70/2	,, ,,	—	—
887	Nga/4/4	Nityaniyama Pūjā Saṁgraha	—	—
888	Ga/94/2	Nirvāna Pūjā	—	—
889	Nga/4/3	Pañcamaṅgala	Rūpacanda	—
890	Kha/87/2	Pañcami Vratodyāpana	—	—
891	Nga/5/1	Pañcamerū Pūjā	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	31 6×17 3 15 13 48	C	Good 1951 V S.	
P	D,Skt /H Poetry	19 2×15 1 6 13 14	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 12 13 9	C	Good 1913 V S	First page is missing
P	D, Skt Prose	27 5×19 7 20 16 30	C	Old	
P	D, Skt Prose	30 5×17 4 55 11 50	C	Good	
P	D,Skt ,H Poetry	17 8×14 3 24 14 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 4×19 2 9 20 19	Inc	Old	First page damaged & last pages are missing
P,	D, Skt / H Poetry	21 5×17 9 32 10 24	C	Good	
P	D, H Poetry	36 3×13 3 5 9 35	C	Good 1965 V S.	
P	D, H Poetry	21 5×17 9 8 10 28	C	Good 1951 V. S.	
P	D, Skt Poetry	29 6×13 4 4 14 56	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	18 3×14.5 14.15 17	C	Good	

1	2	3	4	5
892	Kha/95	Pañcaparameṣṭhi Pūjā	—	—
893	Kha/74/2	,, ,,	Yaśonandi	—
894	Ga/103/2	,, ,,	—	—
895	Ga/66	,, Vidhāna	—	—
896	Kha/112/4	,, Pāṭha	Yaśonandi	—
897	Kha/40/1	Pañcakalyāṇaka Pūjā	—	—
898	Jha/23/3	,, ,,	—	—
899	Kha/62/2	,, ,,	—	—
900	Ga/103/1	,, ,,	Bakhtāvara	—
901	Nga/1/1	,, ,,	—	—
902	Kha/112/1	,, Pāṭha	—	—
903	Kha/112/7	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	27 5×13 5 43 9 38	C	Old	
P	D; Skt Poetry	29 8×15 1 67.13 44	Inc	Old	First 33 pages are missing.
P.	D, H Poetry	34 7×20.4 18 15 51	C	Good 1937 V. S.	Copied by Jamunadas.
P	D, H Poetry	24 5×22 3 129 15 24	C	Old	Copied by Paṇḍit Hirā Lāla.
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 134 10 31	C	Old 1800 Saka samvat	Published. Written on copy size paper with black & red ink pages are bordered with fine printing
P	D, Skt Poetry	33 0×15 5 21 9 45	C	Old	Unpublished.
P	D, Skt Poetry	23 2×19 6 21 17 23	C	Good 1953	
P	D, Skt Poetry/ Prose	29 6×14 8 9 11 37	Inc	Old	First 19 pages & last pages are missing
P	D, H Poetry	34 7×20 4 13 15 50	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 5×11 8 23 12 25	C	Good 1879 V S.	
P	D; Skt Prose/ Poetry	19.8×15.5 75 12.28	C	Old 1936 V S	Written with red& black ink. Pages are boardered with fine printiag. Last three pages are const of fine manadls sketches.
P.	D; Skt. Poetry	19 4×15.5 47.17 20	Inc	Old	First two pages and last pages are missing.

1	2	3	4	5
904	Nga/5/2	Pañcakalyāṇaka Pāṭha	—	—
905	Kha/184	Pañcakalyāṇakādi Maṇḍala	—	—
906	Nga/3/1	Padmāvatī Pūjā	Haridāsa	—
907	Nga/7/13 (Kha)	Padmāvatīdevī ,,	—	—
908	Jha/26/4	,, Pūjana	—	—
909	Nga/8/3	Palyavidhān Pūjā	—	—
910	Jha/55	Pratiṣṭhākalpa	Akalaṅkadeva	—
911	Kha/222	,, ,, Ṭippana (Jina Saṁhitā)	Kumudacandra	—
912	Jha/86	Pratiṣṭhā Pāṭha	Jayasenācārya	—
913	Jha/42	,, ,,	—	—
914	Jha/54	Pratiṣṭhā Sāroddhāra	Bramhasūri	—
915	ha/140/2	Pratiṣṭhāsāra Saṁgraha	Vasunandi Saiddhāntika	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	21.1×16.4 37 11 24	C	Good	
P	— —	22 3×18 3 30 0 0	C	Old	It is skeches of thirty mandalas
P	D, Skt Poetry	20 6×16 5 162 11 18	C	Good 1955 V. S	
P	D, Skt. Poetry	20 9×16 5 2 17 18	C	Good	
P	D, H Poetry	22 4×16 8 3 14 16	C	Good	
P	D, H, Poetry	22 1×18 1 8 13 30		Good	
P	D, Skt Poetry	21 2×16 8 80 14 36	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirājā.
P	D, Skt prose	34 8×14 5 39 10 69	C	Good 2451 Saka S	,, ,,
P	D, Skt Poetry	31 7×19 8 80 13 30	C	Good	
P	D, Skt. Prose	24 8×12 8 34 11 32	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	21 1×16 8 112 14 00	C	Good 2452 Vir S	Copied by Nemirāja.
P.	D; Skt. Poetry	27 4×16 3 33.14 51	C	Old 1949 V. S.	Pt Paramanand,

1	2	3	4	5
916	Kha/247	Pratiṣṭhā Vidhāna	Hastimalla	—
917	Kha/176/1	„ Vidhi	—	—
918	Gaa/157/3	Prākṛtanhavana	—	—
919	Kha/156/2	Punyāhavācana	—	—
920	Kha/98,1	„	—	—
921	Jha/9/1	Puṣpāñjali Pūjā	—	—
922	Kha/169	Pūjā Saṁgraha	—	—
923	Ga/103/6	Ratnatraya Pūjā	Narendrasena	—
924	Jha/23/1	„ „	Jinendrasena	—
925	Jha/51	„ „	„	—
926	Nga/6/9	„ „	Dyānatarāya	—
927	Ga/103/8	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	17.1×15 1 19.11 34	C	Good	
P	D, Skt Prose	27 1×15 4 34 11 32	C	Old 1909 V. S.	Written on coloured thin paper.
P	D, Pkt Poetry	17 5×15 5 3 13 27	C	Good	
P	D, Skt Poetry	27 4×13 6 6 11 43	C	Old	
P	D, Stk Poetry	21 5×12 2 11 9 29	C	Old 1866 V S	
P	D, Skt Poetry	27 2×12 4 6 13 50	C	Good	
P	D, Skt / Pkt /H Poetry	24 9×21 4 88 26.48	C	Good 1947 V. S	
P	D, Skt Poetry	34 7×20 4 7 15 46	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 2×19 5 12 18 23	C	Good	
P	D; Skt Poetry	21 2×16 2 16 17 21	C	Good	
P	D, H Poetry	22 8×18 1 5.17.23	C	Good	
P	D; H, Poetry	34 7×20 4 3 15 46	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
928	Kha/263	Ratnatraya Pūjā Udyapana	Viśvabhūṣaṇa S/o Viśālakīrti	—
929	Ga/103/4	,, ,,	—	—
930	Kha/91	,, ,,	—	—
931	Kha/98/2	,, Jayamāla	—	—
932	Kha/165/3	,, ,,	—	—
933	Ga/93/3	Ṛṣimaṇḍala Pūjā	Jawāhara Lāla	—
934	Jha/49/2	,, ,,	,,	—
935	Jha/31/5	,, ,,	—	—
936	Ga/80/5	Rūpacandra Śataka	Rūpacandra	—
937	Jha/13/3	Sakalīkarana Vidhāna	—	—
938	Kha/143/3	,, ,,	—	—
939	Jha/45	Samavaśaraṇa Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	24 6×19 8 33 15.40	C	Good	This work is presented to Jain Sidhant Bhavan by Buchchulāla Jain in 1987 V S
P	D, Skt/ Pkt Poetry	34 7×20 4 19 15 52	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 4×14 2 8 14 57	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	29 1×13 4 4 7 43	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 6×11.8 3 6 35	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×16.8 12 13 51	C	Good 1901 V S	
P	D, H Poetry	20 8×16.2 33 14.16	C	Good 1960 V S	Durgālāl seems to ba copier.
P	D, Skt Poetry	18 2×11.8 19 10 22	C	Good	
P	D, H Poetry	23.2×15.3 4 22 22	C	Old 1890 V. S	It is written only Doha Chhanda
P	D, Skt Poetry	24 5×16 5 2 23 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	31.5×14 4 9 11 47	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 6×18.1 25.14 52	C	Good	

1	2	3	4	5
940	Kha/79	Samavasarana Pāṭha (Samavaśruti-Pūjā)	Bhaṭṭaraka Kamalakīrti	—
941	Ga/36	Sammedaśikhara Māhātmya	Lālacandra	—
942	Ga/151/2	Sammedaśikhara Pūjā	Jawāhara	—
943	Jha/38/2	,, ,, ,,	—	—
944	Nga/1/5/1	Sa asvati Pūjā	Sadāsukha	—
945	Ga/77/2	,, ,,	Sadāsukha Dāsa	—
946	Jha/13/2	Saptarṣi ,,	Viśvabhūṣana	—
947	Nga/4/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣana	—
948	Jha/23/2	,, ,,	Visva Bhūṣana	—
949	Kha/148	Satcaturtha Jenārccana	—	—
950	Kha/70/3	Ṣannavati Kṣetrapāla Pūjā	Sri Viśvasena	—
951	Kha/37/2	Sārdhadvayadvīpā Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	27 5×13 6 38 11 49	C	Old	
P	D; H Poetry	29 8×18 3 45 12 40	C	Good 1937 V S	
P	D, H Poetry	28 8×12 4 15 9 39	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 3×13 2 12 10 15	C	Old	
P	P, H Poetry	17 5×14 4 27 11 20	C	Good 1921 V S	
P	D, H Poetry	24 5×10 6 25 8 33	C	Good 1962 V S	
P	D, Skt Poetry	24 5×16 5 8 21 18	C	Good	Unpublished.
P	D, Skt Poetry	21 2×15.1 12 9 25	C	Good 1951 V S	
P	D, Skt Poetry	23 3×19,4 8 18 21	C	Good 1956 V. S	
P	D, Skt Poetry	28 1×15 2 95 12 33	C	Good 1935 V S	Unpublished
P.	D, Skt. Poetry	29 5×19 0 17 22.21	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	35.5×19 1 93 14 54	C	Old	

1	2	3	4	5
952	Jha/1	Sārdhadvaya dwīpasth Jinapūjā	—	—
953	Kha/32	Sāmāyika Paṭha	Bahumuni	—
954	Kha/80/1	Śāntyāṣṭaka Tikā	—	—
955	Jha/13/6	Śāntimantrābhiśeka	—	—
956	Kha/210/Kha	Śānti Pāṭha	—	—
957	Ga/55/2	,, Vidhān	Śwarūpacand	—
958	Kha/233	,, ,,	—	—
959	Kha/72/1	Śāntidhārā Pātha	—	—
960	Nga/6/14	Siddhapūjā	—	—
961	Jha/38/1	,,	—	—
962	Kha/160/4	Sidhacakra	Devendrakirti	—
963	Ga/51	Śikharamāhātmya	Lālacanda	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	31 3×15 6 106 12 40	C	Good 1868 V S.	Śivalāla seems to be copier.
P	D, Skt Poetry	31 0×12 6 16 9 38	C	Old 1836 V S	Unpublished
P.	D, Skt Poetry	26 8×14 3 34 10 43	Inc	Old 2440 Bir S	Last pages are missing.
P	D, Skt /H Prose	24 5×12 5 17 21 14	Inc	Good	
P	D, Skt Poetry	26 8×15 8 7 8 30	Inc	Good 2438 Vir S	Copied by Dharamcand.
P	D, H Poetry	28 5×12 9 43 9 36	C	Good	
P	D, Skt Prose	30 5×17 4 17 12 48		Good	
P,	D, Skt Prose	28 0×17 0 6 9 31	C	Good 1947 V S	
P	D, Skt Poetry	22 8×18 1 3 17 25	C	Good	
P	D, H Poetry	14 3×13 2 7 10 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	28 4×10 8 16.9 41	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D, H Poetry	30.1×19.1 49 12 34	C	Good 1955 V S.	

1	2	3	4	5
964	Kha/140/1	Siṁhāsana Pratiṣṭhā	—	—
965	Kha/172/3	Solahakārana Jayamālā	—	—
966	Nga/8/6	,, Udyāpana	—	—
967	Nga/5/7	Sudarśana Pūjā	Śikharacandra	—
968	Jha/28/5	,, ,,	—	—
969	Kha/98/3	Śrutaskandha Vidhāna	—	—
970	Jha/9/2	,, Pūjā	—	—
971	Jha/13/5	Swasti Vidhāna	—	—
972	Nga/2/1	Svādhyāya Pāṭha	—	—
973	Ga/20	Terahadwīpa Vidhāna	—	—
974	Jha/14	Tīsacaubīsī Pāṭha	—	—
975	Nga/8/8	Tīsacaturviṁśati Pūjā	Śubhacandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	30 4×17 1 11 13 36	C	Old	Copied by Pt Paramananda
P	D, Pkt Poetry	27 2×18 2 17 6 29	C	Old 1952 V S.	Copied by Gobinda Singh Varmā
P	D, Skt Poetry	22.1×18 1 28 13 30	C	Good	
P	D, H Poetry	21 2×16 6 4 14 18	C	Good 1950 V S	
P	D, H Poetry	20 2×15 8 5 10 24	C	Good 1950 V S	
P	D, Skt Poetry	29 5×13 4 7 14 51	C	Good	
P	D, Skt Poetry	27 2×12 4 17 8 28	C	Good	
P	D; Skt Poetry	24 5×16 5 9 22 15	C	Good	
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 4×15 5 4 13 14	C	Good	
P.	D, H. Poetry	37 5×19 8 183 12 41	Inc	Good	First page & last pages ai missing
P	D, Skt Poetry	24 4×15 2 73 18 15	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22 1×18.1 49.13 26	C	Good 1774 V. S.	

1	2	3	4	5
976	Ga/137	Tisa Caubisi Pūjā	—	—
977	Kha/78/1	Trikāla-Caturviṁśati Pūjā	—	—
978	Ga/19	Trilokasāra „	Paṅdit Mahācandra	—
979	Ga/3	„ Vidhāna	Jawāhara Lāla	—
980	Kha/241	Vajrapañjarādhanā Vidhāna	—	—
981	Ga/112/2	Vāsupujya Pūjā	—	—
982	Kha/240	Vāstupūjā Vidhāna	—	—
983	Ga/157/11	Vidyamāna Caturviṁśati Jinapūjā	—	—
984	Ga/157/5	Viṁśati Vidyamāna Jinapūjā	—	—
985	Kha/171/1	„ „	Śikharacandra	—
986	Kha/238	Vimānasudhi Vidhāna	—	—
987	Jha/84	Vratodyotana	Abhradeva	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	28 3×17 9 136 13 35	C	Good 1913 V S	
P	D. Pkt Poetry	29 6×15 2 13 11 37	C	Good	
P	D, H Poetry	42.8×21 3 148 13 33	C	Good 1954 V S	
P	D, H Poetry	36 1×20 5 227 15 44	C	Good 1964 V S	
P	D, Skt Poetry	17 3×15 5 6 12 37	C	Good	Copied by N N. Rāya.
P	D, H, Poetry	20 9×16 5 5 13 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 2 9 12 32	C	Good	Copied by Nemirājā.
P	D, Skt poetry	12 7×00 0 29 9 18	Inc	Old	1 to 5 Pages are missing.
P	D, Skt / Pkt Poetry	18 2×11 9 6 12 19	C	Old	
P	D, H. Poetry	27 9×17 5 60 15 13	C	Old 1941 V S	
P.	D, Skt Poetry	17 1×15 3 9 12.30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 3×16.2 22.9.54	C	Good 1987 V. S	

1	2	3	4	5
988	Jha,49/9	Vrihadnhavana	—	—
989	Kha/154	Vṛhacchānti Pāṭha	Dharmadeva	—
990	Jha/122	Bimbanirmāna Vidhi	—	—
991	Jha/25/4	Caubisa Dandaka	—	—
992	Jha/56	Dvijavadana Capeta	—	—
993	Jha/92/2	Lokānuyoga	Jinasenācārya	—
994	Kha/177/2	Maṅdala Cintāmani	—	—
995	Jha/117	Munivaṅśābhyudaya	Cidānaṅda Kavi	—
996	Jha/102	Trailokya Pradipa	Indravāmadeva	—
997	Ga/88	Yaṅtra dwārā vividha carcā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	20 8×16 2 14 14 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 6×13 3 27 14 49	C	Good 1937 V S	
P.	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 6×17 5 20 13 30	C	Good 1992 V S	
P	D, H Prose	22 9×15 4 7 18 15	C	Good	
P	D, Skt Prose/ Poetry	20 9×18 9 28 16 22	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D, Skt. Poetry	35 2×16 3 81 11 49	C	Good 1989 V S.	
P.	D, H	00 0×00 0 1 00 00	C	Old	It is a sketch of cintāmani prepared by Munilāla.
P.	D, K Poetry	33 8×16 3 40 10 45	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	35 4×16 3 82 11 55	C	Good 1990 V S	
p	D, H. Prose	36 4×28 8 68 25 40	C	Good	Unpublished.

परिशिष्ट

(पुराण, चरित, कथा)

१. आदिपुराण

Opening : श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।
धर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीयुषे ॥

Closing यो नाभेस्तनयोऽपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयम्भूरिति
त्यक्ताशेषपरिग्रहोऽपि सुधीयां स्वामीति यः शब्द्यते ।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेकोपकारीमतो
निर्दानोऽपि बुधैरुपास्यचरणो यः सोऽस्तु वः शातये ॥

Colophon इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकर चक्रधरपुराण परिसमाप्तम् । सप्तचत्वारिंशत्तिनम पर्व ।

पुस्तक आदिपुराणजी कर भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति जी को दिया लखनऊ मे ठाकुरदास की पत्नी ललितपरसाद की बेटी ने मिति माघ वदी स० १६०५ के साल मे ।

द्रष्टव्य—प्र० जै० सा०, पृ० १०२ ।
जि० र० को०, पृ० २६ ।
आमेर भंडार के ग्रंथ, पृ० ११ ।
रा० सू०, पृ० २६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १ ।
Catg. of Sk & Pkt Ms., page-624

२. आदिपुराण

Opening देखें, क्र० १ ।

Closing देखें, क्र० १ ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे

प्रथमतीर्थंकरप्रथमचक्रधरकेवलज्ञाने निर्वाणादिवर्णनं नाम महापुराणं समाप्तम ।।४७।। समाप्तोऽयं श्री आदित्यपुराणग्रंथ । अथ श्रीसंवत्सरे नृपति श्रीविक्रमादित्यराज्ञ सम्वत् १८५१ चैत्रमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ रविवासरे पट्टनपुरनगरे लिखितमिद महापुराण उदेरामब्राह्मणेन । ॥ शुभम् ।।

३. आदिपुराण

Opening देखें, क्र० १ ।

Closing . देखें, क्र० १ ।

Colophon इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधर केवलज्ञान निर्वाणादिवर्णनोनाम महापुराण समाप्तम् । समाप्तोऽयं श्रीआदिपुराणग्रंथ । अथश्रीसंवत्सरे नृपतिश्री विक्रमादित्यराज्ञ संवत् १७७३ आषाढे मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ-भौमवासरे पाटलिपुरेनगरे लिख्यतमात्मने ब्रह्मचारिणा सानदेन ।।

४. आदिपुराण

Opening देखें, क्र० १ ।

Closing देखें, क्र० १ ।

Colophon इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरनिर्वाणगमणपुराण परिसमाप्ति सप्तचत्वारिंश-तम पर्व ।।४७।।

रुद्रेंदुनाभिता सख्याप्रवाच्यासुमनीषिभि ।
श्रेयमादिपुराणाद्धिगणित सुसमीहितम् ।।
. श्री हरिकृष्णसरोजराजराजितपदपकज ।
सेवतमधुकरसुभटवचनमंत्रिततनुजकज ।
यह पुरण लिख्यौ पुरातातिन शुभ शुभ कीरति के पवनको ।
जगमयतु जगमनिजसुअटलशिष्यसुमिरधर परसरामकें कथनको ।
शुभ भव सुमगलम् श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।।

५. आदिपुराण

Opening . प्रणमि सकल सिद्धनिकूं, प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकूं, नमि गणधर के पाय ।।

Closing : श्रीमत आदि पुराणके, श्लोक भाषा अनुमान।
तेईस जु सहस्र है, बुधजन करहु बखान॥

Colophon : मासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे द्वितीयां बृहस्पति संवत् १८९ पुस्तक लिखत वैश्यकर्मंतस्यात्मपुत्र भ्रातालाल तस्य पुत्र बुधराज अपने पठनार्थ हेतु लिखी।

६. आदिपुराण टिप्पण

Opening ॐ नमो वक्रग्रीवाचार्याय श्रीकुन्दकुन्दस्वामिने। अथामध्यवरेण्य-सकलपुण्यचक्रवर्तितीर्थंकरपुण्यमहिमावष्टम्भसम्भूतपञ्चकल्याणाभ्यिवस ''''।

Closing : ''''स्वपरार्थसिद्धि स्वपरार्थज्ञानं सम्यग्ज्ञानमित्यर्थं। वृषभ. श्रेष्ठ.।

Colophon : इति प्रथमचक्रधरपुराणं सप्तचत्वारिंशत्तमं पर्वपरिसमाप्तम्।

विशेष . अन्तिम एक पत्र मे कम सदृष्टि दी गई है।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७।

७. आदिनाथ पुराण

Opening देखें, क्र० १।

Closing श्रीपुराणसमाम्नायमाम्नातं हस्तिमल्लिना।
तरच्छ सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयत्वमुम्॥

Colophon · इति दशम पर्व।

श्रीमदखिलप्राणिगणकल्याणकारकमिदं वृषभनाथपुराण श्रीवीरवाणीविलास—जैनसिद्धान्तभवनस्य कर्णाटकलिपिविभूषित—जीर्ण-प्राचीन ताड़पत्रग्रन्थाद्यथामति वेणुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा उद्धृत-मिति भद्रं भूयात्। महावीर शक २४६६ भाद्रपदकृष्णपक्षाष्टमी ता॰ २१-९-४३।

विशेष : इसमें केवल दस ही पर्व हैं। जबकि प्रारम्भ और अन्तिम जिनसेन के आदिपुराण की भांति ही है। इसमें कर्त्ता का नाम हस्तिमल्ल लिखा है?

८. आदिपुराण वचनिका

Opening · देखें, क्र० ५।

Closing : ......विश्वंभर विश्वनाथ जगनाथ का पिता सो तुम भव्यजीव-निकूं सांतके अर्थिहोहु।

Colophon — इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्य . लक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधरपुराणसप्तचत्वारिंशत्तम पर्व पूर्णं भया । ,,, इति श्री आदिनाथ पुराण भाषा सपूर्ण । शुभं भवतु । मिती चैत्रवदी ११ सवत् १९६१ मु० चन्द्रापुरी मध्ये ।

९. आदिनाथ पुराण

Opening — श्रीमत त्रिगन्नाथमादितीर्थंकर परम् ॥
फणीद्रेंद्रनरेंद्रार्च्यं वदेनतगुणार्णवम् ॥१॥

Closing — अष्टाविंशाधिका भोषट् चत्वारिंशछतप्रमा ॥
अस्याद्यर्हंच्चरित्रस्य स्यु श्लोका पडिता बुधै ॥

Colophon — इति श्री वृषभनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनवर्णनो नाम विंश सर्ग ॥२०॥

मिति पौष सुद्ध १५ चद्रवासरे मवत् १९७० ॥ लिखितमिद पुस्तक मिश्रोपनामक गुलजारीलाल शर्म्मणा । शुभ भवतु । भिण्डाग्रनगरवासोस्ति ॥

श्लोक सख्या ५५०० प्रमाण, सवत् १७९७ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २८ ।
Catg of skt & pkt. Ms , Page 624

१०. आराधनाकथा कोश

Opening — श्रीमद्भव्याब्जसद्भानून् लोकालोकप्रकाशकान् ।
आराधना कथाकोश वक्ष्ये नत्वा जिनेश्वरान् ॥

Closing — भव्याना वरशान्तिकान्तिविलसद्कीर्तिप्रमोद श्रिय ।
कुर्यात्मगचिता विशुद्धशुभदा श्रीनेमिदत्तेन वै ॥

Colophon — इति श्री कथाकोशे भट्टारक श्रीमल्लिभूषणशिष्य ब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्रीजिनपूजादृष्टातकथा वर्णनाया चतुर्थपरिच्छेद समाप्त । १११/मवत् १८४८/शाके १७१३/समयनाम आश्विनमासे कृ (ष्ण) पक्षे षष्ठी रविवार लिखित प प्राकृतनाथ पटणामध्ये स्वस्थान काशी मध्ये ।

देखें— दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३-४ ।
प्र० जै० सा०, पृ० १०४-१०५ ।
रा० जै० ग्रं० सू० III, पृ० २२५ ।

जि० र० को०, पृ० ३२।
Catg. of skt. & pkt. Ms., page, 626.

११. आराधनाकथा कोश

Opening : देखें, क० १०।

Closing : तेषां पादपयोजयुग्मकृपया श्री जैनसूत्रोचिता,
सम्यग्दर्शनबोधवृत्ततपसामाराधनासत्कथा ॥

Colophon : इति श्री कथाकोशे भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्री जिनपादपूजाफलदृष्टांतकथा वर्णनायां चतुर्थ परिच्छेद समाप्त। संवत् १८०७ वर्षे फाल्गुन सुदी ६ बुधे लिखितम् श्री श्री साहिजहानाबाद मध्ये। शुभ भवतु। श्रीरस्तु। लेखकपाठकयो.।

१२. आराधनासार

Opening : श्री अरिहंत जिनेसुरजी इस ग्रंथ की आदि सुमंगलदाई।
लोक अलोक प्रकाशकदेव समोष्टत आदिक ब्रह्मलहाई ॥

Closing : जैवन्ता निशदिन रहो, जैनधर्म सुखकंद।
ना प्रमाद राजा प्रजा, पावो बहुआनन्द ॥

Colophon : इति श्री आराधनासार कथाकोष समाप्तम्। शुभम्।

१३. भद्रबाहुचरित्र

Opening : सद्बोधभानुनाभित्वा जनाना मातर तम.।
य सन्मतित्वमापन्न सन्मति सन्मति क्रियात् ॥

Closing : श्वेतांशुकमतोद्भूतिं मूढान् ज्ञापयितुं जनान्।
व्यरीरचमिमं ग्रंथ, न स्व पांडित्यगर्वत ॥

Colophon : इतिश्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेतांबरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्ति वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः। इति भद्रबाहुचरित्र समाप्तम्। पंडितदयारामेन लिखापितम्।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४।
प्र० जै० सा०, पृ० १६३।
जि० र० को०, पृ० २९१।

१४. भद्रबाहुचरित्र

Opening : देखें—क्र० १३।

Closing : देखें—क्र० १३।

Colophon : इति श्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेतांवरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्तिवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ॥ इति श्री भद्रबाहुचरित्र समाप्तम् ॥ लीलकण्ठदामेन लिखितम् ॥

१५. भगवत् पुराण

Opening : श्रीमत परमेश्वर शिवकर लीलानिवासं शिवम्,
नोम्यानन्तशिव महोवयमह लोकत्रयाच्र्चास्पदम् ।
त योगीन्द्रनृपेन्द्रदेवनिकरैः सस्तूयमान सदा,
यत्पृष्ठ्या भुवनत्रयेपि नितरा पूज्यो भवेन्मानुष ॥

Closing : खखवर्ह्निशिखिश्लोकसख्या प्रोक्ता कवीशिना ।
श्रीमतोऽस्य पुराणस्य लेखयतु सुखार्थिना ॥

Colophon : इति श्री भवबत्पुराणे महाप्रासादोद्धारसवर्मे भ० श्री रत्न-भूषण भ० श्री जयकीर्त्याम्नायप्रवेकनरपत्याचार्यं शिष्यब्रह्ममगलाग्रज मडलाचार्य श्री केशवसेनविरचिते श्रीऋषभनिर्वाणानदनाटक वर्णननामा द्वाविंशतितम स्कन्ध' ॥२२॥ सवत् १६६८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ भृगुवासरे श्री अवतिकापुर्यां श्री महावीरचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीराममेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्रीरत्नभूषणतत्पट्टे भ० श्रीजयकीर्ति तद्गुरुभ्रातामडलाचार्य श्री केशवमेन तच्छिष्याचार्य श्री विश्वकीर्ति अवल ब्र० कनकमागर ब्र० दीपजी मिद्धान्ती ब्र० राजसागर ब्र० इन्द्रसागर ब्र० मनोहर बा० दाना बा० लक्ष्मी बा० कमलावती पं० चपायण पं० ग्रोबराज प० मायाराम प० बलभद्र इति मंघाष्टक चिर जीयात् । आचार्य श्री विश्वकीर्तिपठनार्थं जोसी उद्धवेन लिखितमिद पुस्तक चिरन्तेतु ।
सवत् १९८६ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या तिथौ श्री आरानगर्यां श्री स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैन सिद्धान्तभवने तत्पुत्रबाबू निर्मल-कुमारस्य मन्त्रित्वे श्री पं० के० भुजबलीशास्त्रिण. अध्यक्षत्वे च संग्रहार्थ-मिद पुस्तक लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६. भक्तामर कथा

Opening : प्रथम पीठि कर जोरि करि शुद्ध भावते सिर नाइयै ।

वसुसिद्धि अरु नव निधि वृद्धि सु रिद्धि जातें पाइये ॥

Closing : कही विनोदीलाल मारवमुक्त परतापतै ।
पूरन भई रसाल अद्भुत कथा सुहावनी ॥

Colophon इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लालविनोदीकृत .. .. ,कथा सम्पूर्णम् । सब मिलके चौपही दोहा ॥ ३७५६ ॥ सवत् ॥ १६३८ मिती सावनशुक्लपक्षे अष्टम्या मगलवासरे आरा नगरे सम्पूर्णम् ।

१७. भक्तामर कथा

Opening : देखें, क्र० १६ ।

Closing सख्या परम रसाल देखहु याही ग्रन्थ की ।
कही विनोदीलाल षट् सहस्त्र द्वै सतक पुनि ॥

Colophon श्री इति प्रथम जिनेन्द्र स्तवन श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदीकृत चौपाई वध अडतालीसमी कथा सम्पूर्ण । सर्वकथा चौपाई छद श्लोक दोहा अरिल्ल (अडिल्ल) कु डलिया सोरठा काव्य ॥ ३७६० ॥ सपूर्ण शुभमस्तु । पौषमासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ चद्रवासरे सवत् १६५४ । दस्तखत बलदेवदत्त पडित के ।

१८. भक्तामर चरित्र

Opening : देखे क्र० १६ ।

Closing : देखे, क्र० १७ ।

Colophon इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामरचरित्रे भाषा लाल विनोदि कृत चौपाई बध अडतालीसमी कथा समाप्तम् । सर्वकथा चौपाई छद श्लोक दोहा अरिल्ल कु डलिया सोरठा काव्य । ३७६० । मिति श्रावणकृष्ण दशम्यां रोज मगर (ल) वार सवत् १६५५ । श्लोक ५४०० ।

यह ग्रंथ लिखावित बाबू श्रीयांशदास वास्ते लोचना बीबी के दान देने श्री मुनीन्द्रकीर्ति जी भट्टारक जी को देने को लिखा चुन्नीमाली ने ।

१९. चन्द्रप्रभचरित्र

Opening : वन्देऽहं सहजानन्दकन्दलीकन्दवन्धुरम् ।
चन्द्राङ्कं चन्द्रसंकाश चन्द्रनाथ स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभार्हद्धीरस्य काव्य व्याख्यायते मया ।
विश्वमन्वयरूपेण स्पष्टसंस्कृतभाषया ॥ २ ॥

Closing : इति वीरनन्दिकृताबुदयाङ्के चन्द्रप्रभचरिते महाकाव्ये तद्व्याख्याने च विद्वन्मनोवल्लभाख्ये अष्टादश सर्ग समाप्त ।

Colophon : शक वर्ष १७६१ नैत्रष्किारि संवत्सरद माघ शुद्ध १ श्रीमच्चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्य स्वामियवर पादकमल भृंगोपमानियाद बेलगुलदयि वर्गदवसिष्टगोत्रद विजय णैयनरी चन्द्रप्रभा काव्यदव्याख्यानद पुस्तक बरदु संपूर्णवायितु आचन्द्रार्कपर्यंत भद्र शुभ मगलम् ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ११६ ।
Cat. of Skt & Pkt Ms., Page-640.
Cat. of Skt. Ms., P 302.

२० चन्द्रप्रभ पुराण

Opening : श्री चन्द्रप्रभु पदकमल, हाथ जोड सिर नाय ।
प्रणम शारदा मातफुन, गुरु के लागू पाय ॥

Closing : यही उत्तम जगत माही चार सब अघहार ।
सरन इनही की सुहीरा, लाल भवदध तार ॥
हमरै दरी मगलचार ॥

Colophon इति श्री चद्रप्रभपुराणे वज्रकूलनामगाम वर्णना नाम सत्तमौ अधिकार पूर्णभया । इति श्री चद्रप्रभपुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
मिति जेठवदी १ सवत् १९७८ । शुभ भवन् ।

२१ चतुर्विंशति जिन भवावलि

Opening : जयादिब्रह्मा च महाबलोभवत्,
ललितांगदेहस्त्ववज्रजंघक ।
आर्यस्ततः श्रीधरको विधिस्ततो,
च्युतेन्द्र नाभिस्त्वहमिंद्र कर्षभे ॥

Closing : देवो विश्वकनंदिदेवहृग्वमो भूप्रारक केशरी,
धर्मातारकसिंहदेवकनको थोत पुरो लातवे ।
राजाभूद्धरिषेणकसुरहतश्चत्रीसुरोत्तक,
स्वर्गे षोडशमेहरिजिनवरोवीराबतारास्मृता ॥

Colophon : इति चतुर्विंशति जिन भवावलि सपूर्णम् ।

२२ चारुदत्तचरित्र

Opening : चरण नमो महावीरके, हरन सर्व दुखदंद ।
तरन जु तारण जगत को, करन महासुख कंद ॥

Closing : चारुदत्त नपति विधौ अहिमिंदर पद कहि वरन ।
इस भांति चरित वाचो सुनो सकल संग मगलकरण ॥

Colophon इति श्री चारुदत्त चरित्र भाषा भारामल्ल विरचित सम्पूर्णम् । लिखित गुलजारीलाल निवासी रुस्तमगढ के जैनी पद्मावती पुरवार रोज वृहस्पतिवार सवत् १९६० मिती चैत्र सुक्ल ५ पचमी शुभम् ।

२३ चेतनचरित्र

Opening श्रीजिनचरण प्रणामकरि, भविक भगति उरआनि ।
चेतन अरु वसु करमको, कहो चरित्र बखानि ॥

Closing सवत सत्रहसैंत्रनीस मे, जेष्ठ सप्तमी आदि ।
श्री गुरुवार सुहावनों, रचना कही अनादि ॥

Colophon इति श्री चेतनकर्मचरित्र सपूर्णम् । मिति श्रावण सुदी १३ सवत् १९५८ ।

२४ चेतनचरित्र नाटक

Opening पारस चरन सरोजरज, सरस सुधा गसार ।
जेहि सेवत जडता नसै, सज सुबुद्धि सुखवार ॥ १ ॥
पच परमपद को नमो, सर्वसिद्धि दातार ।
चेतन कर्मचरित्र को कहू कछू अधिकार ॥ २ ॥

Closing : आप विराजो महल आपने समर भूमि जाता हू,
जितने आये सबो को बदी करके लाता हूँ ।
खुशी मनावे जिनवर ध्यावो समर जीति मै आता हूँ,
मैं भी आपका राजवीर खास वीर कहलाता हूँ ।
अपने मालिक के दुश्मन को सूरवीर यदि पाता है,
तो मारे बिन निरख मज केहरि क्या गम खाता है ॥

Colophon : इति चेतनचरित्र नाटक सम्पूर्ण ।

२५ दर्शनकथा

Opening : श्री रिषभनाथ जिन प्रणमौ तोहि।
अजर अमर पद दीजे मोहि ॥
अजित जिनेश्वर बदन करौं।
कर्मकलक छिनक मे हरौ ॥

Closing : दर्शन कथा पूरणभई, पढ़ै सुनै सब कोय।
दुख दलिद्र (दरिद्र) नाशै सबै, तुरत महासुख होय ॥
॥ ८१ ॥

Colophon : इति श्रीदर्शनकथा सम्पूर्ण। मिती अगहन वदी ३० सवत् १९६१ मुकाम चन्द्रापुरी ।

२६. दर्शनकथा

Opening : देखें क्र० २५ ।

Closing : दुख दरिद्र सब जाय नशाय।
जो यह कथा सुनो मनलाय ॥
पुत्रकलित्र बढ़ै परिवार।
जो यह कथा सुनै नरनार ॥

Colopnon : इति दर्शन कथा सम्पूर्णम्।
यह ग्रन्थ सवत् १९४० मे मनोहरदास आरा के मदिर मे चढ़ाया गया था।

२७ दशलाक्षणी कथा

Opening : अर्हत भारती विद्यानदिसद्गुरू-पकजम्।
प्रणम्य विनयात् वक्ष्ये दशलाक्षणिक व्रतम् ॥ १ ॥
राजगेहात्समागत्य वैभारवरभूधरम्।
श्रेणिको नमतिस्मोच्चै वीर गभीरधीधरम् ॥ २ ॥

Closing : जात: श्रीमतिमूल सघतिलके श्री कुंदकुदान्वये,
विद्यानदि गुरुर्गरिष्ठमहिमा भव्यात्मसबुद्धये।
तच्छिष्य श्रुतसागरेण रचित कल्याणकीर्त्याग्रहे,
शदेयाद्दशलाक्षणव्रतमिद भूयाच्चसत्सपदे ॥

Colophon : इति श्री दशलाक्षणिक कथा समाप्ता ।

२८. दशलाक्षणीकथा

Opening : रिषभनाथ प्रनमूं सदा, गुणगनधर के पाय ।
तीन भवन विख्यात है, सब प्राणी सुखदाय ॥

Closing : भूला चूका होय जो, लीजौ सुकवि सुधार ।
मोह दोस दीजै नही, करी जु भव हितकार ॥

Colophon : इति दशलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

२९. दान कथा

Opening : देव नमो अरिहंत सदा और सिद्ध समूहन को चितलाई ।
सूरज आचार को भजो और नमो उपध्याय के नित पाई ॥

Closing : दानकथा पूरन भई, पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दालिद्र (दारिद्र) नाशै सबै, तुरत महासुख होई ॥

Colophon : इति श्री दानकथा सपूर्ण । लिखित पंडित रामनाथ पुरोहित मुकाम चन्द्रापुरी ।

३० धर्मशर्माभ्युदय

Opening श्री नाभिसूनोश्चिरमङ्घ्रियुग्म नखेंदव कौमुदमेधयतु
यत्रानमन्नाकिनरेंद्रचक्रचूडास्मयर्भप्रतिबिंबमेण ॥ १ ॥

Closing अभजदथविचित्रैर्वाक् प्रसूनोपचारै
प्रभुरिह चंद्राराधितोमोक्षलक्ष्मीम् ।
तदनुतदनुयायी प्रापपर्य तपूजोपचित
सुकृतराशि स्व पद नापिलोक ॥ १२५ ॥

Colophon इति श्री महाकवि हरिचन्द्रविरचिते धर्मशर्माभ्युदये महाकाव्ये श्री धमनाथ निर्वाणगमनो नाम एकविंशतितम. सर्ग. ॥ २१ ॥ श्री संवत् १८८९ कार्तिक धवल पचम्याम् । अग्रवाल आरानगरे वासलगोत्रे बाबू जीवनलाल जी तथा गुपाल चद जी तेन इद शास्त्र लिखापित तथा उत्तमचदजी बा जो धनलाल जी अछेलाल तथा प्यारेलालजी इद शास्त्र लिखापितम् ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १६२ ।

(३) रा० सू०, पृ० २१० ।
(४) जि० र० को०, पृ०१६३ ।
(5) Catg. of Skt & Pkt Ms. Page 656
(6) Cat. of Skt. Ms. P. 302

३१. धर्मशर्माभ्युदय सटीक

Opening :

जयति जगति मोहध्वातविध्वसदीप,
स्फुरित कनकमूर्तिर्ध्यान लीनो जिनेन्द्र ।
यदुपरि परिकीर्णस्कधदेशाजटाली,
विमलितसरलांत: कज्जलाभाविभर्ति ॥

Closing :

..... तदनुयायी तरेशास्तत्र सद् कृतनिर्वाणकल्याणम-होत्सवोपार्जितपुण्यराशिर्निज निज स्थान चतुर्णिकायामरसघातो जगाम ।

Colophon

इति श्री मन्मंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिशिष्य पंडित श्री यश कीर्तिविरचिताया सदेहध्वातदीपिकाया धर्मशर्माभ्युदयटीकाया एक-विशतिम सर्ग । स्वस्तिश्री सवत् १६५२ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यातिथौ गुरुवासरे अबावती वास्तव्य राजाधिराज श्रीमानसिंह जी राज्ये श्री नेमिनाथचैत्यालये श्री मूलसघे मद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदान्वये भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोधागोत्रे सा पचाइण भार्या पुहसिरि तत् पुत्रौ द्वौ प्रथम सा नूना द्वितीय सा पूना नूना पु सा वीरदास भार्या ल्होकन चांदणदे सिंगारदे एताभिर्मिलित्वा धर्मशर्मा-भ्युदयकाव्यस्य टीका लिखाप्य आचार्य लक्ष्मी चन्द्रायप्रदत्ता ।

शुभमिति ज्येष्ठशुक्ला द्वितीया शुक्रवार विक्रम सम्वत १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण हुई, जिसे आरा निवासी स्वर्गीय बाबू देवकुमार द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन में सग्रह करने के लिए प० के० भुजबली जी शास्त्री अध्यक्ष के द्वारा बाबू निर्मल कुमार जी मत्री जैन सिद्धान्त भवन ने लिखवाया । रोशनलाल ने लिखा ।

३२. धन्यकुमार चरित्र

Opening श्रीमत जिन नत्वा केवलज्ञानलोचनम् ।
वक्ष्ये धन्यकुमारस्य वृत्त भव्यानुरंजनम् ॥

Closing ता त्रि परीत्य सद्भक्त्या त दृष्ट्वा केवले क्षणम् ।
कनत्काचनसद्रत्न सिंहासनमधिस्थितम् ॥

Colophon . उपलब्ध नही ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० १८७ ।

३३. धन्यकुमार चरित्र

Opening देखे, क्र० ३२ ।

Closing इह निचोर (ड) इस ग्रन्थका यही धर्म को मूर (मूल) ।
सुद्धातम ल्यो लाये मिटै कर्म अकूर ॥ ६४ ॥

Colophon इति धनकुमार चरित्र सम्पूर्णम् । सवत् १६३२ चैत्र वदि ७ शुक्रवार शुभम् । श्लोक सख्या १२२४ ।

३४ धन्यकुमार चरित्र

Opening . देखें, क्र० ३२ ।

Closing धन्यकुमार चरित्र यह पूरन भयो विशाल ।
(प) ढत सुनत सुख उपजै आनंद मगलकार ॥

Colophon इति धन्यकुमार चरित्र सम्पूर्णम् ।

३५ दुधारस द्वादसी कथा

Opening वीनवे उग्रसेन की लाडली कर जोरिके नेमि के आगे खडी ।
तुम काहे पिया गिरनार बैठो हमसेती कहो कहा चूक परी ॥

Closing : कथाकोष मे जो कह्या, ताको देखि विचार ।
सेवक भाषा सनघरी, पढो भव्य चितधार ॥

Colophon इति दुधारस द्वादशी कथा समाप्ता ।
लिख्यता प्रभूदास अग्रवाला । मिति वैशाख सुदी ६ शुक्रवार सवत् १६१८ ।

३६. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : श्री ऋषभादिक जिनवर नमूं, चौवीसों सुखकंद।
दरसण दुखदूरै हरै, तामैं नित आनंद॥

Closing : जो नरहुनारी सीलधारी तासमनि अतिमंडणी।
शिवसुखकरणी दुखहरणी कर्मयसयलबिहमणी॥

Colophon : इति श्री गजसिंह गुणमालचरित्रे गुणमाल तपकरण उपधानवहन राजा-धर्मशास्त्रवारभा रचना श्रवण हुकमकुमर पदस्थापन राजागुणमाल दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार षष्ट खंड संपूर्ण। इति श्री तपगच्छमध्ये चद्रशाखाया पंडित श्री मुक्तिचंद्र तत् शिष्य पंडित श्री खेमचन्द्रविरचिताया गुणमाल चौपई सम्पूर्ण। संवत् १७८८ वर्षे मिति चैत्र सुदि पंचमी दिने जतिकुसला लिपिकृत श्री मालपुरामध्ये। श्रीरस्तु।

३७ गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening देखें–क्र० ३६।

Closing देखें-क्र० ३६।

Colophon इति श्री गजसिंह गुणमाला चरित्रे गुणमाला तपकरण तपउपधान वहण राजाधर्मशास्त्रवारभारचना श्रवण हुकम कुमार पट्टस्थापन राजा गुणमाला दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार षष्ट खंड समाप्त। मिति फागुन वदी १२ संवत् १९८४ श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा लिखित भुजवल प्रसाद जैन मालथौन जिला-सागर।

३८. हनुमान चरित्र

Opening सद्बोधसिंधु चन्द्राय, सुव्रताय जिनेशिने।
सुव्रताय नमोनित्य, धर्मशर्मार्थ सिद्धये॥

Closing पठक. पाठकस्त्वैम, वक्ता, श्रोता च भावक,
चिर नन्दतयं ग्रंथः तेन सार्द्धं युगावधि।
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्त्रमित बुधै.
श्लोकानामिहमंतव्यं हनुमच्चरित्रे शुभे॥

Colophon इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्मजितविरचिते एकादश सर्ग:

पर्याप्त. (समाप्त) । शुभं भवतु ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४५६ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६० ।
(४) रा० सू० III, पृ० २२१ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २० एवं ५३४ ।
(6) Catg of Skt & Pkt. Ms. Page-714.

३६ हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखें, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादशसर्ग समाप्त ॥

४०. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखें, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते एकादश सर्ग. समाप्त ॥ १२ ॥ हस्ताक्षर बटुक प्रसाद ॥ मुकाम जैन सिद्धान्त भवन–आरा ॥ संवत् १६७८ ॥

४१. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखें, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादसं सर्ग समाप्त । मिती फागुनवदी ३ संवत् १६८४ लिख्यत भुजबलप्रसाद जैनी मुकाम मालथौन जिला सागर निवासी ने ।

४२. हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : जिनवर एक वचन मो देहु । कुगुरु कुशास्त्र निवारहु ऐहु ॥
होहि सदा सन्यासहु मरन । भव भव धर्म जिनेश्वर सरन ॥

Colophon इति श्री हनुमतचरित्रे आचार्य श्री अनतकीर्तिविरचिते हनुमन्निर्वाणगमनो नाम पचमो परिच्छेद। इति श्री हनुमच्चरित्र-सम्पूर्णम्। सवत् १६०१ का शाके १७६६ वा जेठ मासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ बुधवासरे सवाई राजा रामसिह जी को राज। लिखत महात्मा जोशीपन्नालाल लिखी सवाई जयपुर म (मे)। श्रीरस्तु।

४३ हनुमान चरित्र

Opening देखे, क० ३८।

Closing देखे, क० ४२।

Colophon इति श्री हनुमानचरित्र आचार्य श्री अनतकीर्तिविरचिते हनुमननिर्वाणगमनोनाम पचमा परिच्छेद। इति हनुमानचरित्र सम्पूर्णम्। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ रविवासरे सवत् १६५५।

४४. हरिवंश पुराण

Opening : सुरवइमय वदहु तिजणदहु, मिरि अरिट्ठणेमिहु चरण।
पणविवितहु वसहु कहजयमसहु भणमि सवणमणसुदरयण॥

Closing : चिरुणदउ सन्दो जामणहच्छो रविससिगणहणरकत्त गणु।
कइयणणिरुसोहहु दोसु णिरोहहु सुणउपय भव्वयणु॥

Colophon इय हरिवसपुराणे मणवछियफलेण सुपहाणे सिरिपडिय रइधूवणिए सिरिमहाभव्वमाधु लाहासुय सघाहिवजोणाणमणिग सिरि अरिट्ठणेमि णिव्वाणगमणं तहेव दायारव सुद्सण णाम चउदहमा सधी परिछेऊ सम्मत्तो सधि॥ १४॥

अथसवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १६५८ वर्षे वैशाखशुदि पचमी आदित्यवासरे भगउतीदासेनेद हरिवश-शास्त्रलिखापितम्, ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखापितम्। इति हरि-पुराणरयधूकृत समाप्तम्। मिति वैशाखशुक्ल १२ सवत् १६८७ ह० प० शिवदयाल चौबे चन्देरी वालो के।

४५. हरिवंश पुराण

Opening : पयडिय जय हसहो कुणय विहसहो।
भविय कमल सरहसहो पणविव जिणहसहो॥

Closing : जामहि णहु सायरु चंदु दिवायरु, ता पढउ ठिवढाहु कुलु ।
जेवि राहुहि चरियउ कुरुवस हुसहियउ, कारावित्र हय पावमालु ॥

Colophon : इय हरिवमपुराणे कुरुवसाहिट्ठए विवुह चिंताणुरजणे सिरि गुणकित्ति सीस मुणि जसकित्ति विरइये साहु ठिवढा णाम विए पमणाहु जुधिठर भीमज्जुण णिव्वाणगमण णिकुल सहदेव सव्वट्ठसिद्धि गमण वण्णणो णाम तेरहमो सग्गो समत्तो । सधि १३ । इति हरवस पुराण समाप्त । चैत्र सुदी १४ सवत् ८५ ? ।

४६ हरिवंश पुराण

Opening . सिद्ध सम्पूर्ण प्रतिपादनम् ॥

Closing रक्षा कुर्वन्तु सघस्य जिनशासनदेवता ।
पालयतोखिल लोक भव्यसज्ज्ञानवत्सला ॥

Colophon इति श्री हरिवशपुरसणे ब्रह्म श्री जिनदास विरचिते नेमिनिर्वाण गमन वर्णनो नाम चत्वारिंशतम सर्ग । इति हरिवश पुराण समाप्तम् ।

यह पुस्तक प० पन्नालाल जी (उदासीन आश्रम तुकोगज इंदौर) के मार्फत लिखाई गई । मिति माघकृष्ण २ स० १९८८ ह० प० शिवदयाल चौबे चन्देरी वालो के ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४६० ।
(२) आ० सू०, पृ० १६१ ।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० स, I, पृ० १०० ।
(४) प्रश० स० II, पृ० ७० ।
(५) रा० सू० II, पृ० २१८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २२४ ।
(7) Cats. of Skt & Pkt. Ms., P 715

४७ हरिवश पुराण

Opening : सिद्ध ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षण द्रव्यसाधनम् ।
जैन द्रव्याद्यपेक्षात साधनाद्ययशासनम् ॥ १ ॥

Closing : आशीर्वाद ॥ मांगल्यम् ॥

Colophon : अथसवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यमहीभृतोगुरुद्वा ।

संवत् १८६४। तत्र शाके १७२६। वैसाखमासे कृष्णपक्षे द्वितीया भृगुवासरे। लिखित श्रीपतिराम तिवारी। पोथीलिखी मैनपुरी मोहोकमगंजमध्य ॥

यावज्जिनस्य धर्मोऽयं लोकोस्थितिदयापर।
यावत्सुरनदीवाहस्तावन्न दतु पुस्तकम् ॥
यादृश पुस्तकं • दीयते ॥

द्रष्टव्य--(१) जि० र० को०, पृ० ४६०।
(२) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३।

४८. हरिवंश पुराण

Opening : देखें क्र० ४७।

Closing : सेवक नरपति को सही, नाम सुदौलतराम।
तानैं इह भाषा करी, जपकरि जिनवर नाम ॥
श्रीहरिवंश पुराण की, भाषा सुनऊ सुजान।
सकलग्रंथ संख्या भई, सहस एकीस प्रमाण ॥

Colophon : इति श्रीहरिवंश पुराण भाषा वचनिका संपूर्णम्। श्लोक अनुष्टुप संख्या एकीस हजार। २१,०००। संवत् १८८४ मासोत्तमे मासे चैत्रमासे शुक्ले पक्षे सप्तम्यां भौमवासरे। पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मा लेखि। पट्टनपुरमध्ये गायघाट क्षत्री महलमध्ये निवास शुभमस्तु कल्याणकमस्तु। सिद्धिरस्तु मंगलमस्तु पुस्तक लिखायित बाबू जिनवरदास जी ने।

४९. हरिवंश पुराण

Opening : देखें, क्र० ४७।

Closing : तबहिदेव तासौ फिरि जोई।
तो सौ सूरि · · ।

Colophon : अनुपलब्ध।

५०. जम्बूस्वामी चरित्र (११ सर्ग)

Opening : श्रीवर्धमानतीर्थेशं वंदे मुक्तिवधूवरं।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृतम् ॥

Closing : द्वाविंशतिप्रमाणानि शतान्यत्रचरित्रके ।
त्रिंशद् तानिश्लोकानां शुभानां सति निश्चितम् ।।

Colophon : इति श्री जम्बूस्वामीचरित्रे ब्रह्मश्रीजिनदासविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमन नामैकादशा सर्ग ।
यावल्लवण समुद्रो यावन्नक्षत्रमंडितो मेरु ।
यावद्भास्करचन्द्रो यन्नावदय पुस्तको जयतु ।।
संवत् १६०८ की प्रति से यह नकल की गई है।
मिति ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां १४ शनिवासरे संवत् १६७१ लिखितमिद पुस्तक मिश्रोनामक गुलजारीलालशर्मणा सिंहासनगरवासोऽस्मि रि० ग्वालियर ।

यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिख्यते मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा ममदोषो न दीयते ।।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।
(२) प्र० जैं० सा०, पृ० १२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० ५६ ।
(४) रा० सू० I, पृ० ६८, ६६, १३१, २१० ।
(५) जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५१. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : देखें, क० ५० ।

Closing : देखें, क० ५० ।

Colophon : इत्यार्षे श्री जंबूस्वामीचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमनो नामैकादश सर्ग ।। ११ ।।
श्री संवत् १६६४ वर्षे आसोज सुदि १५ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणगुरुपदेशात भीलोडा वास्तव्यकुंबडज्ञातीय सां, की का भार्यानकादेतायाः सुत सां. लाड़का भार्या ललतादेतायाः सुतरुमराज भार्यावाडमादे भ्रातृमहौआ भ्रातृजने शयति, स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थ बाह्मीयवलाय इदं लिखाप्य दत्तम् । लेखकपाठकयो शुभ भवतु । साहरामाकेन लिखितमिदं वर्द्धतांजिनशासने श्री । श्री जंबूस्वामिचरित्र भट्टारक श्री सकलकीर्तिकृत । भ. श्री विनचन्द्रस्य पुस्तकमिद ।

५२. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : उद्दीपीकृतपरमानदाद्यात्मचतुष्टय च बुद्धया ।
निगदति यस्य गर्भाद्युत्सवमिहत स्तुवे वीरम् ॥

Closing : जबूस्वामीजिनाधीशो भूयान्मगलसिद्धये ।
भवता भुवि भो भव्या श्री वीरात्तिमकेवली ॥

Colophon : इति श्री जबूस्वामिचरित्रे भगवन्छ्रीपश्चिमतीर्थकरोपदेशानुसरित स्याद्वादानवद्यगद्यपद्यविद्याविशारद पडित राजमल्लविरचिते साधुपासात्मजसाधुटोडरसमभ्यर्थिते मुनि श्री विद्युच्चर सर्वार्थसिद्धिगमनवर्णनो नाम त्रयोदशम पर्व ।

शब्दार्थैरर्थवच्छास्त्र यथेद याति पूर्णताम् ।
तथा कल्याणमालाभि वर्द्धता साधु टोडर ॥

अथ सवतसरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १६३२ वर्षे चैत्रसुदी ८ वासरे परमसुश्रावकसाधु श्री टोडर जबूस्वामिचरित्र कारापित लिखापित च कर्मक्षयनिमित्तम् । लिखित गगादासेन ।

यह प्रतिलिपि स्व० बा० देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन आरा में सग्रहार्थ श्री बाबू निर्मलकुमार जी के मत्रित्व काल मे श्री प० के भुजबली शास्त्री की अध्यक्षता मे बा० पन्नालाल जी के द्वारा देहली से उपरोक्त प्रति मगाकर तैयार की गई । शुभ मिति अषाढ कृष्णा १२ वीर स० २४६१ वि० स० १९९२ । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५३ जम्बूस्वामी कथा

Opening : प्रथम पच परमेष्ठी नाऊँ ।
दूज्यौ सरस्वती नमूँ पाऊ ॥
तीजै गुरु चरने अनुसरो ।
होय सिद्धि कवि तु विस्तरो ॥

Closing : तिन यह कथा करी मनलाई ।
वाच्य हर्ष उपजै सुखदाई ॥
पढ़ै सुनै जो मनुवै कोई ।
मनवांछित फल पावे सोई ॥

Colophon : इति श्री जंबूस्वामी की कथा सपूर्ण। मिति श्रावणबदी ३ वार रविवार सन् १८८३ साल। दस्तखत दुर्गाप्रसाद बैनी बारे।

५४. जयकुमारचरित्र (१३ सर्ग)

Closing : श्रीमत त्रिजगन्नाथं वृषभं नृसुराञ्चितम्।
वत्मीतिनि हतार वदे नित्य शिवाप्तये ॥ १ ॥

Opening सकलकीर्तिकृत पुरदेवज समवलोक्य पुराणमिद कृति.।
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च बृहदल जिनसेनकृत कृता ॥ १०१ ॥

Colophon इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनदि गुरु-पदे ब्रह्म कामराजविरचिते पडित जीवराजसहाय्या त्रयोदशम सर्ग। इति श्री जयकुमार चरित्र समाप्त। गुरुप्रसादात संपूर्ण जातम्। सवत् १२४२ मांसोत्तममासे आसौजमासे कृष्णपक्षे १५ सोम-वासरे नगरवियानामध्ये पाडे हेमराजेन लिखितमस्ति। स्वपठनार्थं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। वाचैं पढ़ै जे पंडितजी नैं श्री जिनाय नम म्हांकी जीनैं वैं। आयुर्भवतु श्री। मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये नद्याम्नाये श्री भट्टारक विश्वभूषणदेवा तत्पट्टे श्रीभ-ट्टारकेंदुश्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारकमहेन्द्रभूषणदेवा-स्तैरिह स्वस्वाध्यायनार्थं शुभ भूयात् गोपा ? नगरे जयकुमार-चरितस्येदं पुस्तकम्।

देखे—जि० र० को०, पृ० १३२।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 643.

५५. जिनदत्तचरित्र वचनिका

Opening : पचपरम गुरुकू प्रणमि पूजौं शारदमाय।
भाषा जिनदत्त चरित की करू स्वपर हितदाय ॥

Closing : पन्नालाल सु चौधरी रची वचनिका सार।
जिनदत्त के सु चरित्र की निजमति के अनुसार ॥

Colophon : सम्पूर्णम्

५६. जिनेन्द्रमाहात्म्य पुराण

Opening : श्री मल्लिद्वपदांबुजद्वयरज शुद्धांजनोन्मीलित-,
प्रोद्यल्लोचनतो विलोक्य निखिल जैनस्मृतेर्निश्चयम् ।
विद्वत्केसवनंदिनाममुनिना प्रोक्तां यथा वै तथा,
निर्मास्यामि समस्तकल्मषहरी पौण्याश्रवीं सत्कथाम् ॥

Closing वांछा श्री मज्जिनेन्द्रादिभूषणस्य च या हृदि ।
सा जिनेन्द्रप्रसादेन सफली भवताध्रुवम् ॥

Colophon इति मुमुक्षुसिद्धान्तचक्रवर्त्ति श्री कुन्दकुन्दाचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारकविश्वभूषण पट्टा भरण श्री ब्रह्महर्षसागरात्मज श्री भट्टारक-जिनेन्द्रभूषणविरचितम् श्री जिनेन्द्रपुराण समाप्तमिद शुभ भूयात् । सवत् १८५२ कार्तिकशुक्लप्रतिपदायां गुरुवासरे पुराणसमाप्ति ।

श्री मूलसघे बलात्कारगणे भट्टारकमहेन्द्रभूषणेन इय पुस्तिका लिखापिता दत्ता ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थम् ।

यह पुस्तक जैन सिद्धान्त भवन मे लिखी गई । शुभमिति पौष कृष्ण सप्तमी ७ मंगलवार श्री वीर निर्वाण स० २४६२ विक्रम सवत् १९९० । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

विशेष—५५ कथाएँ (चरित्र) हैं ।

देखे— जि० र० को०, पृ० १३९ ।

५७. जिनमुखावलोकन कथा

Opening चतुर्विंशतितीर्थेशान् धर्मसाम्राज्यवर्तकान् ।
नत्वा वक्ष्ये व्रत श्री जिनेद्रमुखावलोकनम ॥

Closing : मौनव्रतसत्फलार्थकथकानदत्वय भूतले ॥

Colophon : इति मौनव्रत कथा समाप्तम् । लिखित पडित परमानदेन रात्रौ गुरौ एकादश्यां १९३२ सवत्सरे दिल्ली नगरे आयामल मदिरे शुभ भूयात् ।

द्रष्टव्य :—जि० र० को०, पृ० १३६ ।

५८. जीवन्धर चरित्र

Opening : जयवतो वरतो सदा प्रथम रिषभ अवतार ।
धर्मप्रवर्तन तिन कियो जुग की आदि मझार ॥

Closing : संवत् अष्टादश शत जान। अधिक और पैंतीस प्रमान।
कातिक सुदि नौमी गुरुवार। ग्रन्थ समापित कीनौ सार॥

Colophon : इति श्री जीवंधर चरित्र आचार्य श्री शुभचन्द्रप्रणीतानुसारेण नथमल बिलालाकृत भाषायां जीवंधरमुनिमोक्षगमन वर्णनो नाम त्रयोदशसर्ग: सम्पूर्णम्। इति जीवन्धर चरित्र सम्पूर्णम्। मिती फूस (पौष) सुदी ४ संवत् १९६१ मुक्काम चन्द्रापुरी।

५९. कथावली

Opening श्री शारदास्पदीभूत-पादद्वितयपंकजम्।
नत्वार्हंत प्रवक्ष्यामि व्रत मुकुटसप्तमीं॥

Closing : मुनिराहे निभोश्रेष्ठि ॥

द्रष्टव्य —जि० र० को०, पृ० ६६।

६०. कुदेव चरित्र

Opening : सो हे भव्य तू सुणि। सो देखौ जगत विषै
भी यह न्याय है।

Closing : तौ एक सर्वज्ञ वीतराग जो जिनेश्वर देवता का वचन अंगीकारकरि अर ताका वचनार्कअनुसारि देवगुरु धर्म का श्रद्धानकरि।

Colophon : इति कुदेव चारित्र वर्णन सम्पूर्णम्। मिति कातिक सुदी २ सन् १२७९ साल दस्तखत दुरगाप्रसाद जैनी आरा मध्ये लिखा, जो देखा सो लिखा।

भूलचूक देखके, बुधजन लियो सुधार।
हमे दोष मत दीजियो, क्षमा करो उर ज्ञान॥

६१/१ मदनपराजय

Opening : यदमलपदपद्म श्री जिनेशस्य नित्यम्,
शतमखशतसेव्यं पद्मगर्भादिवद्यम्।
दुरितवनकुठारं ध्वस्तमोहान्धकार,
सकलसुखहेतुं त्रिः प्रकारैर्नमामि॥ १॥

Closing : अज्ञानेन धिया विना किल जिनस्तोत्रं मयायत्कृतम्, किं वा शुद्धमशुद्धमस्ति सकलं नैवं हि जानाम्यहम् । तत्सर्वमुनिपुङ्गवा. सुकवय' कुर्वन्तु सर्वे क्षमा, ससोध्या ''कथामिमां स्वसमये विस्तारयन्तु ध्रुवम् ॥

Colophon : इति मदनपराजय समाप्तम, ।

६१/२. महिपाल चरित्र

Opening : यस्यांशदेशे शत् कुतलाली, दूर्वाकुरालीव विभाति नीला । कल्याणलक्ष्मी वसति सदिस्यादादीश्वरो मगलमालिकां व' ॥

Closing श्रीरत्ननदिगुरुपादसरोरुहालिश्चारित्र भूषणकविर्यदिद ततान । तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाढ्य सर्गं समाप्तिमगतमरिकल पचमोऽयम् ॥

Colophon . इति श्री भट्टारक रत्ननदिसूरि शिष्यमहाकविवर श्री चारित्र-भूषणमुनि विरचिते श्री महीपालचरित्रे पचमो सर्ग । इति श्री मही-पालचरित्र काव्य सम्पूर्णम् । अथ ग्रथ श्लोक सख्या ६६५ सवत्सरे १८७० का ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ बुधवासरे लिप्यकृत महात्मा शभुराम ।

उक्त लिपि देहली से मगवाकर श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा मे सग्रह के लिए श्री प० के० भुजवली जी शास्त्री की अध्य-क्षता मे लिखी शुभमिति चैत्रकृष्णा ११ बुधवार विक्रम स० १९९३ वीर स० २४६३ । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० ३०८ ।

Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 680.

६२. महिपाल चरित्र

Opening : श्रीमत वीर जिनेसर, युग नमकर धरि भाल । महीपाल नृप चरित्र की भाषा करो रसाल ॥

Closing : जिनप्रतिमा जिनभवन जिन पचकल्याणक थान । आदि मध्य अवसान मैं मगलकरी महान ॥

Colophon : इति श्री महीपाल चरित्र सम्पूर्णम् ।

६३. मैथिलीकल्याण नाटक

Opening : य. प्रस्तोता त्रिलोक्यां प्रतिहतविपदां संमतानां कृतीनां,
व च स्तोता स्वयं च स्तुतिपातपदवी वाग्मधूवल्लभानाम् ।
कन्य: कल्याणभाविप्रियमतुपरमाप्ताप्तयोनाप्तरूप:,
सोय भद्रं विधेयाद्दशरथतनय. साधुवो रामभद्र. ॥

Closing : धृतप्राडकरत्नमुत्तमगुण विभ्राजते मैथिली,
कल्याणं भृशमद्वितीयमपि सत्सेषु द्वितीय मतम् ।
सर्वत्रप्रथिता: प्रबन्धमणय: श्री सूक्तिरत्नाकर,
प्रख्यातापरनामधेय महत श्री हस्तिमल्लस्य ये ॥

Colophon : समाप्तोऽय मैथिली कल्याणनाटकम् इति शुभम् । संवत् १९७२ विक्रमे आषाढ़ शुक्ला १४ रवौ श्री ऋषभादितीर्थंकरा. श्रेयस्करा सन्तु ।

आषाढ़ शुक्लपक्षे हि चतुर्दश्यां रवौ लिखे- ।
श्रेत्रर्षाङ्केन्दु वर्षे च सीतारामकरेण सत् ॥

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३१५ ।

६४. मेघेश्वर चरित्र

Opening सिरिरिसह जिणेन्दहु गुणसयइन्दहु भवतम चवहु गणहरहु ।
पयजुयलुण वेप्पिणु चित्तिणि हेप्पिणु चरिउ भणमि मेहेसरहु ॥

Closing : पुणु सुउतुहु तीयउ अइवरिणीयउ जिणसासण रहधूर धरणु ।
रइयति रयणोवमु पालियकुलकमु दुत्थियहजणहुह भरहरणु ॥१३॥

Colophon : इय मेहेसर चरिए । आइपुणस्स सुत्त अणुसरिए सिरिपंडिय रइधूविरइय ॥ सिरिमहाभव्वखेमसीह साहुणामणाम किए ॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्य गताब्द १९०६ वर्षे मार्गसिर सुदि दुतिया श्री कुरुजांगलदेशे श्री बहितगढ साहि-राज्य प्रवर्तमाने श्री काण्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री कुमारसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रतापसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महासेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री नयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री आससेनदेवा. तत्पट्टे भट्टारक श्री अनन्तकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारकीर्तिदेवा. तत्पट्टे

अनेक विद्यानिधान भट्टारक श्री हेमचंद्रदेवा तत्पट्टे अनेकविद्या हरीतरगु भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा ॥

शुक्रवार बदी ८ स० १९९६ वीर स० २४६५ ॥ ई० १९३९ को समाप्त हुआ । लेखक राजधरलाल जैन ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३१५

६५. नन्दीश्वर व्रत कथा

Opening : प्रणम्य परमानंद जगदानंददायकम् ॥
सिद्धचक कथा वक्ष्ये भव्यानां शुभहेतवे ॥ १ ॥

Closing : श्रीपद्मनंदीमुनिराजपट्टे शुभोपदेशीशुभचन्द्रदेव ।
श्री सिद्धचक्रस्य कथावतारं चकार भव्याम्बुजभानुमाली ॥
सम्यग्दृष्टिर्विशुद्धात्मा जिनधर्मे च वत्सल ॥
जालाक कारयामास कथा कल्याणकारिणी ॥

Colophon : इति नन्दीश्वर अष्टान्हिका कथा समाप्ता ॥
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २००, ४३६

६६. नेमिचन्द्रिका

Opening : आदि चरन हिरदै धरौ, अजित चरन चितलाय ।
सभवसुरत नायकं, अभिनदन मनलाय ॥

Closing : मारग जाने मोक्ष कौ, जिनवर भक्त सुवास ।
कहू अधिक कहू हीन है, सो सब लीजे सोर ॥

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्रिका सपूर्णम् । मिती जेष्ठवदी ७ सवत् १९६२ । लिखित प० चौबे छुटीलालकी ।

६७ नेमिनाथचन्द्रिका

Opening : प्रथम नमो जिनचद्रपद नमत होत आनद ।
शिवसुखदायक सकल हित, करत जगत जगफद ॥

Closing : एक सहस अरु अठशतक, वरष असिति और ।
याही सवत मो करी, पूरन इह गुणगौर ॥

Colophon : इति श्री नेमनाथ जीकी चन्द्रिका मुन्नालालकृत सम्पूर्णम् । सवत् १८९५ मासोत्तमे मासे माघमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां चन्द्रवासरे

पुस्तकमिदं रघुनाथ द्विजलेखितं पट्टनपुरे आलमगंज निवसति जिन-प्रसादात् मंगलमस्तु ।

६८. नेमिनाथचरित्र

Opening :

प्राणित्राणप्रवर्णहृदयौ बन्धुवर्गं समग्रम्,
हित्वा भोगान्सहपरिजनैरुग्रसेनात्मजा च ।
श्रीमान्नेमिर्विषयविमुखो मोक्षकामश्चकार,
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥

Closing :

श्री नेमिनाथ का निर्मल चरित्र रचा जो कि राजीमती के दुःख से आर्द्र है ।

Colophon

इति श्री विक्रमकवि विरचित नेमिचरित हिन्दी भाषानुवाद सम्पूर्णम् ।

६९. नेमिनाथपुराण

Opening

श्री मन्नेमि जिन नत्वा लोकालोकप्रकाशकम् ।
तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्याना सौख्यदायकम् ॥

Closing

शांति कान्ति सु रीति सकलसुखयुता संपदामायुरुच्चै,
सौभाग्य साधुसंग सुरपति महित सारजैनेन्द्रधर्मम् ।
विद्या गोत्र पवित्र सुजन जन आदितार्ति,
श्री नेमे सुत्पुराण दिशतु शिवपद वोत्र ॥

Colophon

इति श्री त्रिभुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनदी नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पंचम कल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवम बलदेव कृष्णनाम नवमनारायण जरासंध नामप्रति-नारायण चरित्र व्यावर्णनो नाम षोडशोऽधिकार समाप्त ।

श्री शुभमिति आश्विनकृष्ण पंचमी गुरुवार वीर सं० २४६० विक्रम स० १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण भई। हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक। आरा जैनसिद्धान्त भवन मे प्रतिलिपि की गई।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १९९ ।
(४) आ० सू०, पृ० ८४ ।

(५) जै० ग्र० प्र० सं०I, पृ० १५७ ।

(6) Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 661.

७०. नेमिपुराण

Opening : नमामि विमलाधीश केवलज्ञानभास्कर ।
वदेनतंजिन भक्तयानतानतसुखाकरम् ।। १२ ।।

Closing : देखें-क्र० ६६ ।

Colophon : भुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि नामाकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पचमकल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवमबलदेव कृष्णनाम नवम-नारायण जरासध प्रतिनारायण-चरित्रव्यावर्णनो नाम षोडशोधिकार समाप्त ।

७१. नेमिपुराण

Opening : देखें–क्र० ६६ ।

Closing : ततोदु खादरिद्री च रोगीशोकाविरूपक,
परद्रव्यापहारेण ससारे ससरत्परम् ।
तस्मात् सांतोषतो नित्यम् मनोवाक्काययोगत,
स्तेयत्यागो दृढ भव्यै पालनीय सुखप्रद ।।

विशेष — हस्तलिपि मे विभिन्नता है ।

७२. नेमिपुराण

Opening . नेमिचद जिनराज के चरण कमल युगध्याय ।
भाषू नेमपुराण की भाषा सुगम बनाय ।।

Closing : मगल श्री अरहत सिद्ध साधु जिनधर्म पुन ।
ये ही लोक महत परम सरण जगजीव को ।।

Colophon ऐसे भट्टारक श्री मल्लिभूषण के शिष्य आचार्य श्री सिंह-नन्दि के नामकरि चिन्हित ब्रह्मनेमिदत्त करि विरचित जो तीनभुवन का चूडामणि समान नेमिजिन ताके पुराण की भाषा वचनिका सपूर्ण । मिती वैशाख बदी १२ सवत् १९६२ मु० चदेरी मध्ये शुभ भवतु ।

७३. नेमिब्याहरिस्ता

Opening : छोड़े संसार नेहे तपको जोड़े ।
छोड़े सब तात मात भ्रात वीमारी ।
छोड़े परिवार सबै राजुल नारी ।।

Closing : अब साईं मेरा नेम है।

Colophon इति रेषता सम्पूर्ण।

७४. नेमिनिर्वाणकाव्य (१५ सर्ग)

Opening . श्री नाभिसूनोः पदपद्मयुग्मनखाः सुखानिप्रथयन्तु ते वः।
समुन्नमन्नाकिशिर किरीटसंघट्टविशस्तमणीयितं यैः॥

Closing : अहिच्छत्रपुरोत्पन्नप्राग्वाटकुलशालिन ।
छाहस्य सुतश्चक्रे प्रबंधवाग्भट· कवि ॥

Colophon · इति श्री नेमिनिर्वाणाभिधानो नाम पंचदश सर्ग समाप्त·।
संवत् १७२७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे अष्टमी शुक्रवासरे।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० स, I, पृ० ८।
(४) रा० सू० II, पृ० २४८।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० १६६।
(6) Catg. of Skt & Pkt. Ms , Page-661.
(7) Catg of Skt. Ms., P 302.

७५. नेमिनिर्वाणकाव्य पंजिका

Opening . धृत्वा नेमीश्वरं चित्ते लब्धानंतचतुष्टयम्।
कुर्वेह नेमिणिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका॥

Closing . चेरु चरति स्म। पुरस्सर अग्रेशर। विरच्य रचयित्वा
अवसादितमोहशत्रु निरस्त मोहरिपुम्॥ ८२॥

Colophon : इति श्री भट्टारकज्ञानभूषणविरचिताया श्री नेमिनिर्वाण
महाकाव्यपंजिकाया पंचदशम सर्ग समाप्तोऽयं ग्रन्थ। श्रीरस्तु।

देहली से प्रति मंगवाकर जैन सिद्धान्त भवन, आरा में
प्रतिलिपि कराकर रखी गई।

७६. निशि भोजन कथा

Opening प्रथम प्रणमि जिनदेव, दूजै गुरु निरग्रंथ कूं।
करहुँ सरस्वती सेव दरशावै शिव पंथ कूं॥

Closing :　　निश सु कथा पूरन भई, पढ़ै सुनै नित सोय।
सुख पावै जे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥

Colophon :　　इति निश भोजनत्याग कथा समाप्ता। शुभं भवतु। मिति अगहण वदी ७ सम्वत् १९६१।

७७. निशि भोजन कथा

Opening :　　देखें, क्र० ७६।

Closing :　　देखें, क्र० ७६।

Colophon　　इति श्री निशिभोजन कथा समाप्तम्।
महावीर वंदों सदा, रत्नत्रय दातार।
निजगुण हमे सु दो अबे, अपनो जानि हितकार ॥
श्री शुभ सवत् १९५५ मिति कुआर कृष्ण ८ बार बृहस्पति।

७८. निर्दोष सप्तमी कथा

Opening　　श्री जिन चरणकमल अनुसरू, सदगुरु की मैं सेवा करू।
निरदोष सातमनी कथा, बोलू जिन आगम छै यथा ॥

Closing　　ये व्रत जे नरनारि करैं, ते जन भवसागर उतरैं।
अजर अमर पद अविचल लहैं, ब्रह्म ज्ञान सागर इम कहैं ॥

Colophon　　इति श्री निर्दोष सप्तमी व्रत कथा समाप्तम्।

७९. पद्मनन्दिचरित टिप्पण

Opening　　शकर वरदातार जिण नत्वा स्तुत सुरैं।
कुर्वे पद्मचरित्रस्य टिप्पण गुरुदेशनात् ॥

Closing　　लाड़ वागडि श्रीप्रवचन सेन पडिता पद्मचरितस्य कर्णोबलात्कारगण श्री श्रीनद्याचार्य सत् शिष्येण श्री चन्द्रमुनिना श्रीमद्विक्रमादित्यसवत्सरे सप्तासीत्यधिकवर्ष सहस्त्र श्रीमद्धारायां श्रीमतो राजे भोजदेवस्य पद्मचरिते।

Colophon .　　इति पद्मचरित्रे पर्व टिप्पण सम्पूर्णम्। एवमिद पद्मचरित-टिप्पण श्री चन्द्रमुनिकृत समाप्तम्। शुभं भवतु सवत् १८८४ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे पचम रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचायन्विये आम्नाये।

८०. पद्मपुराण

Opening

सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धे: कारणमुत्तमम् ॥
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ॥ १ ॥

Closing

इदमष्टादशप्रोक्तं सहस्राणि प्रमाणत: ।
शास्त्रमानुपट्टपश्लोकैः त्रयोविंशतिसंगतम् ॥

Colophon

इति श्री पद्मचरिते रविषेणाचार्य प्रोक्त बलदेवनिर्वाणाम-मनाभिधान नाम पर्व. । १२३ ॥ इति श्री रामायणं सम्पूर्णम् । ग्रंथाग्रंथ संख्या-१८०२३ शुभमस्तु । संवत् १८८५ प्रथम आषाढ़ शुक्लपक्षे पञ्चमि भौमवासरे लिखित ब्राह्मण गौड़ तिवाड़िभातराव-नग्रमध्ये (?) ॥

यादृश ·· . न दीयते ॥

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २० ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७१ ।
(४) आ० सू०, पृ० ८७ ।
(5) Cat of Skt. & Pkt. Ms., Page-664.
(6) Catg. of skt. Ms., page, 314.

८१. पद्मपुराण

Opening

(पृष्ट १८) देववर्णनो नाम प्रथमोध्याय ।
अथ वंसाश्चचत्वारि तेषां नामानि वक्षते ।
इक्ष्वाकुसोमवंशौश्च हरिविद्याध्ररो तथा ॥ १ ॥
भरतस्यादित्ययशो पुत्रतस्माद्भुत यशा: ।
ततोबलाक: सुबलो महबलाबलीबल ॥ २ ॥

Closing

(पृष्ट ८२)
कुबेरेण ततो मार्गे मायामालस्तु निर्मित: ।
शतयोजनमुत्सेध कूरजीवैर्भयंकर ॥ ५२ ॥
दशास्येन ततो ज्ञात्वा समीपं वैरिणपुर
कहीतुर्मेषित सैन्य; प्रहस्तोकंकनीयती ॥ ५३ ॥

८२. पद्मपुराण

Opening : अथानतर श्री रामलछमन सभा विषै विराजे अर राजा पृथ्वीधर ।

Closing : जे पालै जे सरदहै, जिनवचधर्म सुजान।
जे भाषे नर सुधता निश्चै लेहि निरवान ॥

Colophon : इति श्री पद्मपुराण जी की भाषा ग्रन्थ सपूर्णम् । श्लोक सख्या २३००० । सवत् १८६० । चैत्रकृष्णद्वितीयाया गुरुवासरे पुस्तकमिद रघुनाथसर्म्मणे लेखि ।

८३. पद्मपुराण वचनिका

Opening : चिदानद चैतन्य के, गुण अनत उरधार।
भाषा पद्मपुराण की भाषू श्रुति अनुसार ॥

Closing : देखें, क्र० ८४ ।

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य विरचितमहापद्मपुराण संस्कृत ग्रथ ताकी भाषावचनिका विषै बालावबोध वर्णनो नाम एक सौ बाईसमा पर्व पूर्ण भया । यह ग्रथ समाप्तभया शुभ भवतु । माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्या । श्री सवत् १९५३ । ग्रथ श्लोक सख्या २३२०० ।

सूबा औध (अवध) देशमुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्धजिला सु नवानगज बाराबकी नाम है ।
टिकैतनगर सुथाना डाकखाना जानौ तासु दिसपूरव सरैया भलो ग्राम है ॥
कवि भगवानदत्त वास स्थान जानौ तहा अन्न जलकै स्ववस आयौ यही ठाम है ।
लिख्यौ ग्रथ पदुमपुराण धर्मवृद्धि हेत जिला शाहाबाद आरा शहर मुकाम है ॥

विशेष — ग्रन्थ के काष्ठावरण पर (ऊपर) लिखा है—

"पुत्र पौत्र सपति बाढै बाढै अधिक सरस सुखदाई ।
मुसम्मात नन्ही बीबी जौजे बाबू सुखालचद पुत्र धनकुमारचद वो राजकुमारचद पौत्र सबूकुमारचद जबूकुमारचद जैनेन्द्रकुमार चन्द मगलम् भूयात् ।"

'बीच मे मन्दिर का चित्र है उसके दोनो ओर इन्द्र हाथियो के साथ चवर डुराते हुए।'

काष्टावरण पर (भीतर)

" चौबीस तीर्थंकरो के चिह्नो के बहुत ही सुन्दर रंगीन चित्र " बने हुए हैं।

चौबीस तीर्थंकरो के चिह्नो के चित्र एव तीर्थंकरो नाम टीकाकार की हस्तलिपि में स्पष्टरूप से लिखे हुए हैं। लकडी पर चित्रकारी का कौशल अनुपम है जो कि अन्यत्र बहुत कम उपलब्ध है। अंग्रेजी मे इसे "लैकर वर्क" चित्रकारी कहते हैं, जो कि सामान्यतया पानी पड़ने पर भी नहीं धुलता।
इस तरह के चित्रकारी के लिए चित्रकारिता का विशिष्ट ज्ञान आवश्यक है।

कला पारखी दर्शको के लिए इस काष्ठपट्ट पर बनायी गई अनुपम चित्रकला को श्री जैन सिद्धान्त भवन के अन्तर्गत श्री शान्ति-नाथ मदिर के प्रागण मे श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार कला दीर्घा मे रखा जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक दर्शक इसे देख सकें।

८४. पद्मपुराण वचनिका

Opening . महावीर वदौं सुबुधि रतन तीन दातार।
निजगुण हमे द्यो अबै, अपनो जानि हितकार ॥

Closing : तादिन सपूर्ण भयौ यह ग्रथ सिव दाय।
बहु सघ मगल करौ, वढौ धर्म जिनराय ॥

Colophon इति श्री रविषेणाचार्य कृत महापद्मपुराण सस्कृत ग्रथ ताकी भाषा वचनिका बालबोध का तेईसवाँ पर्व पूर्ण भया। इति महा-पद्मपुराण समाप्तम्। १२३ ॥ सवत् १८४८ वर्षे भादो सुदी १२ को लिख चुके, लेखक बखतमल्ल नद वसी वारी नगर मध्ये लिखा है।

८५. पद्मपुराण भाषा

Opening : सिद्ध ... . प्रतिपादनम् ॥

Closing
बहुरि जाय बन तप करि भारी।
सिवपुर जानेकी मनमें बिचारी॥
अब इहा भई निरबिघ्न अहार।
राममुनि को निरविघ्न अहार॥

Colophon. इति श्री रविषेणाचार्य कृत मूलसंस्कृत ताकी वचनिका दौलतराम कृत ताकी चौपाई छद बध मह श्री राम महामुनि का निरतराय अहार का होना यह एकसौ चौसठौं सधि पूर्ण भयो। शुभम्।

८६. पाडवपुराण

Opening
सिद्धमिद्धार्थं सर्वस्वसिद्धिद सिद्धिमत्पदं॥
प्रमाणनयससिद्धि सर्वज्ञ नौमि सिद्धये॥१॥

Closing:
यावच्चद्रार्कतारा सुरपतिसदन तोयधि शुद्धधर्मं
यावद्भूगर्भदेवा सुरनिलयगिरिर्देव गगादिनद्य॥
यावत्सत्कल्पवृक्षास्त्रिभुवनमाहिता भारत वैजगत्या,
तावत्स्थेयात्पुराण शुभशततजनक भारत पाण्डवाना॥

Colophon
श्रीमद्विक्रमभूपते द्विकहतस्पष्टाष्ट सख्ये शते
रस्येष्टाधिकवत्सर सुखकर भाद्रे द्वितीया तिथौ॥
श्रीमद्वाग्वरनी वृतीदमतुले श्री शाकवातेपुरे
श्रीमच्छ्रीपुरुधाम्नि विरचित स्थेयात्पुराण चिरम्॥
इति श्री पांडवपुराणे भारतनाम्नि भट्टारकश्रीशुभचद्रप्रणीते

ब्रह्मश्रीपालसाहाय्यसापेक्षे या भवोपसर्गसहनकेवलोत्पत्तिमुक्तिसर्वार्थसिद्धिगमनश्रीनेमिनाथनिर्वाणगमनवर्णन नाम पचविंशतितम पर्व २५। सवत् १८२० वर्षे द्वितीय-चैत्रसुदि रविवार ग्रथ लिखापित पडित ? श्री यासमती जी तत् शिष्य पडित मथारामजी आत्मयोग्य कर्मक्षयार्थं लिखितम्। श्री कास्माबाजार मध्ये श्रीरस्तु॥ श्री॥

द्रष्टव्य--(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २०।
(२) जि० र० को, पृ० २४३।
(३) आ० सू०, पृ० ६८।
(४) प्र० जै० सा०, पृ० १८१।
(5) Catg. of Skt & Pkt Ms. P 667.

८७. पांडवपुराण

Opening : सेवत सत सुरराय स्वयं सिवसिद्धमय।
सिद्धारथ सरवंसनय प्रमान ससिद्ध जय ॥

Closing : कीजै पुष्ट शरीर को, करके सरसाहार।
को गुनता सो युद्ध मैं जो भाजै भयधार ॥

Colophon · नही है।

८८. पार्श्वपुराण

Opening पणविवि सिरि पासहो सिवउरि वासहो, विहुणिय पासहो गुणभरिऊ।
भविय सुहकारणु दुक्खणिवारणु, पुणु आहास मितहु चरिऊ।

Closing मच्छरमय हीणउ सत्थपवीणउ, पढियमणुणदउ सुचिरू।
परगुणगहणायरू वयणिय मायरू जिणपय पयरूह णविय सिरु ॥

Colophon · इय सिरि पासणाहपुराणे आयम अत्थस्स अत्थिसुणिहाणे सिरि पंडिय रइधू विरइए सिरि महाभव्वखेऊ साहुणाम किए सिरि पासजिण पचकल्लाणवण्णणो तहेव दायार वस णिद्देसो णाम सत्तमो सधी परिच्छेओ सम्मत्तो। सधि।७। इति श्री पार्श्वनाथपुराण समाप्तम्।

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये १५४६ वर्षे चैत्र-सुदि ११ शुक्रवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शुभनामा योगे श्री हिसारपेरोजा कोटे श्री महावीरचैत्यालये सुलितान श्री साहिसिकदरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे त्रयोदशप्रकारचरित्रालकाराल-कृत. बाह्याभ्यन्तर परिग्रहसमित्रह (?) समर्था. भट्टारक श्री षेमकी-तिदेवा. तत्पट्टे त्रिकालागत श्राद्धवृदविहितपदसेवा भट्टारक श्री हेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे कुवलयविकासनैकचन्द्रो भट्टारक श्री कुमारसेन-देवा तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री नेमचद्रदेवा, तदाम्नाये अग्रेकान्वये गोइलगोत्रे आसीवाल सराफ-देवशास्त्रगुरु चरणारविंदचचरीकोपिम पचाणुव्रत प्रतिपालका समा परमश्रावकसाधु मइणाख्य: चादपाही। तृतीयपुत्र: जिनपूजापुरदरसाधु हूलणु भार्या जे वूहि तस्यागजा प्रथम पुत्रमयणरूप व्रत · हु थितज कल्पवृक्षान् साध ···· वणु भार्यादिवाही

द्वितीय पुत्र साधु सीहा, भार्या डेडीए तेयो ... कर्म्मक्षय साधुपि-रदूतस्य पुत्र ... पार्श्वनाथ चरित्र लिखापितम।

उपर्युक्त प्रति से यह प्रति जैन सिद्धान्तभवन, आरा के संग्रहार्थ लिखी गई। शुभमिती माघशुक्ला ८ गुरुवार वीरसम्वत २४६३। विक्रम संवत् १९९३ हस्ताक्षर रोशनलाल जैन। इति।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० २४६।

८९. पार्श्वपुराण

Opening : नम श्री पार्श्वनाथाय विश्वविघ्नौघनाशिने।
त्रिजगत्स्वामिने मूर्द्धा ह्यनन्तमहिमात्मने॥

Closing : सर्वे श्रीजिनपुंगवाश्च विमला सिद्धा अमूर्ता विदो,
विश्वाच्चर्या गुरुवोजिनेंद्रमुखजा सिद्धान्तधर्मादय।
कर्त्तारो जिनशासनस्य सहिता स वदिता संश्रुता,
येतेमेऽत्र दिशतु मुक्तिजनकं सुद्धिं च रतनत्रये॥

पचादशाधिकानि वा विंशति. शतान्यपि।
श्लोकसंख्या अस्य विज्ञेया सर्व ग्रन्थस्य लेखकैं॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथथचरित्रे भट्टारक सकलकीर्ति विरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमन त्रयोविंशतितम सर्ग समाप्त। इति श्री पार्श्वनाथचरित्र समाप्तम्।

देखें—जि० र० को०, पृ० २४६।
Catg. of Skt. & pkt Ms, P. 667.

९०. पार्श्वपुराण

Opening : देखें, क्र० ८९।

Closing : देखें, क्र० ८९।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमनवर्णनो नाम त्रयोविंशतितम सर्गा श्री पार्श्वनाथचरित्रसमाप्त॥ देउल ग्रामे लिखित नेमसागरस्य इद पुस्तक॥

६१. पार्श्वपुराण

Opening : मोह महातम दलन दिन, तप लक्ष्मी भरतार।
ते पारस परमेश मुझ, होय सुमति दातार ॥

Closing . संवत् सत्रह सै समै, अर नवासी लीय।
सुदि असाढ़ तिथि पंचमी, ग्रंथ समापत कीय ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वपुराणभाषायां भगवन्निर्वाणगमनोनाम नवमो अधिकार समाप्तम्। संवत् १८५६ कार्तिक सुदी नवमी बुध- श्वेताम्बर ऋषि हंसराज जी तत् शिष्य ऋषि रामसुखदास जी शाहजहानाबाद मध्ये लिपिकृतम् आत्मार्थे। शुभ भवतु।

६२. पार्श्वपुराण

Opening देखें, क्र० ६१।

Closing देखें, क्र० ६१।

Colophon . इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषायां भगवन्निर्वाणकवर्णनो नाम नवमोधिकार ॥ ९ ॥ इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषा सम्पूर्णम्। संवत् १९५३ सन् १३०३ अगहण शुक्ल एकादश्यां तिथौ मंगरवासरे दसखत चुनीमाली का।

६३. प्रद्युम्नचरित (१४ सर्ग)

Opening : श्रीमतं सन्मतिं नत्वा नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥
विश्वजेतापि मदनो बाधितु नो शशाकय ॥ ॥

Closing : चतुःसहस्रसंख्यात. सार्द्धचाष्टशतैर्युत.।
भूतले सतत जीयाच्छ्रीसर्वज्ञप्रसादत ॥ १६९ ॥

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्न सांबअनिरुद्धादिनिर्वाणगमनो नाम चतुर्दश सर्ग समाप्त: ॥ मिति कार्तिक शुक्ला ५ चन्द्रवासरे संवत् १९५३। लिखि नटवर लाल शर्मणा ॥

विशेष—इसमें मात्र १४ सर्ग हैं, जबकि दिल्ली जिनग्रन्थ रत्नावली में १६ सर्ग की प्रतियों के भी उपलब्ध होने की सूचना है।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, प०, पृ० २२।
(२) जि० र० को०, पृ० २६४।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७६।
(४) आ० सू०, पृ० ६४।
(५) रा० सू० III, पृ० २१३।
(6) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 670.

६४. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखें क्र० ६३।

Colophon : इतिश्री प्रद्युम्नचरिते आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते श्री प्रद्युम्न अनिरुद्धनिर्वाणगमनो नामचतुर्दश सर्ग समाप्त। समाप्तमिदं श्री प्रद्युम्नचरितम्। वाच्यमान चिरं नदन्तु पुस्तक संवत् १७१७ वर्षे माघ सुदि २ दिने लिख्या समाप्तिनीत लिखिततश्च कुशलान्वये साहश्री बगूजी तत्पुत्र परम धार्मिक साह श्री रायसिंहजी केन स्वकीय ज्ञातवृद्धयर्थम्।

श्लोक—यादृश ... न दीयते॥

६५. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखें, क्र० ६३।

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य विरचिते प्रद्युम्न शवअनिरुद्धादि निर्वाणगमनो नाम चतुर्दश. सर्ग। श्री मद्वि—क्रमभूपते-गंजरसाद्री दुर्मते वत्सरे मासे फागुनि के दिने रवि सुते—रूद्राख्यकासत्तिथि तस्मिन्नेव लिपिकृतो गुवताराज्येविमष्टे लिखितो ग्रथो धनपतिसज्ञिनामतिमता कैगणकाख्ये पुरे।

६६. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३ ।

Closing : देखें, क्र० ६३ ।

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्रीसोमकीर्ति आचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्नसंबअनुरुद्धादि निर्वाणगमनो नामषोडश सर्ग । इति प्रद्युम्नचरित्र सम्पूर्णम् । संवत्सरे श्री विक्रमार्कभूपते संवत् १७६६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे तिथो च नौम्यां सोमवासरे । लिखत मुदकसागरेण तत् शिष्यसमीप तिष्ठते ग्रामपुर मध्ये ।

जो उपजो संसार सर्व वस्तु का नाश है ।
तातैं इही विचार धर्मविर्षै चित राखना ॥

श्रीरस्तु मंगल दद्यात् ।

विशेष —संवत् १७६५ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादसी दिने नादरसाह बाद शाह नैं दिल्ली मे कतलाम किया मनुष्यों का प्रहर तीन ।
इस प्रति मे सर्गों की संख्या १६ है, जबकि अन्त मे श्लोक संख्या नहीं है ।

६७. पुण्याश्रव कथा

Opening : श्री वीरजिनमानम्य वस्तुतत्वप्रकाशकम् ।
वक्ष्ये कथामय ग्रंथ पुण्याश्रव विधानकम् ॥

Closing : रविसुतको पहलो दिन जोय ।
अरु सुरगुरु को पीछे होय ॥
बार यही गिन लीजो सही ।
तादिन ग्रंथ समापति लही ॥

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव ग्रंथ मूल कर्त्ता रामचंद्र मुनि टीका दौलतराम कृत संपूर्ण । संवत् १८७४ मिती माहसुदि ३ रविवासरे संपूर्ण कृतम् ।

६८. पुण्याश्रव कथा

Opening : देखें, क्र० ६७ ।

Closing : ''' तीस्यौ पुकारै छै । तब राजा ग्रहीतवत ता ' ' ।

Colophon : उपलब्ध नही ।

९९. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening : वर्द्धमान जिन बंदिकैं, तत्वप्रकाशनसार।
पुण्याश्रव भाषा करूं भव्य जीवन हितकार ।।

Closing : दान तना अधिकार यह, पूरा भया सुजान।
बहुविध की सत्रुमम, भोवहु करैं कल्यान ।।५९०६।।

Colophon : इति श्री पुन्याश्रवविधाने ग्रथ के सवानदविव्य मुनि शिष्य रामचद्र विरचिते दान अधिकार समाप्त ।

पुन्याश्रव ये कथा रसाल। पूजादिक अधिकार विसाल ।।
षट् अधिकार परम उतकिए। छप्पन कथा जाममैं मिए ।।
आदि पुरानादिक जे कहा। अभिप्राय सो यामैं लहा ।।
आचारज जिय धरि अभिलाष। कीनो तास सस्कृत भाष ।।
तास वचनकारूप सुधार। दौलतराम कथा बुधसार ।।
तातैं भावसिंघ निज छद। आरभ किया चौपाई वद ।।

•

प्रभु को सुमिरन ध्यानकर, पूजा जाप विधान।
जिन प्रणीत मारग विषैं, मगन होहु मतिमान ।।

१००. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening : देखें, क्र० ९७।

Closing . प्रभु को सुमरण ध्यानकर, पूजा जाप विधान।
जिनप्रणीत मारगविषैं, मगन होहु मतिमान ।।

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव कथाकोष भाषाजी राजभावसिंह कृत समाप्तम्। श्रीशुभ सवत् १९६२ तत्र वैशाखकृष्ण तृतीयायां लिपि कृतम् प० सीतारामशास्त्री स्वकरेण सहारनपुर नगरे।

नोट —लेखक का नाम भावसिंह होना चाहिए।

१०१. पुराणसार संग्रह

Opening : पुरुदेव पुराणाद्यं प्रणम्य वृषभ विभुं।
चरित तस्य वक्ष्यामि पुण्यमादशमाद्भवान् ।।

Closing महिम्नामाधारो भुवनविततध्वांततपन ।
स भूयान्नो वीरो जननजयसपनिजनन ॥

Colophon इति श्री वर्द्धमानचरित्रे पुराणसारसग्रहे भगवन्निर्वाणगमन नाम पचम सर्ग समाप्त. ।

प्रतिलिपि जैनसिद्धान्त भवन आरा मे रोशनलाल जैन ने की । शुभमिती फाल्गुन शुक्ला ६ गुरुवार विक्रम सवत् १९९० वीर सवत् २४६० । इति शुभ भवतु ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २५३ ।

१०२. पूज्यपाद चरित्र

Opening पादपद्मगलिगे चाकुवेनेन्नकवनु ॥
उपदेशगेंदु सकलतत्ववनूरे कुप वेन्लय सहृरिसि ।
सुपथव तोरि सुखवनु भव्यगितत्वपदेशकरिणे रगुवेनु ॥

Closing सौख्यम कनकगिरिवराधीश्वर पार्श्वनाथ ।

Colophon अतु मधि १५ कका पदनु १९३२ सखिरद वर्षनूर मूव-तोबत्तकका मगल जयमगल शुभमगल नित्यमगल महा ।

हृदिनैदनेय मधि मुगिदुदु ।
पूज्यपादचरित्रे सपूर्न मगलमहा ।

१०३/१. रामयशोरसायन रास

Opening श्री मनसोव्रत स्वाम जी त्रिभुवन त्यारण देव ।
तीरथकर प्रभु वीसमो सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥

Closing : बरसा सोला केरी सुन्दरी सुन्दर मुपूल भावै ।
रूप अनूपम अधिक बनायो इन्द्र करै अभिलाष ॥ सी० ॥
रिमझिम रिमझिम घूघर वाजै ।

Colophon : नही है ।

विशेष : यह पाण्डुलिपि गुजराती लिपि मे 'देवचद लालभाई पुस्त-कोद्धार फड, सूरत' से 'आनन्दकाव्य महोदधि' के दूसरे भाग मे

प्रकाशित है।

१०३/२. रत्नत्रय कथा

Opening श्री जिनकमल नित नमु, सारदा प्रणमी अथ निरगमु।
गौतम केरा प्रणमो पाय, जहथि बहुविधि मगल थाय॥

Closing याम्या मणि मानिक भडार, पद-पद मगल जय जयकार।
श्रीभूषण गुरुपद आधार, ब्रह्मज्ञान बोले सुविचार॥

Colophon इति रत्नत्रय कथा सपूर्णम्।

१०४. रत्नत्रयव्रत पूजा व कथा

Opening श्रीमत सन्मत नत्वा श्रीमत सुगुरुन्नपि।
श्रीमदागमत श्रीमान् वक्षे रत्नत्रयार्चनम्॥

Closing देखे क्र० १०३/२।

Colophon इति श्री रत्नत्रयव्रत कथा समाप्तम्।

विशेष—पूजा जिनेन्द्रसेन रचित है।

१०५ रविव्रत कथा

Opening श्री सुखदायक पास जिनेस,
प्रणमौं भव्य पयोज दिनेस।
सुमरों सारद पद अरविंद,
दिनकर व्रत प्रगट्यो सानद॥

Closing यह व्रत जे नरनारी करैं,
सो कबहू नहि दुरगति परैं।
भाव सहित सुर नर सुखलहैं,
बार बार जिन जी यों कहैं॥

Colophon इति श्री रविव्रत कथा जी लघु समाप्तम्।

१०६. रविव्रत कथा

Opening : देखें–क्र० १०५ ।

Closing . इह व्रत जो नरनारी करै,
सो कबहू नहि दुर्गति परै।
भाव सहित सो सिवसुष लहै
भानुकीर्ति मुनिवर यो कहै ॥

Colophon इति रविव्रत कथा समाप्तम् ।

१०७. राजाबलि कथा

Opening . श्री मत्समस्तभुवनशिरोमणि सद्विनयविनमिताखिलजनचिन्तामणिये नित्य परमस्वामियनभिनुर्तिसि पडे–वे शाश्वतसुखमम् ।

Closing इति कथेय केलवर भ्रातियु नेरेकेडुमु बलिकमायु श्रीयु सतानवृद्धि सिद्धियनतसुख तप्पुदप्पुदेंवुदु निहन ।

Colophon इति मत्यप्रवचन काल प्रवर्त्तन कनकाचलश्रीजिनाराधक मलेयूर देवचद्र पडित विरचित राजवली कथासारदोल् जातिनिर्णय–प्ररूपण त्रयोदशाधिकार। समाप्तोऽय ग्रन्थ ।

१०८ रामपमारोपम पुराण

Opening पचपरमगुरु को सुमरन करो, अरु जिन प्रतमा जिनधाम ।
श्री जिनवाणी जिनधरम को, करजोर करो परनाम ॥

Closing : श्रीरामपमारो वर्नन करो वाच सुनो नरकोय ।
भवदधि तारन को यह कारनै मोक्षवध वरलोय ॥ २५ ॥

Colophon : अपठनीय ।

१०९. रामपुराण

Opening : वदेहं सुव्रत देव पचकल्याणनायकम् ।
देवदेवादिभि सेव्य भव्यवृ दसुखप्रदम् ॥

Closing · श्री मूलसघे वरपुष्कराख्ये गच्छेसुजातो गुणभद्रसूरि.।
पट्टे च तस्येव सुसोमसेनो भट्टारकोभूद्विदुषां शिरोमणि ॥

Colophon इति श्रीरामपुराणे भट्टारक श्री सोमसेनविरचिते राम-स्वामीनो निर्वाणवर्णनो नामत्रयत्रिंशत्तमोऽधिकार । ३३ ॥
समाप्तोय रामपुराण ग्रथाग्रयश्लोक ७००० । सप्तसहस्त्राणि । मिती भादो सुदी ११ सवत् १९८६ तादिन यह पुस्तक लिखकर समाप्त की ।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३३१, ३३४ ।
Catg of Skt & Pkt Ms., Page-687

११० रोहिणी कथा

Opening वासुपूज्य जिनराज को, वदू मनवचकाय ।
ता प्रसाद भाषा करो, सुनो भविक चितलाय ॥

Closing रोहनी व्रत पालै जो कोई, ता घर महामहोत्सव होई ।
मनवचकाय सुद्ध जो धरै, क्रमतेमुकति वधु सुख वरै ॥ ८५ ॥

Colophon इति रोहणी व्रत कथा सम्पूणम् ।

१११ रोटतीज व्रत कथा

Opening चौबीसो जिन को नमौं, श्री गुरुचरण प्रभाव ।
रोटतीज व्रत की कथा, कहो सहितचित चाव ॥

Closing भूल चूक जा कथा मझारा, लै भविजन सब सुजन सवारा ।
शुभ सवत् उन्नीसपचासा, अषाढ शुक्ल तृतीया मलोमासा ॥
वार शुक्र शशि कथा प्रकाशा, वाचक हृदय हुए की आशा ।
जैन इन्द्र किशोर सुनाई, जय-जय ध्वनि चतुर्दिक छाई ॥

Colophon इति सपूर्णम् । शुभ भूयात् ।

११२ रोटतीज व्रत कथा

Opening देखे, क्र० १११ ।

Closing देखे, क्र० १११ ।

Colophon शुभ भूयात् । इति सम्पूर्णम् ।

यह पुस्तक सवत् १६५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

११३ ऋषभपुराण

Opening श्रीमन त्रिजगन्नाथमादितीर्थंकर परम् ।

फणीन्द्रेन्द्रनरेन्द्रार्च्य वदेऽनतगुणार्णवम् ॥

Closing अस्टाविशाधिकाभि षट् चत्वारिंशत्शतप्रमा ।

अस्यादर्हश्चरित्रस्य स्यु श्लोका पिंडिताबुधै ॥

Colophon इति श्री वृषभनाथ चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमननाम विंशतितम सर्ग ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ५७ ।

११४ सम्यक्त्वकौमुदी

Opening परमपुरुष आनन्दमय चेतन रूप सुजान ।

नमो शुद्धपरमातमा, जग परकासक भान ॥

Closing सम्यक्दर्शन मूलहै, ग्यान पेड द्रुम डार ।

चरण सुपल्लव पहुप है, देहि मोषि फलसार ॥

Colophon इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमन कथन सधि ग्यारमी सपूर्णम् ।

अठारासै सोलहतरा, चैतमास है सार ।

शुक्लप्रतिपदा है सही, गुरुवार पैसार ॥१॥

लिपि कीन्ही भेलीराम जू, ग्याति सावडा जानि ।

वासी चपावति सही, बोरिगढ मधि आनि ॥२॥

जयचद जी सो वीनती, करौं जुमनवचकाय ।

शति दिवस पढियो सदा, इह कथा मनलाय ॥३॥

११५. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, ११४ ।

Closing : चदसूर पानी अवनि, जबलग अवर आकाश ।
मेरादिक जवलगि अटल, तवलगि जैन प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका विरचिते उदतोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमनवणन नाम एकादश परिच्छेद । इति श्री समकित कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका जातिभावसाकी करि भाषा समाप्त । सवत् १६१३ पौष मासे कृष्ण सप्तमीया गुरुवासरे । श्लोक सख्या १७०० ।

११६. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, क्र० ११४ ।

Closing धरम जिनेश्वर कोय है, स्वर्गमुक्ति पद देय ।
ताकी मनवचकाय सौ, देवसु पूज करेय ॥

Colophon अनुपलब्ध ।

११७. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, क्र० ११४ ।

Closing . देखें, क्र० ११४ ।

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अर्हदाससेठादिक स्वर्गगमन कथा सधी ग्यारमी सम्पूर्णम् ।

देखें, क्र० ११४ ।

स्त्री संवत् १९७० शाके १८३५ मगशिर सुदी ९ नवमी रविवार मध्यानमें इह ग्रंथ सपूर्ण भया।

विशेष—हरप्रसाद दास धर्मशालाशाला, आरा में लिखा गया।

११८. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, क्र० ११४।

Closing : देखें, क्र० ११४।

Colophon : देखें, क्र० ११७।

सवत् १९४९ श्रावण कृष्ण अष्टम्यां सम्पूर्णम्।

११९. संकटचतुर्थी कथा

Opening : वृषभनाथ वंदो जिनराज, पुनि सारद वंदो सुखसाज।
गणधर ये सुभमति हो लहो, सकटचोथि कथा तब कहो॥

Closing : विश्वभूषण भट्टारक भए देवेन्द्रभूषण तिहिपट्ट ठए।
तिनि यह कथा करी मनुलाइ, भव्यकजन सुनियो चित ल्याइ॥

Colophon : इति सकटचौथिकथा समाप्ता।

१२०. संकटचतुर्थी कथा

Opening : देखे, क्र० ११९।

Closing : देखें, क्र० ११९।

Colophon : इति संकट चौथकी कथा सम्पूर्णम्।

१२१. सप्तव्यसन चरित्र

Opening : श्री अर्हंत प्रनाम करि, गुरुनिरग्रंन्थ मनाइ।
सप्तविसन भाषा कहूँ, भव्यजीव हितदाइ॥

Closing : सकलमूल याग्रथ को जानो मनवचकाय।
दयाधर्म नितकीजिये, सो भव भव सुख होय॥

Colophon : इति श्री सप्तविसन भाषाया समुच्चय कथा परस्त्री विसन-फल वर्णनो नाम सप्तमो अधिकार। इति श्री सप्तविसन चरित्र भाषा सम्पूर्ण। मिति चैत्रसुद २ सवत् १९७७।

१२२ सप्तव्यसन कथा

Opening प्रणम्य श्रीजिनान् सिद्धानाचार्यान् पाठकान् यतीन्।
सर्वद्वद्वविनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान् ॥

Closing यावत्सुदर्शनोमेरूर्यावच्च सागराद्वर ।
तावन्नदत्वय लोके ग्रथो भव्य जनार्चित ॥

Colophon इत्यार्षे भट्टारक श्रीधर्मनन भट्टारक श्रीभीमसेनदेवा तेषा आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते सप्तव्यसनकथा समुच्चय परस्त्रीत्य-सनफलवर्णनो नाम सप्तम सर्ग ॥७॥

शाके १६६४ मिति आषाढ वदि त्रयोदश्या तिथौ भौमवासरे सवत् १८२९ का तद्दिवसे आद्रानक्षत्रे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये वैराडदेशे मगलूग्रामे भट्टारक श्री धर्मचद्रलिखितमिद शास्त्र सप्तव्यसनचरित्र अर्जिका श्री नागश्री पठनार्थ इद शास्त्र लिखित स्वज्ञानावर्णिकर्मक्षयार्थ दत्तम्।

विशेष—सपूर्णग्रन्थस्य श्लोकाना सख्या— १८५३।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २८।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २३४।
(३) जि० र० को०, पृ० ४१६।
(4) Catg. of Skt & Pkt Ms., P 701

१२३. सप्तव्यसन कथा

Opening : देखें, क्र० १२२।

Closing : देखें, क्र० १२२।

Colophon सवत् १६२६ वर्षे शके १४९१ प्रवर्तमाने शुक्लसवत्सरे वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ रविवार पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री धर्म-चन्द्रोपदेशात् बघेरवाल जाति चामरागोत्रे सघवीधीना तस्य भार्या लखमाई तयो पुत्र नीन्हू साह तस्य भार्या पुतलाई तयो पुत्र गुणासाह

तस्य भार्या गोजाई ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं गोमटश्री अर्यिकायै पुत्तलिका पुस्तक दत्तम् । कल्याण भवतु । भट्टारक माहेन्द्रसेण ।

१२४. शय्यादान वंक चूली कथा

Opening शय्यादानगुणख्याश्री सवेगरसकूपिका ।
सप्तव्यसननदित्री वकचूलकाथाव्यात् ॥

Closing इत्येवं नृपनन्दन प्रतिदिन नि शेषपापोद्धत:,
शय्यादानमनुत्तर गुणवता दत्वा मुनीना मुदा ।

Colophon इति शय्यादाने वकचूली कथा ।

५२५ शांतिनाथ पुराण (१६ सर्ग)

Olosing नम श्रीशातिनाथाय जगच्छाति वि धायिने ॥
कृत्स्न कर्म्मौघशाताय शातये सर्वकर्म्मणाम् ॥ १ ॥

Closing अस्य शातिचरित्रस्य ज्ञेया श्लोका. सुलेखकैं ॥
पचसप्तत्यधिकास्त्रिचत्वरिंशछतप्रमा ॥ ४१७ ॥

Colophon इति श्रीशांतिनाथचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री शान्तिनाथसमवसरणधरमोपदेशमोक्षगमनवर्णनो नाम षोडशोऽधिकार ॥ १६ । इति श्री शान्तिनाथचरित्र समाप्तम् । शुभ भवतु ॥ मासोत्तमे मासे वैशाखेमासे शुक्लतिथौ षष्ट्या भृगुवासरे अय ग्रथा समाप्त । लिखितमिद पुस्तक मिश्रोपनामकगुलजारीलालशर्मणा ॥ सवत् १६७१ ॥ आर्य्या बनाई ।

श्लोक—भिन्डे निवासनशाली गुलजारीलाल नामको हि मिश्रश्च ॥
विलिलेखपुस्तक यत् पातु सदा तच्छिवश्रमान् लोके ॥ १ ॥

रि० ग्वालियर जि० भिंड । श्लोक सख्या ५६७२ सवत् १६२१ की लिखी हुई प्रति में यह नकल की गई है ।

द्रष्टव्य—(१) जि० र० को०, पृ० ३८० ।
(२) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २४ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 694

१२६. शान्तिनाथ पुराण

Opening : प्रणम्य परमानन्दान् देवसिद्धान्तसगुरून् ।
शातिनाथपुराणस्य भाषा सहित नौम्यहम् ॥

Closing : जिनवर धर्मप्रभाव सो, परम विस्तरयो ग्रंथ ।
ता सेवत पाइये सदा, नाक मोष (मोक्ष) को पंथ ॥

Colophon इति श्री शांतिनाश पुराण आचार्य श्री सकलकीर्ति विर-चिताद्भाषा विरचितात् लघुकवि सेवारामेन तस्य जिनज्ञानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वाणगमन निरूपणो नाम पचदसमोधिकार । इति शातिनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् । लिखि आरा नगर मे श्री जिनमंदिर विषै मिती चैत्रशुक्ल चौथ वार बुध को लिख समाप्त भया ।
शुभ भवतु ।

१२७. शान्तिनाथ पुराण

Opening : देखे, क्र० १२६ ।

Closing : देखें, क्र० १२६ ।

Colophon देखें, क्र० १२६ ।

इति श्री शान्तिनाथ पुराण भाषा सपूणम् । लेखक दुर्गाप्रस द ब्राह्मण लिखि गोरखपुरमध्ये अलीनगर मे श्री जिनमंदिर विदै मिति कार्तिक सुदी चौथ (४) वार बुध को लिखि समाप्त भया ।

धर्मेन हन्यते शत्रु धर्मेन हन्यते ग्रहः ।
धर्मेन हन्यते व्याधि यथा धर्म तथा जय. ॥

१२८. शीलकथा

Opening : प्रथमहि प्रणमू श्री जिनदेव, इन्द्र नरिन्द्र करे तिन सेव ।
तीनलोक मे मगलरूप, ते वदू जिनराज अनूप ॥

Closing : जा घर शील धुरंधर नारि।
मो घर सदा पवित्र निहार॥
जाघर त्रिया वि ··· ·· ।

Colophon : अनुपलब्ध।

१२९. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८।

Closing : देखें क्र० १३०।

Colophon : इति शील माहात्म्य कथा सम्पूर्णम्। दस्तखत दुरगा-प्रसाद मिति कुवार (आश्विन) सुदी १४ सोमवार को बाबू केशो (केशव) दास की कवीला सुमतदास की महतारी ने चढाया पचायती मदिर मे गया जी के।

१३०. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८।

Closing : शीलकथा पूरनभई पढ़े सुने जो कोय।
सुख पावें वे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय॥

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्णम। तारीख २ अप्रैल सन् १९०५। वैशाख कृष्ण ३ सनिवार।

१३१. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८।

Closing : देखें, क्र० १३०।

Colophon . इति श्री शील माहात्म्य की कथा सम्पूर्णम्। मिती पौष कृष्ण ११ दिन शनिवार को पूरण भई। इदं पुस्तक नीलकंठदासेन लिखितम्।

१३२. शीलकथा

Opening : देखें, क० १२८।

Closing देखें, क १३०।

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्ण। मिति वैशाख वदी १ सन् १२७६ साल दसखत दुरगा प्रसाद जैनी जिला आरा।

१३३. श्रेणिकचरित्र

Opening तीनलोक तिहुकालमें पूजनीक जिनचद।
श्री अरहत महतके, वदौ पद अरविंद ॥

Closing मनवचतन यह शास्त्र को, सुनें सरदहै सार।
नामशर्म्म भोगिकै, होत भवोदधिपार ॥

Colophon इति श्री श्रेणिक महाचरित्रे ग्रथ फलितवर्णनो नामएकविंश-तिमो प्रभाव। इति श्रेणिकचारित्र सम्पूर्णम्।

उगणीस सौ बासठ यही, कृष्ण पाच वैसाख।
सोम सहारनपुर विषै, सीताराम जु राख ॥१॥
मूलऋक्ष शिवयोग में लिखकरि पूर्ण विचार।
पडित जन पढ लीजियो, लिखी बुद्धि अनुसार ॥२॥
जैसी प्रति देखी लिखी, तैसी नही महान।
निजकर शोधि सभारिकै पढि लीजें बुधवान ॥३॥

शुभम् सवत्सर १९६२ शव १८२७ वैशाखकृष्ण पचम्यां सोमदिने मूलर्क्षे शिवयोगे सहारनपुरनगरे लिपिकृत प० सीताराम-शास्त्री निजकरेण।

भव्या पठतु शृण्वन्तु, क्षेममार्गानुगामिन।
कराग्रेण विदोतूर्ण श्रीमद्गुरुप्रसादत ॥

१३४. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री वर्द्धमानमानंद नौमिनानागुणाकरम्।
विशुद्धध्यानदीप्ताचिर्हुतकर्मसमुच्चयम् ॥

Closing : मंद्रार्कहेमगिरिसागरभूमिबाल गगानदी नभसि सिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठतु यावदमितो वरमर्त्यसेवा तिष्ठतु कोविदमनोंबुजमध्यभूता ॥

Colophon : इति श्री श्रेणिकचरित्रभवाङ्कबद्ध भविष्यत् पद्मनाभपुराणे आचार्यशुभचन्द्रविरचिते पचकल्याणवर्णनो नाम पञ्चदशपर्व्व. समाप्त । सवत् १८०७ ज्येष्ठसुदी ५ मगलदिने लिखित मुनिविमल सुश्रावकपुण्यप्रभावक जैनीलाला प्रतापसिंह जी आत्मार्थे परममनोग्यम् ।

सवत् १९९३ विक्रमीये आषाढ़ सुदि १० मगलदिने रोशनलाल लेखक ने लिखा ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २५ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३९९ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २२४ ।
(४) आ० सू० पृ०, १५७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १९, २३१ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २१९ ।
(7) Catg. of skt. & Pkt. Ms., page, 698

१३५. श्रेणिकचरित्र

Opening : पणवेवि जिणिंद हो चरमजिणिंद हो, वीर हो दंसणणाणवहा ।
सेणिय हो णरिंदहु कुवलयचद हो पिसुणहो भविय हो पवरकहा ॥

Closing : दयधम्मपवत्तणु विमलसुकत्तणु णिसुणतहो जिणइदहु ।
अ होइ सधण्णउ हुउ मणिमण्णउ त सुह जगिहरि इदहु ॥

Colophon : इयसिरि वड्ढमाणकव्वे पयडियचउवग्गमग्गरसभव्वे सेणिग अभयचरित्ते विरइय जयमित्तहल्लसुकइत्तो भवियणजणमणहरण सघाहिवहोलिवम्मकण्ण सेणियधम्मलाहो वड्ढमाणणिव्वाणगमणवण्णणा णाम एयारहमो सधी परिच्छेऊ सम्मत्तो सधी ॥ ११ ॥

इति श्री श्रेणिकचरित्र सम्पूर्णम् । संवत् १७६६ वर्षे श्रावणवदि ५ भृगु अपरान्हिसमए श्रीपालमनगरि स्थाने लिखित ब्रह्म कृपासागर तच्छिष्य लिखित पंडित सु दरद स ।

शुभमिती माघशुक्ला ८ बृहस्तपरिवार वीर सम्वत् २४६३ विक्रम संवत् १९९३ । हस्ताक्षर रोशनलालजैन ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३९९ ।

१३६ श्रेणिकचरित्र (११ संधि)

Opening : परमप्पयभावणु सुहगुणगावणु णिहणिय जम्मजरामरणु ।
सासयसिरिसुंदरु पणयपुरंदरु रिसहगुण वविति दुसणमसरणु ॥

Closing : देखें, क्र०, १३५

Colophon : इति श्री वर्द्धमानकाव्य ॥ श्रेणिकचरिएकादशमो संधि समाप्ता ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य राज्ये संवत् १६०० तत्रवर्षे फाल्गुणमासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां २ तिथौ शुक्रवासरे श्री निजारा स्थान वास्तव्यो साहिआलम सुराजप्रवर्तमाने श्री काष्टासंघे माथुरान्वये । पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे साहुनोल्दा (?) भार्या गणीतस्य पुत्र जिणदासु । तस्य भार्या सोभा तत्पुत्रा पंच । प्रथम पुत्र साधु महादासु । द्वितीय पुत्र साधुगेल्हा । तृतीय पुत्र साधु नगराजु । चतुर्थपुत्र साधु जगराजु । पंचमपुत्र साधु सीहू । जिण-दास प्रथमपुत्र महादासु तस्य भार्या दोदामही । तस्य पुत्र जतुतस्य भार्या लाडो । जिनदास द्वितीयपुत्र गेल्हा तस्य भार्या पीमाही तस्य पुत्र मानूतस्य भार्या भागो तस्यसुत चीतनु । द्वितीय सुत सोनू तस्य भार्या पोमी दुतीय भार्या सबीरी । जिणदास तृतीयपुत्र नगराजु-तस्य भार्या धनपालही पुत्र चत्वार प्रथमपुत्र जीवाहुतस्य भार्या भीपयो दुतीयपुत्र अमियपालु तृतीय पुत्र ग ? चतुर्थ दरगहमलु । जिणदास पुत्र चतुर्थ जगराजु तस्य भार्या धीमाही तस्य तृतीय वूढा । तस्य तस्य भार्या चादिणी द्वतीय पुत्र तृतीयस्तो तु जिणदास पंचमपुत्र सीहु तस्य भार्या लक्ष्मणही तस्य तस्य भार्या करूरी । एतेषां मध्ये साधु मागूनि इद श्री श्रेनिकसारा ज्ञानावरणी कर्म्मक्षयनिमित्तेण आत्मपठनार्थं कर्मक्षय निमित्तम् लिष्यापित ॥

१३७. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री जिनवंदौं भावयुत, मनवचतन सुद्ध रीति ।
ऐसो है परताप प्रभु, कहीं उपजै भीत ॥

Closing : धर्मचंद्र भट्टारक नाम, ठो या भोत बढ्यो अभिराम ।
मलयसेण सिंहासन सही, कारजय पट सोभा सही ॥

Colophon . इति श्री होनहार तीर्थङ्कर पुराणे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते जंबूस्वामी अरहदास श्रेष्ठि अर्जिका मुनिदीक्षादिग्रानवर्णन नाम द्वात्रिंसाऽधिकार । संवत् १९२१ शाके १७६४ समय भाद्रपदे मासे कृष्णपक्षे एकादश्या गुरुवासरे इदं पुस्तक लिखित रामसहाय शर्मण सा० बावपाली प्र० बारे ।

१३८. श्रेणिकचरित्र

Opening श्री सिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि ।
गुण अनंत फल जाको सिद्ध ।।
प्रणमौं परम सिद्ध गुरु सोइ ।
भव्य संग ज्यौं मंगल होइ ।।

Closing जीवदया पालै दुखहरै, अशुचि बोल कबहु न उच्चरै ।
आप आपनैं चित सब सुखी, कम जोग शक्ति नर दुखी ।।
तहा कथा यह पूरण करै ।।

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंगमंगलकरण बुधजनमनरंजन पातिगगंजन सिद्धिचक्रविधि दुखहरण त्रिभुवनसुखकारण भव्यजलतारण सम्पूर्णम् । श्री लिखित ब्राह्मण प० चन्द्रावड महाराष्ट ज्ञानी ब्रह्मा हरिप्रसाद । संवत् १८९५ मिति चैत्र सुदी ७ रविवार । शुभ भूयात् ।

१३९. श्रेणिक चरित्र (९ अधिकार)

Opening : नत्वा श्रीमज्जिनाधीश सुराधीशार्चितक्रमम् ।
श्रीपालचरितं वक्ष्ये सिद्धचक्रार्चनोत्तमम् ।।

Closing : जीयादत्र महेन्द्रदत्त सुमती सज्ञानवन्निर्मल ।
सूरि श्रीयुतसागराख्ययतिना सेवापर सन्मति ।।
ख्याते मालवदेशस्थे पूर्णाशानगरे वरे ।
श्रीमदादीजिनागारे सिद्धं शास्त्रमिदं शुभम् ।।
संवत् सार्द्धसहस्रे च पंचाशीति समुत्तरे ।
आसाढेषु पंचम्यां संपूर्णं रविवासरे ।।

Colophon इति श्रीसिद्धचक्रपूजातिशय प्राप्ने श्रीपालमहाराज चरित्रे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्रीपालमहामुनीन्द्रनिर्वाण गमनवर्णनो नाम नवमोधिकार सम्पूर्णम् । सवत् १८३७ श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे । कुदकुद आचार्याम्नाये भट्टारक श्री गुलालकीर्त्तजी तत् शिष्य हरिसागरजी तत् पुत्र लालजु पडित इद पुस्तक लिखित्वा परोपकाराय इद हिरदै नग्रमध्ये श्रावण शुक्ल पचम्या सपूर्णो जात । शुभ भूयात् । मोसमात गोवीदा कुवर जौजे बाबू महावीर सहायजी कीने दसलाक्षणी के उद्यापन मे चढ़ाया मीति भादो शुक्ल १५ सवत् १९४५ ।

द्रष्टव्य—जि र० को०, पृ० ३९७ ।

Catg. of Skt. & pkt. M . P 696

१४०. श्रीपाल चरित्र

Opening प्रथमहि लीजै ऊँकार । जो भवदुख विनाशन हार ।।
सिद्धि चक्रविध केवल रिद्ध । गुण अनत जाका फल सिद्ध ।।

Closing ता सुत कुल मडन परमध्य । बर्षं आगरे मे अरि सघ ।।
ता सुत बुद्धि हीन नहि आन । तिन कियौ चौपई बध बखान।।

Colophon नही है ।

१४१. श्रीपाल चरित्र

Opening जय श्री धर्मनाथ सुब्रगेह, कंचन वरनविराजति देह ।
जय श्री सति पयामहु साति, दुखहरन मूरति सोभति ।।

Closing अरू जो नरनारी व्रतकरें, चहुँ गति को भ्रम सब हरे ।
भव्यनि कौ उपहास बताइ, निहिचै सोइ मुकति हि जाइ।।
।।२४०।।

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यमगमगलकरने बुधजन मनरजने पातिगगजने सिद्धचक्रविधिदुखहरने त्रिभुवनसुखकरने भवजलतरने चौपही बध परिमल्ल कृत श्री जिनवर वशौ महि आनदौ सिद्धचक्र वसुसारलीय जुवती नवरग पुरजनसगम गहेसुर निजगेह गय ।, एक दसमो सधि ।।११।।

Colophon लिखत जथाहरब्राह्मणमळ गोपाव (ल) मध्ये मिति आषाढ कृष्ण ११ दैत्यवारे शुभ सवत् १८९१ ।

१४२. श्री पुराण

Opening देखें, क्र० १ ।

Closing देखें, क्र० १ ।

Colophon इति श्री पुराणसमाम्नाये दशम पर्व । इत्यय समाप्तो ग्रन्थ ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१४३. श्रुतपंचमी व्रत (भविष्यदत्त चरित्र)

Opening विशुद्धसिद्धान्तमनंतदर्शनं, स्फुरज्जिदानंदमहोदयोदितम् ।
विनिद्रचन्द्रोज्ज्वलकेवलप्रभ प्रणौमि चन्द्रप्रभतीर्थनायकम् ॥

Closing अपठनीय ।

Colophon अपठनीय ।

१४४/१ सुदर्शनचरित्र (८ परिच्छेद)

Opening नम श्रीवर्द्धमानाय धर्मतीर्थप्रवर्त्तिने ।
त्रिजगत्स्वामिनेनंत शर्मणे विश्वबांधवे ॥

Closing सर्वे पिंडीकृता श्लोका बुधैर्नवशतप्रमा ।
चरित्रस्यास्य विज्ञेया श्री सुदर्शनयोगिन ॥

Colophon इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिविरचिते श्रीसुदर्शनचरित्रे सुदर्शनमहामुनिमुक्तिगमन वर्णनोनामाष्टम. परिच्छेद समाप्तमिति । शुभ भवतु । देऊलग्रामे नेमिसागरेण अय ग्रन्थ. लिखित स्व पठनार्थम् । शके १७३७ तिथि फाल्गुन सुदी ३ ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३० ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २४६ ।
(३) आ० सू०, पृ० १४६ ।
(४) जि० र० को०, पृ० ४४४ ।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P.711.

१४४।२. सुदर्शन सैठ कथा

Opening : तदा सुदर्शन स्वामी तस्मिन्घोरोपसर्गके ।
ध्यानावासे स्थित तत्र मेरुवन्निश्चलासय ॥

Closing किंचिदून· परित्यक्त कायाकारोप्यकायक ।
त्रैलोक्यशिखरारूढ तनुवाते स्थिर स्थित ॥

Colophon : नही है ।

१४५ सुगधदशमी कथा

Opening श्रीजिनमारद मनमे धरू । सुहगुरु नै निम वदन कर ॥
साधमत पद वदो मदा । कथा कहु दशमीनी मुदा ॥

Closing ए व्रत जे नर नारी करै ते भौसागर ने ओतरै ।
छदै पाप सकल सुख भरै, ब्रह्मज्ञानसार उच्चरै ॥

Colophon इति सुगधदशमी कथा सम्पूर्णम् ।

१४६. सुकोशल चरित्र

Opening जिणवरमुणिविंद हो थुवसयइंदहु चरणजुवलु पणवेविन हो ॥
कलिमलदुहनासणु सुहणयसासणु चरिउ भणामि सुकोशल हो ॥

Closing : जा महियरणायरु णहिससिभायरू कुलगिरिवरकण यद्दिवरा ।
तावाइ जतउ बुहहि णिरूत्तउ चरिउ पवट्टउ एहुधरा ॥

Colophon इय सुकौसल चरिए छउसधी सम्मत्तो ॥ ६ ॥

यह प्रति सु० देहली खजूर की मसजिद वाले नये पचायती मदिर मे से सवत् १६३३ विक्रम की लिखी हुई प्रति से लिखी जो कि बाबू देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए सग्रहार्थ विक्रम् सवत् १९८७ के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को लिखकर तैयार हुई । इति शुभम् ।

द्रष्टव्य– जि० र० को०, पृ ४४४ ।

१४७ उत्तर पुराण

Opening : श्रीमाजितोजितो जीयाद् यद्वचास्यमलानलम् ।
क्षालयति जलानीव विनेयाना मनोमलम् ।।

Closing अनुष्टुप छन्दसा ज्ञेया ग्रंथमख्यात्रविंशति ।
सहस्राणां पुराणस्य व्याख्यातृश्रोतृलेखकैः ।।

Colophon इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते श्रीवर्द्धमानपुराणं परिसमाप्तम् ?
समाप्त च महापुराण ग्रथाग्रथसहस्त्र २०००० । श्रेय श्रेणय. .. ... । सवत् अष्टादशशत १८०० पचदशसवत्सरे मार्गशीर्षमासे दशम्यां तिथौ कृष्णाया शनिवासरे ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३२ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १०७ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २१२ ।
(४) आ० सू०, पृ० १५ ।
(५) जि० र० को०, पृ० ४२ ।
(६) Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 627
(७) Catg. of Skt Ms., P 314 ।

१४८ उत्तर पुराण

Opening : जिनि भूपति मे षट गुन होय ।
ते निह कटक राजकरेय, आगे और सुनो चितदेय ।।

Closing : इह पुराण जिन पास कौ सपूरण सुखदाय ।
पढै सुनें जे भव्य जन ते खुस्याल सुखपाय ।।

Colophon इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षण महापुराणसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषाया श्री पार्श्वतीर्थङ्करपुराण परिसमाप्तम् ।

१४६. वर्द्धमानचरित्र (१९ अधिकार)

Opening : जिनेशे विश्वनाथाय ह्यनंतगुणसिंधवे ।
धर्मचक्रभृतेमूर्द्धर्ना श्री वीरस्वामिने नम ।।

Closing : त्रिसहस्त्राधिका पंच त्रिंशद्श्लोका भवंतिवै ।
यत्नेन गुणिता सर्वे चरित्रस्यास्य सन्मते ।।

Colophon इति भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री वीरवर्द्धमान-चरित्रे श्रेणिकाभयकुमारो भवावली भगवन्निर्वाणगमनवर्णनो नामैकोनविंशोधिकार । ग्रंथ संख्या ३०३५ । संवत् १८८६ का मिति माघकृष्णत्रयोदश्यां गुरुवासरे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे-लोहाचार्याम्नाये भट्टारकश्री सहस्त्रकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचंददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीललितकीर्ति वर्तमाने तेनेद पुस्तक लिखापित विराटनगर मध्ये कुंथुनाथचैत्यालयमध्ये इद पुस्तक लिपिकृतम् ।

तैलाद्रक्षेजलाद्रक्षेद्रक्षेमिथलबंधनात् ।
मूर्खहस्ते न दात्तव्य एव वदति पुस्तकम् ।।
जवलगमेरु अमिग है तवलग ससिअरु सूर ।
तव लग यह पुस्तक रहो दुर्नय हस्तकर दूर ।।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३४३ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P 689

१५०. वर्द्धमान पुराण

Opening : श्री जिनवर्द्धमान इह नाम, साथ विराजत है गुणधाम ।
घातिकर्म क्षय तैं वृद्धि जोय, ज्ञानी तणी मम दीजै सोय ।

Closing : महावीर पुराण के, श्लोक अनुष्टुप् जान ।
दोय सहस्त्र नवशतक है सख्या लयो शुभ जान ।।

Colophon . इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षणमहापुराणेसंग्रहे भगवद्‌गुणभद्राचार्य-प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषायां श्री वर्द्धमानपुराण परिस-

माप्तम् । मवत् १८८४ शाके १७४६ ज्येष्ठ शुक्ल पचम्या गुरुवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा ने लिखि । शुभ भूयात् ।

१५१. विष्णुकुमार कथा

Opening :

प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित ल्याईयै ।
प्रथम महाव्रतधरन सु ताहि मनाईयै ।।
प्रथम महामुनि भेष सुधरण धुरधरो ।
प्रथम धरम परकाशन प्रथम तीर्थंकरो ।।

Closing :

मुनि उपसर्ग निवारणी, कथा सुने जो कोइ ।
करुणा उपजे चित्तमे, दिन दिन मगल होय ।।

Colophon

इति श्री विष्णुकुमार का वात्सल्यमुनि उपसर्ग निवारणी कथा लाल विनोदी कृत स्वय पठनार्थं सूकरे लिखितम् सम्पूर्णम् । शुभ भवतु । मवत १६४६ चैतशुक्ल पक्ष चौथ शनिवासरे । लिखत बुणू बाबू की मॉजी कलकत्ता मध्ये ।

इतनी मेरी अरज है, सुनो त्रिभुवन के ईश ।
तुम विन काऊ और कू, नये न मेरो शीश ।।

१५२ व्रतकथाकोश

Opening

ज्येष्ट जिन प्रणम्यादाकलक कलध्वनि ।
श्री विद्यानदिन ज्येष्टजिनव्रतमयोच्यते ।।

Colsing .

स्त्री चैषागवशेन मात्रमदृडा निर्म्युंहचारव्रता ।।
दीर्घायुर्बलभद्रदेवहृदया भूयात्पद सपद ।।२४६।।

Colophon :

इति भट्टारक श्री मल्लिभूषण भट्टारक गुरुपदेशात्सूरी श्री श्रुतिसागर विरचितापल्लविधानव्रतोपाख्यान कथा समाप्ता । फागुण कृष्णपक्ष समत् १६३७ ।। ब्राह्मण गगा वकस पुष्करण्य पाराशूर ।। बनेडामध्ये ।।

सवत् १७१६ का भादवमासे कृष्णपक्षे प्रतिपत्तिथौ बुधवासरे अस्य व्रतकथा कोशशास्त्रस्य टीका लिखिता ।।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१५३. यशोधरचरित्र

Opening जितारातीन्जिनान्नत्वा सिद्धान्सिद्धार्थसपद ।
सूरीनाचारसपन्नानुपाध्यायान् तथा यतीन् ॥१॥

Closing सम्यक् सिद्धगिरौ सच्छ्रिया ॥

Colophon इति यशोधरचरिते मुनिवासवसेनकृतेकाव्ये अभयरुचि भट्टारक अभयमत्यो सूर्यप्रगमनो चद्रमारी धर्म्मलाभो यशोमत्यादयोन्ये यथा-यथ नाक निवासिनोम् अष्टम सर्ग समाप्त । इति वासवसेन विरचिते यशोधरचरित्र समाप्तम् । सवत् १७३२ वर्ष सोमे काष्ठासंघे भट्टारक श्री प० विश्वसेन ब्रह्मजयसागर । आत्मपठनार्थम् ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६ ।
(२) रा० सू० III, पृ० ७५, २१७ ।
(३) जै० ग्र० प्र० स० १, पृ० ७ ।
(४) जि० र० को० पृ० ३२० ।

१५४. यशोधरचरित्र

Opening देखे, क्र० १५३ ।

Closing कृतिर्वासवसेनस्य वागडान्वयजन्मन ।
इमा यशोधराभिख्या समोध्य धीयता बुधा ॥

Colophon इति यशोधरचरिते अभयरुचि भट्टारकस्य स्वर्गगमनो वर्णनो नामाष्टम सर्ग ।

सवत् १५०१ वर्षे माघसुदि ३ गुरो अद्य इहसूर्यपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासघे नदितटगच्छे विद्याधरगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये सुश्राविकाहरषू पुत्र जाईआ मारगधर्म-प्रभावना निमित्त श्री यशोधरचरित्रस्य पुस्तक लिखाप्य श्री जिन-शासनम् ।

१५५. यशोधरचरित्र (४ सर्ग)

Opening श्रीमदारब्धदेवेन्द्रमयूरगानदवर्त्तनम् ।
सुव्रतामोधर वन्दे गम्भीरनयगर्जितम् ॥

Closing मुनिभद्रयश कात मुनिवृदै सुशविता ।
भद्र करोतु मे नित्य भयदोषाधिवर्जिता ॥७६॥

यह ग्रथ वीर स० २४४० मे लिखा गया है ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ३१६ ।

धर्म, दर्शन, आचार

१५६. अध्यात्मकल्पद्रुम

Opening नम प्रवचनाय। अथाय श्रीमान् शातनामरसाधिराज सकलागमादिसुशास्त्रास्मरिवार्यनिषद् भूतसुधारसाद्यमाऐहिकामुष्मिकाअ-नंतानदोहमाघनतया पारमार्थिकोपादश्यतमम्बरससारभूत ज्ञाताशा-तरमभावनात्माऽध्यात्मकल्पद्रुमाभिधान ग्रथातरग्रथननिपुणेन पद्य सदर्षण भाव्यते।

Closing · इमर्मिनिमानघीत्यवित्तेरम यतियो विरमत्यय भवाद्राग्। म च नियन मनोरमेतवास्मिन् मह नव वैरिजयश्रियाशिव श्री।

Colophon। इति नवमश्रीशातरसभावनाम्वयो अध्यात्मकल्पद्रुमग्रथोऽय जयअके। श्री मुनिसु दरभूरिभि कृतम्।

विशेष– यह ग्रथ करीब वि० म० १८०० से भी कम का ज्ञात होता है।

देखे, जि० र० को०, पृ० ५।

१५७ अध्यात्म बारखडी

Opening खौर तिलक विदी अग बाप उरमाल।
यामै तो प्रभु ना मिले, पेट भराई चाल॥

Closing ग्यान हीन जानो नही, मनमे उठी नरग।
धरम ध्यान के कारनै, चेतन रचे सुचग॥

Colophon इति अध्यात्म बारखडी समाप्त।

१५८. अन्यमतसार

Opening . आदिनाथ भगवान की वदना करि ससारके हितके निमित्त जैनमतधर्मकी प्रसंशाकरि मुख्यदया धर्म की धारना करना श्रष्ठ है

Closing शास्त्र यह अब पूरन भयौ। भव्यन के मन आनद ठयौ।
जे श्रावक पढहै मनलाय। छहमत भेद तुरत सोपाय ॥

Colophon : इति श्री अन्यमतसार सग्रह ग्रथ भाषा सपूर्ण।
एक सहस्त्र अरु छ सौ जान।
ग्रथ सो सख्या करी बखान ॥
पडित वैनीचद सुजान।
जैनधर्म मैं किकर जान ॥ सपूर्ण।
मिति माघ वदी १४ सवत् १९३६।

१५९. अर्थप्रकाशिका टीका

Opening वदौं श्री वृषभादि जिन धर्मतीर्थ करतार ॥
नमै जासपद इद्र सत मिवमारग रुचिधार ॥

Closing : राजै सहज स्वभाव मैं, तजि परभाव विभाव।
नमौं आप्त के परमपद ॥

Colophon अनुपलब्ध।

विशेष—मात्र एक अध्याय की टीका पूरी हुई है। शेष अनुपलब्ध है।

१६०. अष्टपाहुड वचनिका

Opening श्रीमत वीरजिनेश रवि, मिथ्यातम हरतार।
विघ्नहरन मगलकरन, वदौ वृष करतार ॥

Closing : सवत्सर दसआठ शत सतसठि विक्रमराय।
मास भाद्रपद सुकलतिथि तेरसि पूरण थाय ॥

Colophon इति श्री कुदकुदाचार्य कृत अष्टपाहुड ग्रथ प्राकृत गाथा बध ताकी देशभाषामय वचनिका समाप्तम्। श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४ गुरुवासरे सवत् १९६०। श्री।

१६१. अष्टपाहुड वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६०।

Closing · देखें, क्र० १६० ।

Colophon : देखें, क्र० १६० ।

लिखत वैश्य गगाराम साकिन मुरादाबाद मुहल्ला किसरौल सवत् १९४६ चैतबदी अमावस दिन इतवार (रविवार) ।

१६२. आचारसार

Opening : लक्ष्मीवीर जिनेश्वर पदनतानतामराधीश्वर ।
पद्मासद्मपदांबुज परमविल्लीलाप्ततत्वव्रज ॥

Closing विमेघचद्रोज्वलकीर्तिमूर्तिस्समस्तसैद्धांतिकचक्रवर्ति ।
श्रीवीरनदीकृतवानुदारमाचारसार यतिवृत्तसार ॥
ग्रथ प्रमाणमाचारसारस्य श्लोकसमित
भवेत्सहस्रद्विशत पचाशच्छांकतस्तथा ॥३५ ॥

Colophon इतिश्रीमन्मेघचन्द्रश्रैविद्यदेव श्रीपादप्रसादऽसाधितात्मप्रभाव समस्त विद्याप्रभाव सकलदिग्वर्ति कीर्ति श्री मद्वीरनदी सैद्धातिक चक्रवर्ति कृताचारसारे शीलगुणवर्णन नाम द्वादशाधिकार समाप्त ॥१२॥ श्री पचगुरुभ्योनम ॥

शके १८३२ साधारण नाम सवत्सरस्य फाल्गुन मासे कृष्ण-पक्षे ११ रविवासरे समाप्तोय ग्रथ । रामकृष्ण शास्त्रिणा पुत्र रगनाथ शास्त्रिणा लिखितोय ग्रन्थ शुभ भवतु ।

देखे, जि० र० को०, पृ० २२ ।

१६३. आलापपद्धति

Opening : गुणानां विस्तर वक्ष्ये स्वभानां तथैव च ।
पर्यायाणा विशेषेण नत्वा वीर जिनेश्वरम् ॥

Closing : . . सश्लेषसहितवस्तुसबन्धविषयोनुपचारिता सद्भू-तव्यवहार॰ यथाजीवस्य शरीरमिति ।

Colophon : इति श्री सुखबोधार्थमालापपद्धतिश्रीदेवसेन पंडित विरचिता समाप्तम् ।

(१) जि० र० को०, पृ० ३४।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०६।
(४) आ० सू० पृ०, १३।
(५) रा० सू० II, पृ० ८०, १६४।
(६) रा० सू० III, पृ० १६६।
(६) दि० जि० र०, पृ० ३८।
(7) Catg of Skt & Pkt Ms, page, 626.

१६४. आलापपद्धति

Opening देखे, क्र० १६३।

Closing देखे, क्र० १६३।

Colophon इति सुखबोधार्थमालापपद्धति श्रीदेवसेनपडित विरचिता समाप्ता। लिखत पूर्वदेश आरा नगर श्री पार्श्वनाथजिनमन्दिर मध्ये काष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाये श्री १०८ भट्टारकोत्तमे भट्टारकजी श्री ललितकीर्ति तत्पट्टे मादवापरनामी श्री १०८ राजेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य भट्टारक मुनीद्रकीर्ति दिल्ली सिंहासनाधीश्वर नें लिखी सवत् १६४६ का मिती भादव वदी ६ वार रवि कू पूरा किया।

१६५. आराधनासार

Opening विमलयरगुणसमिद्ध सुरसेण वंदिय सिरसा।
णमिऊण महावीर वोच्छ आराहणासार ॥१॥

Closing अमुणियतच्चेण इम भणिय ज किंपि देवसेणेण।
मोहतु त मुणिदा अथि हुजइ पवयणविरुद्ध ॥११५॥

Colophon एव आराधनासार समाप्तम्।
द्रष्टव्य—जि र को, पृ ३३।
Catg. of Skt. & pkt. Ms. P 626

१६६ आराधनासार

Opening। प्रथम नमू अर्हन्त कू, नमू सिद्ध शिरनाय।
आचारज उवझाय नमि, नमू साधु के पाय॥

Closing : केई ग्रन्थनिकी बणी वचनिका भाषामई देश की ।
पन्नालाल जु चौधरी विरचिजो कारक दुलीचदजी ।।

Colophon इति वचनिका बनने का सम्बन्ध सपूर्ण ।

१६७. आराधनासार

Opening : सम्यग्दर्शनबोधन चरित्ररूपान् प्रणम्य पचगुरून् ।
आराधनासमुच्चयमागमसार प्रवक्ष्याम ।।

Closing छद्मस्थतया यस्मिन्नतिबद्ध किंचिदागमविरुद्धम् ।
शोध्य तद्धीमद्धीमद्भिर्विशुद्धबुध्या विचार्यपदम् ।।
श्री रविचन्द्रमुनीन्द्रै पनसोगे ग्रामवासिभि ग्रन्थ ।
रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ।।

Colophon इत्याराधनासार ।

यह ग्रन्थ जैन ज्ञानपीठ मूडविद्री के वर्तमान एव जैनसिद्धान्त भवन आरा क भूतपूर्व अध्यक्ष विद्याभूषण प के भुजवली शास्त्री के सन्बावधान मे उक्त भवन के लिए जैन मठ मूडविद्री के ग्रन्थागार से एन चन्द्रराजेन्द्र विशारद–द्वारा लिखवाया गया । नवबर १९४४ ई ।

द्रष्टव्य—जि र को, पृ. ३३ ।

१६८ आषाढ़भूति चौपाई

Opening सकल ऋद्धि समृद्धि करि, त्रिभुवन तिलक समान ।
प्रणमु पासजिणेसरू, निरूपम ज्ञान निधान ।।

Closing निति होज्यो परम कल्याण रे ।

Colophon इति श्री पिड विशुद्धि विषये आसाढभूति चौपाई सपूर्णम् । संवत् १७६७ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी ८ शुक्रवारे श्रावकासदा कुवर लिखायत । श्री आगरा नगरे ।।

१६९. आत्मबोध नाममाल

Opening : सिद्धसरन चितधारके, प्रणमू शारद पाय ।
मुझ ऊपर कीजे कृपा, मेधा दीजे माय ।।

Closing : इक अष्ट चार अरि सात धरिये, माघसुदी दशमी रवी।
इह साख विक्रम राज के हैं, चितधार लीजे कवी।
इह नाममाला अतिविशाला कंठ धारे जे नरा।
बहु बुद्धि उपजे हियें माही, ग्यान जगमे है खरा ॥
॥२७६॥

Colophon इति श्री आत्मबोध नाममाला भाषा सम्पूर्णम्।

१७० आत्मतत्त्वपरीक्षण

Opening समन्तभद्रमहिमा समतव्याप्तसंविदा।
कुरुते देवराजार्यं आत्मतत्त्वपरीक्षणम् ॥

Closing प्राणात्मवादोप्य प्रामाणिक प्राणस्यानित्यतया देहात्मवादोक्तदोषप्रसङ्गात्।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वरचारूचरणारविंदद्व द्वमधुकरायमान-आत्मीयस्वानेन सद्युक्तियुक्तमवचननिचयवाचस्पतिना अतिसूक्ष्मम तिना परमयोगीयोग्यसमुपेक्षितभाग्धेयेन सुकृतिकृतिचितभागधेयेन सज्जनविधेयेन समुचितपवित्रचरित्रानुमधेयेन जैनराजस्य जननजल-निधिराजायमानसिततटाकनिलयदेवराजराजाभिधेयेन र्णाविवरण-वितरणप्रवीणेन अगण्यपुण्यवरेण्येन प्रणि ।

१७१. आत्मानुसार

Opening शिक्षावचस्सहस्रैव क्षीणपुण्येन धर्मधी।
पात्रे तु स्फायने तस्मादात्मैव गुरुरात्मन ॥

Closing नद्विचारिसहस्रेभ्यो वरमेकस्तत्वविक्तम।
तत्त्वज्ञानसम पात्र नाभून्न च भविष्यति ॥

Colophon नही है।

१७२. आत्मानुशासन

Opening : लक्ष्मी निवासनिलय, विलीननिलय निधाय हृदिवीर।
आत्मानुशासन शास्त्र, वक्ष्ये मोक्षाय भव्यानाम् ॥

Closing : श्री नाभियोजिनोभूयाद्, भूयसे श्रेयसेपव. ।
जगद्ज्ञानजलेयस्य दधाति कमलाकृतिम् ।।

Colophon इति श्री आत्मानुशासन समाप्तम् ।
जैनधम की पाल, तुम करयो महाराज ।
दर्शन तुम्हारे करत ही, पाप जात है भाज ।।
मिति ज्येष्ठ वदी ११ शुक्रवार सवत् १६४० । लिखत ब्रह्मदत्त पडित आत्म पठनार्थम् ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २७ ।
(३) प्र० जैन० सा०, पृ० १००–१०१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १० ।
(५) रा० सू० II, पृ० १०, १७६, ३८४ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ३६, १६१ ।
(7) Catg. of Skt & Pkt. Ms. P 623

१७३ आत्मानुशासन

Opening : देखे, क्र० १७२ ।

Closing इति कतिपयवाचागगोचरीकृत्यकृत्य,
चितमुदितमुच्चैश्चेतसा चित्तरम्य ।
इदम् विकलमतः सतत चिन्तयन्त,
सपदि विपद पेतामाश्रयते श्रियते ।। २६७ ।।

Colophon : जिनसेनाचार्य पादस्मरणादीनचेतसां ।
गुणभद्रभदताना कृतिरात्मानुशासनम् ।। २६८ ।।
इति श्रीमद्गुणभद्रस्वामी विरचितमत्मानुशासन समाप्तम् ।।

१७४. आत्मानुशासन

Opening : श्रीजिनशासनगुरु नमौं. नानाविधि सुखकार ।
आतमहित उपदेशतैं, करै मगलाचार ।।

Closing : अथवा जिनसेनाचार्य का शिष्य जो गुणभद्र ताका भाष्या है। ए दोऊ अर्थ प्रमाण है।

Colophon . इति श्री आत्मानुशासनमूलभाषाग्रंथ सपूर्णम्। सवत् १८५८ मिती मार्गशिर वदी १४।

१७५. आवश्यक विधि सूत्र

Opening नमो अरहंताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाण,
नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण ॥

Closing : १ सच्चित्त, २ दव्व, ३ विगई, ४ वाहणह, ५ वत्थ, ६ कुसुमेसु, ७ वाहण, ८ सयण, ९ विलेपण, १० अबंत, ११ दिसि, १२ न्हाण, १३ भात्तसु, १४ नीम।

Colophon इति आवश्यकविधिसूत्र। सवत् १९४२ वर्षे कातग (कातिक) मासे शुक्लपक्षे पचमी तिथौ रविवारे लिखित कूषमनगुणेन। शुभ भवतु।

१७६. बनारसीविलास

Opening : ताल अरथविचार ॥

Closing : ध्यानधरैं बिनती करैं।
बनारसि वदाति ॥

Colopnon : अनुपलब्ध।

१७७. भगवती आराधना

Opening : सिद्धे जयप्पसिद्धे चउव्विआराहणा फल पत्ते।
वदित्ता अरिहंते वुच्छं आराहणा कमसो ॥

Closing . हरो जगत के दुख सकल करो सदा सुखकंद।
वसो लोक मैं भगवती आराधना अमंद ॥

Colophon : इति श्री शिवाचार्य विरचित भगवती आराधनानाम ग्रथ की देशभाषामय वचनिका समाप्त। मिती माघ सुदी १२ सवत् १९६१। श्री जिनाय नम.।

१८१. भावसंग्रह

Opening : खविदघणघायिकम्मे अरहन्ते सुविधिदत्थणिवहेय ।
सिद्धाण्ठ गुणेसिद्धेरय शान्तय साहुगेयुवे साहू ॥ १ ॥

Closing . वरसारत्तयणीउणोसुन्द परदो विरहिय परमावो ।
भवियाण पडिबोहण परोपहा चन्दणाम मुणी ॥ १२२ ॥

Clophon इति श्रुतमुनिविरचित भाव संग्रह समाप्त ॥

देखें–Catg of skt & pkt Ms., P 678

१८२. भावसग्रह

Opening श्रीमद्वीरजिनाधीश, मुक्तीश त्रिदशार्च्चितम् ।
नत्वा भव्य प्रबोधाय, वक्ष्येऽहं भावसग्रहम् ॥

Closing यावद्वीपाद्वयो मेरु र्यविचद्रंदिवाकरौ ।
तावद्वृद्धि प्रयात्युर्च्चिविशद जिनशासन ॥
अयोगगुणस्थान चतुर्दशम् ।

Colophon इति श्री वामदेव पडित

देखें, (१) दि जि ग्र र, पृ ८२ ।
(२) जि र को, पृ २९६ ।
(३) प्र जै सा, पृ १९५ ।
(४) आ सू, पृ १०८ ।
(५) रा सू Ii, पृ १६४ ।
(६) रा सू I , पृ १८३ ।
(7) Catg. of skt & pkt. Ms , P. 678

१८३. भावनासार संग्रह

ॐ नमो वीतरागाय ।

Opening अरिहनव रजो हतनररहस्य हर पूजमायमहं ' ।

Closing तत्वार्थरद्धान्त महापुराणेष्वाचारशास्त्रेषु च विस्तरोक्तम् ।
आख्यान् समासात्नुयोगवेदी चारित्रसार रणरगसिह ॥

Colophon इति सकलागम सयम सपन्न श्रीमज्जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादासादित ' शिष्य श्री ब्रह्मसारु तदाम्नाये ।

देखें,—Catg. of Skt & Pkt Ms. P 640.

१८४. ब्रह्मचर्याष्टक

Opening : कायोत्सर्गायतागो जयतिजिनपतिर्नाभिसुनु महात्मा ।
मध्यान्तेयस्य भास्वानुपरिपरिगते राजतेस्मोग्रमूर्ति ॥
चक्र कर्मेन्धनानामतिबहुदहतो दूरमैदास्य ।
त्यादिना ॥

Closing मया पद्मनन्दिमुनिना मुमुक्षुजन प्रति युवती स्त्रीसगति बर्जिन अष्टक भणित कथितम्, सुरतरागसमुद्रगता प्राप्ताजना लोका अजमयि मुनौ मुनीश्वरे कुद्ध क्रोध माकुरुत माकुर्वतु मयि पद्मनदिमुनौ ।

Colophon इति श्री ब्रह्मचार्याष्टकम् समाप्तम् । शुभ सवत् १९३७ भादव सुदी ५ गुरुवार लिखितम् सुगनचद पाल्मग्राममध्ये । शुभ भवतु ।

देखे– जि० र० को०, पृ० २८६ ।

१८५ ब्रह्म विलास

Opening ओंकार गुण अतिअगम, पचपरमेष्ठि निवास ।
प्रथम तासु वदन कियौ लहियह ब्रह्मविलास ॥

Closing जामे निज आतम की कथा, ब्रह्मविलास नाम है जथा ।
बुद्धिवत हंसियो मतकोय, अल्पमति भाषाकवि होय ॥
भूलचूक निजनेन निहारि, शुद्ध कीजियो अर्थविचारी ।
सवत् सत्रह् सै पचावन ॥

Colophon . नही है ।

विशेष–इसके अन्तिम पद्य ही प्रशस्ति सूचक हैं ।

१८६ ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहत बहुरि श्री सिद्ध नमीज्जै ।
आचारिज उपझाय तासु पदवदन किज्जै ॥

Closing : जह देखो तहां ब्रह्म है, बिना ब्रह्म नही और।
जे यह पाये विनसुख कहै, ते मूरख शिरमौर ।।

Colophon इति श्री ब्रह्मविलास भैया भगवतीदास जी कृत समाप्तम्।
तनुज श्री वीरनलाल के, लेखक दुर्गालाल।
जैनी आरामो वसे, कासिल गोत्र अग्रवाल ।।
श्री शुभ सम्वत् १९५४ मिती भादो शुक्ल १४ बृहस्पतिवार समाप्त भया।

१८७ ब्रह्माब्रह्मनिरूपण

Opening असी आउसा पच पद, वदी शीश नवाय।
कहु ब्रह्मा अरु ब्रह्म की, कहु कथा गुनगाय ।।

Closing सोई तो कुपथ भेद जाने नाही।
जीवन की, विना पथ पाय मूढ़ कैसे मुन्दा हरस ।।

Colophon पूरनम्।

१८८ बुद्धिप्रकाश

Opening : मनदुखहरकर सिद्धसुरा, नरासकल सुखदाय।
हराकर्मभट अप्टक अरि, ते मिध सदा सहाय ।।

Closing : पढो सुनो सीखो सकल, बुधप्रकाश कहत।
ताफन मिव अघनासिकै, टेक लहो सिव सत ।।

Colophon : इति श्री बुधिप्रकाशनाम ग्रथ सपूर्णम्। इसग्रथ का प्रारभ तो नगर इदोर विषै भया। बहुरि तापीछै सपूरण भाखल-नग्र जोमैलसाता विषै भया। याके पढै सुनै तै ब्रहि होय तातै हे भव्य हो जैसे तैसे इसका अभ्यास करने योग्य है।

मिति कार्तिक वदी एकम चद्रवार सवत् १९७८ तादिन यह शास्त्र समाप्त भया। हस्ताक्षर प० श्री दुबे रुपनारायण के।

१८९. बुद्धि विलास

Opening : समदविजय सुत जिनसु नमत अघहरत सकलजग,
कुवर पदन्तिप षडगलियबकर हनिये करम ठग।

भरमतिमर सब नमतु उदय हुव तिभुवन दिनकर,
जपि भवि भवदधि तरत लहत गति परममुक्तिवर ।
तसु चरनकमल भविजन भ्रमर लखि अनुभवरस चखत,
वहकरहु नजरि मुझपर सुजिम फल फलहि क्रमकहि
वखत ।। १।।

Closing

नखित अश्वनी वारगुरु, सुभमहुरत के मद्धि ।
ग्रथ अनूप रच्यौ पढै, ह्वै ताको सबसिद्धि ।।

Colophon

इति श्री बुद्धिविलास नामग्रथ सम्पूर्णम् । मिती भादौ वदी ६ सवत् १६८२ मे ग्रथ पूर्णभयौ ।

जैसी प्रत देखी हुती, तैसी लई उतार ।
अक्षिर घट वढ हो जो, बुधजन लीयौ समार ।।

१६०. चन्द्रशतक

Opening

अनुभौ अभ्यासमे निवास शुद्ध चेतन कौ,
अनुभौ सरुप सुद्धबोध बोध कौ प्रकाश है ।
अनुभौ अनुप उपरहत अनत ग्यान,
अनु भौ अतीन त्याग ग्यान सुखरास है ।।

Closing

सपतशबगुनथान थैं छूटे एक गत देवकी ।
यौं कह्यौ अरथ गुरुपथ मे, सति वचन जिनसेवकी ।।

Colophon

इति श्री चद्रशतक समाप्तम् ।

१६१ चरचा नामावली

Opening .

त्रैलोक्य सकल त्रिकालविषय सालोकमालोकितम्,
साक्षाद्येनयथास्वय करतले रेखात्रय सागुलि ।
रागद्वेष भयामयातक् जरा लोलत्वलोभादयो,
नाल यत्पदलघनाय समहू दिवो मया वद्यते ।।

Closing ।

ऐसें जानि करि सदाकाल बीतराग देवकौं स्मरण करवो जोग्य छै ।

Colophon : इति चरचा नामावली सपूर्णम् । शुभ भवतु मगलम् । मिती भादो वदी ८ सवत् १९४२ मुक्काम चन्द्रापुरीमध्ये लिख्यत प० श्री चोबे मथुरापरसाद ।

१९२. चर्चा शतक वचनिका

Opening : ॐ सरवज्ञ अलोकलोक इक उकवतदेखै ।
हस्तामल जोलीक हाथ जो सर्व विशेखै ।।

Closing : तातै पदार्थ हम सरदहा भली प्रकार जानना । इति कहिये इस प्रकार चरचा कहियै सिद्धान्त की रदबदल सतक कहै सोकवित्त सपूर्णम् । करता द्यानतराय टीका का कर्ता हरजीमल शुद्धजैनी पाणीयधिया । १०४ ।

Colophon इति चर्चाशतक टीका सपूर्ण । शुभमिती असाढ कृष्णा ८ सवत् १९१४ गुरुवार लिख्यत नदराम अग्रवाल । श्लाक सख्या २०८० ।

१९३. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १९२ ।

Closing : जगमहादेव है रूद्रपद कृष्ण नामहर जानिये ।
द्यानतकुलकर मैनाभनृप भीम बली भुव मानिये ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९४ चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखें-क्र० १९२ ।

Closing : चरचा सुख सौं भनैं सुनैं नहि प्राणी कानन,
केई सुनि घरि जाय नांहि भाखैं फिरि आनन ।
तिनको लखि उपगारसार यह शतक बनाई,
पढत सुनत ह्वै बुद्धि शुद्ध जिनवाणी गाई ।
इसमें अनेक सिद्धान्त का मथन कथन द्यानत कहा,

सब माहि जीव को नाम है जीवभाव हम सरदहा ।।

Colophon : इति श्री द्यानतराय जी कृत चर्चाशतक सम्पूर्णम् । संवत् १९२९ श्रावण शुक्ल अष्टम्यां चंद्रवासरे लिखि कर्मणा पूर्णीकृतम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१९५. चर्चासंग्रह

Opening धर्मधुरन्धर आदि जिन, आदिधर्म करतार ।
नमूं देव अघहरण तै, सब विधि मंगलसार ।।

Closing विद्यानामचतुर्दश प्रतिदिन कुरुवतनो-मंगलम् ।

Colophon : इति चतुर्दश विद्यानाम संपूर्णम् ।
मिती ज्येष्ठ सुदी ५ संवत् १८५४ शुभस्थाने श्री अटेर मैं लिख्यौ ग्रंथप्रति श्री लाला जैनी फतेचंदसघई जी की पैतैवासी सुखवास शुभस्थाने श्री भैरोडजी मे लिखाई ग्रंथ चर्चासंग्रह जी ।

१९६. चर्चा समाधान

Opening जयो वीर जिनचंद्रमा उदे अपूर्व जासु ।
कलियुग कालेपाखमय, कीनो तिमिर विनास ।।

Closing : देवराज पूजत चरण, अशरणशरण उदार ।।
कहू मघ मंगलकरण, त्रियवारिणी कुमार ।।

Colophon इति श्री चरचा समाधान ग्रंथ संपूर्णम् ।

१९७. चर्चा समाधान

Opening देखें—क्र० १९६ ।

Closing : देखे— क्र० १९६ ।

Colophon इति श्री चरचा समाधान ग्रंथ संपूर्ण । पत्र १३२ । दोहा—
सुत श्री बिरनलाल के, लेखक दुरगा म्याल ।

जैनी आरा मो रहे, काशिल गोत्र अग्रवाल ।।
महल्ले महाजन टोली अनुअल मे। संवत् १९५६ मिति फागुन शुक्ल १ वार गुरुवार ।

१९८. चर्चा सागर वचनिका

Opening : श्री जिन वासुपूज शिवदाय। चपा पचकल्यान लहाय।।
विघ्न विडारन मगलदाय। सो वदो शरणाइ सहाय ।।

Closing : चउपद के धुर वर्ण चउ, क्रम करि पक्ति अनूप।
चर्चा सागर ग्रथ को, कर्ता नाम स्वरूप ।।

Colophon : इति श्री चर्चासागर नाम शास्त्र सपूर्णम्। शुभ भवतु।

१९९ चरित्रसार वचनिका

Opening : परमधरमरथ नेमि सम, नेमिचद जिनराय।
मगल कर अघहर विमल, नमो सु मनवचकाय ।।

Closing अन्य ग्राम विषै जो भिक्षा कै निमित्त गमन ता विषै नाही हैं उद्यम जाके बहुरि पाणिपुट मात्र ही है।

Colophon अनुपलब्ध।

२००. चरित्रसार वचनिका

Opening : मुकतमार्गादिसायकै कर्म मयल करि चूरि।
वदौ विश्व विलोकि कौ, इच्छू त्रयगुण भूरि ।।

Closing : जो याके अपराध समान मेरा भी अपराध है, ऐसा ही ।

Colophon : अनुपलब्ध।

२०१. चौबीस ठाणा

Opening : सिद्ध सुद्ध पणमिय जिणिदवर णेमिचदमकलक ।
गुणरयणभूसणुदय जीवस्स परूवण वोच्छ ॥

Cloning : ए इदिय बियलाण इक्कायवदी हवति कुल कोडी ।
तिरिय(४३)नर(१४)देव(२६)नारय(२४)सगअट्ठा
सहिय सद्धाण ॥

Colophon इति चउवीस ठाणा समाप्ता । सवत् १७२५ वर्षे भादव वदि ६ वृहस्पतिवारे काष्ठासघी भट्टारक श्री महीचन्द्रजी तत्शिष्य पांडे भोवान तेन लिखत स्वात्मार्थम् ।

विशेष -इसमे कुछ गाथाएँ गोम्मटसार की प्रतीत होती है ।
देखे Catg of Skt & Pkt Ms., P 642.

२०२. चौबीस गणगाथा

Opening गइइदियचकायेजोयेवेय कषायणाणेय ॥
सयम दसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥१॥

Closing उरपाँच सहनन वाले न मांडै । तेरमे गुणस्थान तक ।
वज वृषभनाराचसहनन है ॥ आगै सहनन ॥ हाड नाहि ।
ऐसा जिनबानी मे कह्या है । तीवानि धन्य है ॥५॥

Colophon : इति श्री पम्वुरणसमजनेल्पायकचर्चा ॥ सपूर्ण ॥ लिपीकृत लहिया करमचद रामजी पालीताणा नयरे ॥ सवत् १९६९ भाद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथि द्वितियाम् ॥

विशेष—कुछ गोम्मटसार की गाथाएँ भी उद्धृत हैं ।

२०३ चौदस गुणनियम

Opening : सचित्र दव्व विगइ वाणहि तबोल वच्छ कुसुमेसु ।
वाहण सयण विलेवण दिसि बभ न्हाण भत्तेसु ॥

Closing : इति चउदस नियम प्राभातै मो कला राखी जै सध्याकू फेर याद कीजे जितरामोकला राख्या था तिण सोउ बालागै तो विशेषलाभ होय, अधिक न लगाई जै ।

Colophon　　इति श्री चउदस गुण नियम सपूर्णम्। लिखत कूष स्यामजी (श्यामजी) सवत् १८१० माघशुक्ला १४। कल्याणमस्तु।

२०४. चौदह गुणस्थान

Opening　　गुन आतमीक परिनाम गुनी जीवनाम पदार्थ ते आतमी परिनाम तीन जातके शुभ, अशुभ, शुद्ध ।

Closing　　तिन सहित अविनाशी टकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमात्मा कहिए।

Colophon　　यह चौदह गुणस्थानक का स्वरूप सक्षेप मात्र जिनवाणी अनुसार कथन पूर्ण भया। इति श्री चौदह गुणस्थान चर्चा सम्पूर्णम। शुभसंवत् १८६० मिती माघकृष्ण चतुर्दशी गुरुवासरे लिपिकृतम् नन्दलाल पाडे छपरामध्ये।

२०५ चउसरण पईन्न

Opening　　सावज्जजोगविरहउ क्त्तिणगुण वउय पडिवत्ता।
खलियस्स निंदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चेव॥

Colsing　　इय जीव पमायमहारिवर सद्दतमेव मज्झयण।
जाए सुति सजम वउ कारण निव्वुई सुहण॥

Colophon　　इति श्री चउसरण पईन्न समाप्तम्। लिखत पूज्य ऋषि जी तस्य शिष्येण ऋषि लाखू आत्मार्थम्। सम्वत् १६८२ वर्षे चैत्रवदि ७। कल्याणमस्तु।

२०६. चालगण

Opening　　देवधरमगुरु वदिकै कहू ढाल गणसार।
जा अवलोके बुद्धि उर, उपजै शुभकरतार॥

Closing　　तहाँ काल अनता रहे सुसता अनअवहता सुखदानी।
चिन्मूरति देवा ग्यान अभेवा सुरसुख सेवा अमलानी॥

अब जनमे नाहीं या भवमाही सबके साँई मबजानी।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावै कविटेक कहै क्या अधिकारी॥

Colophon　　इति चालगण सम्पूर्णम्।

२०७. छहढाला

Opening   तीनभुवन मे सार, वीतराग विज्ञानता ।
शिवसरूप शिवकार, नमौ त्रियोग सम्हारिकै ॥

Closing   लघुधी तथा प्रमादतै शब्द अर्थ की भूल ।
सुधी सुधार पढौ सदा ज्यौं पावौ भवकूल ॥

Colophon   इति श्री छहढाल्यौ दौलतरामजी कृत सपूर्णम् । मिती मगसिर सुदी १० वार सोमवार सवत् १९५० । शुभ भूयात् ।

२०८. छियालीस दोषरहित आहारशुद्धि

Opening   अरिहत सिद्ध चितारिचित, आचारज उवझाय ।
साधु सहित वदन करो, मन वच शीश नवाय ॥

Closing   केवल ज्ञान दोउ उपजाय, पचम गतिमे पहुँच जाय ।
सुख अनत विलसहिं तिहि ठौर, तातै कहे जगत शिरमौर ॥

Colophon   सवत सत्रमै पचास ज्येष्ठ सुदी पचमी परकाश ।
भैया वदत मन हुल्लास जै जै मुक्ति पथ सुखबास ॥
इति छियालीस दोष रहित आहारशुद्धि सम्पूर्णम् ।

२०९. दर्शनसार

Opening :   पणमिय वीरजिणिंद सुरसेणि णमेसिये विमलणाणे ।
वोच्छ दसणसार जह कहिय पुव्वसूरीहि ॥

Closing .   रूसतूरू सउलोउच्च अरकतयस्य जीवस्स ।
किं जुअभण्णसा जीवज्जियव्वाणरिदेण ॥

Colophon :   इति दर्शनसार समाप्तम् विराटनगरमध्ये मल्लिनाथ चैत्यालये इद पुस्तक लिखापित श्रावणवदी चतुर्दश्या बुधवासरे सवत् १८८६ का ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १६७ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 652.

२१०. दर्शनसारवचनिका

Opening :   देवेन्द्रादिक पूज्य जिन ताके क्रम शिरनाय ।
भूतभावि जिनवर्तते भावभक्ति उरल्याय ॥

Closing : विशेष विद्वान होय सो ग्रंथ के अभिप्राय सू लिषी बातैतो नीसै नवसि की जाणै और शास्त्रनतै लिखी बातै यह अवार की स वत् १६२३ की माघ सुदि १० की जानै, ऐसै जानना ।

Colophon : इति श्री दर्शनसार समाप्त ।
षट्दर्शन अरू पच मिथ्यात जैनाभास पंच अधबात ।
अरू कलि आचार शास्त्र निरूपण सार ।।

२११ दसलक्षणधर्म

Opening : ॐकार क नमनकरि, नमू सारदा माय ।
तिनि कारागुरुमै टिकै, श्रीजिम सीस नवाय ।।

Closing · सम्यक् दृष्टि कै तो ऐसी वांछा है ।

Colophon : इति दसलक्षणधर्म कथन भाषा वचनिका सम्पूर्णम् ।
मिति भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी गुरुवार सवत् विक्रम १६७८ ।

२१२· दानशासन

Opening : यस्य पादाब्जसद्गन्धाघ्राणनिर्मुक्तकल्मषा ।
ये भव्या सन्ति त देवं जिनेन्द्र प्रणमाम्यहम् ।। १ ।।
दान वक्ष्येऽथ वारीव शस्यसम्पत्ति कारणम् ।
क्षेत्रोप्त फलतीव स्यात् सर्वस्त्रीषु सम सुखम् ।। २ ।।

Closing : मत समस्तैऋषिभिर्यदाहृतं प्रभासुरात्मावनदानशासनम् ।
मुदे सता पुण्यधन समर्जित दानानि दद्यान्मुनये विचार्य्य तत् ।।

Colophon : शाकाब्दे त्रियुगाग्निशीतगुणितेऽतीते वृषे वत्सरे
माघे मासि च शुक्लपक्षदशमे श्री वासुपूज्यर्षिणा ।
प्रोक्त पावनदानशासनमिदं ज्ञात्वाहित कुर्वताम्
दान स्वर्णपरीक्षका इव सदा पात्रत्रये धार्मिका. ।।
समाप्तमिद दानशासनम्

देखें—जि० र० को, पृ० १७३ ।

२१३. द्रव्यसंग्रह

जीवमजीव दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं ।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा ।।

दव्वसगहमिण मुणिणाहा दोससचयचुदासुदवुण्णा ।
सोधयतु तणुसुत्तधरेण णेमिचदमुणिणा भणिय ज ॥
इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोऽध्याय । द्रव्यसग्रहसपूर्णम् ।
देखें, —जि० र० को, पृष्ठ १८१ ।
Catg of skt & pkt Ms , P. 654.

२१४. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें०—क्र०, २१३ ।

Closing देखें०—क्र० २१३ ।

Colophon : इति द्रव्यसग्रह समाप्तम् । लिखित भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति छपरानगरमध्ये पार्श्वनाथ जिनदीर्घ मदिरे सवत् १९४८ मि० भा० सु० १ वा० शु० । प्रातकाल समाप्त शुभ भूयात् ।

२१५/१. द्रव्यसग्रह

Opening . देखें—क्र० २१३ ।

Closing : देखें—क्र० २१३ ।

Colophon इति श्रीदव्वसग्रह जी सपूर्णम् । मीति माघबदी ५ रोज शुक्र सन् १२७३ साल ।

२१५।२. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें–२१३ ।

Closing : देखें–क्र० २१३ ।

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह गाथा सपूर्णम् ।

विसेष—इस प्रति मे ६३ गथाएँ हैं ।

२१६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें–क्र० २१३ ।

Closing : णिक्कम्मा अट्ठगुण किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा ।
लोयग्गठिदा णिच्चा उप्पादवयेहिं संजुत्ता ॥

Colophon . अनुपलब्ध ।

२१७. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें क्र० २१३ ।

Closing : कुकथा के नासनि कूं बुद्धि के प्रकाशनि कूं ।
भाषा यह ग्रंथ भयौ सम्यक् समाज जी ॥

Colophon . इति श्रीद्रव्यसंग्रह भाषा और प्राकृत सम्पूर्णम् ।

२१८ द्रव्यसंग्रह

Opening देखें-क्र० २१३ ।

Closing : द्यानत तनक बुद्धि तापरि वखान करी,
वाल रीति धरी ढकी लीजो गुणमाज जी ।
कुकथा के नाशन को बुद्धि के प्रकाशन कौं,
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जी ॥

Colophon : इति द्रव्यसंग्रहं नेमिचन्द्राचार्य विरचितमिदं पंचधा द्रव्यसंग्रह समाप्त । श्रीरस्तु । सं० १९६२ । नेत्ररसाकेन्दुवत्सरे विक्रम-नृपस्य वर्तमाने माघमासे तमपक्षे बाणतिथौ शशिवासरे लिपिकृतम् । सीताराम करेण चक्षुषापि बुद्धिमंदतया विशेष कथं शक्यम् । इदमपि विद्वास पठनीया । शुभमस्तु ।

२१९. द्रव्यसंग्रह

Opening देखें, क्र० २१३ ।

Closing . मंगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसंग्रह प्रति करौं प्रणाम ॥
आगे चेतन कर्मचरित्र । बरनौं भाषा बंध कवित्त ॥

Colophon : इति श्री दर्वसंग्रह ग्रंथ भाषा कवित्त बंध सम्पूर्णम् ।

विशेष—अन्त में चेतन कर्म चरित्र प्रारम्भ करने की बात लिखी है, लेकिन लिखा नहीं गया है ।

२२०. द्रव्यसग्रह

Opening : देखें—क्र० ११३ ।

Closing : देखें—क्र० २१८ ।

Colophon : इति द्रव्यसग्रह मूल गाथा वा भाषा सपूर्णम् ।

२२१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क्र० २१३ ।

Closing : सवत् सतरसै इकतीस, माहसुदी दशमी सुभदीस ।
मगलकरण परम सुखधाम द्रव्यसग्रह प्रति करू प्रणाम ।।

Colophon इति श्री द्रव्यसग्रह कवित्तबध सम्पूर्णम् ।

२२२. द्रव्यसंग्रह

Opening

रिषभनाथ जगनाथ सुगुण मनथान है,
देव इन्द्र नरविंद वंद सुखदान है ।
मूल जीव बिरजीव दरव षट्‌विध कहे,
वदौं सीस नवाय सदा हम सरवहै ।। १ ।।

Closing देखे, क्र० २१८ ।

Colophon : इतिपूर्ण ।

२२३. द्रव्यसंग्रह टीका (अवचूरि)

Opening : अथेष्टदेवताविशेषं नमस्कृत्य महामुनि सैद्धान्तिक श्री नेमिचन्द्र प्रतिपादितानां षट्द्रव्याणां स्वल्पबोधप्रबोधार्थं सक्षेपार्थतया विवरण करिष्ये ।

Clophon : ... ... द्रव्यसग्रहमिमं किं विशिष्टाः दोषसचयच्युता रागद्वेषादिदोषसंघातच्युतार· वचन थोवेंरा ।

Colophon : इति द्रव्यसग्रह टीकावचूरि सम्पूर्ण । सवत् १७२१ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे पचमी दिवसे पुस्तिका लिखापित सा० कल्याण दासेन ।

२२४ द्रव्यसंग्रह वचनिका

Opening या मैं कहूँ हीनाधिक अर्थ लिखा होय तो पडित जन सोधियो ।

Closing : मगल श्री अरहतवर मगल सिद्धि सुसूरि ।
उपाध्याय साधू सदा करो पाप सब दूरि ॥

Colophon इति श्री द्रव्यसग्रह भाषा सम्पूर्णम् ।

२२५. धर्मपरीक्षा

Opening श्रीमपभस्वग्त्रयनुग्गशाल जगद्गृहबोधमय प्रदीप ।
समतनोद्योतयते यदीया भवतु ते तीर्थकरा श्रियेन ॥

Closing : सवत्सगणा विगने महस्त्रे, ससप्ततो विक्रम पार्थिवास्या ।
इद निषिद्धान्यमत समाप्त जिनिन्द्र धर्मामितियुक्तशास्त्र ॥

Colophon : इत्यमितगतिकृता धर्मपरीक्षा समाप्ता । सवत् १६८१ वर्षे पोषवदी षष्ठी तिथौ । पुस्तक पडित जी श्रीरामचद जी आत्मपठनार्थं लिपिकृता ।

देखे, (१) दि जि ग्र र, पृ ४७ ।
(२) जि र को, पृ १८६ ।
(३) प्र जै सा, पृ १६१ ।
(४) आ सू., पृ ७६ ।
(5) Catg. of Skt & Pkt Ms., P 655.

२२६. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें, क्र० २२५ ।
Closing : देखें, क्र० २२५ ।
Colophon : इत्यामितगति कृता धर्म्म परीक्षा समाप्ता ॥
संवत् १७७६ ॥ समय कार्तिक सुदि वदि दशम्यां मगलवासरे लिखितमिदं पुस्तक गोवर्द्धन पडितेन ॥

२२७. धर्मपरीक्षा

Opening : प्रणमु अरिहंत देव, गुरु निरग्रंथ दया धर्म।
भवदधि तारण एव, अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

Closing : पढ़ै सुनैं उपजै सुबुद्धि कल्याण शुभ सुख धरण।
मनरसि मनोहर इम कहै सकल संघ मंगलकरण ॥

Colohpon : इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहर दास कृत सगानेरी खण्डेलवाल कृत सम्पूर्ण।
ग्रन्थ संख्या ३३०० श्लोक।

२२८. धर्मपरीक्षा

Opening देखो – क्र० २२७।
Closing . देखो – क्र० २२७।
Colophon इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा सम्पूर्ण। लिखत धरमदास अय पुस्तकम्।

२२९. धर्मपरीक्षा

Opening : देखो — क्र० २२७।
Closing : देखो - क्र० २२७।
Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहरदास कृत सम्पूर्ण।

२३०. धर्मरत्नाकर

Opening : लक्ष्मीनिरस्तनिखिला पदमाप्रवतो,
लोकप्रकाशकमयप्रभवति भव्या.।
यत् कीर्ति-कीर्तनपराजित बधमान,
त नौमि कोविदनुत सुधिया सुधर्मम् ॥

Closing : य बद्धो नयता सुधाकरवधी, विश्व निजाभ्रूत्करै,
यावल्लोकमिम बिभर्तिधरणी, यावच्च मेरुस्थिर।
रत्नौसुछुग्तो तरमपयसो यावत्पयो राशय,
तावच्छास्त्रमिद महर्षिनिवहै सत्यच्चमानश्रिये ॥

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सम्पूर्णम् । मिती वैशाख सुदी दोयज (२) सवत् १९८५ भृगुवासरे शुभ लिषा भुजवल प्रसाद जैनी श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए । इत्यलम् ।

देखे--जि० र० को०, पृ० १९२ ।

२३१ धर्मरत्नाकर

Opening : देखे, क्र० २३० ।

Closing . देखे, क्र० २३० ।

Colophon · इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सपूर्णम् । सावत् १९१० का मागशीर्ष वदी ५ बुधवासरे शुभम् ।

२३२. धर्मरत्नोद्योत

Opening . मगल लोकोत्तम नमो श्रीजिन सिद्ध महत ।
साधु केवली कथित वर, धरम शरण जयवत ।।

Closing स्याद्वाद आगम निर्दोष, अन्य सब ही हे जु सदोष ।।
त्याग दोष गुण धरे विचार । हेतु विचय ध्यान निहार ।।

Colophon इति श्री बाबू जगमोहन लाल कृत धर्मरत्न ग्रन्थे मध्य आराधना नाम नवमा अधिकार ।।९।। याके पूण होत श्री धर्मरत्नग्रन्थ सापूणभया ।

आदि मध्य अरु अत मे मगल सवप्रकार ।
श्रीजिनेन्द्र पद कज जुग, नमो सुकर सिरधार ।।
तकवात लाग नही नहि आज्ञानतमरच ।
धर्मरत्न उद्योत मे करि उद्यम सुख मच ।।

२३३. धर्मरत्नोद्योत

Opening देखे, क्र० २३२ ।

Closing . उपमा बहु अहमिन्द्रकी, है सबही स्वाधीन ।
कहे पुरातन अर्थ की दाहे छद नवीन ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्नग्रन्थ सम्पूर्णम् । सवत् १९४८ मिति कातिक कृष्ण ६ रविवासरे लिखित नीलकठदासेन श्रेयाशदासस्य पठनार्थम् ।

२३४. धर्मरसायन

Opening णमिऊण देवदेव धरणिंदणरिंद इद थुयचलण ।
णाण जस्स अणत लोयालोय पयासेइ ॥१॥

Closing . भव्वियाण बोहणत्थं इयधम्मरसायण समासेण ।
वरपउमणदि मुणिणा रइयजमणियमजुत्तेण ॥

Colophon इति श्री धम्मरसायण सपूर्णम् ।
इति श्री धर्मरसायन ग्रन्थ की भाई देवीदासजी खडेलवाल गोधा गोती जैनपर वासी ने पटना मे भाषा की । मिति आसिन सुदी १४ ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १९२ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms. P 656

२३५. धर्मरसायन

Opening देखें, क्र० २३४ ।
Closing देखे, क्र० २३४ ।
Colophon . इतिश्री धम्मरसायण सपूर्णम् ।

२३६. धर्मविलास

Opening गुण अनतकरि सहित रहित दस आठ दोषकर ॥
विमल ज्योति परगास भास निज आन विर्थ हर ॥

Closing : जग धन्न धन्न सब साधु तुम वकता श्रोता सुखकरौ ।
द्यानत है माता सरसुती तुम प्रसाद सब नर तरौ ॥

Colophon : इति श्री धर्म विलास भाषा महाग्रंथ सुकवि द्यानतराय अगरवाले कृत · सम्पूर्ण: ।
पुस्तक रिषवदास जी छावड़ा के डेरै मस्तक परि विराजै, श्री गाई जैपुर का तेरापंथ के मंदिर की पचायती मैं ।

२३७ धर्मविलास

Opening : वंदौ आदि जिनेश पाप तमहरन दिनेश्वर।
बंदत हौ प्रभु चंद भव दुख तपत हनेश्वर॥

Closing : देखें, क्र० २३६।

Colophon : इति श्री श्री धर्म विलास भाषा महाग्रंथ सुकवि द्यानतराय अग्रवालकृत उनासी अधिकार संपूर्ण। संवत् १६३४ मिति माह (माघ) सुदी ६ रोज (दिन) सोमवार।

लिखत पीतम्बर दास जैसवार मोजै सहपऊ मध्ये परगन्ह सादाबाद जिला मथुरा। लिखायत लाला जगभूषणदास जी अगर-वाले मोजै आरे वाले।

२३८. धर्मविलास

Opening देखे—क्र० २३७।

Closing कनक किरती करी भाव, श्री जिन भक्ति रचें जी।
पढ़ै सुणै नर नारि सुरग सुख लह्यो जी॥

Colophon · इति विनती सम्पूर्णम।

विशेष— प्रति के अन्त मे एक विनती हैं। प्रशस्ति नही।

२३९. धर्मोपदेशकाव्य टीका

Opening : श्री पार्श्वं प्रणिपत्यादौ श्री गुरू भारती तथा।
धर्मोपदेश ग्रन्थस्य वृत्तिरेषा विधीयते॥

Closing : यावन्मेरु क्षितिभृत् यावन्नक्षत्रमडल विलसत्।
तावन्नन्दतु नित्य ग्रथ सवृत्ति सदितोयम्॥

Colophon : इति श्री धर्मोपदेश काव्य सवृत्तिक सम्पूर्णम्।
शास्त्राभ्यास: सदाकार्यो विबुधे धर्मभीरुभि।
पुस्तक साधन तस्य तस्माद्रक्षेत् पुस्तकम्॥ १॥
भवनास्ति जिनाधीश नास्ति सप्रति केवली।
आधार: पुस्तकस्यैव नृणां सम्यक्त्वधारिणाम्॥ २॥
शृण्वन्ति जिनवाणीं य भव्यपद्ममयरी बुधा:।

असशय लभंते ते स्वर्गमोक्षश्रिय शुभाम् ॥ ३ ॥
देखें, जि० र० को०, पृ० १६५।

२४०. ढालगण

Opening देवधरमगुरु वदिकैं, कहूँ ढालगण सार।
जा अवलोकैं बुद्धि उर, उपजै शुभ करतार ॥

Closing : अब जनमैं नाही या भव मांही सबके साई सब जानी।
तुमकौं जो ध्यावै तुम पद पावै कवि टेक कहै क्या अधिकानी ॥

Colophon इति ढालगण सपूर्णम्।

२४१. ढालगण

Opening : देखें—क्र० २४०।

Coleing : देखें—क्र० २४०।

Colophon : देखे—क्र० २४०।

२४२. गोमम्टसार (जीव०)

Opening सिद्धसुद्धपणमिय जिणिदवरणेमिचदमकलक
गुणरयणभूसणुदय जीवस्सपरूवण वोच्छ।

Closing गोमट्टसुतलहणे अमिणयवीरमत्तगी ॥

Colophon : गोमटसारजी की गाथा सपूर्ण।
देखे,–(१) जि र को., पृ ११०।
(२) Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 637-38
(३) Catg. of Skt Ms., 310.

२४३. गोम्मटसारवृत्ति (जीवकाड)

Opening : मुनि सिद्ध प्रणम्याह नेमिचन्द्र जिनेश्वरम्।
टीका गोमटसारस्य कुर्वे मदप्रबोधिकाम्॥

Closing : आर्य्यार्य्यासेन गुणसमूह सधार्म्यऽजित सेन गुरुर्भुवनगुरु यस्य गोम्मटो जयतु ।

Colophon : नही है ।

२४४. गोम्मटसार (जीवकाण्ड)

Opening : वंदौं ज्ञानानन्दकर नेमिचंद गुणकंद ।
माधव वंदित विमल पद पुण्य पयोनिधि नंद ।।

Closing : धन्य धन्य तुम तुमहीतैं सब काज भयो कर जोरि
बारबार बंदना हमारी है ।
मंगल कल्यान सुख ऐसो अब चाहत हौं होऊ मेरी
ऐसी दशा जैसी तुम्हारी है ।।

Colophon इति श्रीमत् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमटसार शास्त्र की सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नामा भाषाटीका संपूर्ण । श्री महाराजा श्री राजाराम चंद्रराज्य शुभ । लिख्यत नम्रचंद्रापुरी मध्य हीराधर जो वाचैं सुनैं ताको श्री शब्द बचनैं । संवत् १८८८ आषाढ़ सुदी १५ दिन शुभ भवत् ।

२४५. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूषण महावीरं ।
सम्मत्तरयणनिलय पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ।।

Closing : पाणवधादीसु रदो जिणपूआमोक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जोइ अंतरायं ण लहइ इच्छियं जेण ।।

Colophon : इति श्री कर्म्मकाण्ड सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ११०
Catg, of Skt & pkt. Ms., P. 608.
Catg of Skt. Ms., P. 310.

२४६. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क्र० २४५ ।

Closing : देखें—क्र० २४५ ।

Colophon . इति श्री कर्मकाण्ड समाप्तम् ।

२४७ गोम्मटसार (कर्मकाड)

Opening देखें—क्र० २४५ ।

Closing णरतिरियाऊ ' अपूर्ण ।

Colophon अनुपलब्ध ।

२४८. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening देखे—क्र० २४५ ।

Closing पूर्वोक्त क्रियाकरि करै स स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जाणना ।

Colophon इति श्री कर्मकाण्डनेमिन्द्राचार्य विरचिते हेमराजकृत टीका सम्पूणम् । मिती कातिक सुदी १३ मवत् १८८८, लिषत भीषन राय ननिवारा पुस्तिक साहू फूलचद को ।

२४९ गोम्मटसार (कमकाड)

Opening : देखे क्र० २४५ ।

Closing . अरु जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रियाकरि करै सु स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जानना । इय भाषा टीका पडित हेमराजेन कृता स्वबुध्यानुसारेण ।

Colophon : इति श्री कर्मकांड टीका सपूर्णसमाप्ता श्री कल्याणमस्तु श्री स्तु । सवत् १८४५ शाके १७१० श्रावणवदि ११ भौम ।

२५०. गोत्रप्रवर निर्णय

Opening : गोत्रमार्गिप्रवर-अमितातेजयोत्रं वृषभप्रवरकुम्भसूत्रम् पर्याय-शाखा, हरिकेतु गोत्रम् सम्भवप्रवर सतधनु सूत्रम् पर्याय समास शाखा ।

Closing : भागिनि रयगोत्र निष्कलङ्क प्रवर गङ्गदेवसूत्रम् अग्रायणीय शाखा ।

Colophon : नही है ।

२५१. गुणस्थान चर्चा

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीऊ नाम पदार्थ ते
आतमी परिनामतीन जातके, शुभ, अशुभ,
शुद्ध ।

Closing ए पाच भाव सिद्ध के रहे, तिन सहित अविनासी टकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमातमा कहिये ।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक कथनरूप सक्षेपमान् जिनवाणी अनुसार कथनकर पूरनकिया । सवत् १७३६ मगसिर बदी त्रयोदशी तिथौ। .. . . ।

२५२. गुरोपदेश श्रावकाचार

Opening : पचपरम मगलकरन, उत्तम लोक मझारि ।
असरन को ये ही सरन, नमू सीस करधारि ।।

Closing माधौ नृपपुर जाहि डालूगम न्यौ गयाहि, इष्टदेवबलहि
उमगको अनाय है ।
गुरुउपदेशसार श्रावक आचारग्रन्थ, पूरनता पाहि अर्श पदवी
को दायक है ।।

Colophon : इति श्री गुरोपदेश श्रावकाचार सम्पूर्णम् । इति शुभ मिती भाद्रपदसुदी ३ शनिवार सम्वत् १९८२ । हस्ताक्षर पं० श्री बच्चूलाल चौबे के ।

२५३. गुरुशिष्यबोध

Opening : जगत जुगत जगदीश से है वो बडो सुजान ।
ताकू वदौं भाव से, सो परमातम जान ।।

Closing : अर जैसो और है तैसो तू नाही,

जाहा (जहाँ) तहा (तहाँ) तू है सो तू ही है ।

Colophong (Missing) नही है।

२५४. हितोपदेश

Opening : जयति परं ज्योतिरिदं लोकालोकावभासनम् ।
यस्या परमात्मनामध्येम तद्वन्देषुद्धवैतन्यम् ॥

Closing . ये यत्रोक्तविधायिन सुमतयास्तेनन्त सोख्योज्वला ।
जायन्ते च हितोपदेशममल सन्त श्रयन्तु श्रीयै. ॥

Colophon ; समाप्तोऽय ग्रन्थ । हस्ता० बटुकप्रसाद । सवद् १६७० ।

२५५ इन्द्रनन्दिसंहिता (४ अध्याय)

Opening : अथस्नानविधिप्रक्रमा ।
लोगियधम्मो लोगुत्तरोहि धम्मो जिणेहिं णिदिट्ठो ।
पढमेमतरसुद्धी पच्छाउवहिमवासुद्धी ॥

Closing : भावेइ छेदपिंड जो एद इदणंदिगणिरचिद ।
लोइयलोउत्तरिएववहारे होइ सो कुसलो ॥४८॥

Colophon · इति इन्द्रनन्दिसंहितायां प्रायश्चित्तप्रकरणो नाम चतुर्थोऽध्याय। । इतिसम्पूर्णम्।

२५६. इष्टोपदेश

Opening : पूज्यपाद मुनिराजजी, रच्यो पाठ सुखदाय ।
धर्मवास बदनकरै, अंतरघटमें जाय ॥

Closing : · अर मोक्ष नैं प्राप्त होय है तातैं सर्वे,
प्रयत्नकरि निर्ममत्वभाव · · ·· · ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२५७. जलगालनी

Opening : प्रथम वंदे जिवदेव अनत । परम सुभग शीतल शुम सत ।।
सारद गुर वदु प्रमाण । जलगालण विधि करू बखाण ।।

Closing : जो जलगालि जुगतिसु जिहि विधि कहु पुराण ।
गुलाल ब्रह्मइत नुरस किहिउ, लोकमधि परमान ।।३१।।

Colophon : इति जलगाल परिसपूर्णम् । भट्टारक शुमकीर्ति तत्शिष्य- स्वामी मेघकीर्ति लिखितम् । शुभभवतु ।

२५८. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व्याख्यान

Opening . जबूद्वीपमटीपणक । पचवीसकोडाकोडी उद्धार, पल्य । सजेत्ता- रोम हवति तेत्ता द्वीपसमुद्रा भवति ।

Closing : गजदत-२०, वृषभगिरि १७०, मलेच्छखड ८५०, कुभोगभूमि ६६, समुद्र २, तोरणद्वार २२५०, एव ज्ञातव्यम् ।

Colophon : इति श्री पद्मनदी सिद्धातिवचनकाकृत जबूद्वीपप्रज्ञप्ति- व्याख्यानक कृत समाप्तम् । कमक्षयोनिमित्तम् । सवत् १९७६ आषाढकृष्णा ३ भौमवासरे श्री जैन सिद्धान्तभवन आरा के लिए प० भुजवलीशास्त्री की अध्यक्षता में काशीमण्डलान्तगत सथवाग्राम- निवासी वटुकप्रसाद कायस्थ ने लिखा ।

देखे, Catg of Skt & Pkt Ms., P 64 ।

२५९ जैनाचार

Opening : श्रीमदमरराजनुतपादसरसिज सोमभास्कर कोटितेज ।
कामितार्थवनीवसुरवीजसुखवीजक्षेमदोरि सु जिनराज ।।

Closing : दिनकरशशिकोटिभासुर सुज्ञानतनुरूपपुण्यकलाप ।
गुणमणिमयदीपयघघमताप तर्णिसिसतेसु निर्लेप ।।

Colophon : समाप्तम् ।

२६० जिनसंहिता

Opening : मगल भगवानर्हन्मगल भगवान् जिन ।
मगल प्रथमाचार्यो मगल वृषभेश्वर ।।१।।

विज्ञान विमल यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥२॥

Closing
नाटकस्थानमुच्यते गर्भमित्यच्छ्रियो भवेत् ।
तन्निर्मितिस्थलभित्ति च यथाशोभ प्रकल्पयेत् ॥७५॥
समद्रो वा कपोतोऽथ रथोभवेत् ।
वासोऽस्मिन्पञ्चताल स्यादुन्नताशश्च ापितोच्छ्रये ॥७६॥

Colophon
इति जिनसहिता सपूर्णम् ।
देखे— जि० र० को०, पृ० १३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५२ ।
रा० सू० II, पृ० १४ ।

२६१. जीवसमास

Opening
श्रीमत त्रिजगन्नाथ केवलज्ञानभूषितम् ।
अनतमहीरुढ श्रीपार्श्वेश नमाम्यहम् ॥

Closing
नवधामानवाश्चैव नवधाविकलागिन ।
इति जीवसामासा स्युरष्टानवति सख्यका ॥

Colophon
नही है।

२६२. ज्ञानसूर्योदय नाटक

Opening
वदो केवलज्ञान रवि, उदय अखडित जास ।
जो भ्रमतमहर मोक्षपुर, मारग करत प्रकाश ॥

Closing
ये चार परममगल विमल ये ही लोकोत्तम विदित ।
ये ही शरण्य जगजीव कौं जानि भजहु जा चहत हित ॥

Colophon
इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक सपूर्णम् । विक्रम सवत् १९६१ तत्र भाद्रशुक्ला १५ पौर्णिमाया लिपिकृतम् प० सीताराम शास्त्री स्वकरेण विमलमालायाम् ।
देखे, Catg of Skt & Pkt Ms., P. 649.

२६३. ज्ञानसूर्योदयनाटक वचनिका

Opening देखे—क्र० २६२ ।

Closing देखे –क्र० २६२ ।

Colophon इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सम्पूर्णम् । मिति फाल्गुणमास शुक्लपक्ष द्वादश्या वृहस्य (वृहस्पति) वासरे शुभ संवत् १९४५ का सवाई आरानगर मध्ये लिपिकृत्वा । शुभं ।

२६४ ज्ञानसूर्योदय नाटक (वचनिका)

Opening : देखे—क्र० २६२ ।

Closing देखें—क्र० २६२ ।

Colophon इति ज्ञान सूर्योदय नाटक सम्पूर्णम् । मिती वैशाख वदी १० बुधवार संवत् १८६९ ।

२६५ ज्ञानसूर्योदय नाटक वचनिका

Opening देखे—क्र० २६२ ।

Closing देखे—क्र० २६२ ।

Colophon इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सम्पूर्ण । मिति कार्तिकशुक्ल एकस्या शुक्रवासरे शुभ संवत् १९८६ का सवाई आरा नगर । कल्याणमस्तु ।

२६६ ज्ञानार्णव

Opening : ज्ञानलक्ष्मीघनाश्लेष प्रभवानंदनंदितम् ।
निष्ठितार्थमजं नौमि परमात्मानमव्ययम् ॥

Closing इति जिनपति सूत्रात्सारमुद्धृत्य किञ्चित
स्वमति विभवयोग्यं ध्यानशास्त्रं प्रणीतम् ।
विबुधमुनि मनीषाम्भोधि चन्द्रायमाणम्,
चतुरतु भुवि विभूत्यै यावदीद्रचद्रान् ॥

Colophon इत्याचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरणम् समाप्तम् । इति श्री ज्ञानार्णव समाप्त । संवत् १५२१ वर्षे आषाढ सुदी ६ सोमवासरे श्री गोपाचलदुर्गे तोमर वरवंशे श्री राजाधिराज श्री कीर्तिसिंह राज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भ० श्री गुणकीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ० श्रीयशः कीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ० श्रीमलयकीर्तिदेवस्तदाम्नाये गर्गगोत्रे सा० महणासङ्गा-

यहिलोसूतपुत्रत्रिपचाशत् क्रियाकमलिनी मार्त्तण्ड चतुर्विधदानपरपरा धाराधरा सारोपितानेकोत्तममध्यमावरपात्र अनेक गुणिजनहृदया-नदाकूपारोल्लासेंदूयक-पदेहा सदा सदयोदय प्रभाकर कराप-हस्ति पाप सतापतमश्चय अनवरत दान पूजाश्रुतश्रवणादिगुणगण-निवासनिलय कारापितप्रतिष्ठा महामहोत्सव अत्यात्मरसरसिक सघभारधुरधर मघाधिपति बुधानामधेय सद्भार्याविमलतर शीलनी-रतरंगिणी जिणधर्माणुरागिणी निर्मलतपाचरणा अनवरतकृतशरणा सघमणिपल्हो तयो प्रथमपुत्रआहारदानदानेश्वर आश्रितजनकल्पवृक्ष गुरुचरणकमलषट्पद षट्कर्मरत दानपूजाकारापितनिरतरक्षमामूर्ति सघाधिपति भार्या ऊनही स बुधाद्वितीयपुत्र हाथी भार्यापाल्हाही स बुधा तृतीयपुत्र देवराजएतेषां मध्ये चतुर्विधदानरतेन सघई क्षेमल नामधेयेन निजज्ञानावरणीय कर्मक्षयाय श्री ज्ञानार्णव पुस्तक लिखाप्य मुनि श्री पद्मनदिने दत्तम् ।

श्री मूलनदि सघादि बलात्कारगणे गिर ।
गछे भट्टारकस्येद ज्ञानभूषणस्य पुस्तकम् ॥

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५० ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २०२, ३४६ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ४०, १६२ ।
(7) Catg of Skt & Pkt. Ms , P 646

२६७. ज्ञानार्णव

Opening : देखें—क्र० २६६ ।

Closing : देखें—क्र० २६६ ।

ज्ञानार्णवस्य माहात्म्य चित्त को वित्ति तत्वत·
य ज्ञानातीयते भव्यै दुस्तरोपि भवार्णव ॥ ३ ॥

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचन्द्रदेवविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदी-पाधिकार । मोक्षप्रकरण समाप्त । इति श्री ज्ञानार्णवसूत्रस-

पूर्ण। सवत् १९८० वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे पचमी तिथौ गुरुवासरे। श्री ज्ञानाणवम् सपूर्णकृता।

लिखित श्री पट्टणानगरमध्ये। लेषक–पाठकयो चिर जीयात्। श्रीरस्तु शुभ भवतु॥

२६८. ज्ञानार्णव

Opening देखे क्र० २६६।

Closing देखे –क्र० २६६।

Colophon इत्याचार्य श्री शुभचद्रविरचिते ज्ञानाणवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरण समाप्तम्। सवत् १८७०।

२६९. ज्ञानार्णव भाषा

Opening ललितचित्त पद कलित निरखत निजसपति।
इहित मुनिजन मोद जोत कतिमलगुन जपति॥

Closing ताके जिनवाणी की श्रद्धान है प्रमान ज्ञान,
दरसन दान दयावान अवधान है।
ज्ञान ही के कारणत भाषा भयौ ज्ञान सिंधु,
आगम कौ जग यामे ध्यान कौ विधान है॥

Colophon ति श्री शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानाणव योगप्रदीपाधिकार श्री श्रीमालान्वये वदलियागोत्रे परमर्पावित्र १ ईआ श्रीवस्तुपाल सुत श्री नागचन्द्रस्याभ्ययनया पडित श्रीलक्ष्मीचन्द्रेण विहितभाषय सुखबोधनार्थम्। सवत् १८६९ शाके १७३४ वैशाखमास तिथौ ११ बुधवासरे समाप्तम् भवतु, लिखत काशि मध्य राजमदिर लिखाइत लाला वगमुलाल जी पठनार्थ परोपकारणार्थम्। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। लिखत ब्राह्मण शिवलाल जाति गौड ब्राह्मण।शुभ भूयात्।

२७० ज्ञानार्णव टीका

Opening शिवोय वैनतेयश्च स्मरश्चात्मैव कीर्तित।
अणिमादिगुणनर्घ्यरत्नवार्द्धिर्बुधैर्मत॥

Closing शुभ कारित गयाना गुणवर्तिनय विनयतो ज्ञानावणवरयातरे विद्यानदि गुरुप्रसादजनितदयादमेय सुखम्।

Colophon : इति श्री ज्ञानार्णवस्य स्थितिगतटीकातत्त्वत्रय प्रकाशिन समाप्ता ।

२७१ कर्मप्रकृति

Opening : प्रक्षीणावरणद्वंसमोहप्रत्यूह कर्मणे ।
अनतानतधीदृष्टि सुखवीर्यात्मने नम ।।

Closing : जयन्ति विधुताशेषपापांजन समुच्चया ।
अनतानतधी दृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वरा ।।

Colophon : इति कृतिरियमभयचद्र सिद्धान्तचक्रवर्तिन । भद्रमस्तु स्याद्वादशासनाय ।

देखे— जि० र० को०, पृ० ७२ ।

२७२. कर्मप्रकृति ग्रथ

Opening देखे— क्र० २८५ ।

Closing : देखे क्र० २८५ ।

Colophon : इति श्री नमिचदसिद्धान्ति विरचित कर्मप्रकृति ग्रथ समाप्त ।। संवत् १३६६ का शुभमस्तु ।।

विशेष—यह ग्रथ श्री देवेन्द्र प्रसाद जैन द्वारा दिनाक १३-६-१९१८ को श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा को सादर समर्पित किया गया है ।

देखे —(१) जि० र० को०, पृ० ७१ ।
(२) Catg of Skt & Pkt Ms., page 632.

२७३ कर्मविपाक

Opening : सिरिवीरजिण वदिय, कम्मविवाग समासओ वुच्छ ।
कीरइ जिराण हेउहिं जेण भोमणराकम्म ।।

Closing : गाहगाभयरीए वुदमहत्तरमयाणुसारीग ।
टीगाए णिग्मियाण एगूणा होइ णउईऊ (ओ) ।।

Colophon : इति श्री कर्मग्रथ सूत्रसमाप्तम् । षष्ट कमग्रथ । श्रीरस्तु । सवत् १९६६ शाके १७३१ मिती भादवबदि ३ सोमवारे तया विजै

आणदसूरगच्छे लिपि शराज (स्वराज) द्विजैमुनि श्री नागपुर मध्ये दिक्षणदेशे ।

देखे, जि र को पृ ७२, ७३ ।

२७४. कषायजयभावना

Opening येन कषायचतुष्क दर्लितं समारदु खतरबीजम् ।
प्रणिपत्य त जिनेन्द्र कषायजयभावना वक्ष्ये ।।

Closnig यत कषायैर्गृहजन्मवासे समाप्यते दुःखमनन्तपारम् ।
हिताहित प्राप्तविचारदक्षैरत कषाया खलु वर्जनीया ।।

Colophon इति कनककीर्तिमुनिना कषायजयभावना प्रयत्नेन भव्यचित्तशुद्धयैविनयेन ममासतो रचिता । इति कषायजय चत्वारिंशत् समाप्त । जैन सिद्धान्त भवन आरा ता १८-१०-२६ ताडपत्रसे उतारा गया ।

२७५. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening शुभचद्र जिन नत्वानतानितगुणार्णवम् ।
कार्तिकेयानुप्रेक्षायास्टीका वक्ष्ये शुभश्रिय ।।

Closing लक्ष्मीचद्रगुरु स्वामी शिष्यस्तस्य सुधीयता ।
वृत्तिर्विस्तारिता तेन श्री शुभेन्दु प्रसादत ।।

Colophon . इति श्री स्वामी कार्तिकेयटीकाया त्रिद्य विद्याप्रपट्-भाषा कवि चक्रवर्तिभट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचिताया द्वमानुप्रेक्षाया-द्वादशमोधिकार समाप्तम् । १२ सपूर्णम् । राम ति वदवस्वेदु विक्रमार्कगतेपि वैशालिवाटनसाकश्च नागावरमुनिचद्र ।

देखे, —जि० र० को, पृष्ठ ८५ ।
Catg of skt & pkt Ms., P 634

२७६/१. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening । देखें०—क्र०, २७५ ।
Closing । देखें०—क्र०, २७५ ।

Colophon : इति श्री स्वामि , कार्तिकेयटीकाया त्रिवविद्याधरषट्भाषा कविचक्रवर्ति भट्टारक श्री शुभचद्रविरचिताया धर्मानुप्रेक्षाया द्वादशमोधिकार समाप्तम्। सपूर्णम् सवत् १८५८ वर्षे शाके १७२३ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे तिथौ षष्ठी मगलवासरे हिसार पट्टे लोहाचार्याम्नाये काष्ठासघे पुस्करगणे माथुरगच्छे श्रीमद्‌भट्टारकत्रिभुवणकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री खेमकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीसहसकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्ति जी तत् भ्राता पडित आणदराम तच्छिष्य खेमचन्द्रेण प्रयागमध्ये लिपि कृतम्। स्वय पठनार्थम्। शुभस्तु।

२७६।२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening . अथ स्वामिकार्तिकेयो मुनीद्रोऽनुपेक्षा व्याख्यातुकामो।
मलगालनमगावाप्तिलक्षण मगलमाचष्टे ॥

Closing . तिहुयणपहाण सामि कुमारकाले वि तवियत्तवयरण।
वसुपुज्जसुय मल्लि चरिमतिय ससुवे णिच्च ॥

Colophong इति स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा समाप्ता। मिती कार्तिगमासे शुभे कृष्णपक्षे तिथि ७ वार सोमवार सवत् १८९० का साल मध्यचीरजीव अमिचन्दगोतसेठी लिखायत चिरजीव श्री चन्द्रेण स्वकीय पठनार्थ वाचपढ ज्यानजथा योग्य वचज्यो। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।

यादृश · दीयते।
इद पुस्तक राज्येद्रकीर्तिमुने पठनार्थं श्रीचन्द्रेणदत्तम्।

२७७. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening प्रथम रिषभजिन धरम कर, सनमति चरन जिनेश।
विघनहरन मगलकरन, भवतम दुरन दिनेश ॥

Closing : जैनधर्म जयवंत जग, जाको मर्म सुपाय।
वस्तु यथारथ रूपलखि, ध्याये शिवपुर जाय ॥

Colophon : इति श्री स्वामि कार्तिकेयानुप्रे [illegible] नाम प्राकृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका सम्पूर्ण। मिती कातिक बदी ४ वार गुरु सम्वत १६१४ को समाप्त भया। [illegible] जौरीलाल [illegible] नारायण दास के [illegible] मोकामी अर बास [illegible] मिरी (श्री) असदान के।

२७८ क्रियाकलाप टीका

Opening : जिनेन्द्रमुन्मीलितकर्मबन्ध, प्रणम्य सन्मार्ग कृतस्वरूपम।
अनन्तबोधादि [illegible] गुणौघ, क्रियाकलाप प्रकट प्रवक्ष्ये ॥

Closing : [illegible] पदप्रमाण श्रुत प [illegible] पर्चाम [illegible] सामानि—११२८३. ८०००।

Colophon : इति श्री पण्डित प्रभाचन्द्र विरचितायां क्रियाकलाप टीका समाप्तम्। संवत् १४ ० वर्षे चैत्रवदि ७ शुक्रवासरे। [illegible] मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्रीसिंहनन्दिन शिष्यनीबाई विनय श्री लिखापितम्।

देखो, Catg. of Skt & Pkt. Ms. P. 635

२७९ क्रियाकलापभाषा

Opening : समवसरण लक्ष्मी सहित, वर्द्धमान जिनराय।
नमो विबुध वंदित चरण, भविजन कौ सुखदाय ॥

Closing : जबलौं धर्म जिनेसर सार।
जगतमांहि वरतै सुखकार ॥
तबलौ विस्तर ज्यौ यह ग्रंथ।
भविजन सुरशिव दायक पंथ ॥ १६०० ॥

Colophon : इति श्री क्रियाकोश भाषा मूलत्रेपन क्रिया नै आदि दै भर और ग्रन्थ की शाखका मूलकथन उपरि सम्पूर्णम्।
इति क्रियाकलाप भाषा समाप्तम्।

२८० लघुतत्वार्थसूत्र

Opening : दृष्टं चराचरं येन केवलज्ञानचक्षुषा।
तं प्रणम्य महावीरं वेदिकां तं प्रवक्ष्यते ॥

Closing :
बोधि समाधि प्रणमामि सिद्धि,
स्वात्मोपलब्धि. शिवसौख्यमिद्धि ।
चिंतामणि चिंतितवस्तुदाने,
त्वा विद्यमानस्य ममास्तु देव ॥

Colophon : इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तम् ।

२८१. लघुतत्त्वार्थं

Opening देखें, क्र० २८० ।

Closing देखे, क्र० २८० ।

Colophon इति श्री लघुतत्वात्र न समाप्तानि ।

२८२. लोकवर्णन

Opening
भवणेसु सत्तकोडी, बावत्तरिलख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंद महिया, भवणसमा ताणि वंदामि ॥

Closing ,
जबूरविंदूदीवे चरति सीदिं सद च अवसेस ।
लवणे चरति सेसा— — —॥

Colophono . नही है ।

विशेष- प्रारभ मे गाथा एक से नौ तक मूल है । उसके बाद क्रमाङ्क ३०२ से ३७४ तक पूर्ण है । अन्त मे अधूरी गाथा Closing मे दी हुई है । ग्रन्थ अव्यवस्थित है ।

२८३. लोकविभाग

Opening :
लोकालोकविभागज्ञान् भक्त्या स्तुत्वा जिनेश्वरान् ।
व्याख्यास्यामि समासेन लोकतत्वमनेकधा ॥

Closing :
पञ्चादशशतान्याहु षट्त्रिंशदधिकानि वै ।
शास्त्रस्य संग्रहस्त्वेदं छन्दसानुष्टुभेन च ॥

Colohpon : इति लोकविभागे मोक्षविभागो नामैकादश प्रकरणं समाप्तम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ०३३६ ।

२८४. मरणकंडिका

Opening : पणमतिसुरासुरमनुलियरयणव्वकिरणकतिवियरयम् ।।
वीरजिणयजयलणमिनुगमणेमिरिद्गालम् ।।१।।

Closing दयइअरकराइ दुणह भावहलोराहि हुरहणि १ ।।
जीवइ सोणरइले समेणमरणं च सुणण ।।

Colophon इति मरनकांड सपूर्ण मिती कात्यागवदी ५ बुधवासरे सवत् १८८७ समनलाल ।

२८५ मिथ्यात्व खण्डन

Opening प्रथम सुमरि अरिहत को, सिद्धन कौ धरि ध्यान ।
सरस्वती शीश नवाइके, वदौ गुरु जुत ध्यान ।।

Closing : महिमा श्री जिनधर्म की, सुनियत अगम अनत ।
जा प्रसादतें होत नर मुक्ति वधू क कत ।।
ग्रन्थ अनूपम रच्यौ यह दै ग्रन्थनिकी साखि ।
मूरख हाथि न देहु भवि, अधिक जतन सौ राखि ।।

Colophon इति मिथ्यात्व खडन नाटक सम्पूर्ण । सवत् १९३५ मिती ज्येष्ठ कृष्ण नवमी शनिवारे ।

२८६ मिथ्यात्व खण्डन

Opening : देखें, क्र० २८५ ।

Closing : देखें, क्र० २८५ ।

Colophon : इति मिथ्यात्व खडन नाटक सम्पूर्ण । मिती श्रावण कृष्ण ४ बुधवार सवत् १८७१ लिखी फतेपुर मध्ये ।

२८७ मिथ्यात्व खंडन नाटक

Opening देखें—क्र० २८५ ।
Closing देखे—क्र० २८५ ।
Colophon इति श्री मिथ्यात्व खडन नाटक सम्पूर्ण ।

२८८. मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening मगल्मय मगलकरन वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जातें भये अरिहन्तादि महान ।।
Closing बहुरि स्वरूप विषै वा जिनधर्म विषै वा धर्मात्मा जीवनि विषै अतिप्रीति भावसो वात्सल्य है । ऐसैं आठ अग जाननें ।
Colophon नही है ।

२८९ मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening देखे—क्र० २८८ ।
Closing सो परलोक के अर्थि कैसे, स्मरण करै है किछू विचार होय सकता नाही ।
Colophon इति श्री मोक्षमार्ग प्रकाशजी स पूर्ण ।

२९०. मृत्यु महोत्सव

Opening मृत्युमार्गेप्रवृत्तस्य वीतरागो ददातु मे ।
समाधि बोधिपाथेय यावन्मुक्ति पुरीपुर· ।।
Closing : उगणीसे अठारा सुकल पचमि मास असाढ ।
पूरण लखी बांचो सदा मनधारि सम्यक् गाढ ।।
Colophon इति श्री मृत्यु महोत्सव पाठ वचनिका समाप्ता । लिखत बिरामण सियाराम वासी नग्र लिक्षमणगढ का । मिति पौ (ष) सुदी २ सवत् १९४४ ।

२९१ मृत्युमहोत्सववचनिका

Opening : कृमिजालशताकीर्णे, जर्जरे देहपंजरे ।
भज्यमानेन भेतव्य यस्त्व ज्ञानविग्रह ॥

Closing : देखे, क्र० २९० ।

Colophon : इति श्री मृत्युमहोत्सव वचनिका सम्पूर्णम् ।

विशेष— अन्तमे अभिषेक पाठ भी लिखाहुआ है, जो अपूर्ण है ।

२९२. मूलाचार

Opening : मूलगुणे सुविसुद्धे वदित्ता सव्वसजदे शिरसा ।
इह परलोगहिदत्थे मूलगुणे किसइस्सामि ॥

Closing : सकललोकालोकस्वभाव श्रीमत्परमेश्वरजिन-
पतिमतवितत मतिचिदचित्स्वावचिद्भावमाधितस्वभाव परमाराध्यतम-
सैद्धान्तपारावार पारीणाय आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्याय नम ।

Colophon : इति समाप्तोऽय ग्रथ ।

२९३. मूलाचार प्रदीप

Opening : श्रीमन मुक्ति भर्तारं, वृषभ वृषनायकम् ।
धर्मतीर्थंकर ज्येष्ठ, वंदेनतगुणार्णवम् ॥

Closing : पचषष्ठ्याधिका, श्लोका त्रयस्त्रिंशशतप्रमा ।
अस्याचारसुशास्त्रस्य ज्ञेया पिंडीकृता बुधै ॥

Colophon : नहो है ।

दखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २५ ।
(३) आ० सू०, पृ० ११३, २०१ ।
(४) रा० सू०, पृ० १६५ ।
(५) Catg. of Skt. & pkt. Ms. P 681.

२९४. मूलाचार प्रदीप

Opening : देखें, क्र० २९३ ।

Closing : देखे, क्र० २९३ ।

Colophon : इति श्री मूलाचारप्रदीपकाख्ये महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिविरचितेअनुप्रेक्षा परीषहऋद्धिवर्णनोनाम द्वादशमोधिकार । लिखत दयाचन्द लेखक वासी जैनगर का हालवासी जैसिंघपुरामध्ये । मिति वैशाख शुक्लपक्षे तिथौ चतुरथ्यां रविवासरे सवत् १८७४ का । वाचकानां लेखकाना शुभ भवतु ।

२६५. नवरत्न परीक्षा

Opening : रत्नत्रयाय भुवनत्रयवदिताय कृत्वा नम समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ।
रत्नप्रवेशकमधिकृत्य विमुच्य फल्गुन् सक्षेपमात्र मिति बुद्धभटेन दृष्टम् ॥१॥

भुवनत्रितयाक्रांतप्रकाशीकृतविक्रम ।
बलो नाम।भवच्छ्रीमान्दानवेंद्रो महाबल ॥२॥

Closing : तत्रपुराइहसूनुना समासोक्ति । मणिशास्त्र मन्ता बुद्धभट—क्षयेणेयमिति वज्रमौक्तिक पद्मराग मरकतेंद्र नीलवैडुर्यकर्केतन पुलक रुधिराक्ष स्फटिक विद्रुमाणा । वीजाकर गुणदोष कृतिममूल्य परीक्षा धारयितुम् । दोषगुणानाम् हानियोग च विस्तारेऽस्मोवुद्धभटेन निर्दिष्ट ॥

Colophon इति बुद्धभट्टनाम रत्नशास्त्र समाप्तम् ॥ भद्र भूयादिति स्तौमि अयमपि ग्रन्थ रान्० नेमिराजाख्येन लिखित ॥ माघशुक्ल च[illegible]द्या समाप्तश्च रत्ताक्षि सवत्सर ॥ क्रिस्तशक १६२५-फेब्रुअरी ॥ मूडबिद्री ॥

२६६. नयचक्र सटोक

Opening : बदौ श्री जिनके वचन, स्याद्वाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनभवतही, ह्वै मिथ्यात निरमूल ॥

Closing : तैसो ही कहनो सोइ अनुपचरित असद्भूत विवहार कहिये । जैसे जीवको शरीर ऐसो कहणो ।

Colophon : इति पंडित नारायणदासोप् शेन यह हेमराजकृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्तम् । श्री मिती पौष सुदी ११ सवत् १६५६ । हस्ताक्षर बलदेव प्रसाद।

२६७. नीतिसार (समयभूषण)

Opening प्रणम्यन्त्रिजगन्नाथाश्चिन्द्रा नन्दितसम्पद ।
अनागाराम्प्रवक्ष्यामि नीतिसारसमुच्चयम् ॥१॥

Closing . माघत्प्रात्यर्थिवादिद्विरद घटिघटाटोपवेगपावनोदे ।
वाणी यस्याभिरामामृगपतिपदवी गाहते देवमान्या ॥
श्रीमानिन्द्रनन्दी जगतिविजयता भूरिभावानुभावी ।
दैवज्ञ कुण्डकुन्दप्रमुपदविनय स्वागमाचारचञ्चु ॥११३॥

Colophon इति श्रीमदिन्द्रनन्द्याचार्य्य विरचितमिद समयभूषण समाप्तम्
॥ शुभ भूयात् ॥
देखे —जि० र० को , पृ० २१६ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 660

२६८. नीतिसार

Opening श्रीमदुमन्तक्ष्मीरमणाय नम ॥ निर्ग्रन्थसमय भूषणम् ॥
देखे, क्र० ४४७ ।

Closing माद्यन्त सिद्धगान्तिस्तुतिजिनगमजनुर्पोस्तु या द्वंत ॥
निष्क्रमणेप्योग्यन विधिश्रुतायपि शिवे शिवान्तमपि ॥

Colophon : नही है ।

२६९. न्यायकुमुदचन्द्रोदय

Opneing · सिद्धिप्रद प्रकटितात्रिवस्तुतत्त्वमानदमदिरमशेषगुणैक पात्रम् ।
श्रीमज्जिनेन्द्रमकलकमनतवीर्य मानम्य लक्षणपद प्रवर
प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing । तत्म पत्तौ च मुमुक्षुजनमोक्षमार्गोपदेशद्वारेण परार्थं
स पत्तये सोचेऽहत इति ॥

Colophon . इति श्री भट्टारकाकलङ्कशशाङ्कानुस्मृतप्रवचनप्रवेश समाप्त ।
इति ग्रन्थ समाप्त ।
देखे—जि० र० को०, पृ० २१६ ।

३००. पद्मनन्दि पञ्चविंशतिका

Opening . देखें—क्र० १५४ ।

Closing : युवतिसगतिवर्जनमष्टक प्रतिमुमुक्षुजन भणित मया ।।
सुरभिरागसमुद्रगता जना कुरुत माकुध मत्रमुनौ मयि ।।

Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरण समाप्तम् ।।
इति श्री पद्मनदिकृता पचविंशतिका समाप्ता ।।
देखे,--जि० र० को०, पृ० २२८ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 664

३०१. पद्मनदि पचविंशतिका

Opening : देखे--क्र० १८४ ।

Closing देखे--क्र० ३०० ।

Colophon इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरण समाप्तम् ।। इति श्री पद्मनदिकृता पचविंशतिका समाप्ता ।। २५ ।। अथ सवत्सरेऽस्मिन् नृपतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १८३६ मितिचैत्र शुक्लनवम्या शनिवासरे इद पुस्तक लिपीकृत पूर्णं जात श्री रस्तु शुभ भूयात् कल्याणमस्तु ।।

३०२ पंचमिथ्यात्व बर्णन

Opening : वेदान्त क्षणवत्व च शून्यत्व विनयात्मकम् ।
अज्ञान चेति मिथ्यात्व पचधा वतते भुवि ।।

Closing : इत्येव पचधा प्रोक्ता मिथ्यादृष्टिविधानकम् ।
नोपादेयमिद सर्व मिथ्यात्व विषदोषत ।।

Colophon : इति श्री पचमिथ्यात्व वर्णन सपूर्णम् । सवत् १८०३ वर्षे पोह (पौष) सुदी २ तिथौ बुधवारे श्री दिल्लीमध्ये श्री माथुर गच्छे काष्ठासघे स्वामी जी भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति जी तस्य भ्रातृयामे श्री जैरामजी तस्य यामे गामचद लिखापितम् । शुभ भवतु ।
परस्परस्य मर्माणि, न भाषन्ते बुधाजना ।
ते नरा च क्षय यांति, वल्मीकोदर सर्पवत् ।।

३०३. पञ्चास्तिकाय भाषा

Opening : को नाहीं प्राप्त हुए है, तिनको सरण है। तिनको नमस्कार होउ ।

Closing ससार समुद्रको उतरि करि सम ।

Colophon ; अनुपलब्ध ।

३०४. पंचास्तिकाय भाषा

Opening जीर्ण ।

Closing जीर्ण ।

Colophon नही है ।

३०५ पचसंग्रह

Opening छद्दव्वनवपयत्थे दव्वाइ चउव्विहेण जाणते ।
वन्दित्ता अरहन्ते जीवस्स परूवण वोच्छ ॥ १ ॥

Closing जाणत्थ अपडिपुणो अत्थो अप्पागमेणरइ उत्ति ।
त खमिऊण बहुसुया पूरऊण परिकहितु ॥ ६ ॥

Colophon इव पचसग्रह समाप्त ॥ शुभ भवत्लेखकपाठकयो ॥ अथ श्री टवक नगर ॥ सवत् १५२७ वर्षे माघवदि ३ गुरुवासरे श्री मलसघे सारस्वतगच्छे । भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ॥ तच्छिष्यो मुनि रत्निकीर्तिदेवा ॥

दखें, जि० र० को०, पृ० २२८, २२९ ।
Catg of Skt & pkt Ms , P 662

३०६. परमार्थोपदेश

Opening नत्वानदमय शुद्ध परमात्मानमव्ययम् ।
परमार्थोपदेशाख्य ग्रथ वच्मि तदर्थिन ॥

Closing येऽधुनैव शमसयमयुक्ता द्वेषरागमदमोहविमुक्ता ।
सति शुद्धपरमात्मनि रक्ता ते जयतु सतत जिनभक्ता ॥२७२॥

Colophon । इति परमार्थोपदेशग्रन्थ. भट्टारक श्री ज्ञानभूषण विरचित-समाप्त ।

यह प्रतिलिपि जैन सिद्धान्त भवन, आरा मे सग्रहार्थ लिखी

गई । शुभमिती पौषकृष्णा ७ मगलवार विक्रम सवत् १६६२, हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जै० ग्र० प्र० स०, प्रस्तावना, पृ० ५१ ।
(३) भ सम्प्र, पृ १८२, १५४, १८३, १६७

३०७ परमात्म प्रकाश

Opening चिदानदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्य सिद्धात्मने नम ॥

Closing परम पय गयाण भासवो दिव्वकाउ,
मणसि मुणिवराण मुक्खदो दिव्व जोई ।
विसय सुह रयाण दुल्लहो जोउ लोए,
जयउ सिव सम्वो केवली कोवि बोहो ॥

Colophon इति श्री योगीन्द्रदेव विरचित परमात्मप्रकाश सपूर्णम । सवत् १८२६ वर्षे मिती भाद्रो वदी ११ एकादशी चद्रवासरे लिखित गुमीनीराम सौन पोथी गुन आगर लेखक-पाठकयो शुभ अस्तु कल्याणमस्तु ।

देखे—जि र को, पृ २३७ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 665.

३०८ परमात्मप्रकाश वचनिका

Opening चिदानद चिद्रूप जो, जिन परमातम देव ।
सिद्धरूप सुविशुद्ध जो, नमौं ताहि करि सेव ॥

Closing ऐसा श्री जिन भाषित शासन सुखनिक कैसे करानिकरि। वृद्धि कूं प्राप्त होऊ ।

Colophon श्री योगिन्द्राचार्यकृत मूल दोहा ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका दौलतराम कृत भाषा वचनिका सम्पूर्ण भई, सवत् १८६१ ।

३०९ परमात्म वचनिका

Opening : चेतन आनद एक रूप है, कर्मरूपी बैरीको जीते ताते जिन है ।

Closing : और विषै सुखमे जो मगन है तिनकौ इह जोग दुरलभ है। जैवत प्रवर्तो सेव दुरलभ कोई ग्यान है सो।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश समाप्तम्।

३१० परसमयग्रथ

Opening श्रूयता धमसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्॥

Closing निश्चेष्टाना वधो राजन् कुत्सितो जगती पते।
क्रतु मध्योपनीताना पशुनामिवराघव॥१६४॥

Colophon : नही है।

विशेष—विभिन्न पुराणो से सग्रहीत सदाचार विषयक श्लोक हैं।

३११ प्रश्नमाला भाषा

Opening आगै राजाश्रेणिक गौतम स्वामी तै प्रश्न किये ।

Closing : ते भव्यात्मा कल्याण के अर्थि सुबुद्धी परभवमे सोभा-पावेगे ऐसी जानि इस प्रश्नमाला कौ धारन करहु।

Colophon : इति श्री प्रश्नमाला सम्पूर्णम्।
प्रश्नमाला पूरनभई, आदेश्वर गुनगाय।
सम्यक्ति सहित याचित रहो, ज्ञान सुरति मनमाह॥

३१२ प्रबोधसार

Opening : नम श्री वीरनाथाय भव्याम्भोज भास्वते।
सदानद सुधास्यदत् स्वादम वेदनात्मन॥

Closing सर्वलोकोत्तरत्वाच्च जेष्ठत्व त्सर्वभूभृताम्।
महात्वात्स्वर्णवर्णत्वात्वमाद्य इह पुरुष॥

Colophon इति प्रबोधसार समाप्त।

देखें—जि० र० को, पृ० १७३।

३१३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सर्ग)

Opening : जिनेश वृषभ वदे वृषभ वृषनायकम्।
वृषाय भुवनाधीश वृषतीर्थ प्रवर्तकम्॥१॥

Closing
शून्याष्टाष्टद्वया काढ्य स.यग्रामुनिनोदित ।
नदन्वे पावनो ग्रथो यावत्कालातमेव हि ।। १३४ ।।

Colophon इति श्री प्रश्नोत्तरोपासकाचारे भट्टारक श्री सकलकीर्ति-विरचिते अनुमत्यादि प्रतिमा द्वयप्ररूपको नाम चतुर्विंशतितम परिच्छेद ।। २८६ ।। सवत् १६७० । लिखितमिद मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्मणा ।। मिती माघ शुद्ध ५ शनौ शुभ भवतु श्लोकसख्या प्रमाणम् ३३०० ।। सवत् १८७५ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

देखें–(१) दि० जि० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि र को, पृ २७८ ।

३१४ प्रश्नोत्तरोपासकाचार

Opening · देखें —क्र० ३१३ ।

Closing
गुणधरमुनिसेव्य, विश्वतत्वप्रदीपम् ।
विगतसकलादेश ।।

Colophon अनुपलब्ध ।

३१५. प्रश्नोतरश्रावकाचार

Opening
सेवत जहि सुरईश, वृषनायक वृषदाइ हैं ।
बदौ जिनवृषभेश, रच्यो तीर्थ वृष आदिजिन ।।

Closing
नीनहिसे या ग्रथ के, भए जहानाबाद ।
चोथाई जलपथ विषै, वीतराग परमाद ।।

Colophon इति श्री मन्महाशीलाभरण भूषित जैनी सुनु लाला बुलाकीदास विरचिताया प्रश्नोत्तरोपासकाचारभाषायां अनुमत्यादिमप्रतिमाद्वय प्ररूपणो नाम चतुर्विंशतिम प्रभाव ।। २४ ।। इति भाषा प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ग्रथ सम्पूर्ण । सवत् १८२१ पौष शुक्ल दशमी चद्रवार । पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा ने लिखि । मगलमस्तु ।

३१६. प्रतिक्रमण सूत्र

Opening : इच्छामि पडिक्कमिउ पगामसिज्जाए निगामसिज्जाण उव्व-त्तणाम परियत्तणाए आउट्टणाए सारणाए ··· ।

Closing : एवमाह आलोइय निंदिय गरहिय दुगंथिय ।
तिविहेण पडिक्कतो वदामिणे चौवीस ॥

Colophon : इति यतिना प्रतिक्रमणसूत्र सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।
देखे—(१) जि० र० को०, पृ० २५६ ।
(2) Catg. of skt & Pkt Ms., page. 669

३१७ प्रवचनपरीक्षा

Opening त्रिलोकीतिलकायार्हत्तु वराय नमो नम ।
वाचामगोचराचिन्त्य बहिरभ्यन्तरश्रिये ॥

Closing परमामृतदानेन प्रीणयद्विबुधान् परम् ।
शरण भक्तिमन्नेमिचन्द्रवज्जिनशासनम् ॥

Colophon अनुपलब्ध ।
देखे—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१८. प्रवचन प्रवेश

Opening : धर्मतीर्थंकरेभ्योस्तु स्याद्वादिभ्यो नमो नम ।
वृषभादिमहावीरान्तेभ्य स्वात्मोपलब्धये ॥

Closing प्रवचन पदान्यभ्यस्यार्था स्तत परिनिष्ठिता-
नसकृदववुद्धेद्धाद्बोधाद् धो हतसशय ।
भगवदकलकाना स्थान सुखेन समाश्रित,
कथयतु शिव पथान व पदस्य महात्मनाम् ॥

Coophon इति भट्टाकलकशशाकानुस्मृतप्रवचनप्रवेश समाप्त ।
अयमपि पत नेमिराजाख्येन लिखित । माघशुक्ल त्रया-
दश्या समाप्ता। दक्षिण कनाडा मूडबिद्री १९२५ फेब्रवरी ।
देखें—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१९. प्रवचनसार

Opening सर्वं व्याप्यैकचिद्रूप, स्वरूपाय परमात्मने ।
स्वोपलब्धि प्रसिद्धाय ज्ञानानदात्मने नम ॥

Closing . इतिगदितिमनीचैस्तत्वमुच्चावच य,
च्चितित्तदपि किलाभूवकल्पमग्नो कुलस्य ।

अनुभुवसदुर्च्वै. विश्चिदेवाद्य यस्माद्,
अपरमिह न किंचित् तत्वमेक परचित् ॥

Colophon इति तत्वदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति' समाप्ता। श्रीरस्तु। सवत् १७०५ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्या बुधवासरे अग्गलपुरमध्ये शाह् जहान राज्ये लि० श्वेतावर रामविजयेन लिखाप्येद भाडिकाख्यगोत्रणा सघपत्तिना श्री साह् श्री जयतीदासेन पुत्र जगतराजयुतेन स्वकीयज्ञानावरणीय कर्मक्षयनिमित्त पडित श्री वीरूकायदत्त वाच्यमान श्री चतुर्विधसघपुरत पुस्तक जीयात्।

देखे, (१) दि जि ग्र र, पृ ६३।
(२) जि र को, पृ २७०।
(३) प्र जै सा, पृ १७८।
(४) आ सू, पृ, ६६।
(5) Catg. of skt & pkt. Ms., P 671.

३२०. प्रवचनसार

Opening · मिद्ध मदन बुधिवदन मदनमदकदनदहन रज,
सवद्धिलसन अमत चारू गुनवत मत अज ॥

Closing · प्रवचनसार जी महान, वृदावन छदवद करी।
ताको दूजिप्रत्यहरि आन मनवछित पूरन करी ॥

Colophon : श्री प्रवचनसार जी गाथा २७५ टीका सस्कृत २७५ भाषा छद २८६४। मकरमासे कृष्णपक्षे तिथौ ७ बुधवासरे सवत् १६६६।

३२१ प्रायश्चित्त

Opening : जिनचन्द्र प्रणम्याहमकलक समन्तत।
प्रायश्चित्त प्रवक्ष्यामि श्रावकाणां विशुद्धये ॥

Closing सहस्त्राणि बत्रेत्वेका पचनिष्कं प्रपूजनम्,
प्रायश्चित्त य करोत्येतदेव जाते दोषे तथा शान्त्यर्थमार्या।
राष्ट्रस्यासौ भूमिपस्यात्मनोपि स्वस्थावस्थित श तनोति ॥

Colopnon : इत्यकलकस्वामि निरूपित प्रायश्चित्त समाप्तम्। मिती वि संवत् १६७६ श्रावण शुक्ला चतुर्थी लिखित जयपुरे प० मूल चन्द्रेण समाप्त. प्रायश्चित्तो ग्रथ. अकलकविरचित.।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६४।
देखे— (२) जि० र० को०, पृ० २७६।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १८०।
(४) रा सू II, पृ ८७२।
(५) रा सू III, पृ १८६।
(६) Catg of Skt & Pkt Ms, P 673

३२२. पुण्य पचीसी

Opening प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्रीसिद्ध नमीजे।
आचारज उवझाय तासु पदवंदन कीजे॥

Closing : सत्रह से तेतीसके उत्तम फागुणमास।
आदि पक्ष नमिभावसो कहै भगोती दास॥

Colophon इति पुण्य पचीसी।

३२३ पुरुषार्थ सिद्धयुपाय

Opening परमपुरुष निज अर्थ को साधि भए गुणवृंद।
आनंदामृत चंद को वंदत हूँ सुषकंद॥

Closing अठारह से ऊपरे संवत् सत्ताईस।
मास मागिसररतिससिर सुदि दोयज रजनीस॥

Colophon : इति श्री पुरुषार्थसिद्धयुपाय।

३२४. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय

Opening देखें—क्र० ३२३।

Closing : अठारह से ऊपरे संवत् है वीस मास।
मार्गसिर शिशिर रितु, सुदी है जरनीस॥

Colophon : इति श्री अमृतचन्द्र सूरि कृत पुरुषार्थसिद्धयुपाय सम्पूर्णम्। इदं पुस्तक लिखत हरचंदराम श्रवक पल्लीवार गोटि गुजरात कास्यप गोत्र तस्य तनय रामदयाल निविसते कान्यकुब्जे मिति वैशाखमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे दशम्या संवत् विक्रमादित्ये १६४७॥

विशेष— इसके आवरण (कूट) पर एक स्टीकर चिपका हुआ है

जिसपर " पुरुषार्थ सिद्धोपाय बाबू सीरी असदास " हिन्दी एव अग्रेजी दोनो भाषाओ मे लिखा हुआ है। जिसका ग्रन्थ की प्रशस्ति से कोई सम्बन्ध नही प्रतीत होता, अत यह क्या है ? समझना कठिन है।

३२५. रत्नकरण्डश्रावकाचार सूत्री

Opening -
नम श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने ।
सालोकाना त्रिलोकाना यद्विद्यादपर्णायते ॥

Closing :
सुखयति सुखभूमि कामिन कामिनीव,
सुतमिव जननी मा शुद्धशीलाभुनक्तु ।
कुलमिव गुणभूषण कन्यका सपुनीतात्,
जिनपतिपदपद्म प्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मी ॥

Colophon : इति श्री समतभद्रस्वामि विरचितोपासकाध्ययने पचम परिच्छेद समाप्त ।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५ ।
जि० र० को०, पृ० ३२६ ।
प्र० जै० सा०, पृ० २०८ ।
आ० सू०, पृ० १२० ।
रा० सू० II, पृ० १६८ ।
रा० सू० III, पृ० ३४ ।
Catg of Skt & Pkt. Ms., P 685

३२६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening : इहा इस ग्रन्थ के आदि मे स्याद्वाद विद्याके परमेश्वर परम निर्ग्रंथ वीतरागी श्री समन्तभद्रस्वामी जगतके भव्यनि के परमोपकार के अर्थि ।

Closnig :
हरि अनीति कुमरण हरो, करो ।
मोक्ष निति भूषित करो, शास्त्र जु रत्नकरड ॥

Colophon : इति श्री स्वामी समन्तभद्र विरचित रत्नकरड श्रावकाचार की देशभाषामय वचनिका समाप्ता। इस प्रकार मूलग्रन्थ के अर्थ का प्रसादते अपने हस्त ते लिखा। सवत् १६२६ श्रावण शुक्ल चतुर्दश्यां शनिवासरे। श्लोक अनुष्टुप १६०० हजार ग्रन्थ सपूर्ण लिखा।

३२७ रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening　　वृषभ आदि जिन सन्मतिपार ।
शारद गुरुकूं नमि सुखकार ॥
मूल समन्तभद्र मुनिराज ।
वृत्ति करी प्रभेन्दु यतिराज ।

Closing　　टीका रमणी देखिकरि सम्कृत करि अभिराम ।
कल्पित किंचित् नही लिखी, रची तासको दाम ॥

Colophon　　इति रत्नकरड वचनिका सम्पूर्णम् ।

३२८ रत्नकरण्ड विषम पद

Opening　　रत्नकरडक विषमपदव्याख्यान कथ्यते ॥
श्री वर्धमानाय ॥ अतिम तीर्थङ्कराय ॥

Closing　　जिनोक्तपदपदार्थप्रेक्षमशेलेनि ॥

Colophon　　इति रत्नकरडक विषमपदव्याख्यान समाप्तम् ।

विशेष　समत भद्राचार्य के रत्नकरडक के विषम पदो का व्याख्यान है । आचार विषयक होने पर भी पुस्तक की प्रकृति कोशात्मक है ।

३२९ रत्नमाला

Opening　　सर्वज्ञ सर्ववागीश वीर मारमदापहम् ।
प्रणमामि महामोह-शान्तये मुक्तिताप्तये ॥

Closing　　यो नित्य पठति श्रीमान् रत्नमालामिमा परा ।
समुद्धचरणो नून शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥

Colophon　　इति रत्नमाला सपूर्णम् ।

विशेष—छपी पुस्तक मे ६७ श्लोक हैं, जबकि उक्त प्रति मे ६८ हैं ।
देखे—जि० र० को०, पृ० ३२७ ।
Catg of Skt & Pkt. Ms , P 686

३३०. रत्नमाला

Opening　　सर्वज्ञ सर्ववागीश वीर मारमदापह ।
प्रणमामि महामोह शन्तयेम मुक्ततापये ॥१॥

Closing : योनित्यम्पठति श्रीमान् रत्नमालामिमा पराम् ।
सशुद्धभावनोनून शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥६७॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्र स्वामि शिष्यशिव कोटयाचार्य्य विरचिता-रत्नमाला समाप्ता ॥ शुभभूयात् ।

३३१: राजवार्त्तिक

Opening : प्रणम्यसर्वविज्ञानमहास्पदमुसाश्रेय ॥
मिथ्यॆतकल्मपचीर वक्ष्ये तत्वार्थवर्त्तिकम् ॥१॥

Closing : प्रत्यक्ष तभगवतानर्हतातैश्च माषितम् ॥
गुह्यतेस्तीत्यत प्राज्ञैर्न्नधपपरीक्षया ॥३२ ॥

Colophon : इति तत्त्वार्थवार्त्तिके व्याख्यानालकारे दशमो ध्याय ॥ समाप्त ॥

देखें —जि० र० को, पृ० १५६ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 869

३३२ रूपचन्द्र शतक

Opening : अपनौ पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भवबन भायकहार हे, शिवपुर सुधि विसराय ॥

Closing : रूपचद सद्गुरुनिकी जतु बलिहारी जाइ ।
आपुनबै सिवपुर गए, भव्यनु पथ दिखाइ ॥

Colophon : इति श्री पांडे रूपचद शतक समाप्तम् ।

३३३. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : यज्जानन्नपि बुद्धिमानपि गुरु शक्तो न वक्तु गिरा,
प्रोक्त चेन्न तथापि चेतसि नृणां सम्मातिचाकाशवत् ।
यत्रस्वानुभवस्थितेपि विरला लक्ष्य लभन्ते चिरात्,
तन्मोक्षैकनिबन्धन विजयते चितद्भुतस्वकृतम् ॥१॥

Closing : तत्त्वज्ञानसुधार्णवं लहरिभिर्दूरं समुल्लासयन्,
तृच्छायत्र विचित्रचित्तकमले संकोचमुद्रां दधत् ।
सद्विद्याश्रितभव्यकैरवकुले कुर्वन्विकाशश्रियं,
योगीन्द्रोदयभूधरेविजयते सद्बोधचन्द्रोदय ॥५०॥

Colophon : इति श्री सद्बोधचन्द्रोदय समाप्तम् ।
विशेष–जिनरत्नकोष पृ० ४१२ पर 'पद्नानन्द' कृत सद्बोधचन्द्रोदय का उल्लेख है, जिसमे ६० संस्कृत श्लोक हैं। किन्तु इसमें मात्र ५० श्लोक हैं।
देखें—जि० र० को०, पृ० ४१२।
Catg. of Skt & pkt. Ms P 700

३३४. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : देखें– क्र० ३३३ ।
Closing : देखें—क्र० ३३३ ।
Colophon : इति पद्मनन्दिविरचितसद्बोधचन्द्रोदय समाप्त ।

३३५. सज्जनचित्त बल्लभ

Opening : नत्वा वीरजिनं जगत्त्रयगुरुं मुक्तिश्रियो वल्लभं,
पुष्पेषुक्षीयनीतबाणनिवहं संसारदुखापहम् ।
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजननं ग्रंथं समासादहं
नाम्ना सज्जनचित्तवल्लभमिमं शृण्वतु संतो जना ॥

Closing : वृत्तं विंशति संसारविच्छित्तये ॥

Colophon : इति सज्जनचित्तवल्लभ समाप्तम् ।
देखे– दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६७ ।
जि० र० को, पृ ४११ ।
प्र० जैं० सा०, पृ० २३० ।
रा० सू० II, पृ० ३६०, ३७३ ३८६ ।
जै ग्र प्र स १ पृ ६१, ७२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 700.

३३६. सज्जनचित्त बल्लभ

Opening : यहां प्रथम ही टीकाकार अपने इष्टदेवगुरुशास्त्रदेव कौं नमस्काररूप मंगलाचरण करै है ।

Closing हरगुलाल कहै, जोलौं जगजालदहै ।
और शिवनाही लहै तोलौ तू ही स्वामी हमार हैं ।।

Colophon इति सज्जनचित्तवल्लभ नाम ग्रन्थ सपूर्णम् सवत् १९५३ ।

३३७. सबोध पचास्तिका

Opening : णमिऊण अरहंचरण वंदे युगु सिद्ध तिहुयणे सार ।
आयरियउज्झायाण साहू वंदामि तिविहेण ।।

Closing . सावणमासम्मि कया गाहाबधेण विरइय सुणह ।
कहिय समुच्चय छपयडिज्जत च सुहवोह ।।५०।।

Colophon : इति सबोध पचास्तिका समाप्तम् ।
देखें,—जि० र० को०, पृ० ४२२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 704

३३८. संबोध पचास्तिका सटीक

Opening : देखें—क्र० ३३७ ।

Closing : अस्या सवोधपचासिकाया बहवो अर्थो भवति परन्तु मया सपेक्षार्थे कथिता च पुन सुख स्वात्मोत्पन्नसुख बोधि प्राप्त्यर्थ मया कृता ।

Colophn : इति सबोधपचासिका धर्माविकाशिकशास्त्र समाप्तम् । श्री गौतमस्वामीविरचित शास्त्र समाप्तम् । सम्वत् १७९३ वर्षे शाके १६५८ प्रवर्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे षष्ठी तिथौ ।

सुभमिती पौषकृष्णा ७ मंगलवार श्रीवीर सवत् २४६२ वि० स० १९९२ के दिन यह प्रतिलिपि लिखकर तैयार हुई । ह० रोशनलाल जैन ।

३३९. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : नम समयसाराय स्वानुभूत्या चकाशते ।
चित्स्वभावायभावाय सर्वभावांतरच्छिदे ॥

Closing : स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्त्वै, व्याख्याकृतेय समयस्य शब्दै ।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति, कर्त्तव्यमेवामृतचन्द्रसूरि ॥

Colophon : इति समयसारव्याख्यायामात्मख्यातिनाम्नी वृत्ति समाप्ता । समाप्तश्चसमयसारव्याख्याभ्यास: । श्रीरस्तु लेखकपाठकयो मंगलमस्तु । ओंकाराय नमो नम । परमात्मविनाशिने नमोनम । ओं नम सिद्धाय ।

देखे—दि जि ग्र र., पृ. ६६ ।
जि र को., पृ ४१८ ।
प्र. जै सा, पृ २३५ ।
आ सू पृ १३५ ।
रा सू II, पृ. १८६, ३८६ ।
र सू III, पृ ४३ ।
Catg of Skt. & Pkt Ms, P 703

३४०. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : देखे—क्र० ३३६ ।

Closing : देखे—क्र० ३३६ ।

Colophon : इत्यात्मख्यातिनामा समयसार व्याख्या समाप्ता ।

विशेष—यह ग्रन्थ करीब १६०० विक्रम सवत् का है ।

३४१. समयसार सटीक

Opening : देखें—क्र० ३३६ ।

Closing : अनुपलब्ध ।

३४२. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जगतिमिर हरन खगतुरग लखन पगशिव-
मगदरसी ।
निरखत नयन भविक जल बरषत हरषत अमितभविक-
जन सरसी ॥

Closing : समैसार आतमवस्त, नाटकभाव अनत।
मोहै आगम नामपै, परमारथ बिरतत ॥

Colophon : इति श्री परमागम समैसार (समयसार) नाटकनाम सिद्धान्त सम्पूर्णं।

संवत् १७३५ वर्षे माघसुदि ८ बृहस्पतिवारे साहिजहानाबाद-मध्ये पातिसाह श्री अवरंगजेबराज्ये। श्रीमालज्ञाति शृंगार।
अज्ञानभावान्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीन लिखत मयात्र।
तत्सर्व्वमार्यैपरिशोधनाय, कोप न कुर्यात खलु लेखकस्य ॥

३४३. समयसार नाटक

Opening : देखे— क्र० ३४२।

Closing : देखे—क्र० ३४२।

Colophon : इति श्री परमागम नाटक समयसार सिद्धान्त सम्पूर्णम्। लिखत प्रयागमध्ये। संवत् १८२८ वर्षे मिति श्रावण सुदि १२ तिथौ शुक्रवासरे लिखत शुभवेलायां लेखक पाठक चिरजीव आयु। श्रीरस्तु।
ओसवाल ज्ञातीय बैणी प्रसाद जी पुस्तक लिखाया प्रयाग मध्ये सं० १८२८ वर्षे लिखत श्री।

३४४. समयसार नाटक

Opening : देखें—क्रम ३४२।

Closing : देखें—क्र० ३४२।

Colophon इति श्री परमागम समयसार नाटकनाम सिद्धान्त सपूर्णम्। मिति अग्रहण शुक्ल प्रतिपदा बुधवासरे तृतीये प्रहरे पूर्ण किया।

३४५. समयसार नाटक

Opening : देखें०—क्र०, ३४२।

Closing देखें०—क्र०, ३४२।

Colophon . संवत् १७४५ फागुन वदि १० शनिवार को पूरन भया।

३४६. समयसार नाटक सार्थ

Opening : देखे, क्र० ३४२ ।

Closing : देखे, क्र० ३४२ ।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार सिद्धान्त नाटक समाप्त ।

३४७. समयसार नाटक

Opening : देखे, क्र० ३४२ ।

Closing : बानी लीन भयो जगमो ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३४८ समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colophono : इति श्री परमागम समयसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम् । श्लोकसंख्या १७०७ । सन् १८८६ मिती माघ शुक्ल ४ वार रविवार के सपूरन भया । दसखत दुरगाप्रसाद आगेमध्ये महाजन टोली मे ।

३४९. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colohpon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्ण । संवत् १८६२ । वैशाख मास कृष्णपक्ष तिथि मार्वे (सप्तमी) शनिवार दिन गौरीशंकर अग्रवाल जैन धर्म प्रतिपालक ' लिखी पठनार्थं जैनधरम पाल- नहार श्री मगल ददातु ।

३५०. समयसार नाटक

Opening : देखे, क्र० ३४२।
Closing ; देखें क्र० ३४२।
Colophon , इति श्री समयसार नाटक सिद्धान्त समाप्त । सवत् १७२५ अ सु १० म ।

३५१. समयसार नाटक

Opening · दलन नरकपद क्षयकरन, अतट भव जलतरन।
धरसबल मदन वनहर दहन, जय जय परम अभय करन ॥
Closing : देखे क. ३४२।
Colophon । इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त बनारसीदासकृतम्। लिखित नित्यानदब्राह्मणेन लिखायत श्रावग जीवसुखराम उभयोमगल ददातु। सवत् १८७६ वर्षे भाद्रपद शुक्ला ५ बुधवासरे समाप्ता.। शुभ भूयात्।

३५२ सम्यक कौमुदी

Opening · श्री वर्द्धमानस्य जिनदेव जगद्गुरुम्।
वक्षेह कौमुदी नृणा सम्यक्तगुण हेतवे ॥ १ ॥
Closing : अर्हद्दासेन राजा हृष्टस्तस्य पुण्य कृता प्रशसनश्च ॥
दख—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७१।
(२) जि० र० को०, पृ० ४२४।
(३) प्र जै सा पृ २३६।
(४) आ० सू०, पृ० १३२, १३३।
(५) रा० सू० III, पृ० ८१।

३५३ समाधिमरण

Opening : अथ अपने इष्टदेव को नमस्कार करि अतिम समाधिमरण ताका सरूप वरनन करिए है। सो हे भव्य तुम सुणो। सोही अब लक्षण वरणन करि है। सो समाधिनाम नि कषाय का है, शान्ति प्रणामों (परिणामो) का है।

Closing ताका सुख की महिमा वचन अगोचर है।

Colophon इति श्री समाधिमरण सरूप सम्पूर्णम। सवत् १८६२ आसोज सुदि ५ गुरुवारे लिखत महात्मा बकसराम सवाई जयपुर मध्ये। श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय।

३५४. समाधितन्त्र

Opening . जिनान् प्रणम्याखिलकर्ममुक्तान् गुरून् यदाचारपरान् तथैव।
समाधितन्त्रस्य करोमि बालाविबोधन भव्यविबोधनाय॥

Closing . इण ही आठ प्रकार का पृथक्-२ जघन्य अतरा-ममय १ जाणिवा।

Colophon इति समाधितत्रसूत्र बालबोध समाप्ता। ग्रन्थमख्या ४८००, सवत् १८७४ शाके १७३९। आषाढ शुक्ल १ रवि पुस्तकरघुनाथ-शर्मणा लेषि पाठार्थं रत्नचदस्य। शुभ भूयात्।

देखें, जि० र० को०, पृ० ४२१।
Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 703

३५५ समाधितन्त्र सटीक

Opneing : जिनान् प्रणम्याखिल कर्ममुक्तान् गुरून् सदाचार
परात् तथैव।
समाधितत्रस्य करोमि बालावबोधन भव्य
विबोधनाय॥

Closing . अर्घोदय सुकृतधी कृत वा ममाधी॥

Colophon . बालबोध समाधितत्रसूत्रे भव्यप्रबोधनाधिकारे आत्मर-सप्रकाशे धर्माधिकार सम्पूर्णम्। सवत् १७८८ प्रवर्तमाने फागुण (फाल्गुन) वदी ११ तिथौ मुनि फतेसागरेण लिपि चक्रे।

३५६. समाधितन्त्र

Opening : देखें—क्र० ३५४।

Closing : देखे—क्र० ३५४।

Colophon नहीं है।

३५७ समाधितन्त्र वचनिका

Opening   इहाँ संस्कृत में प्रवीण नाहीं अर अर्थ सीखने के रोचक अैसे केतेकसुबुद्धी मूलग्रंथ का प्रयोजन ।

Closing .   औरनिसूँ भी मेरी सोधिव निमित्त प्रार्थना है सो देखि सोधि लीजियो ।

Colophon ·   इति समाधितंत्र वचनिका माणिकचंद कृत संपूर्णम् । संवत् १९३८ का मिती माघ शुक्ल पडिवा शुक्रवार ।

३५८. समाधिशतक

Opening   येनात्माबुद्धात्मैव परत्वेनैवचापरं ।।
अक्षयानंतबोधाय तस्मै सिद्धात्मने नम ।।१।।

Closing ·   ज्योतिर्मय सुखमुपैति परात्मतिष्ट ।।
स्तन्मार्गमेतदधिगम्यसमाधितंत्रम् ।। १०५ ।।

Colophon :   इति श्री समाधिशतक समाप्तम् ।। शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । संवत् १८१४ । आश्विनकृष्ण ७ गुरुवासरे पुस्तकदमिद संपूर्णम् ।।

देखें—जि० र० को०, पृ०४२१

३५९. सम्मेदशिखर महात्म्य

Opening ·   पंच परमगुरु को नमो दोकर सीस नवाय ।
श्रीजिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ।।

Closing :   रेवा सहर मनोग, बसै श्रावग भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्य योग, तृतीय पहर पूरन भयौ ।।

Colophon ·   इति श्री संमेदशिखरमहात्मे लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति छप्पय लालचंद विरचिते सुवरकूटवर्णनो नाम एकविंशति-म सर्ग. ।।२१।। समाप्त भया । इति श्री संवेदशिखर महात्म जी संपूर्णम् । लिखित गुमानचंद अगरवाले जैनी कानसीलगोत्रस्य पुत्र

३५९   बाबू मुन्नीलाल जीके। श्लोक ॥ १२६० ॥ मिति जेठ वदी ५ रोज सनीचर। सवत् १९३३ साल के सपूर्ण भया। पत्र चौंतीस।

३६०. सप्तपचाम दास्त्रविका

Opening : अभिवन्द्य जिनान् वीरान् सज्ञानादि गुणात्मकान्।
कर्णाटभाषाया वक्ष्ये जकामास्रव सन्मते ॥

Closing : ध्यानमुम मेण्नगे दिसदुदये गेय्यलिकर कृतपराध क्षतुमर्हन्ति सत ।

Colophon : मन्मथ नाम सवत्सरद श्रावण बहुल विदिगे बुधवारदल्लु मगलम्।

३६१. सत्वत्रिभगी

Opening : पणमीय मुरेंद्रपूजिय पयकमल वड्ढमाडममलगुण।
पचामतावण वोछेह सुणुह भवियजणा ॥१॥

Closing : पचामवेहि विरमण पचिंदिय णिगहोकसायजया ॥
तिहि दडेहि यविरदिस तारस सयमा भणियो ॥
तिथयरातपि यराहट्ठधर चकायअधकाय ॥
देवायभोगभूमिआहारा अत्थिणत्थिणिहारा ॥ १६४ ॥

Colophon : इत्यास्रवबधउदयोदीरसत्वत्रिभगीमूल समाप्त उडुयपुर प्रात दुर्ग ग्रामस्थ रामकृष्ण शास्त्रि तनयेन रगनाथ भट्टारव्येन लिखित्वा परिधाविवत्सरे वैशाख मासी शुक्लपक्षे पौर्णिम्या समापितस्यास्य ग्रथस्य शुभमस्तु।

३६२ सत्यशासन परीक्षा

Opening : विद्यानन्दाधिप स्वामी विद्वद्देवो जिनेश्वर।
यो लोकैकहितस्तस्मै नमस्तात्स्वात्मलब्धये ॥

Closing : तदेवमनेकबाधक सद्भावात् भाद्रप्राभाकरैरिष्टम्। भद्र भूयात्।

Colophon : नही है।

देखें—जि० र० को, पृ० ४१२।

३६३. सत्यशासन परीक्षा

Opening : देखें—क्र० ३६२ ।

Colophon : यतो युगपद्भिन्नदेशस्वाधारवृतित्वे सत्येकत्व तस्यासिद्ध-त्स्वाधारावृत्तित्वेमत्येकत्व तस्य सिद्धयत्स्वाधारातरालेस्तित्व माधयेदिति तदेवमनेकबाधकसद्भावाद्भातृप्राभाकरैरिष्टम् ॥

३६४. सागारधर्मामृत (स्वोपज्ञटीका)

Opening : श्री वर्द्धमाननमाम्य मदबुद्धि प्रबुद्धये ।
धर्मामृतोक्त सागार धर्मटीका करोम्यहम् ॥

Closing : यात्तिष्टशासन जिनपते छिदानमतस्तमो,
यावच्चार्कनिशाकरौ प्रकुरुत पुसां दृशामुत्सव ।
तावत्तिष्ठतु धर्मस्तरिभिरिय व्याख्यायमाना निश,
भव्याना पुग्तोत्रदेशविरता वार प्रवोधोद्धुर ॥

Colophon इत्याशाधर विरचिता स्वोपज्ञधर्मामृतसागारधर्मटीकाया भव्य-कुमुदचद्रिका नाम्नी समाप्ता ।

अनुपस्यां दसापचशतायाणिसता मता सहस्राण्यस्य चत्वारि ग्रथस्य प्रमिति किल । मिति मार्गशिर (शीर्ष) कृष्णा ४ रविवासरे लिखत रामगोपाल ब्राह्मण वासी मौजपुरमध्ये अलवर का राजमे ।

देखें– जि० र० को०, पृ० १६५ ।

Catg. of skt & pkt. Ms., P. 707.

३६५. सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भते । इरिया वहियाए विराहणाए अणागुत्ते ' ' '' ।

Closing : गुरव· पातु नो नित्य ज्ञातदर्शननायका· ।
चारित्रार्णवगंभीरा मोक्षमार्गोपदेशका ॥

Colophon . इति सामयिक सपूर्णम् ।

३६६. सामायिक

Opening : सिद्धश्चाष्ट गुणान्भक्त्या सिद्धान् प्रमणमत सदा ।
सिद्धकार्या शिव प्राप्ता सिद्धि ददतु नोहिते ॥

Closing : एव सामयिक सम्यक् सामायिकमखण्डितम् ।
वर्तता मुक्तिमानेन वसीभूतमिद मम ॥ १२ ॥

Colophon : इति श्रीलघु सामायिक समाप्तम् ।

३६७. सामायिक

Opening सिद्धिवस्तुवचोभक्त्या सिद्धान् प्रणमते सदा ।
सिद्धिकार्यासिवप्रेदा सिद्ध दद्यतु मोव्ययम् ॥

Closing भो सामायक मुक्ति वधू के वशीभूत ऐसे तुम्हारे अर्थ हमारा नमस्कार होहु ।

Colophon : इति सामायक सम्पूणम् ।

३६८. सामायिक

Opening : अर्हन्त भगवान की वाणी की भक्ति करि सदाकाल सिद्धभगवान कू नमस्कार करते ।

Closing : जलयी वाकी मख्या । वाजित्र वजामुन वाको मख्या ।
दशोदिशा की सख्या ।

Colophon इति सामायिक सम्पूर्णम् ।

३६९. सामायिक वचनिका

Opening : आदि रिषभ सनमति चरम, तीर्थंकर चउवीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि, नमू धारिकरि शीश ॥

Closing : ऐसें सामायिक पठ्यो सारजानि मुनि वृ द ।
धर्मराज मति अल्प फुनि भाषामय जयचद ॥

Colophon · इति सामायिक वचनिका सपूर्णम् । लिखितमिद [पुस्तक श्रावक नौ (नव) नदरामेण । पुत्र नान्हूँ रामजी खीदूका का सवाई जयपुर मे मिति आषाढ सुदी १० सवत् १८७० का ।

३७०. सामायिक वचनिका

Opening । देखे—क्र० ३६९ ।

Closing । देखे,—क्र० ३६९ ।

Colopnon इति सामायिक वचनिका सपूर्णम् ।

३७१. शासन प्रभावना

Opening निबद्धमुख्यमंगलकरणानतर परापरगुरून् शास्त्राणिपूर्वाचार्यविरचितग्रथा उपदेशा गुर्वाद्युक्तरहस्य प्रकाशका व्यवहार कर्मप्रयाग जिनप्रतिष्ठाया शास्त्राणि चापदशाश्च व्यवहारश्च तेषा दृष्टि, सम्यक् प्रतिपत्तिस्तथा ।

Closing प्रकृत्या महादरण्वजिनेन्द्रप्रमाणशास्त्र जैनेन्द्रव्याकरण च पडित महावीरान् जयवमनामिमालवाधिपति पडितदेवचद्रादीन् श्लोकेनोपस्तुत वादीप्रविशालकीर्त्यादय उयति स्म बालसरस्वतीमहाकविमदनादय सहृदयविदाधेषुमध्ये भट्टारक विनयचद्रादय अर्हत्प्रवचन मोक्षमार्गे स्वयकृतनिबधेन स्फुट प्रतिभाम सिद्धिशब्दोकचिद्दुसर्गप्रातेषु यस्य तत् जिनागमनिर्यासभूत आराधनामारभूपालचतुर्विंशतिस्तवनाद्यर्थं प्रतिष्ठाचार्य सबधिन वसुनदिसैद्धान्त्याद्याचार्यविरचितानि स्पष्टीकृत्य पंचकल्याणा (का) दिविधानकथनात् शासनप्रभावना अभ्यर्चनम् ।

३७२. शास्त्र-सार-समुच्चय

Opening · श्री विबुधबधजिनरकेवलिनिस्सुखदसिद्धपरमेपितगलम् ।
भावजजयसाधुगत भविसिपोडेवपट्टपडवेनक्षयसुखमम् ।। १ ।।

Closing : अनुपलब्ध ।
देखे—जि० र० को०, पृ० ३८३ ।

३७३. सिद्धान्तागमप्रशस्ति

Opening : मिद्धमणतमणिदिय मणुवममप्पुत्थ सोक्खमणवज्ज ।
केवल पहोह णिज्जियदुण्णय तिमिर जिण णमह ॥१॥

Closing : सर्वज्ञ प्रतिपादितार्थ गणभृत्सूत्रानुटीकामिमा।
यभ्यस्यन्ति बहुश्रुता श्रुतगुरु सपूज्य वीर प्रभु ॥
ते नित्योज्वल पद्मसेन परम श्री देवसेनार्चिता ।
भासन्ते रविचद्र भामिसुतग श्री पाल सत्यकीर्तिय ॥३६॥

Colophon **These two Prashastees of Shri** धवल सिद्धान्त **and** जयधवल सिद्धान्त **are personally Copied from** श्री सिद्धान्त शास्त्र **at** गुरुवस्ति **in moodbidri for the sake of the, Central Jain Oriental Library alias** श्री सिद्धान्त भवन **at Arrah, on the 30 th August 1912 at 10 30 am to 12 30 am**

By the most humble
जिनवाणी सेवक
तात्या नेमिनाथ पाँगल
बार्शी–टौन

३७४. सिद्धान्तसार

Opening : जीवगुणट्ठाणसण्णापज्जत्ती पाणमग्गणणवूणे ॥
मिद्धतसारमिणमो भजामि सिद्धणमूसित्ता ॥ १ ॥

Closing : सिद्दन्तसारवरसुत्तगुत्ता साहुतु साहू मयमोहचता ।
पूरतु हीण जिणणाहभत्ता वीरायचित्तासीवमग्ग जुत्ता ॥ ॥

Colophono , सिद्धान्त सारसमाप्त । श्रीवर्धमानाय नम । हृयेन जिनेन्द्रदेवाचार्यनिन्दगता ॥

— सपूर्ण —

देखें—जि० र० को०, पृ० ४४० ।
Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 709
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 312

३७५. सिद्धान्तसार दीपक

Opening श्रीमत त्रिजगन्नाथ सर्वज्ञसर्वदाशिनम् ।
सर्वयोगीन्द्रवद्या ह्रि वदे विश्वार्थ दीपकम् ।। १ ।।

Closing . ग्रथेऽस्मिन् पचचत्वारिंशच्छतश्लोकपिंडिता ।
षोडशाग्र बुधैर्ज्ञेया सिद्धांतसार शालिनि ।। ११६ ।

Colohpon : इति श्री सिद्धातसारदीपकमहाग्रथमपूर्ण समाप्तम् । अशुभ-
सवत्सरे सवत् १८३० वर्षे मासोतममासे कृष्णपक्षे ।

देखे—जि० र० को , पृ ४४० ।
Catg of Skt & Pkt. Ms , P 702.
Catg of Skt & Pkt Ms., P 320.

३७६. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : नही है ।
Closing : नही है ।

३७७ सिद्धिविनिश्चय टीका

Opening : अकलक जिनभक्त्या गुरुदेवी सरस्वतीम् ।
नत्वा टीका प्रवक्ष्यामि शुद्धा सिद्धि विनिश्चये ।।

Closing . यत् एव तस्मात् नैरात्म्य सकलशून्यत्व बहिरन्तर्वा इत्येव
प्रनयता इत्यादिना सम्बन्ध स्याद्वादमन्त्रेण तदप्रतिपत्ते इतिभाव ।

Colophon . इति श्री रविभद्रपादोपजीवि अनन्तवीर्य विरचिताया सिद्धि-
विनिश्चय टीकाया प्रत्यक्षसिद्धिः प्रथम प्रस्ताव ।

देखे—जि० र० को, क्र० ४४१ ।

३७८. श्लोकवार्तिक

Opening श्री वर्द्धमानमाध्याय घाति सघातघातनम् ।
विद्यास्पद प्रवक्ष्यामि तत्वार्थश्लोकवार्तिकम् ।।

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे—जि र को, पृ १५६ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 698

३७६ श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवे प्रमादजनिता प्रचुराप्तदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणत प्रलय प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममल मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing : अरकर पयत्थ हीन मत्ता हीन च जमए भाणिय ।
त खु मउणाणदेवयमवृभविदु खु खु वदितु ॥

Colophon : इति श्रावक प्रतिक्रमण सम्पूर्णम् ।

३८०. श्रावकाचार

Opening : प्रणम्य त्रिजगत्कीर्ति जिनेन्द्र गुणभूषणम् ।
सक्षेपेणैव सवक्ष्ये धर्मं सागारगोचरम् ॥

Closing : श्रीमद्वीरजिनेशपादकमले चेत षर्डाघ्र सदा,
हेयादेयविचारबोधनिपुणा बुद्धिश्च यस्यात्मनि ।
दान श्रीकरकुड्मलेगुणततिर्देहोशिरस्युन्नती,
रत्नाना त्रितय हृदि स्थितमसौ नेमिश्चिर नदतु ॥

Colophon : इति श्रीमद्गुण भूषणाचार्य विरचिते भव्यजनवल्लभाभिदान श्रावकाचारो साधुनेमिदेवनामाङ्किते सम्यक्त्वचारित्रवर्णनम् तृतीयोद्देशसमाप्त । ग० रत्नेन लिखितम् । श्री सवत् १५२६ वर्षे चैत्र-सुदी ५ शनिदिने ।

जैनसिद्धान्त भवन, आरा मे रोशनलाल लेखक द्वारा लिखी । शुभ सवत् १९९२ वर्षे आषाढ शुक्ला १५ मगलवासरे ।

दखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४२, ७७ ।
रा० सू० III, पृ० ३६ ।

३८१. श्रावकाचार

Opening श्रीमज्जिनेन्द्रचन्द्रस्य सद्वाक्चन्द्रिकागिनाम् ।।
हृषीकदुष्टकर्माष्टघर्मसंतापनश्रुभम् ।।१।।
दुराचारचयाक्रान्त दु ख स दोह हानये ।।
अवीजियुपासकाचार चारुमुक्ति सुखप्रदम् ।।२।।

Closing जीवन्त मृतक मन्ये देहिन धर्मवर्जितम् ।।
मतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी भविष्यति ।।१०१।।
शरीरमडन शील स्वर्णखेत्दावह तनो ।।
रागोवक्तस्य ताम्बूल सत्येनैवोज्वल मुखम् ।।१०२।।

Colophon इति श्री पूज्यपाद स्वामि विरचित श्रावकाचार समाप्त ।। शुभंभवतु स १९७६ भादो वदी ३ लिखित पं० मूलचन्द्रेण जयपुरे ।

दखे—जि र को, पृ ३९५। (X)
Catg of Skt & Pkt Ms., P 696.

३८२. श्रावकाचार

Opening राजत केवलज्ञान जुत, परमौदारिक काय ।
निरखि छवि भवि छकत है, पीरस सहज सुभाय ।।

Closing अैसै ताका वचन के अनुसारि देवगुरुधर्म का श्रद्धान करै । इति कुदेवादिक का वर्णन सपूर्ण ।

Colophon इति श्री श्रावकाचार ग्रथ समाप्त । श्रीरस्तु लेखकपाठकयो लिपि कृत पडित शिवलाल नगर भालपुरा मध्ये मिति आषाढ़ वदी ३ भूमि (भौम) वासरे पूर्णीकृत सम्वत् १८८८ का ।

३८३. श्रावकाचार

Opening देखे—क्र० ३८२ ।

Closing . सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताने तू अगीकार कर और ताके अनुसार देव गुरु धर्म का सरूप अगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon · इति कुदेवादिक का वर्णन पूर्ण । इति श्री श्रावकाचार ग्रन्थ पूर्ण । संवत् १८५६ फाल्गुन शुक्ल अष्टमी ।

३८४. श्रुतस्कन्ध

Opening : बूहलियलालहर माणुस जम्मस्स याणियदिन्न ।
जीवा जेहि णाणाया ना कुण नारकिया जेहि ।।

Closing : जो पढइ सुणइ गाहा, अथ (अत्थ) जाणेइ कुणइ सद्दहणं ।
आसण्णभव्वजीवो सो पावइ परम णिव्वाण ।।

इति ब्रह्महेमचन्द्र विरचित श्रुत स्कंध समाप्तम् । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३११ ।
Catg. of Skt. & pkt Ms, P 697

३८५. श्रुसागरी टीका

Opening : अथ श्रुतसागरी टीका तत्त्वार्थसूत्रस्यद शास्त्रस्य प्रारम्भते ।।
सिद्धोमास्वामिपूज्य जिनवरवृषभ वीरमुत्तीरमान
श्रीमत पूज्यपाद गुणनिधिमर्थियन्सत्प्रभाचंद्रमिदु ।।
श्री विद्यानदधीशगनम्लमकल कार्यम नम्यरम्यम्
वक्ष्ये तत्त्वार्थवृत्ति निजविभवतयाहश्रुतादन्वदाख्य ।।१।।

Closing श्रीवर्द्धमानमकलकसमतभद्र श्रीपूज्यपादसदुमापति
पूज्यपादम् ।।
विधा दिनदि गुणरत्नमुनीन्द्रमत्य भक्त्या नमामि
परित श्रुतसागरादयै ।।१।।

Colophon इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याविनोदनोदितप्रमोदपीयूष रसपान पावन-
मनिसमासरल राज मतिसागर यतिराज राजिनाथ-समर्थेन तर्कव्याकरण
छदोलकारसाहित्यादिशास्त्र निशितमतिना यतिनादवेन्द्र कोत्ति भट्टारक-
प्रशिष्येण सकलविद्वज्जनविहितचरणसेवस्य श्री विधानदिदेवस्य सघा-
यितमिथ्यामत ? देण श्रुतसागरण सूरिणा विरचितायां श्लोकवार्त्तिक
राजवार्त्तिक सर्वार्थसिद्धि न्याय कुमुदचन्द्रोदय प्रमेयकमलमार्तण्ड
प्रचण्डाप्रर्वसहस्रीषृमुख ग्रन्थ सदर्भ निर्भरावलोकनबुद्धिविराजितायां
तत्त्वार्थटीकायां दशमो ऽध्याय ।। इति तत्त्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका
समाप्ता चक्षुषत्कमिते वर्षे द्विमसे माशते माघेवदि पक्षे पचम्यां
सवत्सरे ।।१।।
सहारणपुरे मध्ये लिषित मदबुद्धिना ।
भव्यानां पठनार्थाय मीयारामकर शुभम् ।।२।।

देखें—जि० र० को०, पृ० १५६ (१५) ।

३८६. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening . आनियै ।

मनवचनतनत्रय सुद्धकरिकै सदा तिनहि प्रनामियै ॥

Closing संवत् अष्टादश शतक, फिर ऊपरि अडतीस ।
सावन सुदि एकादशी, अर्धनिश पूरणकीन ॥

Colophon इति श्री सुदृष्टि तरंगिणी नाममध्ये ब्यालीसमी संधि संपूर्णम् ।
इति श्री सुदृष्टि तरंगिणी नाम ग्रन्थ सम्पूर्णम् ।
धर्मकरत संसारसुख, धर्मकरत निर्वान ।
धर्मपथ साधन विना, नर तिर्यञ्च समान ॥
शुभं भवतु मंगल दद्यात् । मिती ज्येष्ठ सुदी १० संवत्
१९६१ ।

३८७. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : श्री अरहंतमहंत के, वंदौ जुग पदसार ।
ग्रन्थ सुदृष्टितरंगनी, करौ स्वपर हिदकार ॥

Closing : ऐसें समुद्घातनका शामान्य सरूप कह्या विशेष श्री गोम्मटसार जीतै जानना तहां ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३८८. सुखबोध टीका

Opening : ... न सम्यक्त्वपर्याय उत्पद्यते तदैव मत्यज्ञानश्रुताज्ञानाभावे मतिज्ञान श्रुतज्ञानं चोत्पद्यत इति ... ।

Closing : .... संख्येयगुणा पुष्करद्वीपसिद्धाः संख्येयगुणा एव कालादिविभागेऽल्पबहुत्वमागमाद्बोद्धव्यम् ।

Colophon ' अथप्रशस्ती । शुद्धोद्धतप प्रभाव पवित्रपादपद्मराज किंजल्प-पुंजस्यमन. कोणैकदेशकोडीकृताखिलशास्त्रार्थातरस्य पंडित श्री बघु-देवस्यगुण प्रबन्धानुस्मरणजातानुग्रहेण प्रमाणनमनिर्णीताखिलपदार्थप्रपचेन श्रीमद्भजबलभीमभूपालमार्त्तंडसभायामनेकधा लब्धतर्कचक्राकल्केनावलव-रादीनामात्मनश्चोपकारार्थेन पांडित्यमदविलासात्सुखबोधामिधां वृत्ति कृता महाभट्टारकेन कुंभनगरवास्तव्येन पंडित श्री योगदेवेन प्रकटयतु सशोध्य बुधायदत्तायुक्तमुक्त किञ्चिन्मति विभ्रमभवादिति । प्रचंड पंडित-मंडलीमौनदीक्षागुरार्यो योगदेव विदुष कृती सुखबोधतत्वार्थवृत्तौ दशम पाद समाप्त ।

जैन सिद्धान्त भवन आरा मे शुभमिति आषाढ शुक्ल ५ वृहस्पतिवार स० १९९२ वी० स० २४६१ । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १५६ (१३) ।

३८९ स्वस्वरूप स्वानुभव सूचक (सचित्र)

Opening अथ अनादि अनंत जिनेश्वरसुर मरस सुंदर बोध मयिपर । परम मंगलदायक हैं सही नमत्पाप कारण शुभ मही ।।

Colsing बहुत क्या कहूँ ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नये कहू वान है न होवेगा ।

Colophon । इति श्री क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास रचित स्वरूपस्वानु-भव सूचक समाप्त । स० १९४६ आ० शु० १० ।

विशेष—(आठो कर्मो की प्रकृतियो को आठ चित्रो द्वारा दिखाया गया है) ।

३९०. स्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञान

Opening देखे—क्रम ३८९ ।

Closing . मेरे अर तेरे बीच मे कर्म है, सो न मेरे न तेरे कर्म कर्म ही मे निश्चय है ।

Colophon । नही है ।

विशेश—(१) क्र० ३८९ की ही प्रतिलिपि है ।
(२) मात्र नामकरण मे थोडा सा अन्तर है ।
(३) पेज न० २, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३ और १४ मे बने हुए है ।

३६१. स्वरूप सम्बोधन

Opening · मुक्तामुक्तैकरूपो य कर्मभिस्सविदादिना ।
अक्षय परमात्मान ज्ञानमूर्ति नमामि तम् ॥

Closing । इति स्वतत्व परिभाव्यवाङ्मय,
य एतदाख्याति शृणोति चादरात् ।
करोति तस्मै परमार्थसपदम्,
स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति ॥२५॥
अकरो दार्हिनो ब्रह्ममूरि पडित सद्विज ।
स्वरूपबोधनाख्यस्य टीकां कर्णाटभाषया ॥

Colophon नही है ।

देखे—जि० र० को०, पृ० ४५८ ।

३६२. तत्त्वरत्न प्रदीप

Opening · श्री नि[illegible]समन्तभद्र नबू ? पुज्यपादनजितनज,
विद्यानद नस्त्र मत्प्रा[illegible]न मनेमगीजे [illegible]मबयसार वीरम् ॥

Closing माआद्राक्षाफलानां मुरमम[illegible]रताधूरमास्ता निरस्ता मौधी-
मा[illegible]गीति परमतिविदुरा कर्कशागबकरापि वीचा वीचिविचार-
प्रचु[illegible]तररमा सारनि[illegible]रन्विनीना चेत्माक्[illegible]प्रबधप्रणयनसुहृदा श्रूयते
धर्म्मकीर्त्ते ॥

श्री श्रुतमुनये नम ।

तत्वसार ।

३६३. तत्वसार

Opening झाणग्गिदड्ढकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धमन्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसार पवुच्छामि ॥१॥

Closing सोऊण तच्चसार रइय मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासय सुक्ख ॥७४॥

Colophon । इति तत्त्वसार समाप्तम् ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १५३ ।

Catg. of skt & Pkt. Ms., peag. 648.

३६४. तत्वसार भाषा

Opening : आदि सुखी अतज सुखी, सिद्धसिद्ध भगवान ।
निज प्रताप प्रलाप विन, जगदर्पण जग आन ।।

Closing : सत्रहसै एकावने, पौष सुकल तिथि चार ।
जो ईश्वर के गुन लखैं, सो पावैं भवपार ।।

Colophon : नहीं है ।

३६५. तत्वसार वचनिका

Opening : प्रणमि श्री अर्हन्त कूँ सिद्धनिकू शिरनाय ।
आचार्य उवझाय मुनि पूज् मनवचकाय ।।

Closing : - - - पन्नालाल जु चौधरी विरचि जो कारक दुलीचदजी ।

Colophon : इति ग्रन्थ वचनिका बनने का सबध समाप्तम् । सवत् १६३८ का महावुदि १२ सोमवार ।

३६६. तत्वानुशासन

Opening : सिद्धस्वार्थान शेषार्थ स्वरूपस्योपदेशकान ।
परापरगुरुन्नत्वा वक्ष्ये तत्त्वानुशासनम् ।।

Closing : तेन प्रसिद्धधिषणेन गुरूपदेश,
मासाद्य सिफिसुखसपदुपाय भूतम् ।
तत्वानुशासनमिद जगते हिताय,
श्री रामसेन विदुषाव्यरच स्फुटोर्त्थम् ।।

Colophon : इद पुस्तक परिधावि सवत्सरे उत्तरायणे अधिक आषाढ़मासे कृष्णपक्षे एकादश्याया सौम्यवासरे द्वाविंश घटिकाया दिवा च वेणू- पुरस्न पन्नेचारीरित्तल विद्वत् वामनशर्मणा पचम पुत्र भगदीति केशव शर्मणेन लिखित समाप्तमित्यर्थ श्री जिनेश्वराय नमः ।

देखें,--जि० र० को०, पृ० १५३ ।

३९७. तत्वार्थसार

Opening मोक्षमार्गस्य नेत्तार भेत्तार कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातार विश्वतत्वाना वदे तद्गुणलब्धये ।।

Closing : वर्णा पदानां कर्त्तारो वाक्यानां तु पदावलि ।
वाक्यानि चास्य शास्त्रस्य कर्तृणि न पुनर्वयम् ॥

Colophon इति श्री अमृतसूरीणाकृति तत्वार्थसारोनाम मोक्षशास्त्र समाप्तम् ।

देखें--(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १५० ।
(४) आ० सू०, पृ० ६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १३३ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १७६ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 648.

३६८. तत्वार्थसार

Opening देखे, क्र० ३६७ ।
Closing देखे, क्र० ३६७ ।
Colophon इति श्री अमृतचन्द्रसूरीणा कृतिस्तत्वार्थसारोंनाममोक्षशास्त्र-समाप्तम् । लिपिकृतम् बालमोकुन्दलाल अग्रवाला आराऽनग्र । श्रीरस्तु।

१६६. तत्वार्थसार

Opening देखे, क्र० ३६७ ।
Closing देखे, क्र० ३६७ ।
Colophon इति अमृतचन्द्र सूरीणा कृति तत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्र समाप्तम् ।

श्री काष्ठासघे श्री रामकीर्तिदेवामुन्कन्दकीर्त्ति । ग्रथश्लोक सख्या ७२४ । सवत् १५५३ वैशाख सुदी सोमे श्री काष्ठासघे मापुर-गच्छे पुष्करगणे आर्गलपुरमध्ये लिखाप्त ताङ ? कीर्तिदेवा. ।

४००. तत्वार्थसूत्र (श्रुतसागरी टीका)

Opening देखें, क्र० ३८५ ।
Cosing देखे, क्र० ३८५ ।

Colophon : इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याविनोदेनादितप्रमोदपीयूषरसपानपावन-मतिसभाजरत्नराराजमतिसागर यतिराजराजितार्थनसमर्थेन तद्धर्मव्याकरण छंदोलंकारसाहित्यादि शास्त्रनिशितमतिना यतिना श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति भट्टारकप्रशिष्येण चशिष्येण सकलविद्वज्वन विरचितचिरसो सेवस्य श्री विद्यानंदिदेवस्य मच्छदित मिथ्यामतदुर्गरेण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचिताया श्लोकवार्तिक राजवार्तिकसवर्थिसिद्धिन्यायकुमुदचंद्रोदय प्रमेयकमलमार्तण्ड प्रचंडाष्टसहस्त्री प्रमुखग्रंथ सदर्भनिर्भरावलोकनबुद्धिविराजिताया तत्वार्थटीकाया वशमोध्याय समाप्त । इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता । सवत् १७७० माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तम्या रविवासरे पाटलिपुरे लिखितम् अमीसागरेण आत्मार्थे । श्री। श्री।

देखे -दि जि ग्र र, पृ ८५ ।
जि र को, पृ १६६ (१५)।
आ० सू० पृ० ६७ ।
रा० सू० III, पृ १३ ।
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १८१ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 649

४०१ तत्वार्थसूत्र

४०१

Opening सम्यग्दर्शन ज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्ग ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्तार शुक्ल पक्षोपलक्षितम् ।
वदे गणेन्द्र सजातमुमास्वामि मुनीश्वरम् ।।

Colophon : इति दसध्याय सूत्र सम्पूर्णम् लिखित पडित कस्तुरी चद तारतोलमध्ये पठनार्थम् लाला सोदयाल का बेटा मनुलाल के वास्ते सवत् १९४६ का मिति आसोज सुदी पूर्णमासी के दिन समाप्तम्

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५४ (२) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १५१ ।
(४) रा सू II, पृ २८, ८३ ।
(५) रा सू III पृ ११, १२ ।
(6) Catg of Skt. & Pkt Ms, P 7

४०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opneing : त्रैकल्य द्रव्यषटक नवपदसहित जीवषट्कायलेश्या ॥
पचान्यचास्तिकाया व्रत समिति गति ज्ञानचरित्रभेदा ॥
इत्येतन्मोक्षमूल त्रिभुवनमहितैं प्राक्तमर्हद्भिरीशै ॥
प्रत्येतिश्रद्धाति स्पृशति च मतिमानय सवैशुद्धदृष्टि ॥१॥

Closing नवमे नवर निजर। दसमे मोक्ख वियाणेहि।
इय तत्त तच्च भणिय। दहसूत्रे मुणिदेहि ॥७॥

Colophon इति श्री उमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र समाप्त।
लिखित पडित किसनचद सवाई जयपुर का वासी ॥ धर्ममूर्ति धर्मात्मा कवरजी श्री दिलसुखजी पठनार्थं ॥

४०३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening ससारिणस्त्रसस्थावरा ।

Closing : देखें—क्र० ४०१ ।

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

४०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क ... शुद्धदृष्टि ॥

Closing : तवयरण ... निवारई ॥

Colophon इति श्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशाध्यायसूत्र जी समाप्तम् ।

४०५. तत्त्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४०२ ।

Closing : आनयन, प्रेष्यप्रयोग, पुद्गलक्षेप ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

४०६ तत्वार्थसूत्र

Opening : देखे— क्रम ४०४ ।

Closing : देखे—क्र० ४०४ ।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् ।
श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १ (एक) चन्द्रवासरे सवत् १६५५ श्री ।

४०७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क .... शुद्धदृष्टि ॥

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तार .... मुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

४०८. तत्वार्थसूत्र (मूल)

Opening : त्रैकाल्यद्रव्यषट्क .... शुद्धदृष्टि ॥

Closing : तत्वार्थसूत्र .... उमास्वामिमुनीश्वरम् ॥

Colophon : इमि तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय सवत् १६ ८ चैत्रकृष्णपक्ष नवम्या बुद्धवारे ।

४०९ तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क .... शुद्धदृष्टि ॥

Closing : पहिले चतुके जीवपचमे जाणि पुग्गलत च ।
छहसत्तमेत्रआश्रव अष्टमे जानि बध ॥
नवमे सवरनिर्जरा, दशमे ज्ञानकेवल मोक्ष ॥

Colophon : इति तत्वार्थसूत्रम् ।
पुरन सुतर जी ।

४१०. तत्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तार कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातार विश्वतत्वाना वदे तद्गुणलब्धये ।

Closing : भयो सिद्धकारज यह मगल करता सोई।
इहकथा वधराधर्मजिन परभव मिलियो मोह ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

४११. तत्वार्थसूत्र टिप्पण

Opening : देखें—क्र० ४१०।

Closing सवत् उगणीसैदशशुद्ध।
फाल्गुण बदि दशमी तिथि बुद्ध ॥
लिख्यो सूत्र टिप्पण गुणथान।
नमैं सदा सुख निति धरिध्यान ॥

Colophon इति श्री तत्वार्थ सूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्तम्। सवत् १६१० मिति फाल्गुण कृष्ण १४ दीत वार समाप्तम्।

४१२ तत्त्वार्थवृत्ति

Opening : जयन्ति कुमतध्वातपाटने पटुभास्वरा।
विद्यानदास्मता मान्या पूज्यपादा जिनेश्वरा ॥

Closing : तस्यात्सुविशुद्धदृष्टिविभव सिद्धान्त पारगत,
शिष्य श्रीजिनचद्रनामकलित चारित्रभूषान्वित।
वाशिष्टेरपिन दिनामविबुधस्तस्याभवत्तत्ववित्,
तेनाकारिसुखादिबोधविषया तत्वार्थवृत्ति स्फुटम् ॥

Colophon . परमत महासैद्धान्तिजिनचद्रभट्टारकस्ताच्छिष्य पडित श्रीभास्करनदिविरचितमहाशास्त्रतत्वार्थवृत्तौ सुखबोधायां दशमोध्याय समाप्त।

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदयशालिवाहनशकाब्दा १७५० ने सर्वधारिसवत्सरद्कार्तिकसुद्ध १४ गुरुवारदिन तत्वार्थसूत्रक्के सुखबोधयं व वृत्तियन्नु तगडूरु सिद्धान्तिब्रह्मसूरि ज्येष्ठपुत्रनादता, चद्रोपाध्यसिद्धातियुवरे दुदु सपूर्णवादुदु। जयमगल। शोभनमस्तु ॥

देखें—जि० र० को, पृ० १५६।

४१३ तत्वार्थबोध

Opening : नित्रमन दारुकमान, कर्मतिमिर गिरके हरनं ।
सर्वतत्वमय ग्यान, वद्न जिणगुण हेतकू ।।

Closing : नवतुठारामै विषै, अधिक गुन्यामी देस ।
कातिकसुद सासिपचमी, पूरनग्रथ असेस ।।
मगल श्री अरिहन, सिधमगलदायक सदा ।
मगलसाधमहन, मगल जिनवर धर्मवर ।।

Colophon : इति श्री तत्वार्थवोध ग्रथ सपूणम् । इति शुभ मिति आषाढ सुदी १२ सवत् १९८२ ।
जैमी प्रत पाई हती, तैसी वई उतार ।
भूलचूक जो होय सो, वुधजन लियो सुधार ।।
हस्ताक्षर प० चौबे लक्ष्मीनारायण के ।

४१४ तत्वार्थसूत्र टीका

Opening देखे०—क्र०, ४१० ।

Closing : इह भांति करि घणाही भेदास्यौ सिद्ध हुआ सो सिद्धान्त से समझि लीज्यो ।

Colophon : इति श्री तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय ।१०। श्री उमास्वामी विरचित सूत्र बालाबोध टीका पाडे जैवतकृत सपूर्ण । सवत् १९०४ वैशाख शुक्ल १२ लिपि कृत इदम् ।

४१५. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४१० ।

Closing ऐसे ही कालादिक का विभागतै अल्पबहुत्व जानना । ऐसें द्वादश अनुयोगनि करि सिद्धनि मे भेद है और स्वरूप भेद नही है ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः ।।१०।।
देखे—क्र० ४११ ।

इति श्री तत्वार्थसूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्त । लिखत दौलतराम ब्रह्मरावसासनी मध्ये गुरु बकस के बेटा ने। सवत् १९२५ शुक्ल ६ गुरुवासरे सम्पूर्ण । शुभमस्तु ।

४१६. तत्वार्थसूत्र टीका

Opening — शुद्धतत्व की अर्थ मे लह्यो सार जिनराय ।
तिनपद नमो त्रियोगिकरि, होहु इष्ट सुखदाय ॥

Closing — आदि अत मगल करत, होत काज हितकार ।
तातै मगलमय नमौं, पच परम गुरु सार ॥

Colophon — इति तत्वार्थसूत्र दशाध्याय की तत्वार्थसार नामा भाषा टीका समाप्ता । सवत् १९७० शक १८३५ चैत्र शुक्ला ५ भृगुवासरे लिपिकृतम् प० सीताराम शास्त्री निजक ण सशोधिता ।

४१७ तत्वार्थाधिगम सूत्र

Opening — पूज्यपाद जगद्वद्य नत्वोमास्वामीभाषितम् ।
क्रियते बालबोधाय मोक्षशास्त्रस्य टिप्पणीम् ॥

Closing — रत्नप्रभाकरा सर्वार्थसिद्धिराजवार्तिका ।
श्रुताभोधिवृ नयाश्चश्लोकवर्तिकसज्ञिका ॥
ताभ्य विशेषज्ञानाय ज्ञेया विस्तारमजसा ।
अल्पज्ञानाय सर्वेषा रचिता बोधचद्रिका ॥

Colophon : इति तत्वार्थ सिद्धान्त सूत्रस्य टीकासमाप्तेयम् । श्रीरस्तु । सम्वत् १९१६ मिती फाल्गुण शुक्लदशम्या स्वहस्तेन लिपिकृतम् इन्द्रप्रस्थे प० शिवचन्द्रेण ।

४१८. तत्वार्थ वार्तिक

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : इति तत्वार्थसूत्राणां भाष्य भाषितमुत्तमै. ।
यत्रसनिहितस्तर्कन्यायागम विनिर्णय ॥

Colophon : इति तत्त्वार्थवार्तिकव्याख्यानालकारे दशमोध्याय समाप्त ।।
जीयाज्जगतिजिनेश्वरनिगदितधर्मप्रकाशक सूरि
अभयेदुरितिख्यात परुवादिपितामह सततम् ।।
वदे वालेदु मुनितममदबुधाग्रणि गुणनिधिम्
यस्य वचस्तोऽशस्त स्वातध्वत दुरस्तमपि नश्येत् ।।

श्रीपचगुरुभ्यो नम मगलमहा । शके २२६२ वर्तमान परिधावी सवत्सरे भाद्रपदशुक्लएकादश्यां भानुवासरे समाप्तोऽय ग्रथ ।। दक्षिणकर्नाटदेशे उडुपी कार्ककप्रात्यदुर्गग्रामनिवासस्थरामकृष्णशास्त्रिण पुत्रो रगनाथ भट्टेन लिखित पुस्तकम् ।।

शुभ मगलानि भवतु ।।

देखे—जि० र० को०, पृ० १५६ ।

४१६. त्रैकालिकद्रव्य

इस ग्रथ मे मात्र "त्रैकाल्य द्रव्यषट्क ... इत्यादि" अर्थ सहित लिखा गया है ।
अन्त मे एक भजन भी है ।

४२०. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening अट्ठविहकम्मवियला णिट्ठय कज्जा पणट्ठ ससारा ।
दिट्ठसलत्थसारा सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ।।१।।

Closing : सूरि श्री जिनचद्रा ह्रि स्मरणाधीन चेतसा ।
प्रशस्तिर्विहिता चासौ मीहाख्य मुनीमत्ता ।।१२३।।
यत्रद्यत्काप्पवधस्यादर्थे ... मयाहृत्त ।
तदाशोध्यवुधैर्वाच्चमनत शब्दवारिधि ।।१२४।।

Colophon इति सूरि श्रीजिनचद्रातेवासिना पडित मेधाविना विरचिता प्रशस्ता प्रशस्ति समाप्ता ।। श्री सिंहपुरी जैनतीर्थ समीप सथवा ग्राम निवासी कायस्थ बटुकप्रसाद ने श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा मे लिखा ।। स० १९८८ विक्रम ।।

४२१. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : देखें—क्र० ४२० ।

Closing : देखे,—क्र० ४२० ।

Colophon : देखे—क्र० ४२० ।

४२२. त्रिभङ्गी

Opening : श्री पचगुरुभ्यो नम ॥
पणमियमुरिन्दद पूजियपयकमल वड्ढमाणममलगुणं ।
पच्चयसत्तावण्ण वोच्छेह सुणुह भवियजणा ॥१॥

Closing : जह चक्केण य चक्की छक्खड साहये अविग्घेण ।
तहमइ चक्केण मया छक्खड महिय सम ॥

Colophon : इति श्री कनकनदि सैद्धातिकचक्रवर्तिकृत विस्तरसत्वत्रिभगी समाप्ता ॥

४२३. त्रिभगीसार टीका

Opening : सर्वज्ञ करुणार्णव त्रिभुवन वीमार्च्यपाद विभुम्,
य जीवादिपदार्थसार्थकलने लब्धप्रशस सदा ।
त नत्वाखिलमगलास्पदमह श्रीनमिचन्द्र जिन,
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजनक टीकां सुबोधाभिधाम् ॥

Closing : श्री सद्यां हि युगे जिनस्य नितरां लीन शिवासाधर,
सोम सद्गुणभाजन सविनय सत्पात्रदाने रत: ।
सद्रत्नत्रययुक् सदा बुध मनोल्हादीचिर भूनन्,
नद्याद्येन विवेकिना विरचिता टीका सुबोधाभिधा ॥

Colophon : इति त्रिभगीसार टीका समाप्ता । सवत् १६१५ । विक्रमादित्यगताब्दवाणैकरद्रार्चद्र वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीयायां ३ सुरगुरुवासरे पूज्य श्री अर्यानीऋषिशिष्य दुर्गूनाम्नेति ऋषिलिख्यत आत्मावबोधनार्थ जलमार्गसज्ञाभिधानेन नगरे लिख्यनमिद पुस्तकम् ।

यहप्रतिलिपि श्रावणकृष्णा १३ गुरुवार वि० स० १६६४ को लिखी गई । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२।
दि जि ग्र र, पृ ८७।
जै ग्र प्र स १, पृ २८, प्रस्तावना, पृ २६।

४२४ त्रिलोकसार

Opening : वलगोविंदमिहामणि किरणकलावरुणचरणणहकिरणं।
विमलयरणेमिचंद तिहुवणचंदं णमसामि॥

Closing : अरहंतसिद्धआयरिय उवज्झायासाहुपंचपरमेट्ठी।
इयपंचणमोयारो भवे भवे मम सुहं दिंतु॥१०१०॥

Colophon : इति श्री त्रिलोकसारजी श्रीनेमिचंद आचार्यकृत मूलगाथा सम्पूर्णम्। शुभ मस्तु॥

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२।
Catg. of Skt & pkt Ms, P 162.
Catg. of Skt Ms, P 320

४२५ त्रिलोकसार

Opening : देखें—क्र० ४२४।

Closing : महाध्वज प्रशपाश्वारध्वज १०८।
महाध्वज ३ १०८० । ल दि १ ११६६२० ।

४२६. त्रिलोकसार भाषा

Opening : समान ही सिन्धु नदी है सो सर्व वर्णन सिंधु विषै भी तैसै ही जानना।

Closing : तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्म स्वरूप जनित परम आनंद की प्राप्ति करहु।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार जी श्री नेमिचंद्र आचार्यकृत मूलगाथा ताकी टीका संस्कृत कर्ता आचार्यमाधवचंद्र ताकी भाषा टीका टोडरमल जी कृत सम्पूर्ण।

४२७. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायक सत ।
त्रिभुवन हितकारी नमो, श्री अरहत महत ।।

Closing . अर्थको जानता सता रागादिक त्यागि मोक्षपद को पावै है ।
अब सस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है ।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार का टीका का पीठबध सम्पूर्णम् ।
विशेष —अन्त मे पीठबध सम्पूर्ण ऐसा लिखा है, लेकिन ग्रथ की भाषा टीका लिखी जा चुकी है।

४२८. त्रिलोकसार

Opening : मगलमय मगलकरन वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भये अरिहतादि महान ।।

Closing : इति श्री अरिष्ट नेम पुराण ।

Colophon अनुपलब्ध ।

४२९. त्रिलोकसार भाषा

Opening देखे—क्र० ४२७ ।

Closing अब सस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है ।

Colophon . इति श्री त्रिलोकसारसाषाटीका का पीठबध सम्पूर्ण । सवत् १८६६ वर्षे मिती सावन वदी दो लिखत भूपतिराम तिवारी, लिखी मौहोकमगज मध्ये ।

४३०. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening . अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रम ।
शौचाचारविधिप्राप्तौ देह सस्कर्तु महसि ।।१।।
सस्कृतो देह एवासौ दीक्षणाद्यभिसम्मत ।
विशिष्ठान्वयजोऽप्यस्मै नेष्यतेऽयमसस्कृत ।।२।।

Closing : तत्रोपनयादारभ्य समावर्तनपर्यन्तमुपनयनब्रह्मचारी । स्त्री-सेवां कुर्वाणो जुगुप्सया गुरुसमक्षे तन्निवृत्त आलम्बनब्रह्मचारी । विवाहपूर्वक त्रिभुवनपरिग्रहारम्भाद् क्रियाप्रवृत्तो गृहस्थः । परिग्रहानु-

मत्युद्विष्टनिवृत्ता वाणप्रस्था । वैराग्यदीक्षितो महाव्रती भिक्षु ।
इत्याश्रमलक्षणम् ।

Colophon : इति ब्रह्मसूरि विरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठातिलकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारग्रंथे (सग्रहे) गर्भाधानादिविवाह-पर्यन्तकर्मणा मन्त्रप्रयोगो नाम पञ्चम पर्व समाप्तम् । फाल्गुनशुद्ध द्वितीयाया तिथौ समाप्त ॥

देखे– जि० र० को०, पृ० १६३ ।

४३१. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : देखें, क्र० ३० ।

Closing : देखे, क्र० ४३० ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मसूरिविरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठातिलकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारग्रहे गर्भाधानादि विवाहपर्यन्तकर्म्मणा मत्र-प्रयोगो नाम पचम पर्व्व । नम सिद्धेभ्य । श्री चद्रप्रभजिनाय नम ॥

४३२. त्रिवर्णाचार (१३ अध्याय)

Opening :

श्री चद्रप्रभदेवदेवचरणौ नत्वा सदा पावनौ,
ससारार्णवतारकौ शिवकरौ धर्मार्थकामप्रदौ ।
वर्णाचार विकाशक वसुकर वक्ष्ये सुशास्त्र परम्,
यच्छ्रुत्वा सुचरति भव्यमनुजा स्वर्गादिसौख्यार्थिन ॥

Closing :

श्लोकाना यत्र सख्यास्ति शतानिसप्तत्रिशति ।
तद्धर्मरसिक शास्त्र वक्तु श्रोतृ सुखप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री धर्मास्तिकशास्त्रे त्रिवर्णाचारप्ररूपणे भट्टारक श्रीसोमसेनविरचिते सूतकशुद्धिकथनीयो नाम त्रयोदशमोध्याय ॥ इति त्रिवर्णाचार समाप्त ॥ सवत् १७५६ वर्षे फाल्गुन सित पक्षे त्रयोदशी गुरुवासरे इय संपूर्णा जाता। अहमदावादमध्ये इद पुस्तक लिखितमस्ति । शुभ भूयात् । श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती ग कुन्दकुन्दान्वये श्रीभट्टारक विश्वभूषण जी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणजी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक महेन्द्रभूषण जी देवा तेनेद देवेन्द्रकीर्ते दत्तम् ।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८८ ।
जि०र० को०, पृ० १६३, I ।

प्र० जै० सा०, पृ० २५६ ।
रा० सू० II, पृ० ७, १५५ ।
रा० सू० III, पृ० १८४ ।
जै० प्र० प्र० सं० १ प्रस्तावना पृ २६ ।
Catg of skt & pkt. Ms., P. 651.

४३३ त्रिवर्णाचार

Opening तज्जयति परं ज्योति सम समस्तैरनंतपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ।।
(पद्य पुरुषार्थ सिद्धयुपाय का है ।)

Closing : धर्मार्थकामाय कृतं सुशास्त्रं, श्री जैनसेनेन शिवार्थिनापि ।
गृहस्थधर्मेषु सदारता ये कुर्वन्तु तेऽभ्यासमहोजनास्ते ।।

Colophon इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दविनिर्गते श्री गौतमर्षि पादपद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व ।।१८।। इति त्रिवर्णाचार समाप्तम् । सवत् १६७० । मिती पौष वदी ५ बुधवासरे लिखितमिद पुस्तक गुलजारीलाल शर्म्मणा । भिण्डाग्रनगरवासोस्ति । रिकवालियर ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६३ ।
Catg. of skt. & Pkt. Ms., p. 651.

४३४. त्रिवर्णाचार

Opening : देखें—क्र० ४३३ ।
Closing : देखें—क्र० ४३३ ।
Colophon : देखें—क्र० ४३३ ।
मिति श्रावण कृष्ण ११ संवत् १६१६ । शुभ भूयात् ।

४३५. त्रिवर्णाचार

Opening : देखें—क्र० ४३३ ।
Closing : देखें—क्र० ४३३ ।
Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दविनिर्गते श्री गौतमर्षि-पदा

पद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययन-सारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व ॥१८॥ सवत् १६१६ वार मगलवारे लि कोठारी मोहनलाल मु गरशी ॥ रहेवाशी बडवाण शे हेरना ॥ श्लोक सख्या ८४२५ ॥

४३६. त्रिवर्णाचार वचनिका

Opening : देखे --क्र० ४३२ ।

Closing : जयवतो यह शास्त्र शुभ भूमडल में नित्त ।
मगलकर्ता हूजियो सुखकर्ता भविचित्त ॥

Colophon : इति त्रिवर्णाचार ग्रन्थ की वचनिका समाप्तम् । ज्येष्ठ शुक्ला १५ शनिवासरे सवत् १६७६ ।

४३७. त्रिवर्णा शौचाचार (७ परिच्छेद)

Opening : देखे --क्र ४३० ।

Closing : आर्षं यद्यच्च तेषामुदितखनयानूतनापुण्यभाज ।
मेतत्त्रैवर्णिकाद्याचरणविधिमद्राकण्ठिका कण्ठमेति ॥

Colophon : इत्यार्षसग्रहे त्रैवर्णिकाचारे नित्यनैमित्तिकक्रमो नाम सप्तम परिच्छेद ॥ श्रीमदादिनाथाय नम ॥ श्रीमद्विद्यागुरु श्री मदनन्तमुनये नम ॥पुस्तकमिद श्री वेणुपुरस्थगीर्वाणपाठशालाध्यापकनेमिराजय्याज्ञानुसारेण सक्रमणात्मजेन पद्मराजनाम्ना मया प्रणीतमस्ति मगलमस्तु चिर भूयात् । करकृतमपराध क्षन्तुमर्हन्ति सन्त इति विरम्यते ।

श्रीरस्तु ।

४३८. उपदेश रत्नमाला

Opening : तिहुवण परमेसरेहहवमीसरे अनतचतुष्टय सहियो ।
वदमि श्रुतसारणे कबुपसारणे सुरनरेन्द्र अहिमहियो ॥

Closing : मौ अवियाणिधरौ अणलगत्त अथहुछद हीणय ।
सवारहु सुवुधिपडित जनतुमतौ जगि पमाणय ॥

Colophon : इति श्री महापुराणसम्बन्धिनिकलिका समाप्ता । शुभमिति फाल्गुन शुक्ला २ बृहस्पतिवार वीर स० २४६० वि० स. १६६० ।

४३६. उपदेश रत्नमाला (१८ परिच्छेद)

Opening : वदे श्री वृषभ देव, दिव्यलक्षणलक्षितम् ।
प्रीणित प्राणिसद्वर्ग , युगादिपुरुषोत्तमम् ।।१।।
अजित जितकर्मारि सतान शीलसागरम् ।
भवभूधरभेत्तार, शभव च भवे सदा ।।२।।

Closing सहस्त्रत्रितय चैदो परि असीत सयुतम् ।
अनुष्टप् वद सा चास्य, प्रमाण निश्चित बुधैं ।।

Colophon : इति भट्टारक श्री शुभचद्र शिष्याचार्य श्री सकलभूषण विरचितायामुपदेशरत्नमालाया पुण्यषट्कर्मप्रकाशिकाया तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नामाष्टदश परिच्छेद ।१८। समाप्त । श्री साहिजहनावादे पृथ्वीपति मुहम्मद साह शुभराज्ये सवत् वेदनभगजशशि वैशाख शुक्ल सप्तम्या ।

सकलगुणधारिणो भव्यजीवतारणो,
परोपकारिणो गुरुगुण अनुचारिणो ।।
श्री भट्टारकपदधार देवेन्द्रकीर्ति बिस्तार
तत्पट्टे सुखकार श्री जगकीतिबहुश्रुत धारम् ।।
एषा प्रति प्रमुदितया लिखापिता शिष्यपरपराचार्ये
मेरु शशि भानु यावत् तावदिय विस्तरता यान्तु ।। (१११४)

देखें—दि जि ग्र र, पृ ८६ ।
जि र. को, पृ ५१ (VI)।
रा सू II, पृ १४६ ।
रा सू. III, पृ २३ ।
आ० सू० पृ० १६ ।
जै० ग्र० प्र० स० १, पृ० १६ ।
प्र० स० (कस्तूरचन्द), पृ० २–४
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ. २४ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 628.
Catg. of Skt Ms., P. 312

४४०. उपदेश रत्नमाला

Opening : देखें—क्र० ४३६ ।

Closing : देखें—क्र० ४३६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्याचार्य्य श्री सकलभूषण विरचितायमुपदेशरत्नमालायां पुण्यषटकर्म्मप्रकाशिकायां तपोदान माहात्म्यवर्णनोनामष्टादश परिच्छेद ।।१८।। मितीफागुनसुदी ।।३।। भृगुवासरे ।। सम्वत् ।।१९७०।। लिखितमिद पुस्तक मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्म्मणा भिडागनगरबासोस्ति ।। इस ग्रन्थ की श्लोक सख्या ।।३६००।। प्रमाणम् ।।

४४१. वैराग्यसार सटीक

Opening : इक्कहिं घरेवधामणा अण्णहिं घरि धाहहिं रोविज्जइ ।
परमत्थई सुप्पउ भणई किमवइ सयभाउण किज्जइ ।।

Closing : असौ जीव चतुर्गतिषु अनतदु खानि भु जति । कदाचित् सुख न प्राप्नोति ।

Colophon : इति सुप्रभाचार्यकृत वैराग्यसार प्राकृत दोहाबंध सटीक सपूर्ण । सवत् १८२७ वर्षे मिति पौष वदि ३ बुधवारे वसवानगरमध्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये पंडित जी श्री परसराम जी तत्शिष्य प० अणतराम जी तत्शिष्य श्रीचद्र स्ववाचनार्थं वा उपदेशार्थं लिपिकृत । लेखकपाठकयो शुभमस्तु । श्रीजिनराजमहाय । तत्लिपे सवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे चतुदश्या गुरुवासरे आरानगरे स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुवबलीशास्त्रिण अध्यक्षताया इव प्रतिलिपि पूर्तिमभवत् । इति शुभ भूयात् ।

देखें—जि० र० को, पृ० ३६६ ।

४४२. वसुनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : बदू मैं अरिहतपद, नमू सिद्ध शिवराय ।
सूरि सु पाठक साधुके, चरण नमू सुखदाय ।।१।।
वदू श्री जिनवैन कू, वदू श्री जिनधर्म ।
जिनप्रतिमा जिनभवन कू नमू हरण वसुकर्म ।।२।।

Closing : ऋषि पूरण नव एक फुनि, माधव फुनि शुभ स्वेत ।
जया प्रथमकुजवार मम, मगल होऊ निकेत ।।

Colophon : इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्ती चक्रवर्ति विरचित श्रावकाचार की बचनिका सपूर्णम् ।

वेदषणन्द चन्द्रेऽदे वैशाखे पूर्तिगे सिते ।
सीतारामाभिधेयेन लिखित शोधित मया ॥

भग्न पृष्टिकटिग्रीवा ऊर्ध्वदृष्टि अधोमुखम् ।
कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन परिकल्पयेत् ॥

४४३. वसुनन्दि श्रावकाचार

Opening : देखें—क्र० ४४२ ।

Closing : देखें—क्र० ४४२ ।

Colophon इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित श्रावकाचार की वचनिका सम्पूर्णम् । सवत् १६०७ वैशाख शुक्ल ३ भौमवासरे । पुस्तक लिखी ब्राह्मण श्री गौणमालत्री ज्ञाति साप्रदाय पडा भैरव लाले सू ।

४४४. वसूनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : देखें —क्र० ४४२ ।

Closing : अपठनीय (जीर्ण) ।

Colohpon : अपठनीय (जीर्ण) ।

४४५. विदग्धमुखमण्डन (४ परिच्छेद)

Opening : सिद्धौषधानि भवदुःख महागदानां,
पुण्यात्मनां परम कर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलानां,
शौद्धोदनेः प्रवचनानि चिर जयन्ति ॥

Closing : पूर्णचन्द्रमुखीरम्या कामिनी निर्मलांवरा ।
करोति कस्य न स्वातमेकान्तमदनोत्तरम् ॥

Colophon : च्युतदत्ताक्षरजातिः । इति धर्मदासविरचिते चतुर्थपरिच्छेद समाप्त शास्त्ररत्नमिद विदग्धमुखमडनारसम् ।

..

४८० ग्रथश्लोका ।
देखे—जि० र० को, पृ ३५५।
दि जि ग्र र, पृ
Catg of Skt & Pkt Ms, P 691

४४६ विश्वतत्वप्रकाश (१ अध्याय)

Opening : 　विश्वतत्व प्रकाशाय　　परमानन्दमूर्त्तये ।
अनाद्यनतरूपाय　नमस्तस्मै　परमात्मने ।।

Closing : 　चार्वाकवेदान्तिकयोगभाट्टप्राभाकराषक्षणिकोक्ततत्वम् ।
यथोक्तयुक्त्याविततं समर्थ्य सम्भावितोऽयं प्रथमोनिवा ।।

Colophon 　इति परवादिगिरिसुरेश्वर श्री भावसनत्रैविद्यदेवविरचिते मोक्षशास्त्रे विश्वतत्वप्रकाशे अशेषपरमततत्वविचारे प्रथम परिच्छेद समाप्त । शुभसवत १९८८ फाल्गुण शुक्ला १० गुरुवासरे ।

विशेष -प्रथम परिच्छेद के अतिरिक्त एक पत्र मे प्रमाण के विषय मे थोडा सा लिखा है, जिसमे विभिन्न मतो मे स्वीकृत प्रमाण सख्या दी गई है। जिनरत्नकोष मे भी पृष्ठ ३६० पर इसका एकही अधिकार होने की सूचना है।

देखे　दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६० ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 692

४४७ विवाद मत खण्डन

Opening : 　किं जापहोमनियमै　तीर्थस्नानैश्च　भारत ।
यदि स्वादन्ति माशानि सर्वमेव　निर्थकम् ।।

Closing : 　मद्वय मद्वय चैव व　त्रिय व　चतुष्टय ।
अनया कुस्कलिगानि पुराणानष्टादशानि च ।।

Colophon : 　इति विवादमत खडन सम्पूर्णम् ।

४४८. विवादमत खन्डन

Opening ।   अहिंसासत्यमस्तेय त्यागो मैथुनवर्जनम् ।
य च स्वे तेषु धर्मेषु सर्वधर्मा प्रतिष्ठिता. ॥

Closing ।   अष्टादशपुराणानां व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

Colophon ·   इति भारते इति ताबूलाद्यानकाधिकार एकविंशतितमः २१ इति सपूर्णम् ।

४४९. विवेक विलास

Opening ।   शाश्वतानदरूपाय तम स्तोमैक भास्वते ।
सर्वज्ञाय नमस्तस्मै कस्मैचित्परमात्मने ॥

Closing :   सश्रेष्ठः पुरुषाग्रणी स सुभटोत स. प्रससास्पद स,
प्राज्ञ सकलानिधि स च मुनि सक्ष्मातले योगविश ।
सज्ञानी सगुणि व्रजस्यतिलको जानातिय.स्वाभूर्ति,
निर्मोह समुपार्जयत्यथा पद लोकोत्तर सास्वतम् ॥

Colophon ।   इति श्री जिनदत्त (सू) रि विरचिते द्वादसोल्लासे विवेक विलासे जन्मचर्याया परमपदप्रापणोनाम द्वादसमोल्लास ।

यह ग्रथ करीब विक्रम स० १६०० से कम का है ।

देखे—जि० र० को, पृ० ३५६ ।
Catg of Skt & Pkt. Ms, P 692.

४५०. बृहद्दीक्षाविधि

Opening :   पूर्वदिने भोजनसमये भोजनतिरष्कारविधि विधाय ·

Colsing ।   स्वान्येषां ज्ञानसिद्धयर्थं शास्त्राण्यालोच्य युक्तित·
गुरुमार्गानुयायोति प्रतिष्ठासारसग्रहम् ॥

Colophon ।   लिलेखेम फतेलालपडितो हितकाम्यया ।
सशोधयतु विद्वांस. सद्धर्मस्मिग्धमानसा ॥३॥

४५१. योगसार

Opening : भद्र भूरिभवाम्भोधि शोषिणी दोषमोषिणी ।
जिनेशशासनायालम् कुशामनविशासिने ।।१।।

Closing : श्रीनन्दनन्दिवत्स श्रीनन्दीगुरुपादाब्जषट्चरण. ।
श्रीगुरुदासो नन्द्यान्मुग्दमति श्री सरस्वति सूनु ।।

Colophon : इति श्री योगसारसग्रह समाप्तम् । सवत् १६८६ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे नवमीतिथौ रविवासरे जैन-सिद्धान्त भवने इद पुस्तके पूर्णमगमत् ।

देखे—जि० र० को०, पृ० ३२४ (१) ।

४५२ योगसार

Opening : देखे--क्र० ४५१ ।

तस्याभवच्छुतनिधिजिनचद्रनामा
शिष्योनुतस्यकृति भास्करन(द)नाम्ना ।।
शिष्वेण सस्तवमिम निजभावनार्थ
ध्यानानुग विरचित सुवितो विदतु ।।

Colophon : इतिध्यानस्तव समाप्त ।

विशेष—अर्वाचीन लेख—
यह ग्रन्थ करीब १६५० विक्रम स० का ज्ञात होता है ।

४५३ योगसार सटीका

Opening : णिम्मलझाण परट्ठिया कम्मकलक डहेवि ।
अप्पा लद्धउ जेण परु ते परमप्पणवेवि ।।

Closing : ससारहं भयभीयएण जोगचद मुणिएण ।
अप्पा सबोहणकया दोहा इक्कमणेण ।।
इति श्री जोगसारग्रथ समाप्त ।

जैनसिद्धान्त भवन आरा मे लिखा । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन । शुभमिति कार्तिक शुक्ला १२ शनिवार श्री वीर सम्वत् २४६२ श्री विक्रम सवत् १६६२ । इति सपूर्णम् ।

विशेष—ढूढारी हिन्दी मे ग्रन्थ की टीका भी गाथाओ के साथ दी गई।
देखें—जि र. को, पृ ३२४ (II)।
Catg of Skt. & Pkt Ms, P 685.

४५४. आप्तमीमांसा

Opening : देवागमनभोयान् चामरादिविभूतय ॥
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वम सिनो महान् ॥१॥

Closing : जयति जयति केशावेष प्रपचहिमाशुभान ॥
विहित विषमैकातध्यात प्रमाणनया शुमान ॥
यतिपति रजोयस्याधृष्यन्मता वुनिधेतवान ॥
स्वमत मतयस्तीर्थ्या नानापरे समुपासते ॥११५॥
देखे—Catg of Skt & Pkt Ms. P 625.

४५५. आप्तमीमांसा

Opening : नही है।

Closing : येनादोष भीन्वृनिमरित. प्रेक्षावतां शोषिता
यद्व्याच्येप्यकलक नीतिरुचिरा तत्त्वार्थसार्थद्युत ॥
स श्री स्वामिसमन्तभद्रयतिभृद्याद्विपुर्भानुमान्।
विद्यानदफलप्रदोनघधियां स्याद्वादमार्गाग्रणी ॥

Colophon : इत्याप्तमीमोसालक्रुतौ दशम परिच्छेद।
श्रीमदकलकशशधरकुलविद्यानद सभवा भूयात्
गुरुमीमांसालंकृतिरष्टसहश्री सताभृध्य ॥
वीरसेनाख्य मोक्षगेचारुगुणानर्घ्यरत्नसिंधुगि सततम् ॥
सारतारात्मभृरानिगेमारसवाभोदपवनगिरि गह्लरियलु ॥ ॥
कपटसहश्री मिद्धा सापट सहश्रीय मच मे पुष्पात्
शश्वदभीष्ट सहश्री कुमारसेनोक्तवर्द्धमानार्या ॥१॥
स्वस्ति श्री मूलामलसंघमडलमणि श्री कु दकु दानवये
गीर्गच्छेज्ज्वलाच्चकारकगणे श्री नदिसघाग्रणी
स्याद्वादेतरवादिवंनिदवणोधत्पाणि पचाननो
योभूत्सोस्तु सुमेधसानिह मुदे श्री पद्मनद्री मणी ॥

श्रीपद्मनद्यधिपपट्टपयोजटसश्वेवातपचितयश
स्फुरदात्मवश ।
राजाधिराजकृतपादपयोजसेव स्याम' श्रिये कुवलये
शुभचंद्रदेव ॥२॥
आर्याशीदार्यवर्येयादीक्षिता पद्मनंदिभि ।
रत्नश्रीरितिविख्याता तन्नाम्नैवास्तिदीक्षिता ॥
शुभचद्रार्यवर्यां श्रीमद्भि. शीलशालिनी
मलयश्रीरितिख्याता क्षांतिका गर्वगालि ॥
तयैषा लेखिता स्वस्थ ज्ञानावरजशातये
लिखिता राजराजेन जीयादष्टसहस्रिका ॥
संवत् १८४२ कर्तिक शुक्लसप्तम्यां गुरुवारे इदं पुस्तका लिपिकृता महात्मा सीतारामेण जयनगरमध्ये। लेखकपाठक चिरजीयात् शुभ भवतु कल्याणमस्तु ॥

४५६. आप्तमीमांसा

Opening । श्रीवर्द्धमानमभिवद्य समन्तभद्रमुद्भूतबोधमहिमानमनिन्द्यवाचम् ।
शास्त्रावतार रचितस्तुतिगोचराप्त मीमांसितं कृतिरलं क्रियते मयास्य ॥

Closing । अनुपलब्ध ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १७६ (VI) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०४ ।
(४) रा० सू० II, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ४७ २४० ।

४५७. आप्तमीमांसा भाष्य

Opening : उद्दीपीकृतधर्मतीर्थमचल ज्योतिर्ज्वलत्केवलालोकालोकितलोकलोकमखिलैरिद्रादिभि. वंदितम् ।
वदित्वापरमार्हतां समुदय गां सप्तभङ्गीविधि,
स्याद्वादामृतगर्भिणीं प्रतिहतैकांतांधकारोदयम् ॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलकमनिन्द्य पादारविन्दयुगलल प्रणिपत्य-मूद्धर्ना ॥
भाव्येकलाकनयन परिपालयत स्याद्वादवर्त्मपरिणौमि समन्तभद्रम् ॥

Colophon : इत्याप्तमीमांसाभाष्यदशमा परिच्छेद.। इति श्री भट्टकलकदेवविरचितात्तमीमांसावृत्तिरष्टशवतीव परिसमाप्ता । सवत् १६६५ वर्षे कातिकवदि ८ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री-कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तच्छियेण ब्र० सधारणाख्येन स्वहस्तेन लिखितमिद शास्त्रम् । शुभ भवतु ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १६, १७८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ ९७ ।
(4) Catg. of Skt. Ms. P. 306

४५८. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोयान् .... नो महान् ।
Closing जयति जगति क्लेशा ..... समुपासते ॥
Colophon इति श्री समन्तभद्रपरमर्हता विरचिते देवागमापरनाम अष्ट-मीमांसा स्तोत्रम् ।

४५९. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोवाम .... नो महान ॥
Closing : जयति जगति ' ... समुपासते ॥
Colophon : इति श्रीसमन्तभद्रपरमर्हताचार्य विरचित देवागमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

४६०. देवागम वचनिका

Opening : वृषभ आदि चउवीसजिन, वदौ शीश नवाय ।
विघनहरन मगलकरन मनवाछित फलदाय ॥

Closing : सुखी होऊ पाठक सदा, श्रवणकरैं चितधारि।
बुद्धि विरधि मंगल कहा, होउ सदा विस्तारि ॥

Colophon : इति श्री देवागमस्तोत्र वर्चनिका सम्पूर्णम्। शुभ भवतु १८९८ मासोत्तमे मासे अधिक आश्विनमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तकमिदं सम्पूर्णम्। लेखाकाक्षर रघुनाथशर्मा पट्टनपुरमध्ये आलमगंज निवसति। शुभमस्तु।

४६१ देवागम वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४६०।

Closing : अष्टादश सत माठि षट् विक्रम संवत् जानि।
चैत्र कृष्ण चतुर्थी दिवस, पूर्ण वचनिका मानि ॥

Colophon इति श्री देवागम स्तोत्र की वचनिका सम्पूर्ण।

४६२. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ बोधदीधिदीधितमालिने ॥
नम श्रीजिनचन्द्राय मोहध्वातप्रभेदिने ॥१॥

Closing : स जयन् विद्यानदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सततम्।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपाय प्रकटितो येन ॥ ॥

Colophon : इति श्री आप्त परीक्षा विद्यानदिस्वाचार्य ॥
समाप्तम्। सम्पूर्ण। शुभम् ॥

देखें—(१) दि० जि ग्र र, पृ ६१।
(२) जि० र० को०, पृ ३०।
(३) प्र० जै० मा०, पृ० १०३।
(४) रा० सू० II, पृ १९३।
(५) रा० सू० III, पृ० १९६।
(6) **Catg of Skt & pkt Ms, P. 625.**

४६३ आप्त परीक्षा

Opening प्रबुद्धाशेषतत्वार्थ बोधदीधितिमालिने ॥
नम श्री जिनचंद्राय मोहध्वातप्रभेदिने॥

Closing : स जयतु विद्यानंदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सतम् ।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपाय प्रकटितो येन ।।१२६।।

Colophon : इति आप्त परीक्षा टीका विद्यानन्दि आचार्यकृतसमाप्तम् ।। श्री गुरुभ्यो नमो नम ।।

नेत्रषट्खेटचन्द्रेब्दे माधवस्यासितेशरे ।।
तिथौमृगांकवारेऽय मूलर्क्षपूर्तिमाप्नुयात् ।। ।।
शिवयोगे शिव भद्र शास्त्र शिवप्रकाशकम्
सीतारामेण लिपित भव्या पाठयितु क्षमा ।।
रामे राज्ये चहामीये पौराज्ये जनवार्द्धिके
षड्दर्शनानि प्राप्तानि गु मरेदानमानत ।।३।।
इच्छाषडिभर्गुणिता इच्छार्धा चतुर्गुणेणय इत्रब्धम् ।
पुनरपि तदष्टगुणित तीर्थंकरकदवक वन्दे ।।४।।

सवत् १९६२ शक पट १८२७ वैशाख कृष्ण पचम्याम् चदवासरे लिपिकृतम् प० सीतारामशास्त्री शुभ सहारनपुरनगरे। भव्यजनाना सर्वेषा पठनार्थम् । मगल भवतु । शुभ ।।२।।

४६४. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हंत नत्वा बालप्रबुद्धये ।।
विरच्यते मितस्पष्ट सदर्भन्याय दीपिका ।।१।।

Closing : ततो नयप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिरितिसिद्ध सिद्धान्त पर्याप्तमागमप्रमाणम् ।।

Colophon : इति श्रीमद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारूण्यसिद्धसारस्वतोदय श्रीमदभिनवधर्मभूषणाचार्यविरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाश समाप्त । सवत् १९१० मिति माघमासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्दिवसे रविवारे । शुभ भवतु ।।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५ ।
जि० र० को०, पृ० २१६ II
प्र० जै० सा०, पृ० १६४ ।
आ० सू० II, पृ० ८२ ।
रा० सू० II, पृ० १९७ ।

रा० सू० ।।।, पृ० ४७, १६६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P 662.

४६५. न्यायदीपिका

Opening ।

श्री वर्द्धमानमर्हन्तं नत्वा बालप्रबुद्धये ।
विरच्येतु मितस्पष्टसदर्भं न्यायदीपिका ।।

Closing । .. तत्समाप्तौ च समाप्ता न्यायदीपिका मद्गुरो, वर्द्धमादेशोवर्द्धमानदयानिधे श्रीपादस्नेह-सम्बन्धात् सिद्धेय न्यायदीपिका ।

Colophon · इति श्री मद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धिसिद्धसारस्वतोदय श्री मदभिनवधर्मभूषणाचार्य विरचिताया न्यायदीपिकायामागमप्रकाश. समाप्त. ।

४६६. न्यायमणिदीपिक

४६६

Opening ।

श्रीवर्द्धमानमकलङ्कमनन्तवीर्य-
माणिक्यनन्दियतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।
भक्त्या प्रभेन्दुरचितालघुवृत्तिदृस्टया,
नत्वा यथाविधि वृणोमि लघुप्रपचम् ।।१।।
मद्ज्ञानमरुत्प्रीतं मलमत्र यदि स्थितम् ।
तन्निष्काश्योर्मिवत्सन्त प्रवत्तन्तामिहाब्दिवत् ।।२।।

Closing ।

अकलङ्करत्ननन्दिप्रभेन्दुमददम्ततगुणिभक्त्या ।
एतद्विका बालो निरुद्धवारि ने(?)ष किल गुरु भक्त्या ।।
स्याद्वादनीनिकान्तामुखलोकनमुख्यसौख्यमिच्छन्त ।
न्यायमणिदीपिका हृद्वासागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधा ।।

Colophon ' इति परीक्षामुखलघुवृत्ते प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धाया न्यायमणिदीपिकासज्ञाया टीकायां षष्ठ परिच्छेद ।

श्रीमत्स्वर्गीयबाबूदेवकुमारस्यात्मजदानवीरबाबूनिर्मलकुमारस्यादेशमादाय आगराप्रान्तगतसकरौलीनिवासिन रेवतीलालस्यात्मजराजकुमरविद्यार्थिना लिखितमिद शास्त्रम् ।

इद लक्ष्मणभट्टेन विलिखित प्रथम शास्त्र लक्षीकृत्य लिखितम् । संशोधयितव्या विद्वज्जनै । प्रतिलिपिकाल स० १६८० श्रावण-शुक्ल- त्रयोदशी ।

४६७. न्यायविनिश्चय विवरण

Opening : श्रीमज्ज्ञानमयोदयोऽनतपदव्यक्तोविविक्त जगत्
कुर्वन्सर्वतनूमदीक्षामष्पसर्वे विश्व वचो रश्मिभि· ॥
व्यातन्वन्भुवि भव्यलोक नलिनी षडेष्वरखडश्रिय
श्रेय शाश्वतमातनोतु भवता देवोजिनार्हयन्यति ॥१॥

Closing : व्याख्यानरत्नमालेय प्रस्फुरन्नयदीधिति ।
क्रियता हृदि विद्वद्भिस्तुदतीमानस तम ॥

Colophon : श्रीमान्सिंह महीपते परिषधि प्रख्यातवादोन्नति·
तर्कन्यायतमोघ्नतोदयगिरि सारस्वत श्री निधि ॥
शिष्य श्रीमतिसागरस्य विदुषा पत्युस्तप· श्रीभृता
भर्तु सिंहपुरेश्वरो विजयते स्याद्वादविद्यापति ॥
इत्याचार्यवर्यस्याद्वादविद्यापति विरचितायां न्यायविनिश्चय-
तात्पर्यविद्योतिन्या व्याख्यानरत्नमालाया तृतीय. प्रस्ताव समाप्त ॥
समाप्त च शास्त्रम् । ॐ नमो वीतरागाय ॐ नम सिद्धेभ्य । करकृत-
मपराध क्षन्तुमर्हन्ति सन्त· । ६ ।शाके १८३२ वर्तमानसा-
धारण नाम सवत्सरे उदयगयने वसतऋतौ चैत्रे मासे कृष्णपक्षे द्वाद-
श्या भार्गववासरे मध्याह्नसमये समाप्तोऽय ग्रथ. । इदपुस्तक ३६ पी
प्रांत दुर्ग्रग्रामवासिना फुडा जेमरावटे इत्युपनामक रामकृष्णशा-
स्त्रीणा लिखितम् ॥
श्री सन् १२१०-५-७ ॥

४६८. परीक्षामुखवचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेश रवि, तम अज्ञान नशाय ।
शिव पथ वरतायो जगति, वदौं मैं तसु पाय ॥

Closing : अष्टादशतमाठिलय विक्रम सवत माहि ।
सुकल असाढ सु चोथि बुध पूरण करी सुचाहि ॥

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्यायप्रकरण की लघुवृत्ति प्रमेयरत्न-
माला की देशभाषामय वचनिका जयचद छावड़ा कृत सपूर्ण । सवत्
१९२७ मिती पौहोवदी १ । श्री ।

४६९. परीक्षामुखवचनिका

Opening : देखें—क्र० ४६४।

Closing : देखें—क्र० ४६४।

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्याय प्रकरण की लघुवृत्ति प्रयेयरत्न-माला की देशभाषामय वचनिका जयचद्र छावडा कृता समाप्ता। सवत् १९६२ वैशाख कृष्णा ५ पचमी सोमवासरे। शुभ भवतु।

४७०. प्रमाणलक्षण

Opening : सिद्धधर्म महारिमोहहनन कीर्तें पर मदिरम्,
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुख सशीति विध्वसनम्।
सर्वप्राणिहित प्रभेदु वचन सिद्ध प्रमालक्षणम्,
सतश्चेतसि चितयतु सतत श्री वर्धमान जिनम्॥

Closing : तत्कालभावी–उत्तरकालभावी वा विज्ञानप्रमाणता हेतु: न भावत्तत्कालभाविक्वचिन्मिथ्यात्वज्ञानेपि तस्य भावात् अथोत्तर-कालभावि–स किं ज्ञातोऽज्ञातो न तावदज्ञा॥

Colophon : नही है।

४७१. प्रमाण मीमांसा

Opening : अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यानन्दमयात्मने।
नमोऽर्हते कृत्याकृत्य धर्मतीर्थयितायिने॥

Closing : यतो न विज्ञातस्वरूपस्यास्यवलवन जयाय प्रभवति न चावि-ज्ञातस्वरुप परतत्र भेत्तु शक्यमित्याह।

Colophon : इति प्रमाणमीमासा ग्रन्थ। मिती श्रावण कृष्णा १० सवत् १९८७।

४७२ प्रमाणप्रमेय

Opening : तन्त्रिकालवर्त्यशेषवस्तुक्रमव्यापि केवलं सकलप्रत्यक्षम्॥

Closing : स्पर्शरसगधरूपा शब्दसख्याविभागसयोगो परिमाण च प्रथक्त्वं तथा परत्वापेच ? समाप्त श्रीरस्तु.॥

Colophon : इदं पुस्तक परिधाविनाम संवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मऋतौ निज आषाढ़मासे कृष्णपक्षे दशम्या गुरुवासरे दिवा दश घटिकायां वेणुपुरस्थित पन्नेवारी मठस्थ श्रीपति अर्चक गौडसारस्वत ब्राह्मन् विदवत् षट्कर्मी वेदमूर्तिवामननाम शर्मणस्य पचमात्मज. केशवनाम षार्म्मणेन लिखितमिति । समाप्तमित्यर्थ. श्रीरस्तु । श्री पचगुरुभ्यः वीतरागाय नम. ।
नयी लिपि मे—यह ग्रन्थ वीर निर्वाण सवत् २४४० मे लिखा गया ।

४७३. प्रमाण-प्रमेय-कलिका

Opening : जयति निर्जिताशेषसर्वथैकान्तनीतय ।
सत्यवास्याधिपा शश्वद्विद्यानदादिजिनेश्वरा ॥

Closing : ननु यद्येव कथमेकाधिपत्य न भवतीति चेत्, इत्यत्राप्युक्त समतभद्राचार्यै ।
काल कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतु प्रवक्तुर्वचनात्ययो वा ।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मी प्रभुत्वशक्तेरपवादहेतु ॥

Colophon : इति श्री नरेन्द्रसेनविरचिता प्रमाणप्रमेयकलिका समाप्ता । लिप्यकृतशुभचिंतक लेख्यकदयाचदमहात्मा । शुभमस्तु । मिति भादवा प्रथमशुक्लपक्षे छठि रविवासरे सवत् १८७१ का ।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा के लिए प्रतिलिपि की गई । शुभमिति मार्गशीर्षशुक्ला द्वादसी १२ चन्द्रवार विक्रम संवत् १९९१ । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन । इति ।

देखें—जि. र. को., पृ. २६८ ।
दि. जि ग्र. र, पृ. ९८ ।
रा सू II, पृ १९८ ।

४७४. प्रमेयकमल मार्तण्ड

Opening : देखें—क्र० ४७० ।

Closing : इति श्री प्रभाचंदविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालकारे षष्ठ परिच्छेद सपूर्ण ॥

Colophon , गभीरनिखिलार्थगोचरमल शिष्यप्रबोधप्रद
यद्व्यक्त पदमद्विचीयमखिल माणिक्य नन्दी प्रभो ।
तद्व्याख्यातमदोयथागमत किंचन्मया लेशत
स्वेया(?) द्बुधिया मनोरवतिगृहे चद्रार्कतारावधि ॥
मोहध्वातविनाशनो निखिलतो विज्ञानबुद्धिप्रदो
मेयानतनभोविसर्पणपटुर्वस्तु विभाभासुर
शिष्याब्जप्रतिबोधने समुदितो योग्रेपरीक्षामुखा-
ज्जीयात् सोत्र निबधरावसुचिर मार्तण्डतुल्योमत्र ॥२॥
गुरु श्री नदि माणिक्यनंदिताशेषसज्जन
नदता हरितैकनर आर्जनमती ?वं ॥

श्री पद्मनदिमिद्धामतिशिष्योनेकगुणालय प्रभाचद्राश्चिर जीया ।
पदेरत इति श्री प्रमेयकमलमार्त्तण्ड सपूर्णनामगमत् ।
मिति प्रथमजेवा सुदी ६ सनीचरवार सवत् १८८६ का मपूर्ण हुवा ग्रथ

विशेष —बाबू श्रीमधरदाम आरेवाले की पोथी है।

देखे —दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६८।
जि० र० को०, पृ० २३८, २६६।
प्र० जै० सा०, पृ० १७७।
रा० सू० II, पृ० १६८।
Catg. of skt & pkt Ms., P 671.
Catg. of skt. Ms., P. 306.

४७५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड

Opening सिद्धे र्धाममहारिमोहहनन कीर्त्तें परं मन्दिरं
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुख सशीतिविध्वंसनम् ॥
मर्वप्राणिहित प्रभेन्दुभवन सिद्ध प्रमालक्षणं
सन्तश्चेतमि चिन्तयन्तु सतत श्री वर्द्धमान जिनम् ॥२॥

Closing : यत्तुणास्त्रान्तरद्वारेणापगतहेयोपादेयस्वरूपो न त प्रतीत्यर्थ. ॥
इति ॥

Colophon : इति श्री प्रभाचन्द्राचार्यविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालंकारे षष्ठ: परिच्छेद ॥

४७६. प्रमेयकण्ठिका

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य विष्णु विश्वसृज हरम् ।
परीक्षामुखसूत्रस्य ग्रन्थस्यार्थं विवृण्महे ।।१।।
अथ स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान प्रमाणमिति प्रमाणलक्षण बाधातीत नान्यद्युक्तिशतबाधितत्वात् । ननु स्वापूर्वार्थेतिलक्षणे यानि विशेणान्युपात्तावितानि निर्थकानीतिचेन्न परप्रतिपादितानेकदूषणवारकत्वेन तेषा सार्थकत्वात् ।

Closing : प्रमेयकण्ठिका जीयात्प्रसिद्धानेकसद्गुणा
लसन्मार्त्तण्डसाम्राज्ययौवराज्यस्य कण्ठिका ।।
सनिष्कलङ्कं जनयन्तु तर्के वा बाधितर्को मम तर्करत्ने ।
केनानिश ब्रह्मकृत कलङ्कश्चन्द्रस्य किं भूषणकारण न ।।

Colophon : क्रोधन संवत्सरे माघमासे कृष्णचतुर्दश्याय विजयचद्रेण जैन क्षत्रियेण । श्री शांतिवर्णिविरचिता प्रमेयकठिका लिखित्वा समर्पिता ।।
।। भद्रभूयात् वर्द्धतां जिनशासनम् ।।

४७७. प्रमेयरत्नमाला

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्तिर्माणिक्यनन्दिकृतशास्त्रमगाधबोध ।।
स्पष्टीकृत कतिपयैर्वचनैरुदारैर्बालप्रबोधकरमेतदनत विधै. ।।

Colophon : इति प्रमेयरत्नमालापरनामधया परीक्षामुखलघुवृत्ति समाप्ता ।। शुभम् संवत् १९६३ चै० शुक्ल लि० प० सीतारामशास्त्रि ।।

देखें Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 671.
Catg. Skt Ms , P 306.

४७८. प्रमेयरत्नमाला (न्यायमणिदीपिका)

Opening : श्री वर्द्धमानमकलंकमनंतवीर्यमाणिक्यनंदि-
यतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।।
भक्त्या प्रभेंदुरचिता लघुवृत्तिद्रष्ट्या नता यथा-
विधिवृणोमि लघुप्रपंचम् ।।१।।

Closing : स्याद्वादनीतिकांतामुखलोकन मुरगसौख्यामि वत ।।
न्यायमणिदीपिका हृदा सागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधा ।। ।।

Colophon : इति परीक्षामुखलघुवृतें प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धाया न्यायमणिदीपिकायाम् सज्ञायां टीकाया षष्ठ परिच्छेद ।। श्री वीत-रागाय नम । श्रीमद्महाकलंक मुनये नम । श्रीमद्वेदशास्त्रसपन्न मूडबिदे दक्षिण कन्नडापन्ने च्चारि (रिधत) वेदमूर्तिवामनमहस्यपुत्र-लक्ष्मणभट्टेन लिखितमिदं पुस्तक परिधावि सवत्सरे भाद्रपद ५ कुजवासरे सपूर्णश्च ।।

४७९. प्रमेयरत्नमाला-अर्थप्रकाशिका

Opening : श्रीमन्नेमिजिनेन्द्रस्य वन्दित्वा पादपङ्कजम् ।
प्रमेयरत्नमालार्थं सक्षेपेण विविच्यते ।।१।।
प्रमेयरत्नमालाया व्याख्यास्सन्ति सहस्रश ।
तथापि पण्डिताचार्यकृतिर्ग्राह्यैव कोविदैः ।।२।।

Closing : सर्वदाशकपदं शक्यपार्थवोधकमिति ज्ञानमित्य भूतनया-भासमित्यत्र विस्तर । सम्पूर्ण मगलमहा श्री ।।

Colophon : स्वस्ति श्रीमन्सुरासुरवृदवंदितपाद योज श्री मन्नेमीश्व रसमुत्पत्ति पवित्रीकृत गौतमगोत्र समुद्भूतार्हन् द्विज श्रीब्रह्मसूरि शास्त्रि तनुज श्री मद्दोवलिजिन दास शास्त्रिणामतेवासिना । मेरु गिरि गोत्रोत्पन्न । वि । विजय चद्राभिधेन जैन क्षत्रिणा लेखीति ।। भद्रं भूयात् ।।

४८०. षड्दर्शन प्रमाण प्रमेयानुप्रवेशः

Opening : सान्तनन्त समाख्यात व्यक्तानन्तचतुष्टयम् ।
त्रैलोक्ये यस्य साम्राज्य तस्मै तीर्थकृते नम. ।।

Closing : जयति शुभचंद्रदेव कण्डूगणपुण्डरीकवनमार्त्तण्ड ।
चण्डालदण्डदूरो सिद्धान्तपयोधिपारगोबुधाविनुत ॥

Colophon : इति समाप्त शुभ भवतात् वर्धता जिनशासनम् । इत्ययग्रथ दक्षिण कर्णाटके मूडबिद्री निवासिना राजू० नेमिराजाख्येन लिखितस्स-माप्रश्चस्मिन दिने ॥ रक्ताक्षिस । माघशुक्ल द्वादशी ॥

४८१. चिन्तामणिवृत्ति

Opening : श्रिय क्रियाद्व सर्वज्ञज्ञानज्योतिरनश्वरीम् ।
विश्व प्रकाशयश्चितामणिश्चितार्थसाधनम् ॥

Closing : किं भोजको गच्छति तुल्यकर्तृक इति किं इच्छामि ववान् क्रियाया तदर्थायामिति किं इच्छा न भुवते ॥

Colophon इति श्री श्रुतकेवलिदेशीयाचार्य शाकटायनकृतौ शब्दानुशासने चितामणौ वृत्तौ चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थ. पाद समाप्तोध्यायश्चतुर्थ ॥ स्याद्वादाधिपशाकटायनमहाचार्य प्रणीतस्यय शब्दानुशासनस्य महतीवृत्ति -स्समाहृत्यताम् ।

प्रेक्षातिक्षम यक्षवर्मरचिता वृत्तिर्लघीयस्यऽसौ ।
श्री चिंतामणिसज्ञिकाविजयतामाचद्रतार भुवि ॥

श्रीमते शाकटायनाचार्याय नम ।।श्रीयक्षवर्माचार्याय नम

दक्षिणकर्नाटदेशे कार्कल दुर्गाग्रामे शके १८३२ स्य वर्त माने साधारणनाम सवत्सरे मार्गशीर्षे कृष्णे अष्टम्याया स्थिरवासरे लिखितोऽय ग्रन्थ । फु डाजेरामकृष्णशास्त्रिण· पुत्रेण रगनाथ शास्त्रिणा अस्मद्गुरवे नम । लक्ष्मीसेन गुरुभ्यो नम ।

देखे—Catg of Skt & Pkt. Ms., P 694

४८२. धातुपाठ

Opening : श्री विद्याप्रकृति नत्वा जिन शब्दानुशासने ॥
मूलप्रकृति पाठोऽय क्रियार्थगणसिद्धये ॥ ॥

Closing : .. एकादशेति शब्दानुशासने धातवो मता. ॥
धातुपाठ समाप्त· । श्रीकल्याणकीर्त्तिमुनये नम.

४८३. हेमचन्द्रकोष

Opening : इमनालोड इम प्रत्ययातमल प्रयात नाम पुल्लिग । इनमृ प्रतिधिमा प्रदिमाश्रुतिम्यद्रोठमा इत्यादि । तथा निवसिद्ध इम न ग्रहण-मावाशदिरिति नपुन्सक च बाधनार्थ ।

Closing : यत्नोक्तमत्रसद्धिल्लो कतएव विज्ञेय लिग शिष्या लोकाश्रय चाल्लिगस्येतिवान ता सख्याऽतिपुष्मदुरमस्चस्फर्गनगका पदवाक्यमव्य-यचित्य सख्य च तछ हुल्तर विपुला निस्वाप नाम लिगानुशासनाम्यभि समीक्ष्य सख्या क्षप्यत । आचार्य हेमचन्द्र समद्दमदनुशासनानि लिगाना ।

Colophon : इत्याचार्य श्री हेमचन्द्रविरचित स्वोपज्ञलिगानुशासन विवरण समाप्त ॥

विशेष—यह ग्रन्थ पूर्णत जीर्णशीर्ण अवस्था मे है । अत इसके सभी अक्षर स्पष्ट पढे नही जा सकते है ।

देखे— (१) दि जि ग्र र, पृ १०१ ।
(२) जि र को, पृ ४६२ ।

४८४ जैनेन्द्रव्याकरण महावृत्ति

Opening : प्रारम्भ के ७९ पत्र नही है ।

Closing : चतुष्टय समन्तभद्रस्य ॥१२८॥ फगोह इत्यादि चतुष्टय समन्तभद्राचार्यस्य मतेन भवति, नान्येषा, तथाचैवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनदिविरचिताया जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पचमस्या-ध्यायस्य चतुर्थपाद समाप्त । समाप्तश्चपचमोध्याय । मगलमस्तु । इति श्री जैनेन्द्रव्याकरणग्रन्थ । आरे मध्ये लिखायित जैनधर्मीशुभकर्मीबाबू कन्हैयालाल तस्यात्मज बाबू श्रीमन्दिरदास निजपरोपकारार्थ लिपिकृत देवकुमारलालभक्त कायस्थ शुभ मिति आषाढ सुदी सप्तमी सोमवार सवत् १९०७ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

देखें—(१) दि जि ग्र र., पृ. १०२ ।
(२) जि र. को, पृ १४६ (I) ।
(३) प्र॰ जै॰ सा॰, पृ॰ १४८ ।
(४) आ॰ सू॰ पृ॰ ६४ ।
(४) रा. सू II, पृ २५७ ।
(५) रा. सू III, पृ. ८७ ।
(६) Catg of Skt & Pkt. Ms., P. 645.

४८५. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : लक्ष्मीरात्यंतिकीयस्य निरवद्यावभासते ।
देवनंदितपूजेशे नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥

Closing : झरोझरि खे २३ ॥

Colophon : इत्यभयनंदिविरचिताया जैनेन्द्रमहावृत्तौ पचमस्याध्यस्य चतुर्थः पाद समाप्तः । शुभमस्तु मगलमस्तु ।

४८६/१. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : Missing.

Closing : कुयोह इत्यादिचतुष्टयं समतभद्राचार्यस्य मतेन भवति नान्येषां तथाचेवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनदिविरचिताया जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पचमस्या–ध्यायस्य चतुर्थ. पाद समाप्त । समाप्तश्चाय पचमोध्याय. ॥

४८६।२· कातन्त्र विस्तार

Opening : जिनेश्वर नमस्कृत्य गौतम तदनन्तरम् ।
सुगम. क्रियतेऽस्माभिरय कातत्रविस्तर ॥

Closing : सणे तद्धिते वृद्धिरागमो वा भवति । न्यकोरिदन्यांकव नैयकव ।

Colophon : इति श्री मस्कर्णदेवोपाध्यायश्रीवर्धमानविरचिते कातत्रविस्तरे तद्धिते दशमप्रकरण समाप्तमिति ।

परिसमाप्तोऽय कातत्रविस्तरो नाम ग्रन्थो माघवकृष्णाष्टम्यां लिखित्वा मया रानू नामधेयेन । सन् १६२८ ।

४८७. पंचसन्धि व्याकरण

Opening : प्रणम्य परमात्मान बालधी वृद्धिसिद्धये ।
सारस्वतीमृजुकुर्व्वेपि क्रियां नातिविस्तराम् ॥

Closing : भ्रमत् अग्र रुडप्रत्यय· डित्वादिलोप: स्वरहीनं अत्र तकारस्य नाश. प्रथमैकवचनं सि इकार उच्चारणार्थं· इति इकारलोप स्त्रोविसर्ग: भ्रमन् सन् रौतिशब्द करोतीति भ्रमर. इति सिद्धम् ।

Colophon : इति विसर्ग सधि । पचसधि पूर्ण जातम् । इति सारस्वत पचसधि सपूर्णम् ।

४८८. प्राकृत व्याकरण (२ अध्याय)

Opening : अत्र प्रणम्य सर्वज्ञ विज्ञानदास्पदप्रदम् ।
पूज्यपाद प्रवक्ष्यामि प्राकृतव्याकृतस्सताम् ।।

Closing : .... एक्केकूक एक्केक्के एअगगस्मिरसेजारत अत. अकारातात् लिङ्गात् परस्य स्यादि ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

४८९. रूपसिद्धि व्याकरण

Opening : श्री वीरममल पूर्णश्री दृग्वीर्यसुखात्मकम् ।
नत्वा देवमबाधोक्ति रूपसिद्धि हिता ब्रुवे ।।

Closing : इञ्न इति दीर्घं । अधिजिगासते व्याकरण । इत्यादि समस्त मप्रवच शब्दानुशासन विद्वद्भिरुन्नेतव्यम् ।

Colophon : इति रूपसिद्धि, समाप्त. । श्री कृष्नार्पण श्री गुमटनाथाय नम । इति धातुप्रत्ययसिद्धि,
व्याकरणोघमो नीत्वा प्राप्तु ज्ञानसुखामृतम् ।
बालानामृजुमार्गोय सक्षेपेण प्रदर्शित, ।।
दयापालकृता सम्वत् रूपसिद्धि प्रवर्धताम् ।
भूमावदित्तमो भेत्ति विपुनो (लो) भानु रश्मिवत् ।।
जिननाथाय नम. ।

४९०. सरस्वती प्रक्रिया

Opening : .. . आव् भवति स्वरे परे पौ अक,, पावक: . ।

Closing : अवताद्वोहयग्रीव, कमलाकरईश्वर. ।
सुरासुरनराकारमधुपापीतपत्कज. ।।

Colophon : इति श्री सरस्वती प्रक्रिया समाप्ता ।
सवत् १८०६ वर्षे मार्ग वदी ४ शुक्रे लिखितं पंडित श्री हेमराजेन स्व पठनार्थम् । शुभ भवतु ।

४६१. सिद्धान्त चन्द्रिका

Opening : नमस्कृत्य महेशान ... ।
वर्णप्रतीतिसूत्रागा, कुर्व्वे सिद्धान्तचन्द्रिका ।

Closing : ककारादि फो बा रेफ रकार लोकाछे बषस्य सिद्धिर्यथामातरा दे ।

Colophon : इति श्री रामचद्राश्रम विरचिताया सिद्धान्तचन्द्रिका सम्पूर्णम् ।
अदृष्टिदोषान् मतिविभ्रमाश्च यदर्थहीन लिषत मयात्र ।
तत्साधुमुख्यैरपि शोधनीय कोपो न कार्यं खलु लेषकाय ॥
यादृश पुस्तक ... ॥
वाचनाचार्यवर्यधुर्यज्ञानकुशलगणि: तत्शिष्यप्रशिष्यपडितोत्तमपडित श्री ज्ञानसिंहगणि शिष्य धनजी लिषत । श्री मेदणी तटमध्ये ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १०६ ।
(२) रा० सू० II, पृ० २६, २६४ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २३१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १४२ ।
(५) जि र को., पृ ४३६ (II) ।

४६२. तद्धित प्रक्रिया

Opening : .. आआ एऐ ओ एते वृद्धिसञ्ज्ञका: भवन्ति ।

Closing : .. सख्यायां द्वितय, त्रितय, द्वय शेषानिपात्या। कृत्यादयाः कृति यति तति ।

Opening : इति तद्धितप्रक्रिया समाप्ता ।

४६३. धनञ्जयकोष

Opening : तन्नमामि परं ज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्यां यत् विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥

Closing : अर्हत्सिद्धमितिद्वावप्यर्हत्सिद्धाभिधायिनै ।
अर्हदादिनापि प्राहु शरणोत्तममगलान् ।।

Colophon : नही है ।
देखे—Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 654

४६४. नाममाला

Opening : बदौं श्री परमातमा, दरसावन निजपथ ।
तसु प्रसाद भाषा करौं, नाम मालिका ग्रन्थ ।।

Closing : सवत् अष्टादश लिषौ, जा ऊपर उनतीस ।
वासो दे भादौं सुदी, वातेचतुरदशीश ।।

Colophon : इति श्री देवीदास कृत नाममालिका मम्पूर्णम् । सवत् १८७२ वैशाख वदी २ आदि वारे ।

४६५. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : प्रणम्य परमात्मान सच्चिदानदमीश्वरम् ।
ग्रथनाम्यह नाममालां मालामिवमनोरमाम् ।।

Closing : भूद्वीपवर्षसरिदद्रिनभ समुद्रपातालदिक्,
ज्वलनवायु वनानि यावत् ।
यावन्मुद वितरतो भुविनरतो भुवि पुष्पवंतो,
तार्वास्थिरा विजयतां वत् नामालामिमा ।।

Colophon : इति श्री शारदीयाख्यनाममाला समाप्ता ।
संवत् १८२८ वर्षे मासोत्त (मे) मासे वैशाखमासे कृष्णपक्ष-पंचम्या गुरुवासरे गोपाचलमध्ये लिखितमाचार्य सकलकीर्ति स्वहस्ते । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । शुभभवतु ।
एकाक्षर परमदातारो ज्योगुरु नर्यव मन्यते ।
स्वानज्योन्यसत गत्वा चौकालो शुभजायते ।।
देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १११ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३३५ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 695.

४९६. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : देखें—क्र० ४६३ ।

Closing : देखें,—क्र० ४६३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य लघु नाममाला समाप्तम् । सवत् १६१८ मासाना मासोत्तममासे मार्गशिर मासे शुभेशुक्लपक्षे तिथौ षष्ठी भृगुवासरे लिपीकृत ब्राह्मण रामगोपालेन वासी मौजपुर को लीखी रामगढ़-मध्ये । शुभमस्तु ।

४९७. शारदीयाख्यनाममाला

Opening देखें—क्र० ४६३ ।

Closing : देखें—क्र० ४६३ ।

Colophon . इति श्री सारदीयाख्य नाममाला समाप्त । सवत् १६८५ का जेष्ट शुक्ला ८ शनिवासरे ।

४९८. त्रेपनक्रियाकोष

Opening : समवसरण लिछिमी सहित वरधमान जिनराय ।
नमो विबुध वदित चरन भविजन कौं सुखदाय ।।

Closing : जबलौ धर्मजिनेश्वर साह । जगत माँहि वरतै सुखकार ।।
तबलो विसतरिजो ईह ग्रन्थ । भविजन सुर शिव दायक पथ ।।

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया भाषा ग्रन्थ सिंघई किसनसिंघ (सिंह) कृत सपूर्णम् । मिती फूस (पौष) सुदी ११ सवत् १६६१ ।

४९९. त्रेपनक्रिया कोष

Opening : देखें—क्र० ४९६ ।

Closing : देखें—क्र० ४९६ ।

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया कोस विधान का छंद की जाति का अंक २६१५ एक अधिकार का अंक १०८। श्लोक संख्या टीका शुद्ध । ३००० । तीन हजार के ऊन मान ।

इति श्री क्रियाकोस भाषाग्रन्थ सिंही किसनसिंघ कृत संपूर्णम् श्रीरस्तु ॥

५००. उर्वशीनाममाला

Opening : श्री आदिपुरुष कहिये जगत, जाकी आदि अनंत ।
अगम अगोचर विस्वपति, सो सुमिरो भगवंत ॥

Closing : वक्तासुरगुरुसौ हुतो श्रोता हो सुरराज ।
तहुभवन पारन लह्यो कहा औरको काज ॥

Colophon : इति श्री शिरोमणि कृता उर्वशीनाममाला संपूर्णं । शुभभवतु ।

५०१. विश्वलोचन कोष

Opening : जयति भगवानास्तां धर्म्म प्रसीदतु भारती,
वहन्तु जगतीप्रेमोद्गारतरंञ्चशुभ जना ।

अयमपि ममश्रेयानगु स्तनोन्नमनोमुद
किमधिकमितस्त्यक्तावेगान् भवन्तु विपश्चित ॥१॥

Closing : द्वेहे व्यस्तौ समस्तौ च स्मृत्या मत्र हूतिषु ॥
हौच हौव समस्तौ व सबुद्धया ध्यानयोर्म्मतौ ॥६६॥

Colophon : इति श्री पंडित श्री श्री धरसेन विरचिताया विश्वलोचन-मित्यपराभिधानाया मुक्तवल्या नामार्थकांड समाप्त ॥ संवत् ॥१६६१॥ वर्षे ? मासे शुक्लपक्षे .... षेदासः ? आनतीयो १३ दिने गुरुवारे ॥

५०२. अलंकारसंग्रह

Opening : जगद्वैचित्र्यजननं जागरूकपदद्वयम् ।
अवियोगरसाभिज्ञमाद्य मिथुनमाश्रये ॥१॥

Closing : सर्वदोषरहित सगुणं यत् काव्यमव्ययशकरमूर्व्यम् ।
स्वच्चारिश्रमि वमादुनिषिव्य गर्वितारियमग डरग डए ।

Colophon : इत्यमृतानदयोगी प्रवरविरचितेऽलकारसंग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम षष्ठ परिच्छेद ।।५२४।।
जुम्ला श्लोक ६६० ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १७

५०३. अलंकारसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ५०२ ।

Closing : रसोक्तस्यान्यथाव्याख्यारात्रीचार्या बुद्धिशालिभि. ।।

Colophon : इत्यमृतानदयोगि प्रवरविरचिते अलकारसग्रहे वस्तुनिर्णयो नामाष्टमो अध्याय ।

करकृतमपराध क्षतुमर्हन्तिसत ।।
अयमलकारमग्रहो नाम ग्रथ रानू नेमिराजाख्येन लिखितः
रक्ताक्षिस माघमासे शुलपक्षे द्वितीया तिथौ समाप्तश्च ।।

५०४. बारहमासा

Opening : अलिरी घर नेमपिया बिनमैं नर होरी ।
प्रथ(म)लियो नहि मन समुकाय ।
नाहक पठयो है लगन लिखाय ।।

Closing : जेठ सपूरन बारहमास, नेम लियो सिवथान नेवास ।
रजमति सुरपद पाई विख्यात, सागरबुध कहत यह बात ।।

Colophon : बारहमासा सपूरनं ।

५०५. चन्द्रोन्मीलन

Opening : चन्द्रप्रभ नमस्कृत्य चन्द्राभ चन्द्रलाञ्छनम् ।।
चन्द्रोन्मीलनक वक्ष्ये, सकलाद्य चराचरम् ।

Closing : यत्तु लभ्यते तत्तत्संवत्सर आदित्य वद्वितप्रश्ना-
दित्य लभ्यते ।
चन्द्रवद्वितप्रश्ना चन्द्र लभ्यते,
क्षितिजवद्वित प्रश्ना भौम लभ्यते ।।

Colophon : इति चन्द्रोन्मील्न समाप्त ।

देखें--जि० र० को० पृ०, १२१

५०६. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : .... एव चन्द्रमा मे चन्द्रलोक की प्राप्ति और भौम से भौम लोक की प्राप्ति कहना चाहिए ।

Colophon इति चन्द्रोन्मीलन समाप्तम् । शुभ भवतु ।
शुभमिति फाल्गुन शुक्ला ५ स० १९९० ।

देखे--जि० र० को०, पृ० १२१ ।

५०७ चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : देखें, क्र० ५०६ ।

Colophon इति चन्द्रोन्मीलन समाप्तम् ।

५०८. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोद ते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेन्द्र मगल करो नितप्रति नयो उछाह ।।१।।

Closing : सो सम्यक्त सहित बने व्रत सयम सम्बन्ध ।
तो उपमा सांची फबे सोना और सुगन्ध ।।

Colophon : नही है ।

५०९. फुटकर कवित्त

Opening : भौ (भव) जल माहि भरयो चिर जीव सदीव
अतीत भवस्थिति गाठी।
राग विरोध विमोह उदै वसु कर्मप्रकृति लगि
अति गाठी ॥

Closing : ... ? अस्पष्ट।

Colophon : इति कवित्तानि।

५१०. फुटकर कवित्त

Opening : देखे, क्र० ५०९।

Closing : कहूं लताहूं फूल्यौ कहू फूलहूं फूल्यौ कहू,
भौंरहूं भूल्यो कहूँ रूप कहू दिष्ट है।
सकल निवासी अविनाशी सर्वभूतवासी,
गुपत प्रकासी आपै सिष्ट आपै मिष्ट हैं।

Colophon : इति श्री तिलोकचंदकृत फुटकर कवित्त सम्पूर्णम्।
सवत् द्वादशषष्टहै, अवर असी परमानि।
माघशुक्ल द्वितीया तिथौ, बार चद्र शुभ जानि ॥१॥
अच्छेलाल आरे बसें, लिखवायो जिन ग्रथ।
नदलाल लेखक सही, समीचीन यह पथ ॥२॥
गगातट छपरा नगर दवलत गज सुधाम।
तहा लिखि पूरन कियो, सु दर रचि विश्राम ॥३॥

५११. नीतिवाक्यामृत

Opening : सोमं सोमसमाकारं, सोमाभं सोमसंभवम्।
सोमदेवमुनिं नत्वा, नीतिवाक्यामृत ब्रुवे ॥

Closing : ... · जनस्याकृतविप्रियस्य हि बालकस्य जनन्येव जीवितव्यकारणम् ।

Colophon : इति सकलतार्किकचक्रचूडामणिचुंबितचरणस्य रमणीयपञ्चपचाशन्महावादिविजयोपार्जितोजिर्कीर्ति मदाकिनीपवित्रित त्रिभुवनस्य परमतपश्चरणरत्नोदन्वत. श्रीनेमिदेवभगवत प्रियशिष्येण वादीन्द्रकालानल श्रीमन्महेन्द्रदेवभट्टारकानुजेन स्याद्वादाचलसिंह तार्किकचक्रवर्तिवादिभय चाननवाक्कल्लोलपयोनिधि के कुलराजकुंजरप्रभृतिप्रशस्तिप्रशस्तालकारेण षण्णवतिप्रकरणयुक्तिचिंतामणि त्रिवर्गमहेन्द्रमानलिसजल्पयशोधरमहाराज चरित्र महाशास्त्रवेधसा श्रीमत्सोमदेवसूरिणा विरचित नीतिवाक्यामृत नाम राजनीतिशास्त्र समाप्तम् ।

मिति पौष कृष्णदशम्ययां रविवासरान्वितायां शुभसवत्सर १६१० का मध्ये समाप्तम् । लिखित ब्राह्मण गमकवारकेन, लिखायतचिरजीवसाहु जी श्री सदासुख जी कासलीवाल जयनगरमध्ये लिखि ।

देखे—जि र को, पृ २१५ ।
Catg of Skt. & Pkt Ms, P 660

५१२. नीतिवाक्यामृत

Opening : देखे—क्र० ५११ ।

Closing : अथाप्तलक्षणमाह । यथानुभूतानुमतश्रुतार्थाविसंवादिवचन पुमानाप्त यथाभूत सत्य अनुमत लोकसमत यथाश्रुतार्थ भुतार्थौ यस्य वचनस्य स आप्तपुरुष ।

५१३. रत्नमंजूषा

Opening : यो भूतभव्यभवदर्थयथार्थवेदी, देवासुरेन्द्रमुकुटपादपद्म. ।
विद्यानदीप्रभवपर्वत एक एव, त क्षीणकल्मषगण
प्रणमामि वीरम् ॥

Closing : सैकामेकमणोज्ज्वलामभिमतच्छन्दोऽक्षरागारिका-
मेका श्रेणिमुपक्षिपन्नघरतोऽप्येकैकहीनाश्च ता. ।

उर्ध्वं द्विद्विगुह्यांकमेलनमशेष स्थानकेष्वालिखे-
देकच्छन्दसि खण्डमेरुम्मन पुंनागचन्द्रोदित ॥१॥

Colophon : एतत्त्रयोक्तक्रमेण प्रस्तारे कृते विवक्षितछन्दस् लगक्रियया सह तत. पूर्वस्थितसकलछन्दसां लगक्रिया सर्वा समायान्तीत्यर्थ ॥

देखें– जि० र० को०, पृ० ३२७ ।

५१४. राघवपाण्डवीयम् सटीक

Opening : श्रीमान् शिवानदनयीशवमो
भूयादिभूत्यै मुनिसुव्रतो व ॥
सद्धर्मसभूतिनरेन्द्रपूज्यो
भिन्नेन्दुनीलोल्लसदगकांति. ॥१॥

Closing : केन गुरुणा किमाख्येन दशरथेनेति

Colophon : इति निरवद्यविद्यामडनपडितमडलीजितस्य षट्तर्कचक्रवर्तिन श्रीमद्विनयचद्रपडितस्य गुरुरतेवासिनो देवनदिनाम्न' शिष्येण सकलकलोद्भवचारुचातुरीचद्रिकाचकोरेण विरचिताया द्विसधानकवेर्धनजयस्य राघवपांडवीयाभिधानस्य महाकाव्यस्य पदकौमुदीनामदधानाया टीकाया नायकाभ्युदयरावणजरासधवधमावर्णन नामष्टादश सर्ग ॥१८॥

देखें—Catg of Skt & Pkt Ms. P 654.

५१५ शृंगारमञ्जरी

Opening : श्री मदादीश्वर नत्वा सोमवशधुवाधित ।
रायाख्य जैनभूपेन वक्ष्ये शृंगारमञ्जरीम् ॥१॥

Closing : तद्भूमिपालपाठार्थमुदितेयमलङ्क्रिया ।
सक्षेपेण बुधैर्ह्येषा यद्यत्रास्ति विशोध्यताम् ॥

Colophon : इति शृंगारमञ्जर्यां तृतीय' परिच्छेद. । श्री सेनगणाग्रगण्यातपोलक्ष्मीविराजिताजितसेनदेवयतीश्वरविरचित. शृंगारमञ्जरीनामालङ्कारोऽयम् । सवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुभशुक्लपक्षे चतुर्दश्या शुक्रवासरे आरानगरे श्रीयुत स्व० देवकुमारेण स्थापित जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुजबलिशास्त्रिण. अध्यक्षतां इद पुस्तक पूर्तिमगमत् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३८९ ।

५१६. शृंगारवर्णव चन्द्रिका

Opening :

जयति ससिद्धकाव्यालापपद्याकरेयम् (?)
बहुगुणयुतजीवन्मुक्तिपु स ' ' ।
रवाणीसारनिक्काणरम्यो—
जिनपतिकलहंसश्चारुसनीति(?) वक्ष्ये ॥१॥
अमन्दानन्दसन्दोहपीयूषरसदायिनीम् ।
स्तवीमि शारद दिव्यां सज्ज्ञानफल-
शालिनीम् ॥२॥

Closing :

कीर्तिस्ते विमला सदा वरगुणा वाणी जयश्रीपरा,
लक्ष्मी सर्वहिता सुख सुरसुख दान विधान महत् ।
ज्ञान पीनमिद पराक्रमगुणस्तुङ्गो नय. कोमल
रूप कान्ततर जयन्तमिव(?)भो श्रीरायभूमीश्वर ॥११७

Colophon : इति परमजिनेन्द्रवदनचन्द्रिरविनिर्गतस्याद्वादचन्द्रिकाचकोर-विजयकीर्तिमुनीन्द्रचरणाब्जचञ्चरीकविजयवर्णिविरचिते श्रीवीरनर-सिंहकामिरायनरेन्द्रशरदिन्दुसन्निभकीर्त्तिप्रकाशके शृङ्गारार्णवचन्द्रिका-नाम्नि अलङ्कारसग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम दशमः परिच्छेद समाप्त ।
श्रवणबेलुगुलक्षेत्र निवासि वि० विजयचद्रेण जैन क्षत्रियेण इद ग्रथ समाप्त लेखीति मगल महा ॥

५१७. श्रुतबोध

Opening :

छन्दसां लक्षण येन, श्रुतमात्रेण बुध्यते ।
तमहं सम्प्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥

Closing :

चत्वारो यत्रवर्णा प्रथमलघव षष्टकस्सप्तमोऽपि,
द्वौतावत्षोडशाद्यौ मृगमदमुदिते षोडशान्त्यो तथान्त्यौ ।
रम्भास्तम्भोरुकाण्डे मुनि मुनि मुनिभिर्यत्रकान्ते विराम',
बाले बन्ध्ये कवीन्द्रैस्सुतनु निगदिता स्रग्धरा सा प्रसिद्धा ॥

Colophon : इति श्रीमदजितसेनाचार्य विरचित श्रुतबोधाभिधानच्छन्दो-ल्लक्षण ग्रन्थ समाप्त ।

विशेष—यह ग्रन्थ कालिदास रचित है, किन्तु इसकी प्रशस्ति मे अजितसेन रचित लिखा है।

देखें—(१) दि० जि ग्र. र., पृ. १०८।
(२) जि० र० को०, पृ० ३९८।
(३) रा० सू० III, पृ० ८६, २३३।

१ . श्रुतबोध

Opening : देखें—क० ५१७।

Closing : देखें—क० ५१७।

Colophon : इति श्री कालिदासविरचितं श्रुतबोधाख्य छदस्सपूर्णम्। माधवद्य बल पचम्या लिलेख प्रकुनाथिघ्नो द्विजन्मा।

५१९. श्रुतपंचमीरासा

Opening : ... सुनहु भव्य एक चित देय सबही सुखकारी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुनैइ मन वच रुचिगाय।
सुख सपति आनद लहै वछित फल पावइ ॥

Colophon : नही है।

५२०. सुभद्रा नाटिका

Opening : आर्हन्तीमतुलामवाप्य तपसामेक फल भूयमाय्,
यो नैराश्य प्रशस्त्रयस्व जगतामभ्यर्हणाया पदम्।
स्वीचक्रे स्तवनातिवर्तिविभवा सिद्धिश्रिय शाश्वती-
माद्यस्तीर्थकृतां कृति स वृषभः श्रेयांसि पुष्णातु न. ॥

Closing : ... भद्र विराय भवतां जिन शासनाय। नाभि एवमस्तु। इतिनिष्कान्ता. सर्वे।

Colophon : इति श्री भट्टारगोविन्दस्वामिन सुनुना श्रीकुमारसत्यवाक्यदे॰ वरवल्लभोदयसुवभातामार्येमिधाणमनुजेन कवेर्वर्द्ध मानस्याग्रजेन महा-कविना हस्तिमल्लेन विरचितायां सुभद्रानामनाटिकायां चतुर्थोऽङ्कः।
हस्तिमल्लस्य गोविन्दनन्दनस्य महीयस।
सूक्तिरत्नाकरस्यैषा सुभद्रानामनाटिका ॥
समाप्ता चेय सुभद्रा नाटिका। भद्रं भूयात्।

सत्यवत्सस्य परीक्षार्थं मुक्त मन्नमतगजम् ।
स मरण्यापुरेजित्वा हस्तिम-नेतिकीर्तित' ।।१।।
कविकुलगुरुणा तेन हि रचितेय नाटिका सुभाद्राख्या ।
'लिखिता' सुमार्थरम्या बुधजनपदसेविना 'शशिना' ।।२ ।
समाप्तश्चाय ग्रन्थ वैशाख शुक्ला प्रतिपत् वीर नि० स० २४५८ ।

देखें—जि० र०, को० पृ० ४४५ ।
Catg. of skt Ms, P. 304

५२१. सुभाषित मुक्तावली

Opening : अर्हंतो भगवतइध्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका ।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका,
पचै ते परमेष्ठिन प्रदिदिन कुर्वंतु ते मगलम् ।

Closing : सुखस्य दु:खस्य न कोपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
पुराकृत कर्म तदेव भुज्यते,
शरीरतो निस्तृपयत्त्वया कृतम् ।।

Colophon : नही है ।

विशेष—प्रारभ का श्लोक मगलाष्टक का है ।

५२२. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening : जनयति मुदमतर्भव्यपाथोरुहाणा हरति तिमिर राशि या प्रभामानवीव कृतनिखिलपदार्थद्योतनाभारतींद्रा वितरतु धृतदो षामार्हतीभारतीवः ।।१।।

Closing : आशीर्विध्वस्तकतोविपुलशमभृत श्रीमत कातकीर्ति
सूरेर्यातस्य पार श्रुतसलिनिधेर्देवसेनस्य शिष्य ।
विज्ञाताशेषशास्त्राव्रतसमितिभृतामग्रणीरस्तकोष:
श्रीमान्मान्यो मुनीनाममितगति मुनिस्त्यक्त निःशेष सगः ।। ।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४५ ।

(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५० ।
(४) आ० सू०, पृ० २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २८८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २३६ ।
(७) भ० सप्र०, पृ० २१३ ।

५२३. सुभाषितरत्नसदोह

Opening ।
दोषनत नृपतयो रिपवोपि रुष्टा ।
कुर्वंति केशरि करीद्रमहोरू गावा ।
धर्म्मं निहत्य भवकामन दाव वन्हि ।
यदोयमत्र विदधाति नरस्य शेष ॥१॥

Closing ।
यावच्चद्रदिवाकरौ दिविगतौ भिन्नस्तम शार्वर
यावन्मेरू तरगिणी परिवृढौनोमु चत
स्वस्थिति यावद्याति तरग भगुर तनुर्गगाहिमा-
द्रेर्भुव
तावच्छास्त्रमिद करोतु विदुषां पृथ्जीतले सम्मद ॥६॥

Colophon । इत्यमितगति विरचित सुभाषितरत्नसदोह सपूर्णता । सवत् १७८४ वर्षे कार्तिकमासे कृष्ण चतुर्दसी दीपोत्सव दिने श्री युगल वदिरे लिषतोय ग्रथ' शुभ भूयात् ।

५२४. सुभाषितावली

Opening ।
जनिाधीश नमस्कृत्य संसारांबुधितारकम् ।
स्वान्यस्पहितमुद्दिश्य वक्ष्ये सद्भाषितावलीम् ॥

Closing ।
जिनवरमुखजात ग्रथित श्री गणेन्द्रैः,
त्रिभुवनपति सेव्यं विश्वतत्त्वैकदीपम् ।
अमृतमिव सुमिष्ट धर्मबीज पवित्र,
सकलजनहितार्थं ज्ञानतीर्थं हि जीयात् ॥

Colophon । इति श्री सुभाषितावली संपूर्ण ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० २७ ।
जि० र० को०, पृ० ४४६ ।

आ० सू०, पृ० १४७ ।
रा० सू० II, पृ० ४४, ७४,२८८ ।
रा० सू० III, पृ० ६६, ३३७ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 701, 712.

५२५. सुभाषितावली

Opening : देखें—क्र० २२४ ।

Closing : नाभेयादिजिनेश्वराश्चविमलाः ख्याता परे ये जिना ।
त्रैकाल्ये प्रभवा व्यनीतगणना सौख्याकराः सौख्यदा. ॥
.... ।

Colophon : नहीं है ।

५२६. सुभाषित रत्नावली

Opening : देखें, क्र० ५२४ ।

Closing : देखें, क्र० ५२४ ।

Colophon : इति श्रीमदाचार्य श्री सकलकीर्तिविरचिता सुभाषितावली समाप्ता । सवत् १८३६ मिति आश्विन शुक्ला तृतीया भौमवासरे पुस्तकं लिपिकृतम् दिजसुखब्राह्मणम्य फरकनग्रमध्ये पठनार्थं लालचद-जी स्वपठनार्थम् ।

विशेष—" ॐ नमो सुग्रीवाय हुनवंताय (हनुमंताय) सर्वकीटकारक्षायपिपीलका बिलेप्रवेशाय स्वाहा ।"

५२७. सूक्ति-मुक्तावली

Opening : तक्रादिवहु नवनीतं पंकादिव च पद्ममनर्मिव जलात् ।
मुक्तामणिरिव वंशात् धर्मं सारमनुष्यभवात् ॥

Closing : नगरे वससि त्वं बालि, अटव्या नेव गच्छसि ।
व्याघ्ररीछमनुष्याणां, कथं जानासि भाषितम् ॥

Colophon : Missing.

५२८. सूक्ति मुक्तावली

Opening देखें, क्र० ५२१ ।

Closing : लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये किंचित् किंचित् कर्षणे ।

।

Colophon : **Missing**

५२९. सूक्ति मुक्तावली

Opening : सिंदूरप्रकरस्तप. करिशिर क्रोडे कषायाटवी
दावार्च्चिर्निचय प्रबोधदिवसप्रारंभसूर्योदय ।
मुक्तस्त्रिकुचकुंभ कुंकुमरस श्रेयस्तरोपल्लव · · ।
प्रोल्लास. क्रमयोर्नखद्युतिभर पार्श्वप्रभो पातुव: ॥१॥

Closing : अभजदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि
द्युमणिविजय-सिंहाचार्य पादारविंदे ॥
मधुकरसमता यस्तेन सोमप्रभेण
विरचि मुनिपराज्ञा सूक्तिमुक्तावलीयम् ॥

Colophon : इति श्री सोमप्रभसूरि विरचित सूक्तिमुक्ता वली सपूर्णम् ।
श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३०-३१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४१, ४४८, ४४९ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५१ ।
(४) आ० सू० पृ २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २९ ।
(६) रा० सू III, पृ० १००, २३७ ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 710, 712.

५३०. सूक्ति मुक्तावली (सिन्दूर प्रकरण)

Opening : देखें—क्र० ५२९ ।

Closing : देखें—क्र० ५२९ ।

Colophon : इति सूक्तिमुक्तावली सिन्दूरप्रकरण सपूर्णः । लिखत मुन्यषेतसी जी तस्य शिष्य ...... तस्य शिष्य सेवक आज्ञाकारी मून्य चन्द्रभाण गढ रणस्थभोर मध्ये सवत् १८१३ का ।।श्री।।

५३१. सिन्दूरप्रकरण

Opening : देखे क्र० ५२६ ।

Closing : सोमप्रभाचार्यमभाषयश्च पुसातम पकमपाकरोति ।
तदप्यमुस्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमाने निशमेति नाशम् ।।

Colophon : इति श्री सोमप्रभाचार्यकृत सिंदूरप्रकरण काव्य समाप्त-मिदम् । स्वस्ति श्री काष्ठासघे लौहाचार्याम्नाये भट्टारकोत्तमभट्टारक जी श्री १ ८ ललितकीर्त्तिदेवा तद्पट्टे भट्टारक श्री १०८ राजेन्द्रकीर्तिदेवा तेषा पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ मुनीन्द्र-कीर्त्तिदेवा महातपासि तेषा पठनार्थम् । सवत् १६४७ मध्ये कार्तिकमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्दा बुधवासरे आदिनाथबृहज्जिनमदिरे लक्ष्मणपुरमध्ये प्रात काले पडितपरमानन्दन रचितमिद शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

सन्दर्भ के लिए—क्र० ५२६ ।

५३२. अक्षर केवली

Opening : ॐकारे लभते सिद्धि प्रतिष्ठा च सुशोभना ।
सर्वकार्याणि सिद्धयति मित्राणा च समागम ।।

Closing : क्षकारे क्षेममारोग्य सर्वसिद्धिनसशय ।
पृछकस्यमहालाभ मित्रदर्शनमाप्नुते ।।

Colophon : इति अक्षरकेवली शकुन समाप्त ।

५३३. अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्र

Opening : ओं चिलि चिलि मिलि मिलि मानगिनि ! सत्य निर्दशय निर्दशय स्वाहा । ककारादि हकारान्त वर्णमात्रक विलिखेत् । तत्र

स्वकार्यं चिंतित यस्त्वया पश्यन् सर्वेषां वर्णमेक पृच्छय, सफलाफल शुभाशुभ निवेदयति ।

Closing . ह–हकारे सर्वासिद्धिश्च द्रव्यलाभश्च जायते ।
तस्मात्कर्मप्रकर्त्तव्य सफल तस्य जायते ॥४८॥

Colophon ' इति अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्रम् ।
श्री वेण्पुर (मूडविद्रि) स्थ श्री वीरवाणी विलाससिद्धान्त भवनस्य तालपत्रग्रथादुद्धृत श्री लोकनाथशास्त्रिणा आरा 'जैनसिद्धान्त-भवन कृते' श्री महावीर निर्वाण शक २४७० तमे मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष-पूर्णिमाया तिथौ परिसमापित च । इति मगलमह । ११-१२-१९४३ ।-

५ ३४ अरिष्टाध्याय

Opening । पणमत सुरासुरमउलि रयणवरकिरणकत विछुरिय ।
वीरजिनपाय जुयल णमिऊण भणेमि रिट्ठाइ ॥

Closing . अट्ठुारहछिणे जे लद्धहितछरे हाऊ ।
पढमो हि रह अक गविज्जए याहिण तछ ॥

Colophon । इत्यारिष्टाध्याय शास्त्र जिनभाषित समाप्तम् । मरणकाण्ड-निमित्तसारशास्त्र सम्पूर्णम् । सवत् १८३५ मास आषाढ वदि ३ शनीवार । शुभ भूयात् । लिखापित पडित रामचन्द ।

५३५. द्वादसभावफल

Opening । अथ द्वादसभावमध्ये रविफलम् ।

Closing । उच्च कन्या को सुग्रीव धन को नीच । इति उच्चनीच सुग्रीव ।
साथ मे उच्चनीच चक्र भी है ।

Colophon । नही है ।

५३६. गणितप्रकरण

Opening : यत्राप्यक्षरसदेह तत्र स्थाप्य तु देवरम् ।
त्यजेत्तद्गतवाक्यानि अन्य वाक्यानि शोधयेत् ॥

Closing : भिन्ना खविर्जानि रत्न भानु सुनिर्णय । इत्यपूर्णोऽय ग्रन्थ ।

Colophon : श्री वेण्पुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा मूडबिद्रिस्थ-श्री वीरवाणी विलास-नामक जैन सिद्धान्तभवनस्य ग्रन्थसग्रहादुद्धृत्य ज्योतिर्ज्ञानविधि आरा जैनसिद्धान्त भवनकृते श्री महावीर शक २४७० पौषमासस्य अमावस्याया दिने लिखित्वा परिसमापितमिति भद्र भूयात् ।

५३७. ज्ञानतिलक सटीक (२४ प्रकरण)

Opening : नमिऊण नमिय नमिय दुत्तरससारसायरुत्तिन्न ।
सव्वन्न वीरजिण पुलिंदिणि सिद्धमघ च ।।

Closing : • • अतश्चेतो वसति ११ महादेवान्मात्री (१२)

Colophon : इति श्री दिगम्बराचार्ये पण्डितश्रीदामनदिशिष्य भट्टवोसरि विरचिते सायश्री टीकायां ज्ञानतिलके चक्रपूजाप्रकरणम् समाप्तम् ।

शुभमिति आषाढकृष्णा ३ स० १६६० विक्रमीय । लिपि कर्त्ता रोशनलाल जैन कठूमर (अलवर) निवासी ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १४७ ।

५३८. ज्योतिर्ज्ञानविधि

Opening : प्रणिपत्य वर्धमान स्फुटकेवलदृष्टतत्वमीशानम् ।
ज्योतिर्ज्ञानविधान सम्यक्स्वायभुव वक्ष्ये ।।

Closing : ललाटलोके कलमा सुधी समा,
खनोरि खिशोरिव चेरि दौ नवा ।
कापालिकौपागमसाधुसमि
गाच्छायाहि, मध्यान्हनिमेषमुख्यत ।। १३ ।।

Colophon : इति श्री धराचार्य विरचिते ज्योतिर्ज्ञानविधौ श्रीकरणे लग्नप्रकरण नाम अष्टम परिच्छेद. ।

५३९. ज्ञा[न] प्रदीपिका

Opening : महावीरजिनाधीश सर्वज्ञ त्रिजगद्गुरुम् ।
प्रातिहा[र्या]ष्टकोपेत प्रकृष्ट प्रणमाम्यहम् ।।

द्वितीये वा तृतीये वा शुक्रश्चेत्तो समागम ।
अनेन च क्रमेणैव सर्वं वक्ष्म वदेत् स्फुट ।।

Colophon : इति ज्ञानप्रदीपिका नाम ज्योतिषशास्त्र समाप्तम् । मंगलमस्तु।। श्री भारत्यै नमो नम ।। अयमपि रानू नेमिराजनामधेयेन लिखित ।।

देखें—जि० र० को०, पृ० १४८ ।

५४०. केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि

Opening : अ क च ट त प य श वर्गा ।
आ ए क च ट त प य शा इति । प्रथम ।।१।।

Closing : जो पढमो सो मरओ, जो मरओ सो होइ अत्ति आ ।
अत्तिल्लेशा पढमो जतण्णाम णत्थि सदेहो ।।

Colophon : समाप्ता केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि ।

५४१. केवलज्ञानहोरा

Opening : अनन्तविद्याविभव जिनेन्द्र निधाय नित्य निरवद्यबोधम् ।
स्वान्तेदुहभिन्दुप्रभमिन्द्रवन्द्य वक्ष्ये परा केवलबोधहोराम् ।।१।

Closing : X X X X हगरे ६५ । हरियट्टि ९६ । हुक्केरि ६७ । हरिगे ६८ । हिप्परिगे ६६ । हुदुमु जि १०० । कोडन- हुब्बल्लि १०१ । होसदुर्ग १०२ । हिजर्याडि १०३ । हुवल्लि १०४ । हुणिसिगे १०५ । हनगवाडे १०६ हामाल्लि १०७ । सम्पूर्णम् ।

Colophon : यादृश पुस्त ·.......... दीयते ।।१।।

देखे—जि र को, पृ ६६ ।
Catg. of Skt Ms, P 318.

५४२. निमित्तशास्त्र टीका

Opening : सो जयउ जाए उसहो अणत ससार सायरुत्तिण्णो ।
कम्माणलेण जेण लीलाइ निउज्जइ मयणो ।।

Closing : एव बहुपायार उप्पायपरपरायणाऊण ।
रिसिपुत्तेणामुणिणा सवप्पिय अप्पगथेण ।।

Colophon : इति श्री एव रिखिपुत्तिकेय सपूर्ण । इति श्री गाथा निमित्त शास्त्र की सपूर्णम् ।

५४३. महानिमित्तशास्त्र

Opening : नमस्कृत्य जिन वीर, सुरासुरनतक्रमम् ।
यस्य ज्ञानांबुधे, प्राप्य, किंचिद्वक्ष्ये निमित्तकम् ।।

Closing : चत्तारि एक चत्ता मासावरणे चोत्तमसवावतगा ।
णाऊण विह विहिणा ततो विवियारण कुणह ।।

Colophon : इति श्री भद्रबाहु विरचिते निमित्त परिसमाप्तम् । शुभ भवतु कल्याणमस्तु । श्री । इति श्री भद्रबाहु विरचिते महानिमित्त-शास्त्रे सप्तविंशतिमाध्याय समाप्त ।

देखें— (१) जि र को, पृ २१२, २६ । (भद्रबाहुसंहिता)
(२) दि जि ग्र र, पृ १५ ।

५४४. महानिमित्तशास्त्र

Opening : देखें—क्र० ५४३ ।

Closing देखें—क्र० ५४३ ।

Colophon देखें—क्र० ५४३ ।

सवत् १८७७ कार्तिकमासे कृष्णपक्षे १ रविवासरे लिखित-मिद पुस्तकम् । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् ।

५४५. निमित्तशास्त्र टीका

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।

Colophon : देखें—क्र० ५४३ ।

५४६. षट्पञ्चषिका सूत्र

Opening : प्रणिपत्य रविमूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथु यशसा ।
प्रश्नेक्रियातार्थ ग्रहाना परार्थमुद्दिश्य सद्यशउा ॥

Closing : जीवसितौ विप्राणा क्षेत्र स्यारोप्लगूविशाचद्र ।
शूद्राधिप शशि स्तुत शनीश्वरशकरो भवानाम् ॥

Colophon : इति श्री षट्पचासिकाया मित्रकानाम सप्तमोऽध्याय। । इति श्री षट्पचासिकासूत्र नाम ज्योतिष सपूर्णम् । सवत् द्वीपनयनमुनिचद्र वत्सरे शालिवाहन गताब्द अबकनदभूत कौमदी प्रवर्त्तमाने पौषमासे कृष्णपक्षे चतुर्दशी भीषणवासरे मैत्री नक्षत्रे श्री उग्रसेनपुरे लिखितम् ।

देखे—जि र को, पृ. ४०१

५४७. सामुद्रिकाशास्त्रम्

Opening आदिदेव नमस्कृत्य सर्वज्ञ सर्वदर्शनम् ।
सामुद्रिक प्रवक्ष्यामि शुभाग पुरुषस्त्रियो ॥

Closing पद्मिनी पद्मगधा च मदगधा च हस्तिनी ।
शखिनी क्षारगधा च शून्यगधा च चित्रिनी ॥

Colophon इति सामुद्रिकाशास्त्रे स्त्रीलक्षण कथन नाम तृतीय पर्व समाप्तोऽय ग्रन्थश्च ।

देखे--जि० र० को०, पृ० ४३३ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 708.

५४८. व्रततिथिनिर्णय

Opening : श्रीमत वर्द्धमानेश भारती गोतमा गुरुम् ।
नत्वा वक्ष्ये तिथिना वै निर्णय व्रतनिर्णयम् ॥

Closing क्रममुल्लध्य यो नारी नरो वा गच्छति स्वयम् ।
स एव नरक याति जिनाज्ञा गुरुलोपत ॥७॥

Colophon : इति आचार्य सिंहनंदि विरचित व्रततिथिनिर्णय समाप्तम। सम्वत् १९६६ चैत्रशुक्ल ६ को लिखी हुई सरस्वती भवन बम्बई की प्रति से श्री प० के० भुजवली जी शास्त्री की अध्यक्षता मे श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए प्रतिलिपि की गई। शुभ मिति ज्येष्ठ शुक्ला १२ रविवार विक्रमसम्वत् १९९१ वीर स २४६० । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

देखे—जि र को, पृ ३६८ ।

५४९. यात्रामुहूर्त

इसमें ग्यारह मुहूर्त शोधक चक्र है ।

५५०/१. आकाशगामिनी विद्या विधि

Opening : जहां गंगा तथा और नदी के संगम के निकास पर वट का वृक्ष होइ ।

Closing : - - - णमो लोए सव्वसाहूण । एहो मंत्रराज को एक सौ आठ बार जपै ।

Colophon : इति आकाशगामिनी विद्या विधि ।

५५०/२. अम्बिका कल्प ।

Opening : वन्देऽह वीरसन्नाथम् शुभचद्रजगत्पतिम् ।
येनाप्येतमहामुक्तिवधूस्त्रीहस्तपालनम् ॥१॥

Closing : समसामधन भरभारभर धरधारमर पुरुत सुखकारम् ।
अतएव भजध्वमतिप्रथित प्रथित सार्थकमेव जनै. ॥

Colophon . इत्यम्बिकाकल्पे चार्ये शुभचद्रप्रणीते सप्तमोऽधिकार: समाप्त .॥७॥
नाम्नाधिकार प्रथितोय यत्रसाधनकर्मण
समाप्त एष मंत्रोडय पूर्ण कुर्यात् शुभ वन ॥१॥
इत्यम्बिका कल्प: ।
... - - शुभमिति कार्तिक कृष्णा ७ मंगलवार विक्रम-सम्वत् १९९४ वीर सम्वत् २४६३ । इति शुभम् । ह० रोशनलाल ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१ ।
जि० र० को०, पृ० १५ ।
जै० ग्र० प्र० स०, I, पृ० १७१ ।

५५१. बालग्रह चिकित्सा

Opening : श्रीमत्पंचगुरुन्नत्वा मंत्रशास्त्रसमुद्धृत ।
बालग्रहचिकित्सेय मल्लिषेणेन रच्यते ।।

Closing : ··· — ··· रक्षामंत्रस्य सजयात् — — ··· सन्ध्यायां विक्षिपेत्तानि पावके ।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखरश्री मल्लिषेणसूरि विरचिते बाल-चिकित्सा दिन-मास-वर्ष संख्याधिकारसमुच्चये द्वितीयोध्याय. ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २८२ ।

५५२. बालग्रह चिकित्सा

Opening : अथास्य प्रथमे दिवसे मासे वर्षे बाल वा गृहकातिनन्दना नाम माता तस्य प्रथमं जायते ज्वरः ··· ··· ··· ।

Closing : ··· ···एतेषा चूर्णीकृत्य विजयधूप बालकस्य कुर्यात् ।

विशेष—यह प्रति अपूर्ण है ।

५५३. बालग्रह शान्ति

Opening : प्रणिपत्य जिनेन्द्रस्य चरणांभोरुहद्वयम् ।
ग्रहाणा विकृतेः शाति वक्ष्ये कालनिरोधिनाम् ।

Closing : ॐ नमो कुजनी एहि-२ बलिग्रस्त २ मु च २ बालक स्वाहा ।

Colophon : इति बलिविसर्जनमंत्र इति षोडशोवत्सर ।१६।
पूज्यपादमिद लिख्य शिशोर्बलिविधानकम् ।
शान्तिक पौष्टिक चैव कुर्यात्क्रमसमन्वितम ।।

इति सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २८२ ।

५५४. बालकमुण्डन विधि

Opening : मुन्डन सर्वजातीना बालकेषु प्रवर्तते ।
पुष्टिबलप्रद वक्ष्ये, जैनशास्त्रानुमार्गत ॥

Closing : ... ... तत कुमार स्थापयित्वा वस्त्राभूषणै अलकृत्वा गृह-मानीय यक्षादीना अर्घदत्वा पुण्याहवचनै पुन सचयित्वा सज्जनान् भोजयेत् इति ।

Colophon : नहीं है ।

५५५. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमत्र

Opening : भक्तामरप्रणत ... ... जनानाम् ॥

Closing : ... · अजनातस्कर वत निसक सत्य जानै तौ सर्वसिद्ध होइ सत्यमेव ॥४८॥।

Colophon इति श्री गौतमस्वामी विरचिते अढतालीस ऋद्धिमत्रगर्भित स्तोत्र भक्तामरमूलमत्र सम्पूर्णम् ।

५५६ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमत्र

Opening : देखे, क्र० ५५५ ।

Closing : देखें—क्र० ५५५ ।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामीविरचिते अडतालीस ऋद्धिमत्रगुणगर्भित-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
सम्वत् १९५० मी० बै० कृ० १० ।

५५७. भूमिशुद्धिकरण मत्र

Opening : ॐ क्षी भू शुद्धयत् स्वाहा ।

Closing : ... — तालुरध्रेण गत त श्रवतममृता तुभि ।

Colophon : नही है ।

५५८. बीज मत्र

Opening : मन वचन काय के जोग की जो क्रिया सो जोग ताके दोय भेद एक शुभ एक अशुभ ।

Closing वक्तु लालविनोदेन श्री गुरुणा प्रभावत. ।
श्लोकसख्यामिति ज्ञेय अष्टाधिकशतद्वयी ॥

Colophon : लालविनोदी ने रचा सस्कृतवानी माहि ।
वृदावन भाषा लिखी कछु इक ताकी छाह ॥१८६॥
भूलचूक सब छिमा करि लीजो पडित सोध ।
बालक बुद्धी जानि मोहि मत कीजो उर क्रोध ॥१६०॥
सम्वतसर विक्रमविगन चन्द्ररधदिगचद ।
माघ कृष्ण आठै गुरु पूरण जयति जिनद ॥१६१॥
इति भाषाकारनामकुलाग्रनामसमस्त लिखित सम्वत् १८६१ माघवदी ८ गुरौ वार कू नवीन भाशा वनी सो यही मूल प्रति है कर्ता के हाथ की लिषी ।

५५६. बीजकोश

Opening : तेजो भक्तिविनय: प्रणव: ब्रह्मप्रदीपवामाश्च ।
वेदोब्जदहनध्रुवमादि (?) ओमितिख्यातम् ॥
मायातत्वं शक्तिर्लोकेशो ह्रीं त्रिमूर्त्तिबीजेशी ।
कूटाक्षरं क्षकार मलवरयू पिण्डमष्टमूर्तिश्च ॥

Closing : सर्वधान्यकृतैर्लाजैस्तद्रजोभिर्गु डान्वितै. ।
चन्द्रनागुरुकर्पूरगुग्गुलाज्यघृतादिभिः ॥
पायमाज्ञाक्षतैर्मिश्रैर्ह्यव्रुक्षोद्भवादिभि ।
समिद्भिश्च चरेद्धोम प्रतिष्ठाशान्तिपौष्टिके ॥

Colophon : ॥ इति षट्कर्मविधि समाप्त ॥

५६०. ब्रह्मविद्याविधि

Opening : श्रीमद्वीर महासेन ब्रह्माण पुरुषोत्तमम् ।
जिनेश्वर च त वदे मोक्षलक्ष्म्यैकनायकम् ॥

चन्द्रप्रभ जिन नत्वा सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरूम् ।
ब्रह्मविद्याविधिं वक्ष्ये यथाविद्योपदेशतः ।।

Closing : धेनुमुद्रया सर्वोपचार कृत्वा पूजाविधि परिसमापयेत् ।

Colophon : नही है ।

५६१. चन्द्रप्रभमन्त्र

Opening : ॐ चद्रप्रभो प्रभाधीश-चद्रशेखरचन्द्रभू ।
चन्द्रलक्ष्मकचन्द्रांग चन्द्रबीजनमोऽस्तु ते ।।

Closing : .... — नित्य जपने ते सर्वमगल होय है ।

Colophon : नही है ।

५६२. चौबीस तीर्थङ्कर मंत्र

Opening : आदिनाथमत्र । ॐह्री श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे मव शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : .... नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्ध होय ।

Colophon : इति श्री मत्र सम्पूर्णम् ।

५६३. चौबीस शासन देवी मंत्र

Opening : मत्र के अन्त मे मरन माह नवसा अरण विद्वेषण आकर्षनए सब .... ।

Closing : .... धनार्थी आकर्षन करे तो धन बहुत पावे ।

Colophon : नही है ।

५६४. गणधरवलयकल्प

Opening : देवदत्तस्य नामार्हंकारेण वेष्टयेत् ।
ततोऽऽह्वानेन तस्याघ कर्मक्षयार्थं अर्थप्राप्त्यर्थं पद्मासनम् शांतिकपौष्टिक-सारस्वतार्थं श्रीकारासनम् शत्रुविनाशार्थं क्रूरप्राणिवश्यार्थं च हूंकारासन।

Closing : अतश्चद्रावृत हस इति युतमतो दिक्षु पं व विदुक्षु ।
नालाग्रे भवी तदादावमृतमतिसित सप्तपत्र द्विपध्नम् ॥
ल पीताम्भोजपत्रे मुखकमलदले वं घटीरूपयन्त्रम् ।
क्ष मम ह्र. ठ पोहोग्रे गतमुववपु: सन्नमेतत्प्रशस्तम् ॥

Colophon : प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्तभवनद्वारा प्रकाशित) पृ० ६८ में सम्पादक भुजबली शास्त्री ने लिखा है कि इसके कर्त्ता अज्ञात हैं, पर निम्नलिखित तीन विद्वान 'गणधरवलय पूजा' के कर्त्ता अब तक प्रसिद्ध है —

(१) भट्टारक धर्मकीर्ति (२) शुभचन्द्र (३) हस्तिमल्ल ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १०२ ।

५६५. घंटाकर्ण

Opening : घटाकर्णमहावीर सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विस्फोटकभय प्राप्ति रक्ष रक्ष महाबलम् ॥

Closing : तानेन काले मरण तस्य सर्पेन डस्यते ।
अग्निचोरभय नास्ति घटाकर्ण नमोऽस्तु ते ॥४॥

Colophon : इति घटाकर्ण सम्पूर्णम ।

विशेष— साथ मे कुछ जाप्य मत्र भी लिखे हैं ।

५६६. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : प्रणम्य गिरजाकान्ता रिद्धिसिद्धिप्रदायकम् ।
घटाकर्णस्य कल्प वारिष्टकष्टनिवारणम् ॥

Closing : आह्वाननं न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जन न जानामि त्वं क्षमस्व परमेश्वर ।

Colophon : इति घटाकर्णविधि कल्प सम्पूर्णम् । मिति आषाढ़ शुक्ल अष्टमी सवत् १६८५ वर्ष ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ११३ ।

५६७ घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें—क्र० ५६६ ।

Closing : देखें—क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घटाकर्णवृद्धि कल्प सपूर्णम्। मिति अगहन कृष्णामावस्या लिखत रूपनप्रसाद अग्रवाल अपने पठनार्थम् । सम्वत् १६०३ ।

५६८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें, क्र० ५६६ ।

Closing : देखें, क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घटाकर्णवृद्धि कल्प सम्पूर्णम् ।
विशेष-सात मंत्रचित्र (मंत्र चक्र) भी हैं ।

५६९. हाथाजोडीकल्प

Opening : रविभौमशनिवार, हस्तपुष्य पुनर्वसु ।
दीपोत्सव होलिका च, गृहीत्वा हस्त जोडीका ॥

Closing : अदोसो दासता ज्योति, मनोवाञ्छितदायकम् ।
मस्तके कंठव्याप्त च, पार्श्वे रक्ष गुणाद्विक ॥

Colophon : इति हाथाजोडीकल्प शिवोक्त सम्पूर्णम् ।

५७०. इष्टदेवताराधन मंत्र

Opening : वश्यकर्मणिपूर्वाङ्ग कालश्च स्वस्तिकाशनम् ।
उत्तरादिक् सरोजाख्या मुद्राविद्रुममालिका ॥

Closing : मोहस्य ममोहन पापात्पचनमस्क्रियाक्षरमयी सांराधना देवता ॥

Colophon : इति मंत्र इष्टदेवता के आराधना का समाप्तम् ।

५७१. जैनसन्ध्या

Opening : ॐ क्ष्मों भू शुद्धयतु स्वाहा ।

Closing : ॐ भूर्भुव स्व असिआ उसा हं प्राणायाम करोति स्वाहा । अनामिका गृहीत्वा त्रिवार जपेत् ।

Colophon : इति प्राणायाममत्र । इति जैनसन्ध्या सम्पूर्णम् ।

५७२. जैन विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्रीकारक नत्वा वर्द्धमानजिनेश्वरं ।
गौतमादिगणाधीशं वाग्देविं च विशेषत ।।

Closing : मगलमय मगलकरण परमपूज्य गुणवृन्द ।
हम तुम को मगल करो नाभिराय कुलचन्द ।।

Colophon : इति जैनविवाह पद्धति समाप्तम् ।
मिती असाढ वदी १० स० १९७८ । सहारनपुर ।

५७३ जैनसंहिता

Opening विज्ञान विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चिताघ्रये ।।

Closing : दक्षोर्धनु कुसुमकाङ्घनु शर च, खेटासिपाशवरदोत्पलमक्षसूत्र । द्वि षड्भुजाभयफल गरुडादिरुढा, सिद्धायिनी धरति हेमगिरिप्रभा श्री ।।

Colophon : इति श्री माघनन्दिविरचिताया जिनसहितायायक्षयक्षी प्रतिष्ठा विधानम् ।

इति श्री माघसन्दिविरचित जिनसँहिता समाप्ता ।

उक्त सन्हिता वैदर्भदेशस्थ पूज्य प्रात. स्मरणीय बालब्रह्मचारी-रामचन्द्रजी महाराज का परमप्रिय शिष्य दिगम्बर बालकृष्ण टाकल-कर सईतवाल जैन चम्पापुरी निवासी ने सोलापुर (महाराष्ट्र प्रान्त) मे वर्धमान जिनचैत्यालय मे अत्यन्तभक्तिपूर्वक लिखकर पूर्ण की। मिती कार्तिक वदी ९ बुधवार शके १८६० वीर सं० २४६५ विक्रम सम्वत् १९९५ सन् १९३८ । कल्याणमस्तु ।

५७४. कर्मदहन मंत्र

Opening : ऊँ ह्रीं सर्वकर्मरहिताय सिद्धाय नम ॥१॥
Closing : ऊँ ह्रीं वीर्यान्तराय रहिताय सिद्धाय नम ॥१६४॥
Colophong : इति कर्म्मदहनमन्त्रसम्पूर्णम् ।१६४। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ रविवासरे सम्वत् १९६५ ।

५७५ कलिकुण्ड मंत्र

Opening : ऊँ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड ।
Closing : पापात्पचनमस्कारक्रियाक्षरमयी साराधनादेवता ।
Colophon : इति मंत्र इष्टदेवता के आराधन का समाप्तम् ।

५७६. मंत्र यंत्र

Opening : अघताज के षोडशी जोग सुवर्णमासी सोरा की ढेरी ऊपर धरिये अग्नि देई तब .... ।
Closing : .... सिद्धि गुरु श्रीराम आज्ञा काली करि वर एही तेल पलाय अमुकी नरम्बहे घर । मंत्र ।
Colophon : नहीं है ।

५७७. नमोकार गण विधि

Opening · रेषयाष्ट गुण पुन्य पुत्रजीवेफलैर्दस ।
सतं स्यात्सखमणिभिः सहस्व च प्रवालकं ॥
Closing : अगुल्यग्रेनुयज्जप्त यज्जत्तमेरुलघनाद् ।
सख्यासहित जप्त सर्व तन्निफल भवेत् ॥
Colophon इति जाप्य विधि. समाप्तम् ।

५७८. णमोकार मंत्र

Opening णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं ॥
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं ॥
णमो लोए सव्व साहूणं ॥

Closing : समस्त लोकयम्भु प्रभु खसत्रापर्छैनिर्त्रस्त्र ॥
मानही करिवार १०८ जपण जपक्षेवण ॥
पद्मासन पूर्वदिशि मुखराम्बणु
जो विचारै सोही वश्यहोवै मंत्रदीन जपण ॥

५७९. पद्मावती कवच

Opening : ॐ अस्य श्री मन्त्रराजस्य परमदेवता पद्मावती चरणांबुजेभ्यो नमः ।

Closing : पाठाल कथतां — .... परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २३५ ।

५८०. पंचपरमेष्ठी मन्त्र

Opening . ॐ ह्रीं निस्वेरगुणयुक्त श्री जिनेभ्यो नम स्वाहा ।

Closing ॐ ह्रीं रत्नत्रयतत्त्वागनूनगुणसहितसर्वसाधुभ्यो नम. — ।

Colophon : नहीं है ।

५८१. पञ्चनमस्कार चक्र

Opening : येनास्वामवसंसिण्वामादावुत्पाद्यकेवलम् ।।
कृत्स्नो मन्त्रविधिः प्रोक्तकंतमै तत्राप्यपोत्तमाम्,
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नम ।।

Closing : सम्यग्दृष्टिजनस्य एषा विद्या दातव्या । निन्दासूयानास्तिक्ययुक्तानां धर्मद्वेषिणां मिथ्यादृशामपुष्टधर्माणाञ्च न दातव्या । कदाचिद्दत्ते (?) सति (?) तदा महापातक प्रयुक्त भवति ।

Colophon : एवं पञ्चनमस्कारचक्र समाप्तमिति

५८२. पीठिका मंत्र

Opening : ॐ नीरजसे नम । ॐ दर्प्पमथनाय नम ।
Closing : ॐ ह्री अर्हं नमो भयवदो महावीरवदठ्माणानम् ।
Colophon : नहीं है।

५८३. सरस्वती कल्प

Opening : बारहअग गिज्जा दसणनिलया चरित्तट्ठहरा।
चउदसपुव्वाङ्रण ठावे दव्याय सुखदेवी ।।
आचारशिरस सूत्रकृतवक्त्रा (सरस्वती) सकणिठकाम् ।
स्थानेन समयोद्दध (स्थानागसमयाश्रिता) व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम

Closing : परमहसहिमाचलनिर्गता सकलपातकपकविवर्जिता ।
अमितबोधपय परिपूरिता दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती ।।
परममुक्तिनिवाससमुज्जवल कमलया कृतवासमनुत्तमम् ।
वहति या वदमाम्बुरूह सदा दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती।।

Colophon : मलयकीर्ति कृतामिति मस्तुति सतत मतिमान्नर ।
विजयकीर्ति गुरुकृतमादरात् समति कल्पलता फलमश्नुते ।।
इति सरस्वति कल्प समाप्त

५८४. शान्तिनाथ मत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष ।
Closing : चक्रादिमपदका दाता अचिन्त्य प्रतापी हैं।
Colophon : नही है।

५८५. सिद्ध भगवान के गुण

Opening : ॐ, ह्री मतिज्ञानावरणीकर्मरहित श्री सिद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा।
Closing : ॐ ह्री सम्य " " ।
Colophon : नही है।

५८६. सोलह चाली

Opening ।   श्री जिन नमि फुनि गुरु को नमो, मन धरि अधिक सनेह ।
सोलह चाली मत्र की रचौं सुविधि कर एह ।।

Closing ।   ···· — और जो एक घटाईये तो एक-एक घटाइ लिखै ८ के अक तहीं ।

Colophong ।   इति श्री १६ चाली पूर्णम् ।

५८७. विवाह विधि

Opening :   स्वस्ति श्री कारक नत्वा वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
गोतमादि गणाधीश वाग्देव विशेषत: ।

Closing :   ··· ··· विपुल नीलोत्पलाल कृत स्वस्येकोचन,
भूषितैरूपचितै विद्युत्प्रभा भासुरै ।

Colophon ।   **Missing.**

५८८. यन्त्रमत्र संग्रह

Opening ।   यस्तु कोटिसहस्राणि मन्त्रतन्त्राणि नेकशान् ।
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नम ।।

Closing ।   अपुष्टधर्माणा च न दातव्य इद दृष्वा यदि कदाचिद्ददाति तदा महापातक प्रयुक्तो भवति एव पचनमस्कारचक्र नानाक्रियासाधन स · · · यसार समाप्तमिति ।

Colophon ।   समाप्तमभूत् ।

५८९. अकलक संहिता (सारसंग्रह)

Opening ।   श्री मज्वातुर्निकायामरखचरवरै नृत्यमगीतकीर्तिम्
व्याप्ता ·······शाल सुरपटहादि सत्प्रतिहार्यम् ।
नत्वा श्री वीरनाथ भुवि सकलजनारोग्यसिद्धयै समस्तै-
रायुर्वेदोक्तसारैरिहममल(?) महासग्रह सलिखामि ।।

Closing ।   नालिगेय दोष २० वगेय प्रमेह प्रदर चैत्य कामाले पाडु सह सह परिहर । इच्छा पथ्य ।

Colophon : वैद्यग्रंथ परिसमाप्तम् ।

५६०. आरोग्य चिन्तामणि

Opening :

आरोग्यं भवरोगपीडितनृणां यच्चिंतना जायते
त सर्ग्गादिविधायिन सुरनुतं नत्वा शिव शाश्वतम् ॥
आयुर्वेदमहोदधेर्लघुतरं सर्वार्थद सुप्रभ
वक्ष्येहं चरकादिसूक्तिनिचयैरारोग्यचिंतामणिम् ॥ ॥

Closing :

बालादिह प्रमाणेन पुष्पमाला सदीपकम् ॥
प्रगृह्य मुष्टिका भक्तं बलिद्दंय सुमत्रिणा ।· ॥

इति सूतिका बालरोगाध्याय: स्त्रिश बालत्रंमम् ॥ इति श्री भट्टारविष्णुसुतपडितदामोदरविरचितायामारोग्यचिंतामणिमहितायामुत्तर-स्थान षष्ठ समाप्तम् ॥ एव ग्रंथसख्या शत ॥ १२०० ॥ परिधावि संवत्शरद माघ शुक्लपक्ष १४ चतुर्दशींयु गुरुवारदल्लु । मूडविद्रेपन्ने च्यारि श्रीधरभट्टनुबरदशा आरोग्यचिंतामणिसहितेयें मगलमहा ॥ श्री वीतरागाय नम· ॥ करकृतमपराध क्षतुमर्हति संत ॥ विजयापुरीश्च भवनस्वर्गविलरोजिन ॥ श्रीमन्मदरमस्त-काप्रसदनः श्रीमत्तपोधासम लोकालोक विभासि बोधमघनोलोकाग्र-सिंहासन· ॥ सधानैक्यकमुद्दमाणिकजिन पयातु पायात्सन. ॥

श्रीजिनार्पणमस्तु ॥ श्री शुभमस्तु । श्री वीतरागार्पणमस्तु ॥ ॐ श्री वासुपूज्याय नम. ॥ सिध्यदिंनदलूबजेठु माडुवागल कदम प्रात. का लदलूमीनदि पागि ॥

ॐ नम. औषधेभ्य उर्ज्जावतोमतिषययवीर्ग्य मर्कंकस्मिन् कुरुध्व पथ दह दहन धारय तुभ्य नम. कांचीपुरवासिन । दिमत्रदि-मत्रि सिभग दुत छायाशुष्क कमठ भाडि अजमूर्णदिनस्य जग्ये सर्व्व ग्रह ॥

देखें— जि० र० को, पृ० ३४ ।

५६१. कल्याण कारक

Opening :

श्रीमत्सुरासुरनरेन्द्रकिरीकोटि–माणिक्यरश्मि निकराचि-
पादपीठ: ।
तीर्थादिपूजितवपुर्वभो बभूव साक्षादकारणजग-
त्रितयैकबन्धु: ॥१॥

Closing : इति जिनवकनिर्गत सुशास्त्रमहाम्बुनिधे सकलपदा-
र्थविस्तृततरगकुलाकुलत ।
उभयभवार्थसाधनत उद्वयभासुरतो निसृतमिद हि
शीकरनिभ जगदेकहितम् ॥२॥

Colophon : इत्युग्रादित्यचार्यकृत कल्याणकोसरे नानाविधकल्पककल्पना-
सिद्धये कल्पाधिकार, पञ्चमोऽध्यायोऽप्यादित, पञ्चविंश परिच्छेद, ।
देखे—जि० र० को., पृ ७६ ।

५६२. मदनकामरत्न

Opening : मृतमृतनोहाभ्ररोप्य समांशम्
मृतस्वर्णगन्ध (?)
समर्व विनिक्षिप्य खल्वे विमर्द्दत्तत स्वर्णतैलोद्भवेन त्रिवारम् ॥१॥

Closing : अहन्येव रज स्त्रीणा भवन्ति प्रियदर्शनात् ।
वीर्यवृद्धिकरश्चैव नारीणा रमते शतम् ॥

Colophon : पञ्चबाणरमो नाम पूज्यपादेन निर्मित ॥

५६३ निदान मुक्तावली

Opening : रिष्ट दोष प्रवक्ष्यामि सर्वशास्त्रेषु सम्मतम् ।
सर्वप्राणिहित दृष्ट कालारिष्टञ्च निर्णयम् ॥१॥

Closing : गुरौ मंत्रे देवेऽप्यगदनिकरैर्नास्ति भजनम्
तथाप्येव विद्या अतिनिगदिता शास्त्रनिपुणै ।
अरिष्ट प्रत्यक्ष सुभवमनुमाकृदसुभगम् विचार्यन्तच्छश्वन्नि-
पुणमतिभि कर्मणि सदा ॥
विज्ञाय यो नरः काललक्षणैरेवमादिभि ।
न भूयो मृत्यवे यस्माद्विद्वान्कर्म समाचरेत् ॥

Colophon : इति पूज्यपादविरचितायां स्वस्थारिष्ठनिदान समाप्तम् ।

५६४. रससार संग्रह

Opening : भद्र भूयात् जिनेन्द्राणा शासनायाघनासिने ।
कुतीर्थध्वांतसंघातप्रभिन्नघनभानवे ॥१॥

Closing : ... रत्नत्रयारो ' ' ।

५९५ वद्यकसार सग्रह

Opening : सिद्धौषधानि पथ्यानि रागद्वेषरुजां जये ।
जयन्ति यद्वचांशत्र तीर्थकृच्छ्रेस्तुव श्रिये ॥

Closing : पथायोग प्रदीपोऽस्ति पूर्वयोगा शत तथा ।
तथैवाय विजयतां योगन्तिामणिश्चिरम् ॥
नागपूरि यतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति सकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे सप्तमोमिशकाध्याय ॥

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरि पतपातया गच्छाय श्रीहषकीर्ति सकलिते वैद्यकसारसग्रहे योगचिन्तामणौ मिशकाध्याय समाप्त । इति योगचिन्तामणि सपूर्णं ।

देखें, जि र. को , पृ ३६५ ।

५९६. वैद्यकसार संग्रह

Opening : यत्र चित्रा समयाति तेजांसिजतमांसिच
मटीयस्तादय वद चिदानदमयमह ॥१॥

Closing : नागपूरियनयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति सकलिते ।
वैदकसारोद्धारे सप्तमकोमिश्रकाध्याय ॥३०॥

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरियतपायतपागछाय श्री हर्षकीर्ति सकलिते वैद्यकसारसग्रहे जोगचिंतामणौ मिश्रकाध्याय समाप्तम् ॥ यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिखत मया । यदि सुद्ध असुद्ध वा मम दोषो न दियते ॥ मिति भाद्रवा सुक्ल १० सोमवासरे सवत् १८५० साके १७१५ शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥

५९७ वैद्य विधान

Opening : महारस सिंधुर विधि शुद्ध पारद षड्गुणोक सुरभी जीर्णीतद्र सयुत ... नत्रसरक मणिशिला पचा... टकण वज्र क्षारकलाश

कैविमलित गधार्थभाय क्रमात् सर्वं खल्वतले विमर्द्य ममल योगादि-
ऋक्षे शुभे कन्या भास्कर हस पादि मनस ।

Closing : स्यात्स्वेदन तदनुमर्दन मूउनेन, स्यादुत्थिता पतन रोद नियामनानि । सदीपन गगन भक्षण मानमात्रा सज्जारणा तदनुगर्भगता घृतिश्च ।। वाह्या घृति सूतक जारणस्याद्रामस्तथा सारण कर्म पश्चात् । सक्रामणावेद विधि शरीरा योग किलाष्टादश वेति कर्म ।।२।।

विशेष—वैसाख कृष्ण द्वितीयायां समाप्तश्च शाली वाहन शक् १८४८ ।।
सन् १६२६ ईश्वी ।

५६८. विद्याविनोदनम

Opening : प्रप्रणम्य जिन देव सर्वज्ञ दोषवर्जितम् ।
सर्मवक्षीति चतुर धाराकल्पमकल्पकम् ।।

Closing : व्याध्युर्वीजकुठाररोगदण्ड णाति क्रूरदात्र
भूर्च्छवरूपम वावगाहनमिदं
भूपैरल सेव्यताम् ।।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वर चारु चरणारविन्द गन्धगुणानन्दित मानसाशेषकला शास्त्र प्रवीण परमागमत्रयवेदि प्राणापायागमान्तर समुदित वेद्य शास्त्राम्बुनिधिपारगम सर्व विद्यानन्द मानस श्रीमदकलङ्क स्वामि विरचित महावैद्यशास्त्रे विद्याविनोदाख्ये अवगाहन लक्षण समाप्तम् ।।

देखें, जि र. को., पृ ३५६ ।

५६९· योगचिन्ता मणि

Opening : यत्र विश्रासमायाति, तेजांसि च तमांसि च ।
महीश्रस्तदहं वदे, चिदानदमयमहम् ।।

Closing : यथायोगप्रदायोस्ति पूर्वं योगसत यथा ।
तथैवाय विजयतां योगचिन्तामणिश्चिरम्

Colophon : इति श्री नागारावयो गणराज । श्री हर्षकीर्ति सकलितैः वैद्यकसारो,द्धारे सप्तको मिश्रकाध्याय ७। इति श्री योगचिंतामणिवैद्यकशास्त्र सपूर्णम् ।
सवत् १८६६ मिती ज्येष्ठ शुक्ल ३ शुक्रवार कु सम्पूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ३२१ ।

६००. योगचिन्ता मणि

Opening : देखे—क्र० ५६६ ।

Closing : देखें—क्र० ५६६ ।

Colophon : इति श्री योगचिन्तामणिवैद्यकशास्त्र सपूर्णम् । सवत् १६८५ का साल जेष्ट शुक्लमासे एकादशी वृहस्पति । लेखक भुजवलप्रसाद जैनी मुकाम आरा नगरे श्री मनेजर भुजवली शास्त्री के सप्रदाय मे लिखा गया । इत्यल भवतु शुभ ।

६०१. आचार्य भक्ति

Opening : सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसम्पूर्णान् मुक्तियुक्त सत्यवचनलक्षितभावान् ॥१॥

Closing : . . . जिनगुणस्तुति होउ मज्झ ।

इति आचार्यभक्ति ।

देखें—जि र को, पृ २५ ।

६०२. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धिप्रियैं प्रतिदिन प्रतिधाममानैं,
जन्मप्रबधमथनैं प्रतिभासमानैं. ।
श्री नाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रायजंनैवितनुभूपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टिः देमनया जनस्य मनसे येन स्थितिर्दिस्सता,
सर्वं वस्तुविजानता समवता ये नक्षता कृच्छ्रता ।
भव्यानदकरेण येन महता तत्वप्रणीति कृता,
ताप हतु जिन समेशुभधिया तत सतामीशिता ॥

Colophon : इति देवनंदि कृतिरियं कगमंबडारचक्र सम्पूर्णम् ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १ ।

६०३. अष्टगायत्री टीका

Opening : ॐभूर्भुव स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धीयो यो न प्रचोदयात् ॥१॥

Closing : श्री तीर्थराज पदपद्मसेवा हेवाकिदंवासुरकिन्नरेण ।
गभीरगीस्तारतण्वेरेण्य प्रभावदाताददता शिव व ॥१॥

Colophon : इति जैनगायत्री षट् दर्शन अष्टमतयेन वेदांत रहस्येन तीर्थ-राजस्तुति समाप्ता ॥ इति अष्ट गायत्री टीका समाप्त ॥ श्रावण-मासे कृष्णपक्षे तिथौ ६ भौमवासरे श्री सम्वत् १६६२ ।

६०४. आत्मतत्वाष्टक

Opening : अनुपमगुणकोष छिन्न लोभोरुपाशम् ।,
तनुभुवन समान केवलज्ञानभानुम् ।
विमदमरवृन्द सच्चिदानंदकंद,
जिनवलसमतत्व भावयाम्यात्मतत्वम् ॥

Closing : त्रिदशनुतमनिंद्य मदभयमलदूर,
शास्वतानंदपूर चिदमलगुणमूर्ति
बालचन्द्रोरुकीर्ति विदित सकलतत्वं-
भावयाम्यात्मतत्वम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६०५. आत्मतत्वाष्टक

Opening : यद्वीतराग परचिन्मय बोधरूपम्,
एस्वर्णटंकसदृशं घनसारभूतम् ।
यल्लोकमात्र कथित नय निश्चयेन,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ॥

Closing : ये चिन्तयति पदपिंड स्वरूपभेदम्,
सालम्बन तदपित मुनयो वदन्ति ।
यन्निर्विकल्प कवलेन समाधिजातम्,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ।।

Colophon : नही है ।

६०६. आत्मज्ञान प्रकरण स्तोत्र

Opening : नमोभि क्षीणपापानां शांतानां वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षुणामपेक्षायमात्मबोधो विधीयते ।।१।।

Closing : दिग्देशकाला ' '' अमृतो भवेत् ।।६८।।

Colophon इति श्री गुरुपरमहस श्री दिगम्बराद्यामनायपद्मसूरिभि कृते आत्मज्ञानमहाज्ञानप्रकरण स्तोत्र समाप्तम् ।

६०७. भक्तामर स्तोत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतिक दलितपाप तपोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुग युगदा
वाल वन भवजले पतताम् जनाना ।

Closing : स्तोत्रस्रज तवजिनेन्द्र गुर्णैनिबद्धाम्
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पा ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्र
त मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मी ।।

Colophon यह ग्रथ वीर स० २४४० मे लिखा गया ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२२ ।
(२) जि. र. को , पृ. २८७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १०६ ।
(४) रा० सू० II, पृ० ४९, ८२ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ११, ३५, १०५, २४१ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० १९० ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms , P. 676.

६०८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

इति श्री मानतु गाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।
संवत् १८८२ श्रावण द्वितीक वदी ।

युग्म सिद्धि गजमेदनी, सवत्सर इह सार ।
द्वितीक मास नभ तिथि, मुनि यश रुक्मिण भरतार ॥१॥
सूर्य सूत शुभवार कहि प्रथम नक्षत्र घडी वांण ।
मड योग पटपत्र मैं, लिख्यो स्तोत्र हित जाण ॥२॥
आदि ५ दोहे ।

६०९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तमर स्तोत्र सपूर्णम् ।

६१०. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतु गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।
संवत् १७६३ भादव बदी ४ दिने लिखत अमरणो नगरमध्ये ।

६११. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतु गाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ।

६१२. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचित भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम् ।

६१३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : .. .. मत्र का थोडा थोडा फल विध सुय लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतुगाचार्यविरचित समाप्तम् ।

६१४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing :
भाषा भक्तामर कियो हेमराज हितहेत ।
जे नर पढ़े सुभाव सो ते पावें सिवषेत ।।४६।।

Colophon : इति श्री भक्तामर सस्कृतभाषा समाप्तम् ।

६१५. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरिचित भक्तामर आदिनाथस्तोत्र सपूर्णम् ।

६१६. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तामरसंस्कृतसमाप्तम् ।

६१७. भक्तामर स्तोत्र सटीक

Opening : देखें क्र० ६०७ ।

Closing : ....उस लक्ष्मी को विवश होकर इस स्तोत्र के पठन अध्ययन करने वाले पुरुष के पास आना ही पड़ता है ॥२८॥

Colophon : इति भक्तामरसमाप्त ।
हस्ताक्षर बालकृष्ण जैन पालम निवासी ।
मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ९ गुरुवासरे सम्वत् विक्रम १९७१ इति शुभम् ।
मङ्गलमस्तु ।

६१८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखे क्र० ६०७ ।
इति मानतुङ्गाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ६०७ ।

Closing : देखे, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचित श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६२०. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखे, क्र० ६०७ ।

Colsing : देखे क्र० ६२६ ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित हेमराजकृत सपूर्णम् । सवत् १९१६ तत्र माघकृष्ण ६ बुधवासरे लिखित अंबाशंकर ।

६२१. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : चदन अगर लबग बालछड़ आलीतिल अरजु
मिठाई दूध घृत इनकी आहुति दशांश होवेन

चक्रेश्वरी प्रसन्न भवति तत्काल सिद्धि·
चतुष्कोण कडे मध्ये ही पचदश द्वितीय
इर तृतीये लोकपाल चतुर्थे नवग्रहा पचमे ।।

Closing : अष्टदलकमलवत् गोलाकार कृत्वा मध्ये ।
ॐ ह्री लक्ष्मी प्राप्त्यै नमः लिखेत् पुन चतुस्र कृत्वा ।
षोडश श्री कारेणवेष्टि तत्रह्रिमत्रेण वेष्टयेत् ।।

Colophon : सवत् १९६७ फाल्गुन शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृत प० सीताराम शास्त्री ।।

६२२ भक्तामर ऋद्धि मंत्र

Opening : य सस्तुत .... प्रथम जिनेन्द्र ।।२।।

Closing : अष्टदलकमलं कृत्वा तन्मध्ये ॐ ह्री लक्ष्मी प्राप्ति नम लिखित्वाय श्रवादसोडश श्रीकारेण वेष्टित तदुपरिमृद्धि मत्र वेष्टित अयत्र पूजावाथ की एकाव्यमृद्धि मत्रवार १०८ नित्य जपवाथी दिन ४८ सर्वसिद्धि मनोवाछित कार्य सिद्धि होय जिह नैव सिकरणो हाय-तिको नाम चिंतिज मनोवाछित सिद्धि होय ।। इति काव्य सपूर्णम् ।

Colophon : इद पुस्तक लिखित नीलकठदासेन ऋषभदास नामधेय अस्य अर्थ लेखनीकृत ।। सवत् १९३० मिति आश्विन शुक्ल अष्टम्या वात्सर शुभ भूयात् ।

६२३. भक्तामर स्तोत्र मत्र

Opening : देखें क्र० ६२२ ।

Closing : देखें क्र० ६२२ ।

Colophon : देखें क्र० ६२२ ।

६२४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६०७ ।

Closing : देखें—क्र० ६०७ ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—इसमे सभी काव्यो के मत्रचित्र (मंडल) बने हुए हैं ।

६२५. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : ॐ णमो अरिहंताण ।१। नमो जिणाण ।२। ॐ णमो तुहिजिणाण ।३। ॐ नमो परमोहि जिणाण ।४। ॐ णमो तु सव्वों हि जिणाण ।५।

Closing : अय मत्रो महामत्र· सर्वपापविनाशक ।
अष्टोत्तरशत जप्तो धत्ते कार्याणि सर्वश. ॥

Colophon : नही है ।

६२६ भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : देखें—क्र० ६०७ ।

Closing : देखे—क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र सिद्धि मत्र यत्र त्रिधि विधान सपूर्णम् ।

विशेष—इसमे सभी ऋद्धिमत्रचित्र रगीन हैं ।

६२७ भक्तामर ऋद्धिमत्र

Opening : ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाण ।

Closing : ईष्टार्थसपादिनी समांपातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ।१२। इत्याशीर्वाद ।

Colophon : इति पद्मावती पूजा चारुकीर्तिकृत सपूर्णम् । मिती माघ-बदी ३० वार बुध सवत् १६६६ आरा नगरमध्ये लिखत भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति अगरेजी राजधानी मैं काष्ठासघे माथुरगच्छे पुस्करगणे लोहाचार्याम्नाये भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० मुनीन्द्रकीर्ति समये ।

विशेष—इसमें पद्मावती पूजा भी है ।

६२८. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : ' ति जन सहसा ग्रहीतु । अथ रिद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं नमो ह्रिति माथ '' — ।

Closing : यह चौवालीसमा काव्य मंत्र जपै पढ़ै तै मनुद्र जिहाज न डूबै पारलगै आपदा मिटै काव्य उद्धृत ।

Colophon : अपूर्ण ।

६२६. भक्तामर टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : भक्तामर टीका सदा, पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज शिवसुख लहै, तसमनवछित होई ॥

Colophon : इति श्री भक्तामरटीका समाप्ता ॥

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२३ ।

६३० भक्तामर टीका

Opening : श्री वर्द्धमान प्रणिपत्य मूर्ध्ना दोर्षध्यंयेत ह्यविरुद्धवाचम् ।
वक्ष्ये फल तत् वृषभस्तवस्य सूरीश्वरैर्यत् कथित क्रमेण ॥

Closing : वर्णित कुम्भम्मिसीनाम्न वचनात्मयकारि च ॥
भक्तामरस्थ सद्वृतिः रायमल्लेन वर्णिता ॥
त्रिभिः कुलकम् ।

Colophon : इति श्री ब्रह्म श्री रायमल्लविरचित भक्तामरस्तोत्रवृतिः समाप्ता. ॥

६३१. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी का टीका उक्त वार्तिक मया बालबोध हेमराजकृत संपूर्णम् । संवत् १६०८ माघसुदी १० बुधवार लि० पं० जमनादास दिल्ली मध्ये धर्मपुरा आरहमल का मंदिर मै ।

६३२. भक्तामर स्तोत्र वचनिका

Opening : देव जिनेसुर वंदिकरि, वाणी गुरु उरलाय ।
स्तोत्र भक्तामर तणी, करूं वचनिका भाय ॥

Closing : संवत्सर सवअष्टदश, सतरि विक्रमराय ।
कातिकवदिबुधद्वादशी, पूरण भई सुभाय ॥

Colophon : इति श्री मानतु गाचार्य कृत भक्तामर स्तोत्र की देशभाषा-मय वचनिका समाप्त। । संवत् १६४४ मिति फागुण सुदी १० ।

६३३. भक्तामर स्तोत्र सार्थं

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी की टीका संयुक्त समाप्तम् ।

६३४. भक्तामर स्तोत्र का मंत्र संग्रह

Opening : बुद्धया विनापि ... ... सहसा ग्रहीतुम् ॥

Closing : वह मत्रं ... ... ।

६३५. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकायं ... ... मानमद्रतमोहर ॥१॥

Closing : अपुत्रो लभ्यते पुत्रं बद्धी मुञ्चति बंधनात् ।
राजाग्नि हरितस्तः भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥११॥

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

६३६. भैरवाष्टक स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६३५ ।

Closing : देखें क्र० ६३५ ।

Colophon : इति भैरवाष्टकस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

६३७. भैरवपद्मावती कल्प

Opening : ॐकारविष्टिसंयुक्तं ध्वजे यत्र समासकं
लिखित्वा परिवृक्षाणा बद्धमुच्चाटन रिपो. ॥१॥

Closing : यावद्वाग्धिभूधरतारागणगगनचंद्रदिनपतय
तिष्टतु भुवितावदयं भैरवपद्मावती कल्प ॥५६॥

Colophon : इत्युभय भाषा कविशेखर श्री मल्लिषेण सूरि विरचिते भैरवपद्मावती कल्प समाप्ता ॥ श्रीरस्तुवाचकाना मिनि फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां १४ बुधवासरे श्री नीलकंठदास स्व पठनार्थम् सवत् १९५६ ।

६३८. भैरवपद्मावती कल्प

Opening : श्री मच्चातुर्निकायाऽमर ... वक्ष्यते मल्लिषेणं ॥१॥

Closing : जब तक समुद्रपर्वत तारागण आकाश चंद्र और
सूर्य रहें तब तक यह भैरव पद्मावती कल्प भी रहे ॥

Colophon : इति उभयभाषा कविशेखर श्री मल्लिषेणसूरि विरचिते भैरवपद्मावती कल्प की साहित्यतीर्थाचार्य प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखरशास्त्रीकृत भाषाटीका मे गारुडाधिकार नामका दशमपरिछेद समाप्तम् । इति सपूर्णम् । शुभमिति कार्तिकशुक्ला ४ वीर-संवत् २४६४ विक्रम सवत् १९९३ ।

देखें—(१) जि र. को , पृ. २९९ ।
(2) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P 678.

६३९. भजन संग्रह

Opening : हौं को सिले मौहे तेरि सगरी ॥टैक॥

Closing : तुम सुमिरत बत रिधि निधि पसरी,
अजितहि व्रत कर घर पकरी ॥नि० ॥४॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

६४०. भक्तिसग्रह टीका

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृतिसमुदयान् , साक्षितात्मस्वभावान् ।
वदे सिद्धि प्रसिद्धयै तदनुपम गुणप्रग्रहाकृति तुष्ट ॥

Closing : दुक्खकरकउ कम्मरकउ बोहिलाओ सुगइगमण समहिमरण जिणगुण सपत्ति होउ मण्टम् ।

Colophon : इति नदीश्वर भक्तिः । मूल श्लोक ४७० सख्या । इति दशभक्ति पाठ की अक्षरार्थ भाषा बालवबोधार्थ पडित शिवचद्र कृत समाप्तम् । सवत् १६४८ मार्ग० वदी ६ शनौ शुभ भूयात् ।

६४१. भाषापद संग्रह

Opening : दरसन भयो आज शिखिर जी के ।
बीस कोस पर गिरवर दीखे,
भाजे भरम सकल जी के ॥

Closing कुदन ऐसी अनर्थ माया, विधिना जगमे विस्तारी ।
अजठारह नाते हुए, जहां एक नही जारी ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

६४२. भूपालचतुर्विशतिकामूल

Opening श्री लीलायतन महीकुलगृह कीर्तिप्रमोदास्पदम्,
वाग्देवी रतिकेतन जयरमा क्रीडानिधान महत् ।
स स्यात्सर्व महोत्सवैकभवन यः प्रार्थतार्थप्रद,
प्रात· पश्यति कल्पपादपदल छाया जिनाङ्घ्रिद्वयम् ॥

Closing : दृष्टस्त्व जिनराजचद्रविकसद्भूपेन्द्र नेत्रोत्पले,
स्नातस्त्वन्नुति चद्रिकांभसि भवद्विद्वच्चकारोत्सवे ।
नीतश्चाद्य· निदाघजः क्लमभरः शातिमया गम्यते,
देवत्वद्गत चेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon : इति भूपाल चौबीसी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२५ ।

(२) जि० र० को०, पृ० २९८।
(३) रा० सू० III, पृ० १०६, २४२।
(४) आ० सू० पृ. १०९।
(५) जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ६।

६४३. भूपाल स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६४२।

Closing : उपशम इति मूर्तिलंलित सद्राग्मुनीन्द्रा
रजनि विनयचद्र सच्चकोरैकचन्द्र.।
अगदमृत सगर्भा शास्त्रसदर्भ गर्भा,
शुचि चरित चरिष्टमोर्यस्पधिन्वति वाच ॥

Colophon इति श्री भूपालस्तौत्र संपूर्णम् । मिति प्रथमभाद्रपद कृष्णा प्रतिपक्षभृगो संवत् १९४७ शुभं भवतु ।

सन्दर्भ के लिए देखें—क्र० ६४२।

Catg. of Skt & Pkt Ms. 678

६४४ भूपालस्तोत्र टीका

Closing. देखें—क्र० ६४२।

Closing : .... . ग्रीष्मभव· प्रस्वेदभरः शातिनीत समाप्तिं प्रापित भो देव मया त्वग्रदतचेतसारावगम्यते भवत सवपुनर्दर्शन भूयात् अस्तु इत्येवस्तवनकत्रयि त्रिश्र त्वय्येवगत चेतो यस्य स तेन ।

Colophon : इति भूपालस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् ।

६४५. भावनाष्टक

Opening : मुनिस्तुत्य चिन्तत्वनीरेजभृंगम्,
परित्यक्त रागादिदोषानुसगम् ।
जगद्वस्तु विद्योतज्ञानरूपम्,
सदा पावन भावयामि स्वरूपम् ॥

Closing : स्वचिद्भावना संभवानन्तशक्ति,
निरास निरीसं परिप्राप्तमुक्तिम् ।

त्रिलोकेश्वर निश्चल नित्यरूपम्
सदा पावन भावयामि स्वरूपम् ॥

Colophon : नही है ।

६४६. चन्द्रप्रभ स्तोत्र

Opening : शशांकशखगोक्षीरहारधवलगात्राय · · इत्यादिना ।

Closing : घेघे आं क्रो क्षी क्ष्रू क्षीं क्षां ज्वालामालिनिआज्ञापयति स्वाहा ।

Colophon इति चद्रप्रभस्तोत्र ज्वालामालिनि स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १२० ।

६४७. चन्द्रप्रभशासनदेवी स्तोत्र (ज्वामामालिनी स्तोत्र)

Opening : देखे – क्र० ६४६ ।

Closing : घे घे, ख ख ख ख ह्रौं ह्रीं ह्रां–४ आ क्रौं ह्रौं क्षां क्षी क्ष्वी क्ली क्लूँ ह्री ह्री क्ष्वी ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुशासनदेव्या स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे—(१) जि० र० को०, पृ० १२१ ।
(२) रा० सू० III, पृ० २३९ ।

६४८ चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आद्योवर्षसहस्त्रमौनमगमत्प्राप्तो जिनो द्वादश.,
द्विसप्तैव च संभवोप्ट च दश. श्री नवनो विंशति ।
छद्मस्थो सुमतिश्चषष्ठजिनप षण्मा समासत्रस्थिति',
वर्षाण्यत्रनवैव सप्तमजिनो मासत्रय चद्रभ ॥

Closing : एते सर्वजिना शतक्रतुसमभ्यर्च्यक्रमांभोरुहा। ।
तद्दोषविरुद्धवाच्यरहिता· कुर्वन्तु मे मगलम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतिस्तोत्र सपूर्णम् ।

६४९. चतुर्विशति जिन स्तोत्र

Opening आदिनाथ जगन्नाथं अरनाथ तथा नमि ।
अजित जितमोहारि पार्श्वं वन्दे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीविलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि, नश्यति व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र समाप्तम् ।

६५० चतुर्विंशति जिन स्तुति

Opening सद्भक्तानतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभा,
समिश्रारूण दीप्ति शोभिचरणा भोजद्वय, सवदा ।
सर्वज्ञ पुरुषोत्तम सुचरिते धर्मार्थिनां प्राणिनां
भूयाद् भूरिविभूतये मुनिपति श्री नाभिसूनुर्जिन ॥

Closing यस्या प्रसादात्परिपूर्णभाव भूत सुनिर्विधूतशास्तवोध ।
जगत्त्रयी जगहितैकनिष्टा वाग्देवतासाजयतादजस्त्र ॥

Colophon . इति श्री चतुर्विंशति जिनस्तुति ।

६५१. चरित्र भक्ति

Opening : येनेन्द्रान् भुवनत्रयस्य ... रभ्यर्चनम् ॥१॥

Closing ... समाहिम प जिणगुणसंपत्तिहोउ मक्त ।

Colophon इति चारित्रभक्ति सम्पूर्णम् ।

६५२. चौबीस तीर्थङ्कर स्तोत्र

Opening : सिद्धप्रियंप्रतिदिन प्रतिभासमानं ... ।
... प्रापेजनैर्विनुतनृपदवीक्षणेन ॥

Closing : दृष्टि देशनया जनस्य मनसे येनस्थितिदत्तसिता ।
.... शुभचियातात सतामीशित: ।

Colophon : इति श्री देवनंदयाचार्य कृत चौबीस महाराज आवमक काव्यमई महास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि० जि ग्र. र., पृ. १२८।
(२) जि० र० को०, पृ० ११४।

६५३. चिन्तामणि अष्टक

Opening : वंदावत्रि सुरेन्द्रनम्रमौलिसुधामवदामोनिधिमौक्तिकचारुमणि-
प्रजघृष्टपदम्।
श्रीचिंतामणिमेत्यमहाभि सुराब्धिजलैर्कनसुधाकरचद तवाप्त-
यशो विमलै.॥

Closing : स्याद्वादामृतासिक्तफणि -- - सुवांछितभावभृतै.॥

Colophon इत्यष्टकम्।

६५४. चिन्तामणि स्तोत्र

Opening : श्री सुगुरु चिंतामणि देवसदा मुझसकल मनोरथपूर्णमुदा।
कुलकमला दूरष होयकदा जपता प्रभुपारस नाम यदा॥

Closing : अमचीप्रभु पारस आसफलो भणतापसवासर वास भलो।
मन मिघ सुकोमल होयमिलो कीरति प्रभु पारसनाथ किये॥

Colophon : चिंतामणि स्तोत्र संपूर्णम्।

६५५. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : जगद्गुरु जगद्देवं जगदानददायक।
जगद्व जगन्नाथ श्री पार्श्वसस्तुवे जिनं॥१॥

Closing : दर्भस्वस्तिकनैवेद्य - - अर्चयाम्यहम्।
इति दिग्कालार्चनविधानम्।

Colophon : इति चिंतामणिपूजाविधि सम्पूर्णम्।
संवत् १८५३ वर्षे कातिककृष्णा एकादशी कौ सम्पूर्ण भवे।
लिखत धारासीत जैसवाल पठनपाठन निमित लिखी।

६५६. दशभक्त्यादि महाशास्त्र

Opening नम श्री वर्द्धमानाय चिद्रूपाय स्वयम्भुवे ।
सहजात्मप्रकाशाय सप्तसंसार भेदिने ॥

Closing वर्द्धमानमुनीन्द्रेण विद्यानन्दार्यसन्धुना ।
लिखित दशभक्त्यादिदर्शन जननार्थ मस्तु ॥

Colophon . इत्यय समाप्तो ग्रथ । अस्तु ।

६५७ देवी स्तवन

Opening : श्री मर्द्दपतिप्रणम्रमुकुट प्रद्योतरत्नप्रभा,
मालामानितपादपद्मपरमोत्कृष्टप्र गमासुरा ।
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती,
समरागमशीर्षविस्तरणत सेवासमीपस्थितम् ॥

Closing : इदमपि भगवतिकुसुमपुष्पालकारलकृतम् ।
स्तोत्र कण्ठ करोति यश्च विव्य श्रीस्त समाश्रयति ॥

Colophon : इति देव्य स्तवनम् ।

६५८. एकीभाव स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव — — जन्मतापहेतु ॥१॥

Closing वादिराजमनु — '' मनुसभ्यसहाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री वादिराजदेवविरचित एकीभाव महास्तवन समाप्त ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ६२ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० ११० ।
(४) रा० सू० II, पृ० ४६, १०७, ११२, २७४ ।
(५) रा० सू III, पृ० १०१, १२३, २३८, ३०८ ।
(६) आ० सू०, पृ० १६ ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 630

६५९. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति वदि (राज) मुनि कृत एकीभाव स्तोत्र सम्पूर्णम्।

६६०. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति श्री वादिराजकृत एकीभावस्तोत्र सपूर्णम् ।

६६१. एकीभावस्तोत्र

Opening देखें—क्र० ६५८ ।

Closing शाब्दिकाना मध्ये तार्किकानां मध्ये काव्यीश्वराध्नां मध्ये भव्यसहायानां मध्ये वादिराज प्रधान इत्यर्थ ।

Colophon : इति वादिराज कृत एकीभाव टीका सपूर्णम् ।

६६२. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing: देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon इति श्री एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

६६३. एकीभाव स्तोत्र सटीक

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : भव्यसहाय त वादिराज अनुवर्तते भव्यानां सहाय संघात वादिराजा न्यून इत्यर्थ । वादिराज एव शाब्दिक नान्य, वादिराज एव तार्किक नान्य, वादिराज एव काव्यकृत नान्य, वादिराज एव भव्यसहाय नान्य: इति तात्पर्यार्थ अनुयोगे द्वितीया ।

Colophon : इति वादिराजसूरि विरचित एकीभावस्तोत्रटीका सम्पूर्णम् । भूयात् ।

६६४ गौतम स्वामी स्तोत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवृन्दा ... पार्श्वनाथोऽत्र नित्यम् ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रमत्र ते सारतोन्हवम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्व भवसर्थार्थसिद्धये ॥६॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६६५. गीतवीत राग

Opening : विद्याव्याप्तसमस्तवस्तुविसरो विश्वैर्गुणैर्भासुरो,
दिव्यश्रव्यवच, प्रतुष्टनृसुर सद्ध्यानरत्नाकर ।
य ससारविषाब्धिपारसुतरो निर्वाणसौख्यादर
स श्रीमान वृषभेश्वरो जिनवरो भवत्यावारान् पातु न ॥१॥

Closing : गगय्वशाम्बुधिपूर्णचन्द्रो यो देवराजाऽजनि राजपुत्र ।
तस्यानुरोधेन च गीतवीतराग-प्रबन्ध मुनिपश्चकार ॥१॥
द्राविड्देशविशिष्टे सिंहपुरे लब्धशस्तजन्मासौ ।
वेलगोलपण्डितवयश्चकार श्रीवृषभनाथवरचरितम् ॥२॥
स्वस्तिश्रीबेलगुले दोर्बलिजिननिकटे कुन्दकुन्दान्वये
नोऽभूत्तस्य पुस्तकाङ्कश्रुतगुणाभरण स्थातदेशीगणार्य
विस्तीर्णाशेषरीतिप्रगुणरसमृत गीतयुग्वीतरागम्
शस्तादाशप्रबन्ध बुधनुतमतनोत् पण्डिताचार्यवर्य ॥

Colophon : इति श्रीमद्रायराजगुरुभूमण्डलाचार्यवर्यमहावादवादीश्वरराय-वादिपितामहसकलविद्वज्जनचक्रवर्त्तिबल्लालरायजीवरक्षापाल (?) कृत्या-द्यनेकविरुदावलिविराजच्छ्रीमद्बेलगोलसिद्धसिंहासनाधीश्वर श्रीमद-भिनवचारुकीर्त्तिपण्डितार्चवर्यप्रणीतगीतवीतरागाभिधानाष्टपदी समाप्ता।

६६६. गोम्मटाष्टक

Opening : तुभ्यं नमोऽस्तु शिवशकरशंकराय,
तुभ्य नमोऽस्तु कृतकृत्यमहोन्नताय ।
तुभ्य नमोस्तु घनघातिविनाशकाय,
तुभ्य नमोस्तु विभवे जिनगुम्मटाय ॥

Closing : तुभ्य नमो निखिललोकविलोकनाय,
तुभ्य नमोऽस्तु परमार्थगुणाष्टकाय ।
तुभ्य नमो वेलुगुलाधिसाधनाय,
तुभ्य नमोस्तु विभवे जिन गुम्मटाय ॥

Colophon : नही है ।

६६७ गुरुदेव की विनती

Opening : जयवत दयावत सुगुरुदेव हमारे ।
ससार विषमसार ते जिन भक्त उद्धारे ॥टेक॥

Closing इहलोक का सुख भोग सुरलोक मे जावे,
नरलोक मे फिर आयकै निर्वान को पावै ॥
जयवत दयावत ॥३२॥

Colophon : इति गुरावली सपूर्ण ।

६६८. जिनचैत्य स्तव

Opening : वदौ श्रीजिन जगतगुरु, उपदेशक शिवपथ ।
सम श्रुतिशासन ते रचू, जिन चैत्यस्तव ग्रन्थ ॥

Closing : अठारै सै के ऊपरै, लग्यौ वियासीसाल ।
गुरु कातिग वदि अष्टमी, पूरण कियौ सुकाल ॥

Colophon . इति श्रीजिनचैत्यस्तव ग्रन्थ दिवान चपाराम कृतौ समाप्ता शुभमस्तु । सवत् १८८३ मिति कातिक कृष्ण अष्टमी गुरुवार लिखतम् खरगराय श्री वृदावन मध्ये लिखाइत श्री दिवान चपाराम जी ।

६६९. जिनदर्शनाष्टक

Opening : अद्याखिल कर्मजित मयाद्यमोक्षो न भूतो ननुभूतपूर्वं ।
तीर्णोभवार्णोनिधिरद्यघोरो जिनेन्द्रपादाबुजदर्शनेन ॥

Closing : अद्याष्टक निर्मितमुक्तसारैः,
कीर्तिस्तवनार्तैरमलंमुनीन्द्रै ।

यो योयति नित्यमिदं प्रकीर्ते,
पद्माप्रवो ते परमालभते ।।

Colophon : इति जिनदर्शष्टक समाप्तम् ।

६७०. जिनेन्द्र दर्शन पाठी

Opening : णमो अरिहंताणं ... णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

Closing : जन्मजन्मकृत पाप जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्मरोग जरातकं हन्यते जिनदर्शनात् ।।

Colophon : इति दर्शन समाप्त ।

६७१. जिनेन्द्र स्तोत्र

Opening : दृष्टं जिनेन्द्रभवनं ... विराजमानम ।।१।।

Closing : श्रय पदं ... प्रमातुम ।।११।।

Colophon : इति दृष्ट जिनेन्द्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

६७२. जिनवाणी स्तुति

Opening : माधुरी जिनेसुर वानी, गुरु गनधर करत बखानी हो ।।

Closing : चारो जोग प्रयोग को, औ पुरान परमान ।
अब नमत नरिद्रप्रीतनित, मदा सत्य सरधान ।।

Colophon : इति सपूर्णम् । माघशुक्ल १ सं० १९६३ सोमवार शुभ ।
हरीदास प्यारा ।

६७३. जिनगुण स्तवन

Opening : तवनतभवतापादी प्रणम्य सम्यग्जिनेन्द्रवरपादौ ।
भक्तागुणमप्युदधेः किंजिरपिरपि स्तुतिमह्व विदधे ।।१३।।

Closing : इत्यर्हन्त स्तुत्वा स्वानालोचयति सुधी दोषान्
तद्भवमेनस्तस्मिन्नघनोपैति रज इवास्निग्धे ॥

Colophon . इति जिनगुणस्तवनपूर्विकालोचना समाप्तम् ।

६७४. जिनगुण सम्पत्ति

Opening : त्रिभुवनपति खपपनरपति धनदोरगभूतपक्षपति महितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामयम् ॥

Closing : इक्षो विकाररसप्राप्त गुणन लोके,
पिष्टादिक मधुरतामुपयाति यद्वत् ।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुपितानि नित्यम्,
जातानि तानि जगतामिह पावनानि ॥
इत्यहतान भवता च महामुनीना,
प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृति भूमिदशा ।
ते मे जिनाजितभया मुनयश्च शान्ता,
दिशन्तु सुगतिं निवद्यसौख्यम् ॥

Colophon नहीं है ।

६७५. जिनस्तोत्र

Opening : उपकमेमुनश्चैस भयमत्रयमान्वित ।
विरतो विषयासगे प्रविष्ट कैकसीसुत ॥

Closing : मासमात्रदशास्योपि स्थित्वा कैलाशमर्हत्ते ।
प्रणिवसतिनरश प्रपपावमि वाछितम् ॥

Colophong : नहीं है ।

६७६. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : परमेष्ठिनमस्कार सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र पजराभ स्मराम्यहम् ॥

Closing : श्री रूद्रपल्लीय वरेण्य गण्ये देवप्रभाचार्य पदाजह स. ।
वादीन्द्रचूडामणिराप जैनी जीयाद श्री कमल प्रभाख्य ॥

Colophon : इति श्री जिनपजरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६७७ जिनपजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नम ॥

Closing : यस्मिन्गृहे महाभक्त्या यन्त्रोय पूजते बुध ।
भूतप्रे - ॥

Colophon : **Missing**

६७८ जिनपजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रां श्री ह्रूं अर्हद्भ्यो नमो नम ।

Closing : प्रात्मपुच्छाय लक्ष्मीमनोवछितपूरणाय ॥२०॥

Colophon इति जिनपजर सपूर्णम् ।

६७९. ज्वालामालिनी स्तोत्र

Opening : ॐ नमो भगवते श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकशखगोक्षीर-
हारधवलगात्राय घातिकर्मनिर्मूलछेदनकराय ।

Closing : ·· हूरू हूरू स्फुत स्फुट घे घे आँ क्रो क्षी क्षूँ क्षूँ क्षी क्षी
ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon इति श्री ज्वालामालिनि स्तोत्र सपूर्णम् । शुभमस्तु ।

६८०. ज्वालामालिनी देवी स्तुति

Opening : देखें—क्र० ६७९ ।

Closing देखे—क्र० ६७९ ।

Colophon इति श्री चंद्रप्रभतीर्थङ्कर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल-
दुःखहर मगलकर विजयकरण स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६८१. ज्वालामालिनी कल्प

Opening . चद्रप्रभजिननाथ चद्रप्रभमिद्रनदिमहिमानम् ।
ज्वालामालिन्यर्चितचरणसरोरुहद्वय वदे ।।१।।

Closing · उरगक्रूरग्रहशांति कुरु—अनेन मत्रेण पुष्पान् क्षिपेत् ।

Colophon . सपूर्णो ।

देखे—Catg of Skt & Pkt. Ms., P 647

६८२. कल्याणमदिर स्तोत्र

Opening कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिंदिमङ्घ्रियुग्न ।
ससारसागरनिमज्जदशेषजतु ।
पोतयमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ।।

Closing । जननयनकुमुदचन्द्रप्रभासुरा स्वर्गसपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरान् मोक्ष प्रपद्यते ।।

Colophon · इति श्री कल्याणमदिरस्तोत्रम्

देखे —(१) दि० जि ग्र० र०, पृ० १३७ ।
(२) जि० र० को, पृ० ८० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ६७, १०६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १०१, ११२ ।
(५) आ० सू०, पृ० २८ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० ११३ ।
(7) Catg of Skt & Pkt Ms, P 633

६८३ कल्याणमदिर स्तोत्र

Opening । देखे क्र० ६८२ ।

Closing । देखे क्र० ६८२ ।

Colophon । इति कल्याणमदिरजीर्णसंस्कृतसमाप्तम् ।

६८४. कल्याणमदिर स्तोत्र

Opening । देखे, क्र० ६८२ ।

Closing : प्रगटरलगिम तै ... ... ।

Clophon : अनुपलब्ध ।

६९५. कल्याणमंदिर वचनिका

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : ... मल कहिये पाप के निचया समूह ही ते भव्य अैसे हैं ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषाटीका समाप्ता ।

६९६. कल्याण मन्दिर सार्थ

Opening : देखे, क्र० ६८२ ।

Closing : देखे, क्र० ६९५ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी की टीका सहित समाप्तम् ।

६९७. क्षमावणी आरती

Opening : उनतीस अंग की आरती, सुनौ भविक चितलाय ।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भो (भव) पाय ।।

Closing : दोष न कहियो कोई, गुणग्राही पढे भावसो ।
भूल चूक जो होइ, अरथ विचारि कै सोधियो ।।२३।।

Colophon : इति क्षमावणी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

६९८. क्षेत्रपाल स्तुति

Opening : जिनेन्द्र धर्म के सदैव रक्षपाल जी ।
बड़े दयाल भक्तपाल क्षेत्रपाल जी ।।टेक।।

Closing : जिनेन्द्र द्वार रक्षपाल क्षेत्रपाल जी,
तुम्हें नमे सदैव भव्यवृंद भाल जी ।
कृपा कटाक्ष हेरिए अहो कृपाल जी
हमे समस्त रिद्धि सिद्धि द्यो दयाल जी ।

Colophon : इति क्षेत्रपाल जी को सैर पूर्ण ।

६९९ काष्ठासंघ गुर्वावली

Opening : सम्प्राप्तससारसमुद्रतीर, जिनेन्द्रचन्द्र प्रणिपत्य वीरम् ।
समीहितार्थं सुमनस्तरुणा, नामावलिं वक्ष्मित मा गुरुणाम् ॥

Closing : ....ससदि विचित्यात्रैवस्त्र महिमातटिमारोपि निपुणम् ।

Colophon नही है ।

७००. लघु सहस्त्र नाम

Opening नम त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्ष्ये तस्य नामानी मोक्षसौख्याभिलाषया। ।१॥

Closing : नामाष्टसहस्राणि जे पठति पुन पुन· ।
ते निर्वाणपद यान्ति मुच्यते नात्रसंसय ॥४०॥

Colophon . इति लघुसहस्रनाम सपूर्णम् ।

७०१. लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र

Opening : देखें, क० ७०० ।

Closing : देखें, क० ७०० ।

Colophon : इति श्री वीतराग सहस्रनामस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७०२. लक्ष्मी आराधन विधि

Opening : ॐ रो श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

Colsing : इस मत्र सो चावल अक्षत मंत्रिके जिस्मैं राखै सरे वस्तु घटै नही ।

७०३. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : आद्यं प्रणवतलक्ष्मीमायाक्रमाक्षर तथा ।
महालक्ष्मी नमस्याते मंत्रोऽय दशवर्णक. ॥१॥

Closing : वाराराशिरसौ प्रसूय भवती' '' मन्येमहत्व सस्थितं ।।१२।।

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णम् ।

७०४. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७०३ ।

Closing : न कस्यापि हि मत्रीय कथनीय विपश्चिता ।
यशोधर्मधनप्राप्त्यै सौभाग्य भूतिमिच्छिता ।।

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसपूर्णम् ।

७०५. मगलाष्टक

Opening : श्री मन्नम्रसुरासुरेन्द्र — ''' कुर्वन्तु ते मगलम ।।१।।

Closing : जीर्ण-शीर्ण ।

७०६. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजै भोर । विघन हरन सुखकरण किशोर ।।
अरहंतसिद्ध सूरि उवझाय । साधु नाम जपिय सुखदाय ।।

Closing : मंगलदान शील तपभाव, मंगल मुक्तवधू को चाव ।
द्यानत मगल आठो जाम, मगल महा भक्ति जिन साम ।।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

७०७. मणि भद्राष्टक

Opening : अपठनीय ।

Closing : — — — —

धर्मकामार्थं लक्ष्मीस्तुष्टदेवोस्त्यवर्ण्य,
धरणिधरकवेर्भारिनी वक्ति: सत्यम् ।।

Colophon : इति श्री मणिभद्र मक्ष्यादि राज स्तोत्रमन्त्रयुतं महाप्रभावीका सम्मत्तम् ।

विशेष— अन्त में दिये गये मंत्र अपूर्ण है ।

७०८. नंदीश्वर भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुट ·· विरहितनिलयम् ॥

Closing : ··· जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झ ।

Colophon : इति नंदीश्वरभक्तिसपूर्णम् ।

७०९. णमोकार स्तोत्र

Opening · ॐ परमेष्ठिी नमस्कारं सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्रं पंजराभि स्मराम्यहम् ।

Closing यश्चैनां कुरुते रक्षां परमेष्ठि पदैं सदा ।
तस्य न स्याद्भय व्याधिराधिश्चापि न कदाचन ॥

Colophon · इति नवकार स्तोत्रम् ।

७१०. नवकार भावना स्तोत्र

Opening त्रिशिलष्यन् घनकर्मेभ्य सजीवन मंत्रराट् ॥१॥

Closing · स्वपन् जाग्रन स्तोत्र सुकृती ॥११॥

Colophon इति नवकार मंत्रस्य स्तोत्र समाप्त । मिति पूसवदी १० दिन रवि संवत् १९५४ द० नोलकंठदास ।

विशेष—ड०।२ संख्या ग्रन्थ एक गुटका है, जिसमें ५३ पूजास्तोत्र आदि संकलित हैं। इसका लेखनकाल विक्रम सं० १९५४ है।

७११. नेमिजिन स्तोत्र

Opening · कश्चित्कांता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः,
स्तोतापार सहगपितबेयादृगुणाब्धेजंतोत्र ।
प्रान्स्योदन्वत्समधिकतरस्येति तुष्टावमोदात्,
तुष्टामायं दिशतु सश्विं श्री शिवानदनो व ॥

Closing : इति स्तुतः श्रीमुनिराज · दीर्घदर्शिताम् ॥८॥

Colophon : इति रघुनाथकृत श्रीमन्नेमिजिनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष—इसके ३-४ श्लोक कालिदास एवं भारवी के श्लोकों का आश्रय लेकर बनाये गए हैं। प्रथम चरण यथावत् मिलता है।

७१२. निजात्माष्टक

Opening : णिच्चन्तेलोकचक्काहिव सयणमिया जोजिणिन्दाय सिद्धा ।
अण्णेगन्थन्थसन्था गमगमियमण उब्वज्झा झया ।
सूरि साहू सब्वे सुद्धण्णियाद अनुसरण प्रणामोखसम्म ।
ति तम्हासोऽहुज्झायेमिणिञ्चपरमपयगओ णिविषप्पोणियप्पो ।१।

Closing : रूवे पिंडेपयत्थेण कलपरिचये जोयिविदेण णादे ।
अत्थे गन्थे ण सत्थेण करण किरि या णावरे भगचारे ।
साणन्दाणन्द रूओ अणुमह सुसुमवयेणा भावप्रब्वो ।
सोहझाये मिणिञ्च परमपयगओ णिविपप्णोणियप्पो ।।

Colophon : इति योगीन्द्रदेवविरचित निजात्माष्टक समाप्त शुभ भूयात्।

७१३. निर्वाण कण्ड

Opening : वर्द्धमानमह स्तोष्ये वर्द्धमानमहोदयम् ।
कल्याणैपंचभिर्देव मुक्तिलक्ष्मीस्वयवरम् ।।१।।

Closing : इत्यर्हता शमवत्ता ' ' निरवद्यसौख्यम् ।।१२।।

Colophon : इति निर्वाणकाड सम्पूर्णम् ।

७१४. निर्वाण काण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो — महावीरो ।।१।।

Closing : जोयट्ठे इतियाल लहइ णिव्वाण ।।२८।।

Colophon : इति निर्वाण काड समाप्तम् ।

७१५. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वदौ सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहू काड निर्वाण की भाषा विविध बनाय ।।

Closing : सवत् सत्रह सै तैताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
भैया वदन करै त्रिकाल जय निर्वाण काड गुनमाल ।।२२।।

Colophon : इति निर्वाण काड भाषा समाप्तम् ।

७१६. निर्वाण काण्ड

Opening : देखें—क्र० ७१५ ।
Closing : देखें—क्र० ७१५ ।
Colophon : इति निर्वाण कांड समाप्तम् । सवत् १८७१ ज्येष्ठ वदि ८ लि(खा) आलमचन्द्रेण ।

७१७. निर्वाण भक्ति

Opening : त्रिभुवनपति खचरनरपति · मनामय प्राप्तम् ।।
Closing : · · · जिनगुणसपत्ति होउ मज्झं ।
Colophon : इति निर्वाणभक्तिसपूर्णम् ।

७१८. पद्मावती कवच

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुट तटीदिव्यमाणिक्य माला ।
ज्योतिर्ज्वाला कराला स्फुरित मुकरिका घृष्टपादारविंदे ।।
व्याघ्रोरुल्कासहस्रज्वलदनल शिखा लोक पाशाकु शाल ।।
आंक्रोंह्रीं मन्त्ररूपे क्षपितदलमल रक्ष मां देविपद्मे ।।१।।
Colsing : इद कवच ज्ञात्वा पद्मायास्तोति ये नर ।।
कल्पकोटिशतेनापि न भवेत् सिद्धिदायिनी ।१८।
देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७१९. पद्मावती कल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननाथं प्रणम्यपार्श्वं जिनम् ।।
वक्ष्येभीष्टफलप्रदं भैरवपद्मावतीकल्पम् ।१।
Closing : यावद्धारिभूधरतारागगनचन्द्रदिनपतय ।।
तिष्ठतु भुवि तावदय भैरवपद्मावती कल्पः ।५९।
Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचिते भैरवपद्मावतीकल्पे गरुडाधिकारो नाम दशम परिच्छेद ।।
देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७२०. पद्मावती बृहत्कल्प

Opening : देखें क्र० ७१८।

Closing :

जगभक्त्यापुकृत्ये कों भक्त्या मां कुरुते सदा।
वाञ्छित फलमाप्नोति तस्य पद्मावती स्वयं ॥

Colophon : इति पद्मावत्या बृहत्कल्प समाप्तम।

७२१. पद्मामाता स्तुति

Opening

जिनसामनी हंसासनी पद्मासनी माता।
भुज चार ते फल चार दे पद्मावती माता।

Closing :

जिनधर्म से डिगने का कहु आपरे कारन।
तो लीजियो उबार मुझे भक्त उद्धारन ॥
निज कर्म के सयोग स जिस योन म जाओ।
तहा ही जिया सम्यक्त्व का सिवधाम को पावो ॥

Colophon जिनशासनी इति पूर्ण।

७२२. पद्मावती स्तोत्र

Opening :

श्री पार्श्वनाथजिननायकरत्नचूडापाशांकुशोमयफलांकित-
दोश्चतुष्का ॥
पद्मावतीत्रिनयना त्रिफनावतंसा पद्मावती जयति शासन-
पुण्यलक्ष्मी. ॥

Closing :

पठित भणित गुणित जयविजयरमानिबधन परमम्
सर्वाधिव्याधिहर त्रिजगति पद्मावतीस्तोत्रम् ॥
आह्वान नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्
विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वरी ॥२८॥

विशेष— आरा में पद्मावतीमदिर चढ़ायो आरा वाला गुलाल चंद जी गुलु-
लाल जी ॥

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० २३५।
(2) Catg. of Skt. & pkt. Ms., 665.

७२३. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ७१८।

Closing : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्यव्यापी ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रा ह्रीं ह्रौं ह्रौं ह्रीं ह्रः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र को १२०००० जपे तो सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होय ।

Colophon : षड्विंशति श्लोक विधानम् सम्पूर्णम् । समाप्तम् ।

७२४. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८ ।

Closing : देखें, क्र० ७२२ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्र समाप्तम् ।

७२५. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८ ।

Closing : देखें, क्र० ७२२ ।

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सपूर्णम् ।

७२६. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८ ।

Closing : ॐ नमो गोयमस्स सिद्धस्स आनय आनय पूरय पूरय मम कुरू कुरू वृद्धि कुरू कुरु ह्रीं भास्करी नमः ।

Colophon : नहीं है ।

७२७. पद्मावती सहस्त्रनाम

Opening : प्रणम्य परमा भक्त्या देव्या पादांबुजं त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्तिसिद्धये ॥

Closing : भो देवि भीमा ! — सम्यक्तिमीतिततापने किं ॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र समाप्तम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र. र., पृ. १४१ ।
(२) जि. र. को., पृ. २३५ ।

७२८. परमानंदस्तोत्र

Opening :　　परमानंदसंयुक्तं निर्विकार निरामयम् ।
ध्यानहीना तु पश्यति　निजदेहे व्यवस्थितम् ॥१॥

Closing :　　पाषाणेषु यथा　··　　॥

Colophon :　　अनुपलब्ध ।

७२९. परमानन्दस्तोत्र

Opening :　　देखें—क० २२८ ।

Closing :　　काष्टमध्ये ······ जानाति स पण्डित: ॥२४॥

Colophon :　　इति परमानंदस्तोत्रसमाप्तम् ।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० ११२, १३३, १५७, २८८ ।
(4) Catg of Skt & Pkt. Ms., 665

७३०. परमानन्द चतुर्विंशतिका

Opening :　　देखें, क० ७२८ ।

Closing :　　स एव परमानंद: स एव सुखदायक: ।
स एव परचिद्रूप: स एव गुणसागर ॥

Colophon　　परमानंद चतुर्विंशति(का) समाप्ता ।
देखें—जि० र० को०, पृ० २३७ । (पञ्चविंशतिका)

७३१. पार्श्व जिनस्तवन

Opening :　　देवेन्द्रा शतश स्तुवंति — ··· स्तौमि भक्त्या निशम् ॥

Closing :　　इति पार्श्वजिनेश्वर　— सौख्यकरम् ॥

Colophon :　　इति यमकबंध श्री पार्श्वनाथ स्तवन सम्पूर्णम् ।

७३२. पार्श्वनाथ स्तवन

Opening :　　नमिऊण पणयसुरगण चूडामणिकिरणरंजिय मुणिणो ।
चलणजुयल महाभय पणासण संथुव वुच्छं ॥

Closing : जो अठइ जो मनिसुणइ ताण कइणो अमांणतु गस्स ।
पासो पाव समेऊ सयलभुवणच्चिअचल ॥२१॥

Colophon : इति पार्श्वनाथस्तवन सम्पूर्णम् ।

७३३. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : धरणोरगसुरपतिविद्याधरपूजित नत्वा ।
क्षुद्रोपद्रवसमन तस्यैव महास्तवन वक्ष्ये ॥

Closing : भक्तिर्जिनेश्वरे यस्य गद्यमाल्याभिलेपनै ।
सपूजयति यश्चैन तस्यैतत् सकल भवेत् ॥

७३४. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening य श्री पादतवेश श्रयति सपदि स श्रीपुर सश्रयेत् ।
स्वामिन् पार्श्वप्रभोत्वत्प्रवचनवचनोद्दीप्रदीपप्रभावै ॥
लब्ध्वामार्गं निरस्ताखिलविपदमतो यत्पधीशैस्तु ॥
श्रीभिर्वन्द्य स्तुत्यो महास्त्व विभुरसिजगतामेक
एवाप्तताथः ॥१॥

Closing : एभि श्रीपुरपार्श्वनाथ विलम्माहात्म्य पुस्यत्सुधा ।
कूपारोहिनिर्दशित प्रविसरद्वार्मागचतुर्यैन ॥
तस्मात्स्तोत्रमिद सुरत्नमिवयद्यत्नादृही ॥
स मया विद्यानन्द महोदयाय नियत धीमद्भिरासे-
व्यताम् ॥३०॥

Colophon : इति श्रीमदमरकीर्ति यतीश्वर प्रियशिष्य श्रीमद्विद्यानन्द स्वामी विरचित श्री पुरपार्श्वनाथ स्तोत्र समाप्तमभूत् ।

७३५. पार्श्वनाथ स्तोत्र (सटीक)

Opening : लक्ष्मीर्महस्तुल्यसतीसतीसती प्रवृद्धकालो विरतोरतोरतो।
जराजाजन्महताहताहता पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौगिरौ ॥१॥

Closing : — — कोप्रनेप्रधीनवतुरे अस कारणात् ॥

Colophon : इति पद्मनंदीमुनिविरचित श्री पार्श्वनाथस्तोत्रटीकासहितं सम्पूर्णम् ।१।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १४० ।
(२) जि० र०, को०, पृ० २४७ ।

७३६. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५ ।

Closing : त्रिसंध्य य पठेन्नित्य नित्यमाप्नोति सश्रियम् ।
श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेबध्व भो वुधा सुकृत् ॥

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

७३७ पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५

Closing : तर्कव्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौशले,
विख्यातो भुवि पद्मनदमुनय. तत्वस्य कोशे निधि ।
गंभीर यमकाष्टक भणितयं सस्तूय सा लभ्यते,
श्री पद्मप्रभदेवनिर्मितमिदं स्तोत्र जगन्मगलम् ॥६॥

Colophon : इति श्री लक्ष्मीपतिपार्श्वनाथस्तोत्रसमाप्तम् ।

७३८. पंचस्तोत्र सटीक

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : दृष्टस्तत्व जिनराजचंद्रविकसद्भूवेन्द्र नेत्रोत्पले ।
स्नात त्वन्नुति चंद्रिकांभसिभवद्विद्वच्चकारोत्सवे ॥
नीतश्चाद्य निदाघज. क्लमभर शांतिमयानम्यते ।
देवत्वदगतचेतसैव भवती भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥२६॥

Colophon : संवत् १६६७ फाल्गुण शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृतं पं० सीताराम शास्त्री ।

७३९. पंचासिकाशिक्षा

Opening : करि करि आतम हित रे प्राणी ।
जिन परिणामनि तजि बंध होत है ।
सो परिणति तजि दुखदानी ॥ करि० ॥

Closing : यह शिक्षापचासिका, कीनी द्यानतराय ।
पढ़ै सुनै जो मनधरै, जन जन कौं सुखदाय ॥

Colophon : इति श्री पचसिका शिक्षा सम्पूर्णम् । मिती भाद्रपद सुदी ६ बुधवार गुरु सम्वत् १६४७ ।

७४०. पंचपदाम्नाय

Opening : भक्तिभरामरप्रणत प्रणम्य परमेष्ठी पचकम् ।
वीर्षण नमस्कारसारस्तवन भणामि भव्यानां भयहरणम् ॥

Closing : .... अनेन ध्यानेन पापोच्चाटनताडननिपुणा. साधव: सदा स्मरत ।

Colophon : इति पचपदाम्नाय: ।

७४१. प्रभावती कल्प

Opening : हरिद्रानिंबपत्राणि पिप्पली मरिचानि च ।
भद्रामुस्ता विधवानि सप्तम विश्व भेषजम् ॥

Closing : ॐ अहेवी स्वाहा गुटिका प्रयुञ्जनमन्त्र ।

Colophon : इति प्रभावती कल्प। । श्रीरस्तु ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २६६ ।

७४२. प्रार्थना स्तोत्र

Opening : त्रिभुवनगुरो जिनेश्वरपरमानंदैककारणम् ।
कुरुष्वमपि किंकरेत्रकरुणा तथा यथा जायते मुक्ति ॥१॥

Closing : जगदेकशरण भगवन्नसमश्रीपद्मनदितगुणौघ किं ।
बहुना कुरु करूणामत्रजने शरणमापन्ने ॥८॥

Colophon : इति प्रार्थनास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७४३. रक्त पद्मावती कल्प

Opening : ··· सन्निधापयेत् विसर्जना विसर्जयेत् । गधाबि-
ग्रहणानतर पटमचल कृत्वा ततो जाप कुर्यात् ··· — ।

Closing : — ··· भवतोऽस्माभिर्दत्तो मन्त्रोऽयं परपरायात. साक्षिणो-
रव्यादिदेवता ।

Colophon : इति रक्तपद्मावती कल्प समाप्तम् । सवत् १७३८ वर्षे
कार्तिकसुदी १३ रवौ श्री औरगाबाद नगरे श्री षरतर श्री वेगमुगर्बे
भट्टारक श्री जिनसमुद्रसूरिविजयराज्ये तत् शिष्यसौभाग्यसमुद्रेण एषा
प्रतिलिपि कृता: ।

७४४. ऋषभस्तवन

Opening : सिद्धाचल श्रीललनाललाम, महीमहीयो महिमाभिराम ।
असारससार पयोपराम नवामि नाभेय जिन निकामम् ॥

Closing एव श्रुतो यमकभेद परपराभि,
राभिर्मयाविमल शैलपति पराभि ।
आदीश्वरो विशतु मे कुशल विलासम्,
वाचां विचक्षण चकोरसुधाशु भारम् ॥

Colophon · इति श्री शत्रुजयालकरण श्री ऋषभस्तवनमेकादशयमकभेदैः
समर्थितम् श्री जिनकुशलसूरिभि, सम्पूर्णम ।

७४५. ऋषिमंडलस्तोत्र

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसामस्तसयुतं ॥
ऋषिमडलयत्रस्य वक्ष्ये पूज्यादिमंल्यमम् ॥१॥

Closing नि शेषामरशेखरचितपदं इंद्रोल्लमत्सख ॥
ज्ञातश्रीद्धतकांति सहृतिहृतप्रव्यक्त भवत यासवं

निर्वाण समहोत्समाषमुकत प्रस्फुर्तम ऊमराच्छद्धि
वृद्धिमनारत जिनरत: जिनवरा कुर्वन्तु व सर्वदा ॥

७४६. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : आन्द्य ताक्षर — .... समन्वितम् ॥१॥

Closing : शतमष्टोत्तर प्राप्तर्ये पठन्ति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभव ... ... ॥

Colophon : नहीं है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 629

७४७ ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : देखें—क० सं० ७४६ ।

Closing : ये वधित — रक्षतु मर्वत ॥६३॥

Colophon : नहीं है ।

७४८. त्रिकालजैन सन्ध्यावंदन

Opening : ॐ ह्रीं अर्ह क्ष्मा ठ. ठ. उपवेशनभूमिशुद्धि करोमि स्वाहा ।

Closing : .. मन्त्र श्री जैनमन्त्र अपजपजपितं जन्मनिर्वाणमन्त्रम् ॥

Colophon : इति त्रिकालजैनसन्ध्यावदन सम्पूर्णम् ।

७४९. सहस्त्रनामाराधना

Opening : सुत्रामपूजित पूज्यं सिद्ध शुद्ध निरंजनम् ।
जन्मदाहविनाशाय नौमि प्रारब्ध सिद्धये ।१।
वद्वक्त्रां नमस्कुर्वे शारदां विशदशारदाम् ।
गौतमादि गुरुन् सम्यक् दर्शनज्ञानमंडितान् ।२।

Closing : विशालकीर्तिर्वरपुण्यमूर्तिः शतेंद्र.चर्चितपादपद्म ।
श्रीमज्जिनमें सूरिसंहस्त्रनामा जिनेश्वर. पातु सा भव्यलोकान्।

इत्थ पुरोत्थ पुरुदेवयत्रं समाव्यमध्ये जिनमर्चयामि ।
सिद्धादिधर्मादि जिनालयास्त पत्रेषु नामांकित तत्पदेषु ॥

विशेष—प्रशस्ति सग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६४ मे सम्पादक भुजबली शास्त्री ने ग्रन्थ कर्त्ता के बारे में लिखा है। इसके कर्त्ता देवेन्द्रकीर्ति हैं और इन्होंने जिनेन्द्र भगवान के विशेष रूप मे अपना, अपने गुरु का एव प्रगुरु का क्रमश —धर्मचन्द्र, धर्मभूषण, देवेन्द्रकीर्ति इन नामो से उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्ति के नाम से कई व्यक्ति हुए हैं, इसलिये नहीं कहा जा सकता कि अमुक देवेन्द्रकीर्ति ही इसके प्रणेता हैं ।

७५०. सहस्रनामस्तोत्र टीका

Opening ।

ध्यात्वा विद्यानद समन्तभद्र मुनीन्द्रमर्हन्तम् ।
श्रीमत्सहस्रनाम्ना विवरणमावस्मि ससिद्धौ ॥

Closing ।

अस्ति स्वस्तिसमस्तसंघ तिलक श्रीमूलसघोनघम्,
वृत्त यत्र मुमुक्षुवर्गशिवद ससेवितं साधुभि. ॥
विद्यानदिगुरुस्त्विह गुणवद्गच्छे गिर साम्प्रतम्,
तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिर नदतु ॥

Colophon ।

इत्याचार्य श्री श्रुतसागरविरचिताया जिनसहस्रनामटीकायामतकृत्वतविवरणो नाम दशमोध्याय समाप्त । इति जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् । सवत् १७७५ वर्षे वैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तदंतेवासिन ब्रह्म श्री विनयसागर तदतेवासिन पंडित श्री हरिकृष्ण तदतेवासिन (पजीवनि) गगारामेन लिखित भेंदग्रामे आदिनाथचैत्यालये लिखितमिद पुस्तकम् ।

७५१. सहस्रनाम स्तोत्र

Opening ·

स्वयभुवे नमस्तुभ्यं —········ चित्तवृत्तये ॥१॥

Closing :

अमोघवाधमोघशो निर्मलोमोघशासन ।
·· · ···· ··· ··· ॥

Colophon ।

Missing

देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 707.

७५२. सहस्त्रनाम

Opening : देखें, क० ७५० ।

Closing : देखें, क० ७५० ।

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागर विरचिताया जिनसहस्त्रनामटीकायां दशमोध्याय समाप्त ।

सवत् १९८५ वर्षे आषाढ़मासे सुदी ३ गुरौ श्री मूलसघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवा, तदतेवासिन; ब्रह्म जी विनयसागर तदतेवासिन भुजबल प्रसाद जैनी लिखितम् । श्री मैनेजर भुजवली जी शास्त्री की सम्मति आदेशानुसार आरा स्थाने ।

७५३. सहस्त्रनाम टीका

Opening : श्रुतिवचनविरचितचित्तचमत्कार स्वर्गाग्रवर्गमार्गस्यदन चारुचारित्रचमत्कृतसक्रदन: .... ।

Closing : नाम्नामष्टसहस्त्रेण स्मृतिमात्रेण स्मरणमात्रेण प्रमाणेन सेवां कर्तुं इच्छाम प्रमाणेर्थेद्वयसटदघ्नन् मात्रट् प्रत्यया भवंति । इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते श्रीमहापुराणे श्री वृषभस्तुतेस्टीका सम्पूर्णा कृता सूरिश्रीमदमरकीर्तिना ।

Colophon : इति श्री जिनसहस्त्रनामटीका । इद मुद्रित प० चिमनरामेण लिपि कृतम फतेपुरमध्ये स० १८९७ अश्विन शुक्ल तृतीयायां शुभ भूयात् ।

७५४. सत अष्टोत्तरी स्तोत्र

Opening : ओंकार गुनि अति अगम, पंच प्रमिष्ट निवास ।
प्रथम साधु वदन किये, कहिये ब्रह्म विलास ॥

Closing : ब्रह्म श्री सत्त अठोलरी, कीनी निजहित काज ।
जे नर पढै विवेक सौं, ते पावहि मुनिराज ॥

Colophon : इति श्री सत अठोतरी कवित्त बंध सम्पूर्णम् ।

७५५. शक्रस्तवन

Opening : ॐ नमो अर्हते परमात्मने, परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परमवेधसे परमयोगिने ... "।

Closing : ... ... तथाय सिद्धसेनेन लिलिखे सपदा पदम् ।

Clolophon : इति शक्रस्तव समाप्तः । सवत् १७७४ वर्षे पौष वदि ८ दिने लिखत श्री कास्माबाजारमध्ये ।

७५६. सत्तरिसय स्तवन

Opening : तिजयपहुत्तपयासय अट्ठमहापाडिहारजुत्ताणं
समयक्खितठिघाणं सरेमि चक्कजिणदाण ॥

Closing : इय सत्तरिमय जत समम्मं त दुवारिपडि निहिय ।
दुरियारि विजयत त निजारमान निच्चमच्चेह ॥१४॥

Colophon : इति सत्तरिसयस्तवन सम्पूर्णम् ।

७५७. सम्मेदाष्टक

Opening : एकैक सिद्धकूट ... राजते स्पृष्टराजकं ॥१॥

Closing : आधिव्याधि प्रबाधिः ... जगद्भूषणानाम् ॥९॥

Colophon : इति श्री जगद्भूषणकृत सम्मेदाष्टक सम्पूर्णम् ।

७५८. समवशरण स्तोत्र

Opening : वृषभादयानभिवंद्याभ्वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेन्द्रान् ।
भक्त्या नतोत्तमांगः स्तौष्टोतत्समवशरणानि ॥

Closing : अनप्पुगुणनिबद्धामर्हतां मागधर्णादि,
व्रतिरचित सुवर्णनिकपुष्पप्रजानाम् ।
स भवति नुति मालां यो विधत्ते स्वकंठे,
प्रियपतिरमश्री मोक्षलक्ष्मीवधूनाम् ॥

Colophon : इति श्री समवसरण स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

७५६. सङ्कटहरण विनती

Opening : सारद दीजे ग्यान अपार । मुझ भरमन छूटे ससार ॥
वर्द्धमान स्वामी जिनराय । करों बीनती मनचित लाय ॥

Closing : इह बीनती नित भणे प्राणी, सिवधाम पावै घरै ।
सुभ भावधर मन सदा गुणियै, सुद्ध चेतन सो तरै ॥३७॥

Colophon : इति सकटहरण बीनती सम्पूर्णम् ।

७६०. शान्तिनाथ आरती

Opening : शांत जिनेसर स्वामि बीनती अवधार प्रभु ।
सेवक मनसाधार, पापप्रणासन शांति जिनो ॥

Closing : पाटन नगर मझार, शांतकरण स्वामी शांत जिनो ॥

Colophon : इति शातिनाथ बीनती (विनती) ।

७६१. शान्तिनाथ स्तोत्र

Opening : नानाविचित्र भवदुःखराशि नानाप्रकार मोहादियणशि:
पापानि दोषानि हरति देवा इह जन्मशरण तुवशान्ति-
नायम् ।

Closing : जपति पठति नित्यं शान्तिनाथाविशुद्धम्,
स्तवनमधुविद्याया पावतापापहारम् ।
शिवसुखनिधिपोतं सर्वसत्वानुकंपम्,
कृतमुनिगुणभद्र भद्रकर्पेषु नित्यम् ॥६॥

Colophon : इति श्री शान्तिनाथस्तोत्रमुणभद्राचार्यकृत समाप्तम् ।

७६२. शान्तिनाथ प्रभातिक स्तवन

Opening : सुरेन्द्र प्रदासंधरद्दामतोयं वरं हारचन्द्रोज्वलं सोरमेयम् ।
दयातुल्यस शांतिनाथो जिनो नो यदं दैवतालं सदा
सुप्रभातम् ॥१॥

Closing : श्री शान्तिनाथस्य जिनेश्वरस्य प्रभातिक स्तोत्रमिदं पवित्रम् ।
पुमानधीते भवती ह्योपि श्री भूषणस्याद्गुरवत्र ॥६॥

Colophon : इति श्री शान्तिनाथप्रभातिकस्तवन समाप्तम् ।

७६३. शान्तिनाथ स्तवन

Opening : ॐ शांतिशांति शांतये स्तौमि ॥१॥

Closing यश्चैन पठति सदा शृणोति भावयति वा यथायोग ।
शिवशांतिपद जयात् सूरिश्रीमानदेवस्य ॥१७॥

Colophon : इतिशांतिस्तवन समाप्तम् ।
देखें—दि० जि. ग्र. र., पृ. १५० ।

७६४. शान्तिनाथ स्तवन

Opening अयशाञ्च गृहस्थास्य मध्ये परमसुन्दरम् ॥
भवन शांतिनाथस्य युक्तविस्तारतुंगतम् ॥

Closing कृत्वा स्तुति प्रणाम च भूयोभूय' सुचेतस. ।
यथासुखं समासीना प्रदणे जिनवेश्मनं, ॥

Colophon : नहीं है ।

७६५. सरस्वती कल्प

Opening : जगदीशं जिनं देवमभिवंद्याभि नन्दनम् ।
वक्ष्ये सरस्वतीकल्प समासादल्पमेधसाम् ॥

Closing : कृतिना मल्लिषेणेन श्रीषेणस्य सूनुना ।
रचितो भारतीकल्प. शिष्टलोकमनोहरः ॥
सूर्यचन्द्रमसा यावद् मेदिनीभूधरार्णव: ।
तावत्सरस्वतीकल्पः स्थेयाच्चेतसि धीमताम् ॥

Colophon इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचितो भारतीकल्प' समाप्तोऽभूत् ।

७६६. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मंत्ररूपे विबुधजननुते देवदेवेन्द्रवन्द्ये,
चंच्चचंद्रावदाते क्षपितकलिमले हारमृगारगौरे।
भीमे भीमाट्टहास्ये भवभयहरणे भैरवे मेरुधारे,
ह्रां ह्रूं कारनादे मम मनसि सदा शारदे तिष्ठ देवी ॥

Closing : करबदनसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः।
पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः सा जयतु सरस्वती देवी ॥

Colophon : इति सरस्वती स्तुति.।

विशेष—अन्त में सरस्वती मन्त्र भी लिखा है।

देखें— **Catg. of Skt & Pkt. Ms , P. 706.**

७६७. सरस्वती स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६६८।

Closing : देखें—क्र० ६६८।

Colophon : इति सरस्वती स्तोत्र समाप्तम्।

७६८. सरस्वती स्तोत्र

Opening : नमस्ते शारदादेवी जिनस्यांबुजवासनीं।
त्वामहं प्रार्थये नाथे विद्यादान प्रदेहमे ॥

Closing : सरस्वती महाभागे वाइष्टा देवी कमललोचना,
हंसस्कंधसमारूढा वीणापुस्तकधारणी।
सरस्वती महाभागे वरदे कामरूपनी,
हंसरूपी विशालाक्षी विद्यादे परमेश्वरी ॥

Colophon: इति सपूर्णम्।

७६९. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं अर्हन्मुखाम्बुजवासिनी नमः। ह्रां ह्रीं स्वांकबीजेश-
विश्वविकमले कल्पविस्पष्ट बोधे— —।

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

७७०. सिद्धभक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृति ···· ··· यथा हेमभावोऽनब्धि ।

Closing : ··· बोहिलाहो इसुगइगमण समाहिमरण
जिणगुण सम्पत्ति होउमुझक ॥

Colophon : इति सिद्धभक्ति ।

७७१. सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका

Opening : सिद्धिप्रियै प्रतिदिन ··· ···· भूप मेक्षणेन ॥ ॥

Closing तुष्टि देशनया सतोमीक्षितम् ॥२५॥

Colophon इति श्री सिद्धिप्रियै स्तोत्र टीका सम्पूर्णम् ।

विशेष—२४ श्लोको की संस्कृत टीका है, २५ वें श्लोक की टीका नहीं है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४३८ ।
(३) रा० सू० **II**, पृ० ४६, ५३, ११२, ३३२ आदि
(४) रा० सू० **III**, पृ० १०६, १४१, १५६, २४४ ।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० २४६ ।

७७२. सिद्ध परमेष्ठी स्तवन

Opening · अनन्तवीरयोगिन्द्रः समप्रस्यपुण्यमुना ।
एवषोनात्मनो मृत्यु. परिपृष्टः समादिशत् ॥१॥

Closing , परिवार्यमहावीर्यं रामलक्ष्मणसंगतम् ।
किष्किन्धनगर प्रापु. विविस्मुरत्नैमहर्द्धया ॥३५॥

Golophon : इति श्री रविषेणाचार्यकृत पद्मपुराण संस्कृत ग्रन्थ लक्ष्मणजी कृत सिद्धपरमेष्ठी स्तवन समाप्तम् ।

७७३. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन-लोलितसल्लोकलोचनानि सदा ॥१॥

Closing : ··दुक्खखओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमण समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होउमुक्त ।

Colophon इति श्रुतज्ञानभक्ति सम्पूर्णम् ।

७७४. स्तोत्र संग्रह

Opening : यस्यानुग्रहतो दुराग्रहपरित्यक्तात्मरूपात्मन
सद्द्रव्य चिदचित्रिकालविषय स्वैं स्वैरभिक्ष गुणै. ॥ ॥
सार्थ व्यजनपर्यरैसमवयज्ज्ञानातिबोधस्सम
तत्सम्यक्त्वमशेषकर्मभिदुर सिद्धा पर नौमि वः ॥१॥

Closing : तुभ्य नमो वैलगुलाधिपपावनाय ।
तुभ्य नमोस्तु विभवे जिनगुंमटाय ॥८॥

७७५. स्तोत्रावली

Opening : नही है ।

Closing : ···· सुप्रसन्नचित्तनो चिंताटली श्री सार जीनगुणगावता हिव सकलमन आस्या फली ।

Colophon : इति श्री रोहिणी स्तवन संपूर्ण ।

७७६. स्तोत्रावली

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : अहए एसं भावाओ, कम्माण विजाग तह भावा ॥
·········अपूर्ण ।

Colophon : नहीं है ।

७७७. स्तोत्र संग्रह गुटका

Opening . देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : दरसन कीजै देवको आदिमध्यअवसान ।।
सुरगन के सुखभुगत के पावै पद निर्वाण ।।२०।।

Colophon : इति विनै सपूर्ण ।।

७७८. स्तोत्र सग्रह

Opening : देखें—क्र० ५८५ ।

Closing : भाषा भक्तामर कियो हेमराज हित हेत ।
जे नर पढ़ै सुभावसो ते पावै शिवखेत ।।

Colophon : इति भक्तामर स्तवन सम्पूर्णम् ।

विशेष—लगभग एक सौ स्तोत्र, पाठ, पूजा आदि का संग्रह इस गुटका में है ।

७७९ स्तोत्र संग्रह

Opening : प्रणम्य परयाभक्त्या देव्या' पादाम्बुज त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्ति सिद्धये ।।१।।

Closing — इति पुन. मत्र ॐ ह्री क्ली क्लू श्रीं ह्रीं नम । लक्ष जापते सिद्ध होय ।

Colophon : इति शारदा स्तुति सम्पूर्णम् ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे ३७ स्तोत्र मत्रादि का सग्रह है ।

७८०. स्तोत्र

Opening : श्री नाभिराजतनुज' सदयाविहारो,
देवोजितो जयतु कौसदयाविहार: ।
श्री शमवो हतभवौघविलसारसार,
श्री शोभिनंदनजिनोविलसारसार. ।।१।।

Closing: विख्यातक विदितबधरसावतारम् ।
ससारवामविरल हृतकाण्डभूतम् ।
वंदे नव वदनक जधुताकसाधम्,
भिन्न जिनभिदजिर भवहारभावम् ।।

Colophon. अस्पष्ट ।

७८१. सुप्रभात स्तोत्र

Opening: विद्याधरामर नगेरगयातुधान-
सिद्धासुरादिपति सस्तुत पादपद्मम् ।
हेमद्युते वृषभनाथ युगादिदेव-
श्रीमज्जिनेन्द्र विमल तव सुप्रभातम् ।।

Closing: दिव्यां प्रभातमणिका वलिका स्वकण्ठ-,
कठेन शुद्धगुणसग्रथिता क्रमेण ।
ये धारयन्ति मनुजा जिननाथभक्त्या,
निर्वाणपादपफल खलु ते लभते ।।

Colophon: इति सुप्रभातस्तोत्र समाप्तम् ।

७८२. स्वयंभू स्तोत्र

Opening: देखें—क्र० ७८५ ।

Closing: — इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon: इति श्री स्वामीसमन्तभद्राचार्य विरचित बृहत्स्वयम्भूस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

७८३. स्वयंभू स्तोत्र

Opening: येन स्वयबोधमयेन लोका,
आस्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधता केचन मोक्षमार्गे,
तमादिनार्थ प्रणमामि नित्यम् ।।१।।

Closing : यो धर्मं दशधा करोति ··· स्वर्गापवर्गास्थितम् ॥२५॥

Colophon : इति स्वयम्भूस्तोत्र समाप्तम् ।

७८४. वृहत्स्वयभू स्तोत्र

Opening : मानस्तभा संरासि पीठिकाग्रे स्वयभू ॥१॥

Closing : तथ्याख्यातमदो यथावगमत किंचित्कृत लेशत
स्थेयाच्चन्द्रदिवाकरावधिबुधप्रह्लादिचेतस्यलम् ॥

Colophon : इति श्री पडित प्रभाचद्रविरचितायां क्रियाकलापटीकाया समतभद्रकृतबृहत्स्वयभू स्तोत्रस्यटीका समाप्ता । सवत्सरे आषाढशुक्लपूर्णिमाया स० १६१६ लिपिकृतम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५३ ।
(2) Catg. of Skt. & Pkt Ms., P 714

७८५ विषापहार स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित सर्वगत समस्त-
व्यापारवेदीविनिवृत्तसग ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य,
पायादपायात्पुरुष पुराण ॥

Closing : वितिरति विहिता यथाकथंचिद्-
जिनविनतायमनीषितानि भक्ति ।
त्वयि नुति विषया पुनर्विशेषा-
दिशतु सुखनियसो धनजय च ॥

Colophon : इति युगादिजिन विषापहारस्तोत्रम् ।

देखें —(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३६१ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २१७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १२७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० ५१, ६६, १०७, ११२, ३०२ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १०६, १०७, १५७, २३४, २७८ ।
(7) Catg. of Skt & Pkt. Ms, P. 693.

७८६. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति श्री विषापहारस्तोत्रसमाप्तः ।

७८७. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

७८८. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति धनञ्जयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

७८९. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तवनसमाप्तम् ।

७९०. विशापहार स्तोत्र (टीका)

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : ··· विष निर्विषीकृत्य पुनरनतसौख्यरूप लक्ष्मी वशीकरोति इति तात्पर्यर्थम् ।

Colophon : इति श्री नागचन्द्रकवि विरचिताया श्री श्रेष्ठी धनजय प्रणीत जिनेन्द्रस्तोत्रपजिकायां विषापहारनामातिशय दिव्य मत्र समाप्तः ।

७९१. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति श्री धनजय कृत विषापहार स्तोत्र सपूर्णम् ।

७६२ विषापहार स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ७८५ ।

Closing स्तोत्र जु विषापहार, भूलचूक कछु वाक्य ही ।
ज्ञाता लेहु सँवार अखैराज अरजैन हम ।।

Colophon इति श्री विषापहार स्तोत्रमूल कर्ता श्री धनञ्जय तस्य उपरि भाषा वचनिका करी शाह अखैराज श्रीमालनै अपनी बुद्धिअनुसारे ।

७६३. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखे, क्र० ७८५ ।

Colophon इति विषापहार स्तवन समाप्त । सवत १६७२ वर्षे जेष्ट (ज्येष्ठ) वदी ७ शुभदिने भट्टारक श्री हेमचद तत्पट्टे भ० श्री पदमनद तत्पट्टे भट्टारक जसकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री गुणचद्र तत्पट्टे-भट्टारक श्री सकलचद्र तत्शिष्य पडित मानसिघ (ह) लिखापित आत्मपठनार्थम् । लिखित कायस्थ माथुरमेवरिया दयालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन शुभ भवतु लेखक पाठकयो ।

७६४ विषापहार स्तोत्र मूल

Opening देखे, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७६५. विनती सग्रह

Opening . मत्र जप्यो भवसागर तिरिया, पाई मुकति पियारी ।
ज्याका० ।।

Closing : देवा ब्रह्ममुकुत्या पद पावै, तो दरसण ग्यान घटावै होनै रै ।
वाणी बोलै केवल ग्यानी ।।८।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

७९६. विनती

Oponing : बदौं श्री जिनराय मनवचकाय करो जी ।
तुम माता तुम तात तुमही परमधनी जी ।

Closing कनककीर्ति रचिभाव श्रीजिण भक्ति रची जी ।
पढै सुनै नरनारि स्वर्गसुख लहै जी ।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।
सवत् १८५२ वर्षे पौषकृष्णा चतुर्दशीमनिवार ।

७९७. वीतराग स्तोत्र

Opening : त्वादेव सन्मुमी ······ नादयन्त्यूर्ध्वलोके ।।१।।

Closing : सो जयउ मयमरात्रो विप्पवयोगोसणामेणा ।।

विशेष—एक मत्र यत्र भी बनाया गया है ।

देखो—Catg of Skt & pkt. Ms., P. 693

७९८. वृहत् सहस्रनाम

Opening : प्रभोभवागभोगेषु निर्विन्नोदु खभीरुक ।
एष विज्ञापयामि त्वां शरण करुणार्णवम् ।।

Closing : एफविद्योमहाविद्योमहा ।

७९९. यमकाष्टक स्तोत्र

Opening : विद्यास्पदार्हन्स्य पद पद पदम्,
प्रत्यप्रसत्यस्नपर पर परम् ।
हेयेतराकारबुध बुध बुधम् ,
करस्तुवे विश्वहित हित हितम् ।।१।।

Closin : भट्टारकै कृत स्तोत्र य. पठेद्यमकाष्टकम् ।
सर्वदा स भवद्भव्यो भारतीमुखदर्पण ।।१०।।

Colophon : इति भट्टारक श्री अमरकीर्ति कृत यमकाष्टकस्तोत्र समाप्तम् ।

८००. योगभक्ति

Opening : थोस्सामि गणधराण अणयाराण गुणेहि तच्चेहि ।
अजलि मउलिय हत्थो अभिवदतो सविभवेण ।।१।।

Closing : जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।

Colophon : इति योगभक्ति सम्पूर्ण ।

८०१. अभिषेक पाठ

Opening : श्री मन्मन्दिरसुन्दरे ·· ··· जैनाभिषेकोत्सवे ।।

Closing : पुष्प जयकर भगवान के ऊपर चढावने गधोदक कीये पश्चात् ।

Colophon : इति शान्तिधारा समाप्त ।
भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे तिथौ ४ रविवासरे सवत् १९६५ ।

८०२. अभिषक समय का पद

Opening : प्रभुवर इन्द्रकलश कर लायो,
शैलराज पर सजिसमाज सब जनम समय नहवायो ।।

Closing : प्रभु केवय प्रमान　　　जनकल्याणक गायो ।।

Colophon : इति पद पूर्णम् ।

८०३. आकृत्रिभचेत्यालय पूजा

Opening : ॐ ह्री असुरकुभाराच्चितपकमार्गेषु दक्षिणदिगचतु
त्रिसतलक्षाकृत्रिम जिनालय जिनेभ्या ।।१।।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophong : नहीं है ।

८०४. अनन्तव्रत विधि

Opening : एकादशी के दिन पूरतन करें भगवान की तब व्रत स्थापन है। एक करें तथा आचाम्ल पाणी भात करें तथा द्वादशी को भी वैसे ही करें ·· — ।

Closing : अनन्त व्रत के मादक करन के कारने वार्थ अनत बनायसो
नीके धारने स्वर्णरजत पटसूत्र भईव नवाई जी
पुजिभक्ति बहुत ठानि पुण्य उपजाय जी ।

Colophon : चतुर्दश पदार्थ चितवन की ब्यौरा जीव समास १४ अजीव १४
गुणस्थान १४ मार्गणा १४ । भूत । १५ ।
इति अनन्तव्रत विधि सम्पूर्णम् ।

८०५. अनन्तव्रतोद्यापन पूजा

Opening श्री सर्वज्ञं नमस्कृत्य सिद्धं साधू स्त्रिधा पुन ।
अनतव्रतमुख्यस्य पूजा कुर्वे यथाक्रमम् ।।१।।

Closing : तार्थ्यश्योगुणचन्द्रसूरिरभवच्चारित्रचेतो हर,
स्तेनेद वरपूजन जिनवरानतस्य युक्त्यारचि ।
येत्रक्षथानविकारिणो यतिबरास्तै सोध्यमेतदबुधम्,
गद्यादारविचन्द्रमक्षयतर मघस्य मागल्यकृत् ।।५।।

Colophon इत्याचार्य श्री गुणचन्द्रविरचिता श्री अनतनाथ पूजन् व्रत-पूजा उद्यापन सहिता समाप्ता ।।
सी० ब्रा० वगाष्टकसपु – ? ।।
दखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० २०५ ।
(५) जै० ग्र० प्र० सं० I, पृ० ३४ ।

८०६. अंकुर रोपणविधि एवं वास्तुपूजा

Opening : अथ जवारा विधिलिख्यते । जवारा किइदिन दातारघरि देव गुरु शास्त्र पूजा · · · ।

Closing : कीट प्रवेशादपि वास्तुदेव:,
चैत्यालय रक्षतु सर्वकालम् ।।

Colophon : इति वास्तु पूजा विधि ।

८०७. अर्हद्देवबृहद शान्तिविधान

Opening : जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु ... — ।
.... — — लोर सठपसाहूण ।

Closing : एतद्देशीया महाभिषेक नकुर्वन्ति तस्मान्मया न लिखितम् ।

Colophon : इत्यर्हद्देवबृहद्शान्ति विधि समाप्त ।

८०८. अर्हदेव शांतिकाभिषेकविधि

Opening : देखें क्र० ७५१ ।

Closing : अनेन विधिना यथा विभवमर्हत स्नापन विधाय महमन्वह सृजति य शिवाशाधर स चक्रिहरिन्तीर्थकृताभिषक सूरं समर्चितपद सदासुखसुधा बुधो मज्जति । इति पूजाफलम् ।

Colophon : एव समुदायाक ३६० इत्यर्हदेव शांतिकाभिषेक विधि समाप्ता ।

विशेष—यह ग्रन्थ करीब १८०० वि० स० का है ।

८०९. अष्ट प्रकारीपूजा विधान

Opening : जलधारा चदन पुहप अक्षत अरु नैवेद ।
दीपधूप फल अघजुत, जिन पूजा वसुभेद ॥

Closing : यह जिनपूजा अष्टविधि, कीजै कर शुचि अग ।
प्रति पूजा जलधारसू, दीजै अरघ अभग ॥

Colophon : इत्यष्टप्रकारी पूजा विधानम् ।

८१०. अतीतचतुर्विंशति पूजा

Opening : १-श्री निर्वाण जी, २-सागर जी, ३-महासाधुजी, ४-विमल प्रभ जी ... — ।

Closing मात्र जन्माभिषेक समये गर्भावतारे भवे,

मागल्य य तपश्चरेवण चरता ज्ञान च निर्वाणकं, ।
मागल्य य सदा भवति भवता श्री नाभिराजो गृहे,
मागल्य यत्सदा भवतु भवता श्री आदिनार्थः ॥

Colophon : इति जन्मपूजा सपूर्णम् । स० १९६६ का ।

८११. बारसीचौबीसी पूजा वा उद्यापन

Opening : बारसि चुत्रीसातुवेरू । चतुर्दश जीवसमासा ।

Closing : कीर्तिस्फूर्ति --- --- सेवाफलात् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचित बारसि चुत्रीसानू उद्यापन मत्रपाठ सम्पूर्णम् । श्री सूरतिबिंदिरे लिखापितम् ।
--- --- लालचन्द गुणवत सघरैमनकर बाचियै भल भावै भगवत । स० १९४९ ।

८१२. भावना बत्तीसी

Opening : अतुलसुखनिधानं सर्वकल्याणबीज,
जननजलधिपोत भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठार पुण्यतीर्थप्रधान,
पिबतु जितविपक्ष दर्शनाक्ष सुधांबु ॥१॥

Closing : इति द्वात्रिंशतावृतैः परमात्मातमीक्षये ।
योनन्यगतचेतस्कैयात्यसो परमव्ययम् ॥३३॥

Colopon : इति भावना बतीसी समाप्तम् ।

८१३. बीस भगवान पूजा

Opening : श्रीमज्जंबूधातकी --- --- नित्य यजामि ॥

Closing : तुमको पूजा बन्दना करै धन्य नर जोय ।
सरधा हिरदै जोधरै सो भी धरमी होय ॥

Colopon : इति श्री बीसविहरमानपूजा जी समाप्तम् ।

८१४. वृहत्सिद्धचक्र पाट

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीश लब्धिसामस्त्यसयुतम् ।
श्री सिद्धचक्रयत्रस्यार्च्यासिहस्त्रगुण स्तुवे ।।

Closing : श्री । काष्ठासंघे ललितादिकीर्तिना भट्टारकेणैव विनिर्मिता वरा
नामावलीपद्यनिवद्धरूपिका भूयात्सतां मुक्तिपदाप्तिकारणम ।।

Colopon: इति श्री वृहत्सिद्धचक्रपाठ समाप्तम् । सवत् १६६१ चद्रनाङ्क
चद्रेब्दे माघवे सितगेमुनौ स्वनिमित्त लिखेत्सीतारामनामकरेणश ।

८१५. वृहत्सिद्धचक्रविधान

Opening : उर्ध्वाधोरयुत सविंदुसपर ब्रह्मस्वरावैष्ठितम्
वर्गा पूरितदिग्गताबुजदस मृतत्वधितत्त्वान्वितम् ।
अन्त पत्र तटेष्वनाहतयुल हीकार सर्वैष्टितम्
देव ध्यायति य स्वमुक्तिशुभगो वैरिभकठण्ठे ख ।।

Closing : निरवशेषनिरसनाय दिव्यमहार्घ्यम् निर्वपामि
स्वाहा पूर्णार्घ्यम् । एव शांतिधारादि । पुष्पाञ्जलि. ।।

Colophon : इति सर्वदोषर्यारिरहार पूजा ।।

८१६. वृहत्शान्ति पाठ

Opening : भो भो भव्या श्रुणुत वचन प्रस्तुत सर्वमेतत् ।
ये यात्राया त्रिभुवनगुरोराहंतां भक्तिभाज ।।

Closing : अह तित्थयरमाया देशिवावी तुह्म नयरशिवासिनी बह्म
शिव तुह्मशिव अशिवोपशाम शिवभवतु स्वाहा ।

Colophon : इति वृहद् शाति समाप्तम् । सकल पडित शिरोमणि पंडित
श्री दानकुशलमणि गणिराज कुशल शिष्य गुमानकुशल लिखितम् ।

८१७. चन्द्रशतक

Opening : अनुभव अभ्यास में निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभव सरूप शुद्धबोध को प्रकाश है ।

अनुभव अनूप ऊपरकृत अनत (ज्ञान) ग्यान,
अनुभव अतीत त्याग ग्यान सुखरासि है ।

Closing : सपत सेव गुनथान धै कूटे एक गत देवकी ।
यौं कही अरथ गुरु ग्रन्थ मैं सति वचन जिनसेवकी ।।

Colophon : इति श्री चन्द्रशतक सम्पूर्णम् । मितीमाघशुक्ल द्वितीया सोमवासरे सम्वत् १८६० साल मध्ये । लिखापित श्री धर्ममूरति बाबू अच्छेलाल जी जातिअग्रवाल बसैया आराके । लिपिकृत नंदलाल पाडे छपरा के दौलतगंज मध्ये । श्रीजिन भजत्।

८१८. चैत्यालय प्रतिष्ठाविधि

Opening : शुकनासस्य पर्यन्त वेदिकास्तरतरे ।
गर्भे प्रनरक कृत्वा वेदिकां तत्र विन्यसेत् ।।

Closing : शांतिकपौष्टिकं इति षटकर्मविधि — ।
मुक्तिकांतापिवश्या ।।

Colophon : इति यन्त्रार्चन विधि समाप्ता: ।

८१९. चतुर्विंशति पूजा

Opening : ऋषभ अजित .... — पुष्प चढ़ाय ।।

Closing : भुक्ति मुक्ति दातार ... ... सिव लहै ।।

Colophon : इति श्री समुच्चय चौबीसी पूजा संपूर्णम् ।

इह पूजन जी की पोथी चढ़ाया व्रत के उद्यापन में बाबू परमेसरी सहाय की भार्या बनसीकुंवर ने । बोम गांविल । मिती फागुन बदी २२ । सन् २२८३ साल ।

विशेष—इसकी १४ प्रतियां है ।

८२०. चतुर्विंशतितीर्थंकर पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीशो लब्धिसामस्तिसयुतम् ।
चतुर्विंशति तीर्थेश वक्ष्ये पूजा क्रमागताम् ।।

Closing : — पश्चात् चतुर्विंशति जिनमातृकास्थापनम् ।

Colophon : मिति भाद्रवा कृष्णपक्षे तिथौ च आज १३ तेरस शनिचरवासरे संवत् १२६२ का । शाके १७५७ का प्रवर्तमाने लिप्यकृत मथेन राधा की सनवासरूपनग्रममध्ये पोथी लिखी । श्रीरस्तु मंगल क्रियात् । श्री गुरुभ्यो नम ।। पोथी चोइस महाराज की पूजा संपूर्ण समाप्ता ।

देखे—Catg. of Skt. & Pkt Ms, P 640

८२१. चतुर्विंशति जिन पूजा

Opening : देखे, क्र० ८१९ ।

Closing : देखे, क्र० ८१९ ।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतिजिनपूजा सम्पूर्णम् ।

८२२. चौबीसी पूजा

Opening : अलख लखत सब जगत् के, रखवारे ऋषिनाथ ।
नाभिनंद पदपद्म छवि, तिनहिं नवाऊँ माथ ।।

Closing — भव रुज मैं ठग वैद्यराज शिवतिय के भर्ता,
तिनचरण त्रिकाल त्रिशुद्ध है, नमिनमिनित आनंद धरत ।
जिन वर्तमान पूजन शुभगमनरंग संपूरन करत ।।

Colophon · संवत् विक्रम द्विक सहस, तामे अडतीस ऊन ।
पांचि कृष्ण वैशाख की, चद्रवार रिषम्लून ।।१।।
नगर सहारनपुर विर्षे, सीताराम लिखंत ।
भविजन वाची भावसौं, पाठक पाठ पढंत ।।२।।
संवत् १९६२ शक १८२७ वैशाख कृष्णा ५ सोमदिने शुभम् ।

८२३. चौबीसी पूजा

Opening : वंदौं पाचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदित जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकास ।।

Closing : कासीजीनो कासीनाथ नऊबी अनतराम मूलचंद आठम
सुराम आदि जानियो ।
सजन अनेक तिहां धर्मचंद जी को नंद वृंदावन अग्रवाल
गोलगोती बानियो ।।
तामें रच्यो पाय मनालाल को सहाय बालबुद्धि अनुसार-
सुनौ सरधानियो ।
तामें भूलचूक होय ताहि सोधि सुद्धकीज्यौ मोहि
अल्पबुद्धि जानि क्षमा उर आनियौ ।।

Colophon : नही है ।

८२४ चौबीस तीर्थङ्करपूजा

Opening : देखे क्र० ८२३ ।

Closing : जय त्रिसलानदन हरि कृत वदन जगदानंदन चंद वरं ।
भवताप निकन्दन तनकन मदन रहित सवदन नयन धरं ।।

Colophon : नही हैं ।

८२५ चौबीसी पूजा

Opening : देखें, क्र० ८२३ ।

Closing : चौबीसों जिनराज को अजो अंकसुनाय ।
इच्छा पूरन कर प्रभू, हे त्रिभुवन के राय ।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी पाठ सम्पूर्णम् । कार्तिक कृष्ण ६
स० १६६५ बार शनि ।

८२६ चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : इन्द्र: चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यशांवसज्जिनान् ।
यागमंडलपूजार्थं कर्माचरेदिद ।।१।।

Closing : धूपश्रीखण्डदेवदारोष गुग्गुल रगरंसिला ।
कृतरालश्च भावाज्य स्थूलघपसंग्रहादिकम् ।।

Colophon : इति चिंतामणिपार्श्वनाथ पूजा समाप्ता ।
देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 641

८२७ चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : जगद्गुरूजगद्देव जगदानन्ददायकम् ।
जगद्व द्य जगन्नाथ श्रीपार्श्वं सस्तुवे जिनम् ।

Closing ; जित्वा दाराति भवातरश्रेष्ठ
... कर्मपिर्वत ॥

Colophon : —

८२८. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : शान्त — ... ।
... श्रायते पुजयेद्यः १ ॥

Closing : आपद विविधहारी सपदा सौख्यकारी,
त्रिभुवन पदधारा सिद्धलोकाग्रसूरी ।
जल बहुविध पूरै गधमाल्यादि साहै,
जिनवर मुख विम्ब पूजित भावभक्त्या ॥

Colophon : इति पूर्णं ।

८२९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : देखे, क्र० ८२७ ।

Closing : दीर्घायु शुभगोत्रपुत्रवनिता — .... ॥
... मागल्यमोक्षोद्यता. ॥

Colophon : इति श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवृहत्पूजा समाप्ता ।

८३०. दसलाक्षण उद्यापन

Opening : विमल गुणसमृद्धं शान्त विज्ञान शुद्धम्,
अभयवन प्रचंड चिन्मयूख प्रचडम् ।
व्रत दसविधसार सजते श्री विपार,

प्रथम जिन विदक्ष श्रीधृताद्य जिनेशम् ॥

Closing : दशधर्म प्रजा पूजा सुमतिसागरोदितम् ।
स्वर्गमोक्षप्रदा लोके, विश्वजीवहितप्रदाम् ॥

Colophon : इति दसलाक्षणोद्यापन समाप्तम् ।
देखें—(१) दि जि ग्र र, पृ. १२६ ।
(२) जि. र को, पृ १६८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६०।
(४) रा० सू० III, पृ० ५४
(५) रा० सू० IV, पृ० ७६५ ।
(६) भ० स०, पृ० १६३, २०० ।
(७) जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ८७ ।

८३१/१ दशलक्षण उद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।
Closing : देखे, क्र० ८३० ।
Colophon : इति श्रीदशलक्षणोद्यापनपाठ सम्पूर्णम् ।

८३१।२ दशलाक्षणीक व्रतोद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।
Closing : उपवासपरोजातो ·· विश्वजीवहितप्रदम् ।
Colophon : इति श्री दसलाक्षणी उद्यापन जी सपूर्ण जेष्ठ कृष्ण ११ एकादश्या भोमवार, १ बजे दोपहर को संवत् १९५५ आरामपुर निजग्रह में बाबू हरीदास पूज्यदादा वृन्दावन जी के पोते वो पुज बाबू अजितदास के पुत्र ने लिखा ।

८३२ दसलक्षण पूजा

Opening : उत्तम छिमा मारदव आर्जव भाव हैं,
सत्य शौच संजम तप त्याग उपाव हैं ।

आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्मदस सार हैं,
चहुगति दुःख तैं काढि मुकति करतार हैं ।।

Closing : करैं कर्म की निर्जरा, भवपीजरा विनाश ।
अजर अमर पद कूँ लहै, द्यानत सुख की राश ।।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा सपूर्णम् ।

८३३. दसलाक्षण पूजा

Opening : उत्तमादि क्षमाद्यं ते ब्रह्मचर्य सुलक्षणम् ।
स्थापयद्दशधा धर्ममुत्तम जिनभाषितम् ।।

Closing : कोहानल चक्कउ होइ गुरुक्कउ, जादरिसिद मिद्धइ ।
जगताइ सुहकरू धम्ममहातरू देइ फलाइ सुमिहुइ ।।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा आरती सपूर्णम् ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५ ।

८३४. दसलाक्षण पूजा

Opening : देखें—क्र० ८३३ ।

Closing : देखें—क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा सम्पूर्णम् ।
श्री सवत् १६५१ मिती वैशाखकृष्ण परिवा को सितल-प्रसादके पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

८३५. दशलाक्षण पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३३ ।

Closing : देखें, क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

८३६. दर्शन सामायिक पाठ संग्रह

Opening : चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो नमः श्रीसरस्वतिभ्यो नमः ।।

विशेष—अनेक पाठो का सग्रह किया गया है ।

८३७. देवपूजा

Opening : सुरपति — … पूजा रचो ॥

Closing : कीजै सकल समान बिन मकते मरघा घने ।
शाश्वत मरघावान अजर-अमर सुख भोगवे ॥

Colophon इति ।

८३८. देवपूजा

Opening : ॐ अपवित्रपवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा ।
ध्यायेत पंचनमस्कार सर्वपापैं प्रमुच्यते ॥

Closing : श्रीसद्मानविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयतो नरा,
पुन्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूतातपो भूषणा,-
ते भव्या सकला विबोधरुचिर सिद्धि लभते पराम्॥ ।

Colophon : इतिदेवपूजा समाप्तम् ।

विशेष - नेमिनाथ का बारहमासा भी इसके बाद मे दिया हुआ है ।

८३९. देवपूजा

Opening . जय जय जय णमोत्थु … — ।
… सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : दुर्गेवशमपुञ्जतो गरिष्टनेमिर्जिनेश्वर ।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वनागेन्द्रपूजित ॥४॥

Colophon : — अनुपलब्ध

८४०. देवपूजन

Opening : देखें —क्र० ८३९ ।

Closing . दुःख का छय होहु । कर्म का छय होहु ।
भली गति विषें गमन होहु । … ।

Colophon इति शांतिधारा सम्पूर्णम् ।

८४१. देवशास्त्रगुरु पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३६।

Closing : जे तपसूरा संयमधीरा सिद्धिवधूअणुराइया।
रयनत्तयरजिय कम्महणजिय ते रिसिवर मम झाइया ।।

Colophon : इति देवशास्त्रगुरुपूजा जी समाप्तम्।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६।

८४२. देवपूजा

Opening : ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्नान स्थान भू शुद्धयतु स्वाहा।

Closing : तुष्टिं पुष्टिमनाकुलत्वममिल सौख्यश्रिय संपदो।
दद्यात्पुत्रकलित्रमित्रसहितेभ्य श्रावकेभ्य सदा ।।

Colophon : इति स्नवण विधि सपूर्णम्।
देखें (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६७।

८४३. धर्मचक्रपाठ

Opening : आपदागम परारथों के, स्वामी सर्वज्ञ आप ही।
सुरिंद वृंद सेवैं है, आपहीं को इसलोक मे ।।१।।

Closing : वर्षत्वानंद मोघा प्रशरतु सततं भद्रमाला विशाला,
... ... भोजयुग्मप्रसुते ।।

Colophon : इत्याचार्यवर्य्यं धर्म्मभूषणपदांभोजदिवाकरायमानैं श्री यशोनंदीसुरिभि· प्रणीत धर्म्मचक्रपाठ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा बुद्धवार संवत् १६६२ आरामपुर में हरिदास ने लिखकर पूर्ण किया।

८४४. धर्मचक्रपाठ

Opening : ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शना नम. स्वाहा, ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम.।

Closing : ॐ ह्रीं मिश्रमिथ्यात प्रकृत श्री सिद्धदेवेभ्यो नम. स्वाहा।

Colophon : अनुपलब्ध

८४५. धर्मचक्र पूजा

Opening : ह्रींकारेणदृतोर्हंन् त्रिदलरसदलं तद्वहि:,
बीजयुग्म तद्वर्ग्यवासराले लकमशशिमिव लेखयेत्परमेष्ठीन् ।।

पूर्वंरत्नत्रयांकं त्रिगुणवरयुतां धर्म्मंपचद्विकेन
तद्वत्यिघाष्टक यद्वधिकगुणयुत पूजयेद्भक्तिनम्रः ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं श्री वीरनाथाय नमः ।।२४।।

Colophon : इति धर्मचक्रपूजा विधि. समाप्ता । शुभ भवतु ।

८४६. गणधरवलय पूजा

Opening : जिनान् जितारातिगणान् गरिष्टान,
देशावधीन् सर्वपरावधींश्च ।
सत्कोष्ठबीजादिपदानुसारीन्,
स्तुवेबनेसानपि तद्गुणाप्त्यै ।।१।।

Closing : घरिगणिंदसमर तह् फिट्टइवाहि असेसलऊ ।
वऊ पावय णासई होइ सयि महामुण सविसदजणण ।।

Clophon : इति ।

८४७. गणधरवलय पूजा

Opening : प्रणम्य शिरसाहृत पवित्रिस्तीर्थवारिभिः ।
गणीन्द्रवलयस्याग्रे पूर्णकुंभ न्यासाम्यहम् ।।

Closing : ··· संपूजकानां इत्यादि शांतिधारा ।

Colophon : इति श्री गणधरवलय पूजा समाप्त.

८४८. ग्रहशान्तिपूजा

Opening : जन्मलग्न बोचर सनै, रवि सुत पीडा देई ।
तब मुनिसुव्रत पूजबे, पातक नास करेइ ।।

Closing : सगुन अधिकारी दुःख हरकारी रोगविघन हरनम् ।
भृगु सुत दव आई पाप मिटा (ई) पुष्पदंत पूजत चरनम् ।।

Colophon : इति शुक्रारिष्ट निवारक पुष्पदंत पूजा सम्पूर्णम् ।

८४९. ह्रीमविधान

Opening : श्री शांतिनाथ ममराकुर मर्त्यनाथः,
शाश्वति रोडमकि बीधित पादपद्मम् ।

त्रैलोक्य शांतिकरग प्रणव प्रणम्य:
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुक्षपामी ॥

Closing :

तिनने लिखदिनो होम को विधान जान,
पडित सु लक्ष्मीचाद नाम जु बखान है।
भूल चूक होय जो भाई तुव सुधारि लिज्यो,
हमपर छिमाभाव मेरी यह आन है ॥

Colophon :

इति सम्वत् १९३० मिती चैत्रवदी १० राति आधो गई रोज सोमवार।

८५० होमविधान

Opening :

शांतिनाथ जिनाधीश वदित त्रिदशेश्वरे।
नत्वा शांतिकमावक्ष्ये सर्वविघ्नोपशानय ॥१॥

Closing :

ॐ ह्रीं क्रो प्रशस्ततर सर्वदेवा ममाभिलपित
सिद्धि कृत्वा निज-निज स्थान गच्छतु ॐ स्वाहा।

Colophon :

इत्याशाधर विरचित शांत्यर्थ होम विधान सम्पूर्णम्।

८५१ इन्द्रध्वजपूजा

Opening :

सकलकेवलज्ञानप्रकाशक, सकलकर्मविपाटन सद्रुवम्।
सकलचिन्मय ज्योतिनिवासक, सकलधर्मध्वजाकित सद्वयम्।

Closing :

पद्मपुरुषपद्मसमानमति, पद्मालयासजमुक्तिभागी।
तन्मगल भव्यजनाय कुर्यात् सुरेजचिन्ताकितविश्व-
दृष्टि ॥

Colophon :

इति रुचिकगिरिउत्तरदिक्, चैत्यालयपूजा समाप्ता। इति श्रीविशालकीतित्यात्मज विश्वभूषणभट्टारक विरचिताया इन्द्रध्वजपूजा समाप्ता। मिति माघ कृष्णपक्षे ६ म्या शुक्रवासरे सवत् १६१०।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १७३।
(२) जि० र०, को०, पृ० ४०।
(३) रा० सू० II, पृ० ५७, ३०६।
(४) रा० सू० III, पृ० ५०, १६८।
(५) आ० सू०, पृ० १७१।

८५२. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : देखे, क्र० ८५१।

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : देखें, क्र० ८५१ ।

श्रीमवत् १६५१ मी० वैशाख कृष्ण परिवा को सितलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढाया पचायती मदिर जी मे १६५३ ।

८५३ इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलमेत्र कथामृततर्प्यक, सकलचारुचरित्रप्रभासतम् ।
सकलमोहमहातमघातक सकलकलासप्रवासकम् ॥

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मिज विश्वभूषणभट्टारक विरचिताया इन्द्रध्वज पूजा समाप्ता । सम्वत् १८७० ज्येष्ठ शुक्ल एकादस्या बुधवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ शर्म्मने लेखि पट्टनपुर मध्ये । शुभमस्तु । पुस्तक सख्या ३६०० । लाला शकर लाल रतन चद के माथे के ।

८५४. जन्मकल्याणक अभिषेक जयमाला

Opening : श्रीमत श्री जिनराज पूजा च मेरौ कृतम् ॥

Closing : जिनवर वरमाता ... लभते विमुक्ति ॥

Colophon : इति श्री जन्मकल्याणक अभिषेक की जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५५. जापविधि

Opening : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

Closing : दर्शन दे चाहे तो एक लाक्ष जाप करै दिन तीनि उपवास के पारने वरमोवाह लाल वस्त्र लाल माला कनैर के फूल करणा तेज प्रताप अपि करै । ....

Colophon : इति जाप विधि सम्पूर्णम् ।

८५६. जिनपचकल्याणक जयमाला

Opening : जिनेन्द्रपदाब्जयुग प्रणम्य स्वर्गापवर्गार्थकर करार्घा ।
सुरासुरेंद्रादिभिरच्चनीय तस्यैवभक्त्यास्तवम करिष्ये ॥

Closing : विद्याभूषणसूरिपादयुगल नत्वाकृतं सार्थक,
स्तोत्र श्री सुखदायक मुनिनुतं· सगर्भित सु दरम् ।
पञ्चारुचरित्रपञ्चकयुत श्री भूषणं भूषणं,
तीर्थेशैर्गुणगु फित कृतकर प्रण्य सदाशकरम ।।

Colophon : इति जिन पंचकल्याणक जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५७. जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय (विद्यानुवादांग)

Opening : लक्ष्मी दिशतु वो यस्य ज्ञानादर्शे जगत्रयम् ।
व्यदीपि स जिन श्रीमान्नाभेयो नौरिवाम्बुधौ ।।१।।
माङ्गल्यमुत्तम जीयाच्छरण्य यद्रजोहरम् ।
निरहस्यमरिघ्न तत्पञ्चब्रह्मात्मक मह ।।२।।

Closing : तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्र द्विगुण भवेत् ।
लग्नन्तु त्रिगुण तेषां शुभाशुभफल भवेत् ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

८५८. जिनयज्ञफलोदय

Opening : सर्वज्ञं सर्वविद्यानां विधातार जिनाधिपम् ।
हिरण्यगर्भं नाभेय वन्देऽह विदुधार्चितम् ।।१।।
अन्यानपि जिनान्नत्वा तथागणधरादिकान् ।
कथ्यते मुक्तिसम्प्राप्त्यै जिनयज्ञफलोदय: ।।२।।

Closing : द्विसहस्रमिदं प्रोक्त शास्त्रं ग्रन्थप्रमाणत: ।
पञ्चाशदुत्तरैं सप्तशतश्लोकैश्च समतम् ।।४२७।।
पञ्चाशत्तिशतीयुक्तसहस्रशकवत्सरे ।
प्लवगे श्रुतपञ्चम्यांज्येष्ठेमासि प्रतिष्ठितम् ।।४२८।।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमत्कल्याणकीर्तिमुनीन्द्रविरचिते जिनयज्ञफलोदये विप्रभट्टहेमप्रभादिकृत जिनयज्ञाष्टविधानाख्यवर्णन नाम नवमो लम्ब समाप्त: । अस्मिन् ग्रथे स्थितानि श्लोकानि ।।२७५०।। करकृतमपराध क्षतुमर्हन्ति सत इति प्रार्थयामि ।

अथ जिनयज्ञफलोदयो नाम ग्रंथ· वेणुपुर (जैन मूडबिद्री) निवासिना नेमिराजाख्येन लिखित· । रक्ताक्षिसंवत्सरे फाल्गुनशुद्धाष्टम्या समाप्तश्याभूत् ।

८५९. जिनप्रतिमा स्थापन प्रबन्ध

Opening : श्रीजिन वदउ चोवीस, सविगणधर नइ नामु सीस ।
श्री सदगुरुना चरण नमेवि, मनि समरु शारद देवि ॥

Closing : सवत् सोलसतोसरइ कार्तिक शुदि तेरसि बारइ गुरइ ।
भणता गुणतां अणंद करइ, नदउजा जिन धर्म विस्तरइ ॥६१॥

Colophon : इति श्रीब्रह्मविरचिते जिनप्रतिमास्थापनप्रबधे सम्पूर्णम् ।

८६०. जिनपुरदरवृतोद्यापन

Opening : श्री मदादिजिन नौमि पचकल्याणनायक ।
इद्रादिभिर्देवगणै पूजित अष्टधाश्च तै ॥

Closing : धर्मवृद्धि जयमगलमानराज ऋद्धिप्रददाति समाज जपाचताप दु:खरोगविनाश कुर्वते जिनपुरदरवास: । इत्याशीर्वाद, ।

Colophon : इति श्रीजिनपुरदरपूजा उद्यापन समाप्तम् । मिति मार्गशिर (शीर्ष) बदी ४ भोमवासरे सम्वत् १९३२ लिखत रामगोपाल ब्राह्मण ।

८६१. कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा

Opening : हूँकार ब्रह्मरुद्र — — ।
... — विद्याविनाशे प्रयुक्तम् ॥१॥

Closing : तरलतरे — ।
राजहंसोबाताह ॥

olophon : इति कलिकुंड स्वामी पूजन सम्पूर्णम् ।

८६२. कलिकुंडल पूजा

Opening : ॐकार ब्रह्मरूद्रं स्वरपरिकलित वज्ररेखाष्टभिन्न,
वज्रस्याग्रांतराले प्रणवमनुपमामाहृत सद्भूषि च ।
वर्णाशाद्यानसर्पिकान् — —
— दुष्टविद्याविनाशी ॥१॥

Closing : इति परमजिनेन्द्र विनुतमर्हितं यह कलिकुण्डमरचक खण्डय ।
पूजयति सजयति स्तुतिकृतिभयति प्रतिसिव मुक्तमुदय ।।

Colophon : इति कलिकुण्डल पूजा समाप्तम् ।

८६३. कलिण्डाराधना विधान

Opening : सत्पुष्पधाम्ना प्रविराजितेन पुष्पेण पूर्णेन सुपल्लवेन ।
सम्मगलार्थं कलिकुण्डदेवम् उपाग्रभूमौ समलकरोमि ।।

शुद्धेन शुद्धहृदकूपवापीगगातटाकादिनामावृतेन ।
शीतेन तोयेन सुगधिनाह भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ।

Closing : कलिमलदहनदक्ष योगियोगोपलक्षम्
ह्याविकुलकलिकुण्डो दण्डपार्श्वप्रचण्डम्
शिवसुखमभवद्धा वासवल्ली वसन्तम्
प्रतिदिनमहमीडे वर्द्धमानस्य सिद्धयै ।।

विशेष— प्रशस्ति सग्रह (श्री जैनसिद्धान्तभवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६६ मे सपादकभूजवली शास्त्री ने ग्रन्थ के बारे लिखा है—इस कलिकुण्डाराधना' के आदि मे कलिकुण्डयन्त एव श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अभिषेक, भूमिशुद्धि, पञ्चगुरुपूजा और वास्तु अर्घ्य निर्दिष्ट हैं। बाद पार्श्वनाथ पजा एव इन्हीं की मन्त्रस्तुति धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षी की पूजा तथा इनके मन्त्र स्तोत्र दिये गये हैं। इसके उपरान्त मत्र लिखने की विधि और फल इत्यादि का निर्देश करते हुए प्रस्तुत मन्त्र की पूजा बतलाई गयी है। अन्तमें यन्त्रीय मंत्र की स्तुति, मत्रस्थ पिण्डाक्षराका अर्घ्य, अष्टमातृका की पूजा, मन्त्रपुष्प और जपमाला लिखी गयी है। इसके कर्ता भी अभी तक अज्ञात ही है।

८६४. कर्मदहन पाठ भाषा

Opening : लोक शिखर तन छांडि अमूरति ह्वै रहे ।
चेतन ज्ञान सुभाव गेहतै भिन्न भये ।।
लोकालोक सुकाल तीन सब विधिधर्मी ।
जानै सो सिद्धदेव जजो बहु थुति ठनी ।।

Closing : भयकर्म ताकों होय उदै सुनि भाई रे ।
तब जिय उरकपाय चेत मन भा ··· ।।

Colophon : नहीं है ।

८६५. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८६४ ।

Closing : नमो सिद्ध सिद्ध कारनें, भक्ति महा मनलाय ।
पूजौं सो शिवसुख लहैं, और कहा अधिकाय ।।

Colophon : इति श्री कर्मदहन पूजा पाठ समाप्तम् । श्री सम्वत् १६५१ मिती बैशाख कृष्ण परिवा (प्रतिपदा) को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

८६६. कर्मदहन पूजा

Opening : सकलकर्मविमुक्ताय सिद्धाय परमेष्ठिने ।
नमोनेकांतरूपाय सिद्धायशिवसर्मणे ।।

Closing : आनंदाद्भुतगन्धप्रगमनगरी मा पद्मपद्माकरी ।
धर्या भां भवतां शिवमवतु श्रेयस्करी शंकरी ।।

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता ।।

देखें—(१) जि० सि० भ० २०, पृ० १७६, १७७ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ७१ ।
(३) आ० सू०, पृ० २२ ।
(४) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 631.

८६७. कर्मदहन पूजा

Opening : ॐ उर्ध्वा धोरयुतं ——।।

Closing : विशेष-अपूर्ण ।

८६८. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८९५ ।

Closing : देखें—क्र० ८६६ ।

Colophon : इति कर्मदहनपूजा सपूर्णम् ।
इद कर्मदहनपूजाव्रजपालदासतयात्मज जिनणरदासेन लिखपिता ।।
स्वय पठनाय ।।

८६९ कर्मदहन पूजा

Opening : देखें क्र० ९५ ।

Closing : देखें, क्र० ८६६ ।

Colophon : आशीर्वाद । इति कर्मदहनपूजा समाप्ता । ग्रथ सख्या ३३५ । शुभ भवतु ।

८७०. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८९५ ।

Closing : देखें—क्र० ८६८ ।

इति कर्म दहन पूजा सपूर्णम् ।

Colophon : शुभमस्तु ।

८७१. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें— क्र० ८९५ ।

Closing : या धर्मैकनिबन्धनं — — पूजेयमानन्दिदा ।।

Colophon : इति सूरि श्री [illegible] कृता श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता ।

८७२. क्षेत्रपाल पूजा

८७२

Opening : श्री काष्ठासघे [illegible] सर्वंश्वर्य प्रणिपत्य पूर्वम् ।
श्री क्षेत्रपालोत्तमपूजनस्य, विधिपूर्वक्ये विधि नागमतः ।।

Closing : पुत्राश्च मित्राणि कलत्रशत्रून्, सच्चन्द्रकीर्ति रमणी सल्पा. ।
श्री क्षेत्रपालौप्रतरप्रभावा दायातु ते सर्वं समी हितानि ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालपूजा समाप्तम् । शुभ संवत् १८३६ पौषशुक्ल चौथचंद्रवासरे लि० चैनसुखेन । शुभ भूयात् ।

विशेष—सबसे अन्त में एक स्तुति भी लिखी गई है ।

८७३ लघु सामायिक पाठ

Opening : पडिकमामि भंते इरियाए विराहणाए अण्णगुत्ते अइगमणे णिगमणे चक्कमणे पाणमणे ... ।

Closing : गुरवः पांतु वो नित्य, ज्ञानदर्शननायका ।
चारित्रार्णव गंभीरा. मोक्षमार्गोपदेशका: ॥

Colophon : इति सामायिक स्तवन समाप्तम् ।

८७४. महाभिषेक विधान

Opening : श्रीमद्भिर्जिनराजजन्मसमये स्नानक्रमप्रक्रिया,
मेरोर्मूर्ध्नि प्रय. पयोभिनिप्रय पूर्णं सुवर्णात्मकं. ।
कार्यं याममितश्रियाष्टशतै. शक्रादयस्त्वंक्रिरे,
त्वामत्कार्यजनानुरागजननी जातोत्सवप्रस्तुवे ॥

Closing : पायौभि पातयामस्तवनुतजगता शांतये शांतिधाराम् ।

Colophon : एवं चार्हं कर्मकपरिसमापित महाभिषक कल्याणमहामह विधान समाप्त: ।

८७५. महावीर जयमाल

Opening : अमृतसरसिहंमो सुकृतच्चातिहंसो,
मथितकुमतहंसी मुक्तिकामैणहंस ।
करणविषयहंसो भावदंस्प्रहसो,
जयतुजयीसुवीरो भव्यलेखासुखाय ॥१॥

Closing : अखिलनुसुरामती पंचकल्याणकर्ता,
त्रिदशाचरणधर्ता दु.खसंदोहहर्ता ।
भवजलनिधितर्ता सिद्धिकांताविवर्ती,
भवतु जगतिवीरो नेमीश मंगलाय ॥१०॥

Colophon : इति श्री महावीर जयमाल समाप्तम् ।

८७६. मंदिरप्रतिष्ठा विधान

Opening : श्री मद्वीरजिनेशानं प्रणिपत्य महोदयम् ।
अर्हभव्यविधानस्य शुद्धिं वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : तिर्यग्प्रचाराद्वशनिप्रयाता,
द्वीजप्ररोहा द्रु मखात्सयातात्
कीटप्रवेशावपि वास्तुदेवा.,
चैत्यालय रक्षतु सर्वकालम् ॥
अथाग्रे शांतिधारा कुर्यात् ।

Colophon : नहीं है ।

८७७. मृत्युंजयआराधना विधान

Opening : चंद्रपुरांबुधिचंद्र चंद्राकं चंद्रकांतसंकाशम् ।
चंद्रप्रभजिनमंचे कुं वेंदुस्वारकीर्तिकांताक्रांतम् ॥

Closing : अत्यंतभक्त्यानतदेवचंद्रसूर्याभिवंद्यात्रजिनेन्द्रभक्ता: ।
प्रह्वाणिकाया उररीकृताध्यां सर्वाममृत्युं विनिवारयंतम् ।
अणिमादिगुणैश्वर्यशालिन्येत्यष्टमातर ।
याजकानां कृतार्थ्यर्थं सुप्रसन्ना भवंतु ते ॥

Colophon नहीं है ।

८७८, मूलसंघकाष्टा संघी

Opening : श्रीमन्मन्दिर मस्तके ··· — — ।
··· — — जैनाभिषेकोत्सवे ॥

Closing : ... .. बिलरमिल्याथ पटुपटह बजिजय कहुत .... ।
Colophon : **Missing.**

८७९. नन्दीश्वर विधान

Opening : नदीश्वर पूरब दिशा, तेरह श्री जिनगेह ।
माह्वानन तिनको करों, मन बच तनधरिनेह ॥

Closing : मध्यलोक जिनभवन अकीर्तिम ताको पाठ पढे मन लाइ ।
जाके पुन्य तणी अति महिमा बरनन को कवि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरु सपति बाढै अधिक सरस सुखदाइ ।
इह भव जस परभव सुखदाई, सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon : इति श्री नदीश्वर द्वीप की उत्तर दिशि सम्बन्धी एक अजन गिरि चार दधिमुख गिरि आठ रतिकर गिरि पर मयोदश सिद्धकूट बिंब विराजमान तिनकी पूजा सम्पूर्ण ।

८८०. नन्दीश्वर विधान

Oenping : अष्टमदीप नदीश्वर बहु विस्तार है ।
ताके चब (हु) दिसि बावन गिरि मनिधारि हैं ॥

Closing : सामान (सामान्य) भाव ऐनें जानि लेना और विशेष भाव अन्य शास्त्र तें जानि लेना। इस मडल की नकल शुभा-आकारकारणी ।

Colopohn: इति समुच्चय जयमाल श्री नदीश्वर पूजा चार दिस सबधी हुवपंचासजिनालय टेक चद कृत सपूर्णम् ।
पौष सुदी आठै विमल वारभृगो पहिचान ।
संवत्सर (उन्नीस) सैं अधिक इक्यावन मान ॥
संवत् १९५१ लिखतं प० चौथै चतुरभुज बदैरी वारन की । (पालेकी)

८८१. नवग्रह अरिष्ट निवारणक पूजा

Opening : अर्कचन्द्रकुज सौम्यगुरुशुक्रशनीश्वर ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनाशक जिनपूजनात् ॥१॥

Closing : चौबीसो जिनदेव प्रभु ग्रह बधो विचार ।
फुनि पूजौं प्रत्येक तुम जो पाबो सुखसार ॥८॥

Colophon : इति नवग्रह पूजा सम्पूर्णम् ।

८८२. नवकार पच्चीसी

Opening : मुषकू ढके बोलट मा परधन के हरइ या करुना न जाके हिये है ।

Closing . यह नवकार सु पच पद जपो सुमनवचकाय ।
सकलकर्मनासकरि पचमगति को जाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री नवकारपचीसी समाप्त । मिति ज्येष्ठ शुक्ल चउदश्या सवत् १९१३ साल ।

८८३. नादी मगल विधान

Opening : तनूदरीनिर्मितमगलादिके नादीविधान क्रियतेत्रशोभनम् ।
पृथग्विनिर्वाप्य जिनाच्चनततो जलादिभिर्ग धविशेष-कमुंदा ॥

Closing : ॐ कपिल वटुकपिंगलाय क्लौं क्लौ स्वां लां ह्रीं पुष्पदत सवौषट् ।

Colophon : इति नादीविधान सपूर्ण ।

८८४ नान्दीमगलविधान

Opening वातु श्रीपादपद्मानि प्रधानापरमेष्ठिना ।
ललितानि सुराधीश चूडामणि मरीचिभि ॥

Closing . ओं ह्रीं मण्डलविषये स्वाहा ...स्थापनम् ।

Colophon . इति नादी मगलविधान समाप्तम् । शुभभूयादिति च ।

८८५. नित्यनियम पूजा

Opening : ओमन्नमस्ततमधुवत ... जिनोत्तमनाम् ॥

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो ... पावैपद निर्वाण ॥

Colophon : इति विनय संपूर्ण ।

विशेष—नित्य करने वाली पूजाएँ इसमे सकलित हैं ।

८८६. नित्यनियम पूजा

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण है तथा अन्तिम पत्र अनुपलब्ध हैं ।

८८७. नित्यनियम पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु — — ।

Closing : कीजे सकल समाज ······ सुख भोगवै ॥

Colophon : इति भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

८८८ निर्वाण पूजा

Opening : ॐ नमः सिद्धेभ्य इत्यादि स्थापना ।

Closing : जे पढतियाल णिव्वुईकंठ भावसुद्धीये ।
भु जीवि णरसुरसुक्ख वाञ्छा सो लहई णिव्वाणं ॥

Colophon इति श्री निर्वाणकाड सम्पूर्णम् । कार्तिकशुक्ल २ संवत् १९६५ भौम-शुभम ।

८८९. पंचमंगल

Opening : पणविवि पंच परमगुरु गुरु जिन शासन ।
सकल सिद्धि दातार सुविघनविनाशन ॥
सारद अरुगुरु गौतम सुमति प्रकाशन ।
मंगल करि चउ संघहि पाप प्रनासन ॥

Closing : पावै तो आठों सिद्धि — ··· सिवपये ॥

Colophon : इति पंचमंगल सम्पूर्णम् ।

८९०. पंचमीव्रतोद्यापन

Opening : श्रीमज्जिनाधरसुराञ्चितपाद पद्मं,
प्रणम्य शुद्धि निधाय पद स्वभावाम् ।

यस्तावाम् शिवपदे कमयाकृतोर्यं,
सस्थापयैविविधिवर्मयुतेष्युततम् ।

Closing : जयति विदति कीर्तेरामकीर्तेसुसष्पो,
जिनपतिपदभयतो हर्षनामासुधीर ।
नवचिन उदयसुनुनेन कल्लाणभूमो'
विधिरयमेवर्माभामे क्षसानसौख्य ददातु ॥

Colophon : इति श्री आशीर्वाद । इति पचमी व्रत उद्यापन समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२७ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ।

८६१. पंचमेठ पूजा

Opening : सर्वौषवाहूय — ... प्रतिमा समस्ता ॥

Closing : पचमेरु की आरती ... . सुख होई ॥

Colophon : इति श्री पचमेरु की पूजा जी सम्पूण ।

विशेष—साथ मे नदीश्वर पूजा भी है ।

८६२. पचपरमेष्ठा पूजा

Opening : कल्याणकीतिकमला — ... प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing : सिद्धि वृद्धि समृद्धि प्रथयतु तरणिस्फूर्यंदुच्चै. प्रताप ॥
कांति शांति समधि वितरतु भवतामुत्तमासाधु भक्ति.॥१६॥

Colophon : पचपरमेष्टि पूजाविधान सपूर्णम् ॥६॥ (१८७५) अब्देवाण नगाहिशीत किरणै संख्यामिते कार्तिकस्येतोर्वीवराकम्यका सुततिथौ शीतांशुपुत्राहनि । पूर्णाकारि जिनेन्द्र भूषणयते शिष्येण सैद्धांतिपि-गोपक्षाभृतिरत्नसागर इति ख्याति यतेनाख्यया ॥१॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२५ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ३१४ ।
(४) रा० सू० III, पृ० ५७ ।

(५) प्र० जै० सा०, पृ० १७२।
(६) भा० स०, पृ० ११२।
(7) Catg of Skt & Pkt Ms, P. 662.

८९३. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : देखें, क्र० ८७२।

Closing : स्फूर्यन् मतापतपन प्रकटीकृतार्थान् श्रीधर्मभूषणपदांबुज-
च विताले
कर्लंक्यमिह्यबता कुमुओभिनदि सूरे सदतकदयी करमैक-।
हेतु ॥४॥

Colophon : इति श्री य तोमबिहृता पंचपरमेष्ठि पूजाविधि. समाप्तम ॥

८९४. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : मगलमय मगलकरन, पच परम पद सार।
असरन कौं एही सरन, उत्तम लोक मझार ॥

Closing : मार्गशीर्ष बदि षष्टमी, बुध दिन पूरन भाय।
सवत्सर सत अष्टदस, साठ दोय अधिकाय ॥

Colophon : इति श्री पचपरमेष्ठि भाषा पूजा सम्पूर्णम् । लिखत सुगनचद श्रावक पाल्मग्राम मध्ये ज्येष्ठ शुक्ल २ बुधवार सवत् १९२७।

८९५. पंचपरमेष्ठी विधान

Opening : अथ संपति पंचकल्याणक, पंच परमगुरु सार।
पूजित पद सुरनर खगा, पावत है भवपार ॥

Closing : चौबीसों जिनदेव के, कल्याणक हितदाय।
पूर्वी सो मंगल महै, परभव सिवपुर थाय ॥

Colophon : इति पच कल्याणक पूजा पाठ सपूर्ण संवत् १९९३ — पौष-मासे कृष्ण पक्षे शुक्रवासरे पुस्तकं लिख्यतं आरापुर मध्ये पंडित हीरालाल जी। लिखापितं बालिका बूटी बीबी ने। शुभमस्तु।

८९६. पंचपरमेष्ठी पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९२ ।

Closing : देखें, क्र० ८९३ ।

Colophon : इति श्री पंचपरमेष्ठी पाठ संस्कृत श्री यशोनंदि आचार्य कृत संपूर्ण ॥ श्री शुभ सवंत १९३५ शाके ॥१८००॥ चैत्रशुक्ल चतुर्थ्यां उपरि पंचम्यां रविवासरे भवरात्र शुभ दिन ॥ सात बजे दिन को लिखकर तैयार भया ॥

सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० ८९२ ।

८९७. पंचकल्याणक पूजा

Opening : सिद्धं कल्याणबीजं कलमलहरणं पंचकल्याणयुक्तम् ।
स्फूर्जं देवेन्द्रवीर्ज्यैर्मुकुटमणिगणैर्दिप्रियादारविदम् ॥
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रं सकलसुखकरं कर्मवल्लीकुठारम् ।
सर्वेहं पूजनं वै प्रवलभवभयं शान्तिये श्री जिनानाम् ॥

Closing : त्रैलोक्येषु महोपरोद्भवसुखं संसारकवाद्भुतम् ॥
मोक्षचापिदिशंतु वै जिनवरा सर्वा त्स्ममो सर्वदा ॥१॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा सपूर्णम् ॥
वाडग्रामे शुभस्थानेगंगातटनिवासिनं लिखितस्वामिशिवप्रसादेन विप्रवंशेन श्रीमता ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।
(२) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 662.

८९८. पंचकल्याणक पूजा

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।

Closing : देखें, क्र० ८९७ ।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथी १३ । संवत् १९५३ ।

८९९. पंचकल्याणक उद्यापन

Opening : श्री श्री वीरनाथप्रणपत्यमूर्द्धाविरचये जिनानां भुविपञ्चकञ्च।
कल्याणकानां खलु कर्महान्यै गर्भावतारादिदिनादिकंश्च ।।

Closing : **Missing.**

९००. पंचकल्याणक पूजा

Opening : श्री परमातम कूं नमूं, नमूं शारदा माय ।
श्री गुरु कूं परणाम करि, रचूं पाठसुखदाय ।।

Closing : पढ़ैं सुनैं जे नर अरु नारी,
पाठ लिखावैं जे परवीन ।
तिनके घर नित मंगल व्यापै,
अष्ट करम दुख होवै छीन ।।

Colophon : इति पंचकल्याणक भाषा पूजा सम्पूर्णम् ।

९०१. पंचकल्याणक पूजा

Opening : विश्वाशसंभव विश्व विद्यादर्शेदवशंय ।
भुवनां भोजमास्वत त जिनस्तोष्टुवीम्यह ।।१।।

Closing गच्छे सारस्वतेशो भववदमयशा ... ।
— कृतमिदमपर पूज्यमंतेममव्ययम् ।।

Colophong : इति श्री पंचकल्याणिकपूजन समाप्तम् । संवत् १८७६
श १७४४ का० सु० ११ शनीवार ।

९०२. पंचकल्याणक पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।

Closing : आेकृतकं सकलं कृर्तिविस्तुधोराहा ।।
स्वर्हि वीधयमस्फूर्ति जीवातुसी प्रभिवरस्तनम् ।।१२।।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपाठसंस्कृत सपूर्णम् ॥ चैत्र कृष्ण अष्टमी शुक्रवासरे सवत् १६३६ दोपहर एक ॥ शुभ ॥

१०३. पंचकल्याणक पाठ

Opening : ध्यानस्थित मोहविकारदूरं श्रीवीतरागम्
शिव सौख्यहेतु कर्मस्वरूपम् ॥७॥

(पृष्ठ ४६) जय जय केवलग्यानसतपंज ॥

Closing : जयजय मुक्तिवधूभवतपंज ॥८॥

१०४. पंचकल्याणक पाठ

Opening : देखें, क्र० ८६७ ।

Closing : देखें, क्र० ८६७ ।

Colopon ; इति श्री पचकल्याणकपाठ सम्पूर्णम् ।

१०५. पंचकल्याणकादि मंडल

Opening : कल्याणक मण्डलचित्र ।

Closing : सोलहकारण मंडल ।

विशेष— ३० मडलचित्र संग्रहीत हैं ।

१०६. पद्मावती पूजा

Opening : श्रीमत्पार्श्वप्रमानस्य मोक्षसौख्यप्रदायकम् ।
वक्ष्ये पद्मावती पूजां कृत्वा पूर्वांगपूर्विका ॥

Closing : लक्ष्मीसौम्यकरा ... पद्मावती पातु: वे ॥

Colophon : इति श्री पद्मावतीपूजा सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुधवार सं० १६५१ बारह बजे दिन को लिखकर आमपुर (आरामपुर) निजगृह जन्मभूमि का पर हरिदास ने पूर्ण करी । सो जयवंतहोहु

विशेष— इसमें पार्श्वनाथ पूजा भी सगृहीत है ।

९०७. पद्मावती देवी पूजा

Opening : जनकुसुम कुंकुम ·· ··· पद्मावती ॥

Closing : गंभीरमधुरमनोहर ··· ··· कुर्वन्तु मगलम् ॥

Colophon : इतिपद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

९०८. पद्मावतीदेवी पूजन

Opening : देखें, क्र० ९०७ ।

Closing : समीरगंध सलिलपुंज ··· ।
······ वृद्धि क्षेत्रपाल अर्चनम् ॥

Colophon : श्री ।

९०९. पल्य विधान पूजा

Opening : नत्वा सन्मतिम वीरं वांच्छितार्थप्रदायकम् ।
ब्रुवे पल्यविधानस्य यथा सूत्र हि पूजनम् ॥

Closing : हिएस्ति पापं भविनां हतारं पूजेयमाप्तागमगोचरा च ।
धत्ते सुसौभाग्यपदं सलीलं तनोति सर्वत्र यशोभिरामम् ॥

Colophon : नहीं है ।

९१०. प्रतिष्ठा कल्प

Opening : विज्ञान विमल यस्य विशद विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेंद्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये ॥

Closing : इति प्रतिष्ठाद्वितीय कार्तीय दिवसक्रियाम्,
य करोति हि भव्यात्मा स. स्यात्कल्याणभाजनम् ।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भट्टाकलंकदेव सगृहीते प्रतिष्ठाकल्प नाम्नि ग्रंथे सुमस्थाने प्रतिष्ठा द्वितीय तृतीय दिवस विधि निरूपणीयो नामैकोनविंश परिच्छेद. इत्यय ग्रथो भाद्रपद शुक्लदशम्यां तिथौ रात नेमिराजाह्वयेन सम.लिख्य परिसमाप्तोऽभूद भद्र भूयाद्दति । महावीर शक २४५२, १९२६ ईस्वी ।

९११. प्रतिष्ठाकल्प टिप्पण (जिनसंहिता)

Opening श्रीमाघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तितनूभव ।
कुमुदेन्दुरहं वक्ष्ये प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणम् ॥१॥

Closing इति नियतमिदं यदेवता अथन ये खलु विदधति तेषा
भूतरा गापशाति ।
जगदखिलमपि मित्रभाव प्रथातिस्वयमेमित गुणाढ्या
मुक्तिकातांविवश्या ॥

Colophon . इति श्रीमाघनन्दिसिद्धांतचक्रवर्तिसुतचतुर्विधपाण्डित्यचक्रवर्ति श्रीवादिकुमुदचन्द्र पण्डितदेवविरचिते प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणो यन्त्रार्चनविधि: समाप्त ।

अथ च श्रावणशुद्धाष्टम्यां लिखित्वा समाप्तोऽभूत् ॥ रान्० नेमिराजठय ॥ महावीर शक २४५१ क्रोधन संवत्सर: ॥

९१२. प्रतिष्ठा पाठ

Opening । स्फूर्जत्केवलिबोध सिन्धु विमरेयद्विन्दुवद्भासते,
यस्य श्रीपरमेष्ठिनो जिनपतेर्निमेयसूनोस्त्रयम् ।
लोकाना सकलासुभृतकरूणया धर्मो द्विधोद्योतित:, ।
स्तमै श्री मदनंतजिनमय कलासविघ्नतेस्तान्नम ॥

Closing वसुविदुरिति ... .. तन्नमोस्तुहितैषिणाम् ॥

Clolophon इति श्रीमत् कुदाद्यौदय मूधरशिखामणि श्री जयसेनाचार्य विरचित: प्रतिष्ठासार सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि जि. ग्र र., पृ. १८६ ।
(२) जि. र को., पृ. २६१ ।
(.) प्र० जै० सा०, पृ० १७६ ।

९१३. प्रतिष्ठा पाठ

Opening । प्रणम्य स्वस्ति बुद्धि श्रीआत्मकीर्तिप्रदायिने ... — ।
तिहां प्रथम मुहूर्तकामा सलिघीये ते — - ।

Closing : बस्मापनयनं ॐ श्री व· व व. स्वाहा ········· ।
········· — ठोष्ठ २ स्वाहा: ॥

Colophon : इति प्रतिष्ठाविधि सम्पूर्णम् ।

६१४. प्रतिष्ठा सारोद्धार

Opening : जिनाधीशमहं वदे विध्वस्ताशेषदोषकम् ।
सर्वज्ञं सर्वशास्त्रस्य कर्त्तारं त्रिजगत्प्रभुम् ॥

Closing : इति प्रतिष्ठातिलकोदितक्रमात्करोति यो भव्यजनप्रमोदताम्।
जिनप्रतिष्ठां परमार्थनिष्ठा सद्भव्य स्वस्यचिरात्
सुसौख्यम् ।

Colophon : समाप्तोऽयं ग्रन्थ । अषाढ शुक्ल द्वितीयायां तिथौ रात्रौ नेमिराजनामधेयेन सलिख्य समाप्त. । महावीरशक २४५२ ।

६१५ प्रतिष्ठासार संग्रह (६ परिच्छेद)

Opening : सिद्ध सिद्धात्म सद्भावं, विशुज्ञानदर्शनम् ।
सिद्धशुद्धप्रमाणास्त्र, निरस्त परदर्शनम् ॥

Closing : छद्मस्थत्वात्प्रमादाद्वा, यदत्र स्खलितं मम ।
संशोध्य तत्सुशास्त्रज्ञा कथयन्तु महर्षयः ॥

Colophon : इति श्री वसुनंदि सैद्धान्तिक विरचिते प्रतिष्ठासग्रहे षष्ठ: परिच्छेद· । स्वस्ति श्री काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाये भट्टारक त्रिलोकपट्टाधीशो श्री १०८ राजेन्द्रकीर्तिदेवा स्तेषां शिष्य पंडित परमानन्देन लिखितमिदं शुभसंवत्सरे १९४७ मिति फाल्गुण कृष्ण तृतीयायां. शुक्रवासरे पूर्वविभायां सारनदेशे छपरा नगरे पार्श्वजिन चैत्यालये . सध्यायां. चतुःपलघटतां रात्रौ । स्व ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थम् ।

शुभमस्तु, लेखकपाठकयोः, कल्याणमस्तु विजयमस्तु सिद्धिरस्तु कीर्तिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७० ।
(२) जि० र० को०, पृ० २६१ ।
(३) रा० सू० II, पृ० २०१, ३८६ ।

(४) रा० सू० III, पृ० ३० ।
(५)आ० सू० पृ० १९३ ।

६१६. प्रतिष्ठा विधान

Opening : नमोऽर्हते सदाभ्युदयरियतायं जोऽर्हते ।
रहस्यभावतो लोकत्रयपूजार्हभावत, ।।
मत्र्येन्द्रनन्दिमुकुटोत्सर प्रतिष्ठापाग्भाविहृत्यमजितजिनबिम्बमूर्ते ।
तीर्थैर्युत शुभतमैरभितो विशोध्य पात्राणि तत्र सलिलाद्यपि
शोधयित्वा ।।

Closing : स्वस्तिश्रीसुखसिद्धिऋद्धिविभव प्रख्यालय. पूज्यता,
कीर्ति क्षेममगण्यपुण्यमहिमा दीर्घायुरारोग्यवत् ।
सौभाग्य धनधान्यमम्बदमय भद्र शुभ मगलम्,
भूयाद्भव्यजनस्य भास्वति जिनाधीशे प्रतिष्ठापिते ।।

विशेष–प्रशस्ति सग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन द्वारा प्रकाशित) पृ० १०४ में सम्पादक भुजबलीशास्त्री ने ग्रन्थ के बारे में लिखा है–यह हस्तिमल्ल प्रतिष्ठा विधान मूडबिद्री से प्रतिलिपि कराकर आया है। इसमे कहीं भी ग्रन्थ कर्त्ताका परिचय नहीं मिलता। परन्तु ग्रन्थ के आदि और अन्त में हस्तिमल्ल लिखा मिलता अवश्य है। इसी से इस प्रतिष्ठा ग्रन्थ का कर्त्ता हस्तिमल्ल माना गया है।
"वीराचार्य सुपूज्यपाद जिनसेनाचार्य सभाषितो,
य: पूर्वं गुणभद्रसूरिवसुनन्दीन्द्रादिनन्द्य ज्जित ।
यश्चाशाधर हस्तिमल्लकथितो यश्चैकसन्धीरित-
स्तेभ्यस्स्वाहृतसारमार्यरचित स्याज्जैनपूजाक्रम ।
इस श्लोक से यह बात सिद्ध हो जाती है कि हस्तिमल्ल ने भी एक प्रतिष्ठा पाठ रचा है।

६१७. प्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रणम्य स्वस्ति ऋद्धि श्री ज्ञानकांति प्रदायिने ।
महावीरस्य बिबस्य प्रवेश विधि लिख्यते ।।

Closing : इन्द्रादेवैर्अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

Colophon . इति प्रतिष्ठाविधि संपूर्णम् । संवत् १६०६ का मि० चैत्र व० ६ शनि । श्री ।

६१८ प्राकृतन्हवण

Opening ओ इह मना पाणी अ, कुडेण वि विमलेण ।
जिण न्हावेहु आनन्द जु, सुह पावेइ अचिरेण ॥

Closing : मायमतुरगहण सरह रहघरथामरिपरि
वेयालियचक्कलमंयल मल्लिमोल रहिणराहि उणीयलग्गे ।
पत्तोसि समवसरणे असुइ हरण वियकालवारणम्,
मयराम ण विणसे मुक्काहल मालाजुलेय तोरणम् ॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।

६१६ पुण्याहवाचन

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमूर्तिनाथ,
भास्वत्किरीटमणिदीप्ति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरण प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुत्क्षिपामि ॥

Closing : श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तवपुष्टिसमृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु सतानाभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुल गोत्रं धनं तथास्तु ।

Colophon इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् ।

६२०. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, क्र० ६१६ ।

Closing : ... — कुलगोत्र धन तथास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन संपूर्णम् । समाप्ता: ॥ श्री संवत् १८६६ शकि १७३२ प्रमोद नामसंवत्सरे श्रावणमासे कृष्णपक्षेऽष्टम्यां तिथौ लिखितं कारंजानगरे ह: देवमन: राव स्वपठनार्थं

ज्ञानावर्णि कर्म क्षयार्थम् ।

१२१. पुष्पाञ्जलि पूजा

Closing : जिन संस्थापयाम्यत्राह्वनादिविधानतः ।
सुदर्शनमर्थं पुष्पांजलिव्रतविशुद्धये ॥

Closing : पुत्रपौत्रादिकंबुद्धिधनधान्यादिकं ।
... . प्राप्नुवान्तर. ॥

Colophon : इति मेघमाला व्रतपूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

देखें, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २५४ ।

१२२. पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु । णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

Closing : आरत्तिय ओवइ कम्मइ थोवइ सग्गापवग्गह लहुलहइ ।
जं ज मणे भावइ सुह पावई, दीणु वि कासु ण भासुई ॥

Colophon : अष्टान्हिकायाः पूजा समाप्तम् । संवत् १६४७ मिति आषाढ़ शुक्ल ६ चंद्रवासरे लिखतं अमीराम पूजा इंद्रप्रस्थ नगरे । शुभ भूयात् ।

१२३. रत्नत्रय पूजा

Opening : श्री मंतं सन्मति नत्वा, श्रीमतः सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमतः श्रीमान्, वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥

Closing : विरमविरमसंगान्मुंच मुंच प्रपंच,
विसृज विसृज मोहं विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्,

कुरु कुरु पुरुषार्थं निर्वृतानन्दहेतोः ॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते चारित्र पूजा समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।

६२४. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें क्र० ६२३ ।

Closing : देखें, क्र० ६२३ ।

Colophon इति श्री पंडिताचार्य श्रीजिनेंद्रसेन विरचिते रत्नत्रय पूजा जी समाप्तम् । श्री श्री ।

६२५. रत्नत्रय पूजा

Opening देखें, क्र० ६२३ ।

Closing . मामें मणि माणिक भंडार, पद-पद मंगल जयकार ।
श्रीभूषण गुरुपद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलें सु विचार ॥

Colophon : इति रत्नत्रय व्रत कथा समाप्ता ।

६२६. रत्नत्रय पूजा

Opening · देखें, क्र० ६२३ ।

Closing : एक सरूपप्रकाश निज वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब, द्यानत कौं सुखदाय ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

६२७. रत्नत्रय पूजा

Opening : चहुंगति फनि विषहरनमन, दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥

Closing : देखें, क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

९२८. रत्नत्रय पूजा उद्यापन

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य गौतमादींश्च सद्गुरून् ।
रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नायं विमुक्तये ।

Closing ; इत्थं चारित्रमाला वैः कंठे यो विदधाति च ।
शोभाविनिततरां नूनं शीघ्रं मुक्तिरमापतिः ।।

Colophon : इति विशालकीर्त्यात्मजो भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते रत्नत्रयपाठोद्यापन पूजा समाप्ता । शुभम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १२१ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १५६, २०६, ३०८ ।

९२९. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें क्र० ९२८ ।

Closing : इय पदउ सुरगिरि ससि रविहिं जावतारणरकतर ।
रयणत्तय जत्तसय सयल विरु सगल होऊ पवतइ ।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा जयमाल सपूर्णम् ।

विशेष—सवत् १९४० में पचायती मंदिर आरा में चढ़ाया गया ।

९३०. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ९२८ ।

Closing : तद्दिसर्जनेद्वार प्रक्षालनांत. पुष्पादिक मनुष्ठातृभ्यः
तदनुमोदकेभ्यश्च वितीर्य्य शांतीमामधीमान्
समतात्पुष्पाक्षत विकरेत् ।।

Colophon : इति श्री चरित्र पूजा संपूर्णम् समाप्ता ।

९३१. रत्नत्रय जयमाल

Opening : पाणवे प्पिणु भावे विकसहावे वीर जिणि सुसुबोह जिहिं ।
सुर णणहर आकिउ विबुह पयासिउ रयणत्तय
सुविहाणं विहिं ।।६।

भदवमासिवेय बारसि दिणिएहाइ विसेयछुपहरे वितणि ।
पुन्‌नरि जियहरि आएप्पिणु पोसह सत्तिपमाणु लए-
प्पिणु ।।

Closing : रयणत्तय सारउ अभिडतार‍ुक्कउघयइ जो आयरइ ।
सो सुर णर सुखइ लहइ असंखइसिद्धि विलासिणि अणु-
सरइ ।।

Colophon : नही है ।

६३२. रत्नत्रय जयमाल

Opening : जय जय सद्‌दर्शन भव भय निरसन मोहमहातम तरुवारण ।
उपसम कमलदिवाकर सकलगुणकर परममुक्ति सुखकारण ।

Closing : इद चारित्ररत्न य: सम्तवीर्यभव पवित्रधी ।।
अभिप्रेतार्थसिद्ध यर्थं स प्राप्नोति चिर नर: ।।

Colophon : इति सम्यक्‌चारित्रजयमाल संपूर्णम्‌ ।

६३३. ऋषिमंडल पूजा

Opening : कर जुग जोरी शारदा, प्रनमि देवगुरुचर्न ।
ऋषिमंडल पूजा रचौ, श्री जिनवर पद सर्न ।।

Closing : संवत्‌ नभ नभ अंक भू, मगसिर मानव असेत ।
अर्द्ध रात्र पूरन कियो, बद्रनाथ सकेत ।।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडल पूजा सम्पूर्णम्‌ । शुभ संवत्‌
१९०१ मिति सावन सुदी सप्तमी पुस्तक लिखी गोरखपुर
नगरे श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालये पठन हेतु भव्य जीवन
के लिखायो लाला मानिकचंद ।

६३४. ऋषिमंडल पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३३ ।

Closing : देखे, क्र० ८३३ ।

Colophon : इति श्री रिषमंडल जंत्र संबन्धी पूजा सम्पूर्णम्‌ । शुभ सम्वत्‌

१९६० मिती जेष्ठ कृष्ण ६ वार रविवार ।
सुत श्रीवीरनलाल के, लेखक दुरगालाल ।
जैनी आरा में रहे, काशीलगोत्र अग्रवाल ॥
अंग्रेजी सरकार बहादुर ११ मई सन् १९०३ ।

६३५. ऋषिमंडल पूजा

Opening : आद्य ताक्षरसलक्षमक्षर वाप्ययस्थितम् ।
अग्निज्वालासमानाद् बिंदुरेखासमन्वितम् ॥१॥

Closing : यावन्मेरुमहीशशांक ... ।
— — ऋषिमडलस्य तु महापूजा विधिनदतु ॥

Clophon : इति श्री ऋषिमडल पूजाविधि समापिता ।
देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 629.

६३६. रूपचंद्र शतक

Opening : अपनो पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भव वन क्षायक हार हैं, शिवपुर सुधि बिसराय ॥

Closing : रूपचंद मद् गुरुनिकी जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वें शिवपुरि गए, भव्यनु पथ दिखाइ ॥१००॥

Colophon : इति श्री पांडे रूपचंद कृत शतक सपूर्णम् ।

६३७ सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क्र० ८२६ ।

Closing श्रीमद्रमस्तुमलवर्जितशासनाय,
निर्नासितासमवसायकुशासनाय ।
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्त य मन्नयाय,
देवादिदेवपरमेश्वरमोजिनाय ॥६॥

Colophon . इति स्तवनम् ।
देखे, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६४ ।

६३८. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क्र० ८२६ ।

Closing : अनेन सिद्धार्थनिभिर्मं असवंविघ्नोपशमनार्थं सर्वदिक् क्षिपेत् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधानम् ।

विशेष—अन्त में दिग्पाल एवं क्षेत्रपाल की अर्चना तेल, चंदन, गुड़ आदि से करना लिखा है। अन्त में छह यंत्र-चित्र भी अंकित है।

९३९. समवसरण पूजा

Opening : प्रणमामि महावीरं, पंचकल्याणनायकम् ।
केवलज्ञानसाम्राज्य लोकालोकप्रकाशकम् ॥१॥

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञ · · ।
·· · विबुधारस्तरचितम् ॥५॥

Colophon इति श्री समवसरण पूजा बृहत्पाठ सम्पूर्णम् ।

देखें—दि० जि ग्र. र., पृ. १६५ ।
जि र. को., पृ. ४१६ ।

९४०. समवश्रुति पूजा

Opening : देखें क्र० ९३९ ।

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञसेवा ? सर्वान्विसति मत ॥
? :—बृद्धवर्य बुधाराशि. विबुधारस्तरजितम् ॥५॥

Colophon : इति श्री समवश्रुतपूजाबृहत्पीठ सपूर्णम् ॥

९४१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : पंच परम गुरु को नमो, दो कर शीश नवाय ।
श्री जिन भाषित भारती, ताको लायो पाय ॥

Closing : रैवासहर मनोज, बसे श्रावक भव्य सब ।
आदित्य आश्वर्य योग तृतीय पहर पूरणभयो ॥

Colophon इति सम्मेद शिखर महात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति लालचंद विरचिते सुवर कूट वर्णनो नाम एकविंशमो सर्गः । इति श्री सम्मेदशिखर माहात्म्य जी सपूर्णम् । मिति चैत्र शुक्ल ८ रवीवार दस्तखत सुरजमल सवत् १९३७ साल । शुभमस्तु ।

९४२. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सुथान ।
सिखसम्मेद सदा नमो, होय पाप की हानि ॥

Closing : सिखिर सु पूजै सदा जो मनबचतन चितलाइ ।
दास जवाहिर यौ कही, जो शिवपुर को जाइ ॥

Colophon : इति श्री सम्मेदशिखरपूजा भाषा सपूर्णम् ।

९४३. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहाँ ते शिव लये ।
औरहु बहुत मुनीश शिवाले सुखमये ॥

Closing : इत्यादि घनी महिमा अपार ।
प्रणमो सीसधार ॥

Colophon इति ।

९४४. सरस्वती पूजा

Opening : मायातीत मयक सम, हरन ताप ममार ।
ऐसे जिन पद कमलप्रति, नमू टरन अवभार ।

Closing : देखे, क्र० ९४५ ।

Colophon : इति सरस्वती पूजन समाप्तम् ।

९४५ सरस्वती पूजा

Opening : देखे, क्र० ९४४ ।

Closing : मगलकारक श्री अरहत । सिद्ध चिदातम सूरिमनत ।
पाठक सर्व साधु गुणवन । सुमरि भव्य शिव सौख्य लहंत ॥

Colophon इति सरस्वती पूजा समाप्तम् । सवत् १९६२ शक १८२७ वैशाख कृष्ण ५ चद्रदिने । लि० पं० सीताराम स्वकरेण ।

९४६. सप्तर्षि पूजा

Opening : विमलतीर्थंकर वदे जिनेशं मुनिसुव्रतम् ।
सप्तर्षिमुनीन्द्राणा पूजयेऽहं सुशांतये ॥

Closing : श्री गच्छे मूलसघे जतियतितिलको जो भवत् कुंदकुदा-,
तत्पट्टे ज्ञानभूषाश्रुतजलधिरिव श्री जयत्भूषनाख्य: ।
तत्पट्टे भूरिभागी कविरवररसिक विश्वभूषणकवेन्द्र,
तेनेद पाठपूर्व रचित सुललित भव्यकल्याणकारी ।।

Colophon : इति सप्तऋषिको पाठ विश्वभूषणकृतसमाप्त

९४७. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४६ ।

Closing : देखें, क्र० ६४६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारकविश्वभूषणकृत सप्तर्षि पूजाविधान समाप्तम् ।

सवत् १६५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

९४८. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४६ ।

Closing : देखें क्र० ६४६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक विश्वभूषण कृत सप्तर्षिपूजन विधान समाप्तम् । चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४, सवत् १६५६ । श्रीरस्तु ।

९४९. षट्चतुर्थजिनार्च्चन

Opening : नमोनेकान्तरचनाविधायिने जिनेन्द्राय नम: । अथ षट्चतुर्थ-वर्तमानजिनार्च्चन समुदीरयाम: यश समानदति विष्टयत्रय ··· ।

Closing : शिवाभिरामायशिवाभिराम, शिवाभिरामात्रशिवाभि- रामै: ।
शिवाभिरामप्रदक भजस्व, मुहुर्मुहु: भेविद किं वदामि ।।

Colophon : इति श्री षट्चतुर्थवर्तमानार्च्चाशिवाभिरामावनिपसुनुकृता-म्रुत्तरेयं समाप्त: । सवत् १९३८ साल मिति कार्तिक वदी ११ बुधवार के दिन समाप्त हुवा ।

६५०. षण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा

Opening : वंदेहं सन्मतिं देवं सन्मतिं मतिदायकम् ।।
क्षेत्रपाला विधिं वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ।।१।।

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्ठमघे यतिपतितिलके रामसेनस्य मघे
गच्छेनदीतटाख्येतार्गदिनिहृपुले तुच्छकर्म्मामुनीन्द्र ।।
ख्यातोसौ विश्वसेनोविमलतरमतिर्य नगज चकार्षीत्
सोऽयं सुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपाला शिवाय ।२७।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृताषण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा सपूर्ण ।।

६५१. सार्द्धद्वयदीप पूजा

Opening : देखें, क्र० ६५२ ।

Closing : देखें, क्र० ६५२ ।

Colophon : इति श्री सार्द्धद्वयदीपस्थजिनाना पूजा सपूर्ण ।।
मगलम् लेखकाना च पाठकानां च मगलम् ।।
मगल सर्वलोकाना भूमिभूपति मगलम् ।।
अग्रवालवशोद्भवेन लाला वृजपालदास तस्य पुत्र जिनवर सतु रविचरण गुण वान्तस्य पुत्रः स्वाध्यायहेतवे लिखापितम् ।

६५२ सार्द्धद्वय द्वीपस्थजिन पूजा

Opening : ऋषभाद्यर्द्धमाना, तान् जिनान् नत्वा स्वभक्तित ।
सार्द्धद्वयद्वीपजिनपूजा विरचयाम्यहम् ।।

Closing : षष्टिर्यद्योविभगा विषयविरचिताश्चाद्विवक्षारनामा,
चाशीतिशमितास्युः कुभरजलधियोद्वीपभूषणवश्च ।
आराश्चिकालकाब्धिद्वयमपि जलधिसंख्यपर्याकतुर्यं,
यत्रासंख्योजनानामितिं नरधरनीस दिश्यवृद्धकानां ।।

Colophon : इति सार्द्धद्वयद्वीपस्थजिनाना पूजा सम्पूर्णम् । संवत् १८६८ माघमासे कृष्णपक्षे १३ रविवासरे समाप्तम् । लेखकपाठकयोश्चिर-जीवती । लिख्यत श्रीकाशीमध्ये राजमदिर शीतलाघाट ब्राह्मणशिव-लाल जाति गौड । लीखाईत लाला ककरलाल लाला मनुलाल पठनार्थं परोपकारार्थम् ।

९५३. सामयिक पाठ

Opening : देखें—क्र० ८७३ ।

Closing : देखें—क्र० ८७३ ।

Colophon : नहीं है ।

९५४. शान्त्यष्टक

Opening : स्नेहाच्छरण प्रयान्ति भगवन्पादद्वयन्ते प्रजाः
हेतुस्तत्रविचित्रदुःख निलय संसारघोराम्बुधिः ।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्ण भूमण्डलो
ग्रैष्म काल इतिन्दुपादसलिच्छायानुलाग रवि, ॥१॥

Closing : उत्तम नवमांगल्य मध्यम सप्तमगल ।
जघन्यां पचमांगल्य यत्र मगल लक्षणम् ॥

विशेष—यह ग्रथ वीर निर्वाण सवत् २४४० मे लिखा ।

९५५. शान्तिमंत्राभिषेक

Opening : ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराया. द्वादशांगोपर-मेष्ठिताया ‥ — ‥‥ पवित्राय सर्वज्ञानाय स्वयंभुवे: सिद्धाय परमात्मने · ‥‥ ।

Closing : एकमत्रस्थित सिद्ध ‥‥ ‥ एकवहुपरीक्षा ।

Colophon : नहीं है ।

९५६. शान्तिपाठ

Opening : शांतिजिन शशिनिर्मल वक्त्र । शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टसतार्चितलक्षणगात्रं । नौमिजिनोत्तममम्बुजनेत्र ॥१॥

Closing : मंत्रहीनो क्रियाहीनो द्रव्यहीनो तथैव च ।
तत्कृत्तिं न जानामि त्वं क्षमस्वपरमेश्वर ॥

Colophon : वीर संवत् २४३८ या पुस्तक आरावाले जगमोहन ला(भा)इ

ने पालीटाणा जैन दिगम्बर कार्यालय का मुनीम धरमचन्द हस्तक लिखवाया।

९५७. शान्ति विधान

Opening : सारासारविचार करि तजि सम्भृति को भार।
धाराधर निजध्यान की, भये सिन्धु भवपार।

Closing : सम्वत् शत उगणीस दश श्रावण मासमि सेत।
सकलचन्द मुनि भक्ति वसि रची स्वापर हित हेत।।

Colophon : इति बृहत गुरावली पूजा शातिक विधान सम्पूर्णम्।

९५८. शान्ति विधान

Opening : देखें, क्र० ९१६।

Closing : चैत्यादि भक्तित्रय चतुर्विंशतिजिनेन्द्रस्तवन पठित्वा पञ्चांग प्रणम्य न स्नेहाच्चरणमित्यादि शान्त्यष्टक पठित्वा स्वीकार च आकाशगमनं।

Colophon : इति हवन विधानमासीन्। शुभमस्तु।

९५९. शांति पाठ

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ।

Closing : सर्वशांति तुष्टि पुष्टि कुरु-कुरु स्वाहा।।

Colophon : इति लघु शांतिमंत्र जाप्य १०८ नित्यजपे संवत १९४७। मास वैशाखे शुक्लपक्षे तेरस्याम्।।१।।

९६०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० ८१५।

Closing : अममसमेयसारं सौख्येति मुक्ति।।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी सम्पूर्णम्।

देखें, (१) दि जि. ग्र र, पृ. २००।

९६१. सिद्ध पूजा

Opening : सिद्ध अनन्त सगुणमयी शुद्ध सरूपी देव।
सुरनर नृप नित ध्यान धरि प्रणमो करि बहु सेव।।

Closing : काल अनत एक समराजे ।
सुरनर नृप प्रणमे निज काजे ॥

Colophon : नही है ।

९६२. सिद्धचक्रव्रताख्यान

Opening सिद्धार्थं सिद्धये नत्वा सिद्ध सिद्धार्थनदनम् ।
सिद्धचक्रव्रताख्यान, ब्रुवे सूत्रानुसारत ॥

Closing : परवादी भविदारणके सरिहरि ...त्रनस्तुतो ।
अथ ... ॥

Colophon : नही है ।

९६३. शिखर माहात्म्य

Opening · देखे क्र० ९४१ ।

Closing · देखे, क्र० ९४१ ।

Colophon देखे, क्र० ९४१ ।
वैशाखमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ भौमवासरे सवत् १९५५ ।

९६४. सिहासन प्रतिष्ठा

Opening : श्री महावीरजिनेशस्य प्रणिपत्य महोदयम् ।
नव्यज्ञानस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : मलक्षय लुतिकोष्टिरोगविषमग्रहक्षय कुर्वते ।
श्री मत्पार्श्वजिनेद्रपादयुगल ध्यानस्य मत्रोवकम् ॥

Colophon : इति शांतिमत्र सपूर्णम् । इति सिहासनप्रतिष्ठा सम्पूर्णम् ।
शुभमस्तु । पंडितपरमानदेन रचितमिदम् । श्री
अथ पुण्याह कलश स्थापनम् ।
श्वतेन पीतेन च लोहितेन, धर्मानुरागात् प्रविकल्पितेन ।
जिनस्य मत्रेण पवित्रतेन, सूत्रेण कुभ अतिवेष्टयामि ॥
ॐ नमो भगवते असिआउसा ऐं ह्रीं ह्रा ह्रौं स सवौषट्
त्रिवर्ण सूत्रेण शांति कुभ वेष्टयामि ।

९६५. सोलह कारण जयमाला

Opening : जम्मवुहितारण कुगइ णिवारण सोलहकारण सिवकरण
पणविवि थुई भास मिसत्तिपयासमितिच्छयरतुलद्धिघरण ॥

Closing : सोलहमउअ गुणइ य थुणविअग्गु तारइ ।
जो जिण क्पाइ विदसणु आयरवि, तवहो इयुणुविशो-
तिथयरू ॥

Colophon : इति श्री सोलाकारण जीकी सोला जयमालसपूणम् । मिती कार (कार्तिक) शुक्ला ३ सवत् १९५२ हस्ताक्षर गोविंद सिंह वर्मा । शुभ भूयात् ।

९६६. सोलहकारण उद्यापन

Opening : अनन्तसौख्य पदद विशाल पर गुणौघ जिनदेव्यसेव्यम् ।
अनादिकाल प्रभव व्रतश त्रिधाह्लाये षोडषकारण वं ॥

Closing : कतेपिरोघपूजायामूलसंघविदाग्रणी ।
सुमतिसागरदेवश्चाघोडशकारणे ।

Colophon : इति श्री षोडशकारणोद्यापनपाठ. ।

९६७. सुदर्शन पूजा

Opening : जंबूदीप मझार राजत भरतराज अपार है ।
मैं देशपाटलिपुत्र प्रणमी पुण्य पूजागार है ॥
मोक्ष मालावरहि शारला सेठ सुदर्शन है बली,
ममहृदयसरिता समसागर कुम्भकारण को चली ॥

Closing : छन्दशास्त्र जानो नहीं, धर्म सुकविवर जान ।
भावभक्ति पूजन रच्यौ आरा शुभ स्थान ॥
शुभ सम्वत् रचना रची, शत उन्नीस पचान ।
मलोमास तिथि पचमी अषाढ़ कृष्ण सुखरास ॥

Colophon इति श्री सेठ सुदर्शनपूजा सम्पूर्णम् ।

९६८ सुदर्शन पूजा

Opening : देखें, क्र० ६६७ ।
Closing : देखें, क्र० ६६७ ।
Colophon : इति श्री सेठ सुदर्शन पूजा सम्पूर्णम् ।

९६९. श्रुतस्कंध विधान

Opening : प्रथम मगन बाचक अनुष्टुभ छंद जाति ।
ॐ नमो वीतरागाय गुरवे च नमो नमः ।
पुनर्नमामि भारत्यै यस्माद्भवति मंगलम् ॥१॥
Closing : स्तुत्वेति बहुधास्तोत्रैर्बहुभक्तिपरायणैः ।
नाना अर्घ्यं ममसीमानर्घ चारि समुद्धरेत् ॥१०॥
Colophon इति श्री श्रुतज्ञान श्रुतस्कंध पूजा जयमाल संपूर्ण । ॥श्री॥

९७० श्रुतस्कंध पूजा

Opening : ॐ ह्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवतिसरस्वति ह्रीं नमः ।
Closing : सम्यक्त्वसुरत्न सद्व्रतयत्न सकलजन्तुकरुणाकरणम् ।
श्रुतसागरमेतं भजतनमेत निखिलजने परितः शरणम् ।
Colophon : इति श्री श्रुतस्कंध पूजाविधि, समाप्तम् ।

९७१ स्वस्ति विधान

Opening : सौख्यालयाश्चाष्टगुणैर्गरिष्ठाः,
युक्ता स्वबोधेन विनिर्मलेन ।
सिद्धा प्रणष्टाखिलकर्मबंध,
स्वस्तिप्रदा. केवलिनो भवन्तु ॥
Closing : महापुंडरीक ... ... परिपूरतम् ॥
Colophon : नहीं है ।

६७२. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने ।
नम श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान जिनेशिने ।।

Closing : उज्जोवणमुज्जवण णिव्वहण साहण च णिच्छवण ।
दसणणाणचरित्त तवाणमाराहुणा भणिया ।।

Colophon : इतिस्वाध्यायपाठ सम्पूर्णम् ।

६७३. तेरह द्वीप विधान

Opening : दश जनमत पूरन भइ, अब केवलदशमार ।
तिनको मुनि समुझै सुधी, परम शुद्धता धारि ।।

Closing : उतरदिशि, सुविशाल, रुचिक नाम गिरिवर ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

६७४. तीस चोबीसी पाठ

Opening : श्रीमत सर्वविद्येश नत्वा नयविशारदम् ।
कुर्वेह श्रेयमा नित्य कारण दु खवारणम् ।।१।।

Closing : जयकारवि जिणवर ... भोरकहो ढाणगुणदुहर ।।

Colophon . इति श्री तीम चोबीमी पाठ सम्पूर्णम् ।

६७५. तीस चतुर्विशति पूजा

Opening : समारतापतप्तोह स्वामिन् शरणमागत. ।
विज्ञापया भोगेषु निस्पृहो भगवद्रत: ।।

Closing : देखें, क्र० ८११ ।

Colophon : इति आचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिता त्रिंशच्चतुर्विंशतिका पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र र., पृ. २०३ ।

Closing : एते विंशतितीर्थपापहरा कर्मारिविध्वंसका,
संसारार्णवतारणैक चतुरा इन्द्रादिदेवैर्नुता ।
अंतातीतगुणाकरा सुखकरा मोहांधकारापहा,
मुक्ति श्री ललना विलास रसिका रक्षन्तु वो भव्यकान् ।।

Colophon : इति विंशति विद्यमान तीर्थंकर पूजा सम्पूर्णम् ।

विशेष—चतुर्विंशति के बाद विंशति विद्यमान तीर्थंकर पूजा (समुच्चय) भी लिखी गई है ।

९८४. विंशतिविद्यमानजिनपूजा

Opening : देखें, क्र० ८९३ ।

Closing : इह जिणवाणि विसुद्धमइ जो भीयण णियम धरई ।
सो सुरिंद संपयतह बिकेवारणाण विनुत्तरई ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

९८५. विंशतिविद्यमानजिनपूजा

Opening : वंदौं श्री जिन बीसकों वरतमान सुखदान ।
द्वीप अढाई खेत में श्री विदेह सुथान ।।

Closing : सम्मतपर विक्रमविगत वसु जुग ग्रह ससिकर्ई ।
जेठ शुद्ध प्रतिपद सुदिन पूरन भयो सुछंद ।

Colophon : इति श्री [illegible] बीस विहरमान जिन पूजा सिखिर [illegible] कृत समाप्तं । [illegible] लिखा सिखिर चंद [illegible] यह प्रति [illegible] शुकवार [illegible] को सो जयवत प्रवर्तो राजा [illegible] आनंद होउ । श्रीरस्तु

९८६. विमानशुद्धि विधान

Opening : अथ नूतनं विमानं चैत्यस्य संप्रोक्षण क्रिया ।
[illegible] यथा भवेत् ।।